श्री हरि चरित्र भक्तन चरित्र

(दिव्य रामायण सहित)

भगवान, देवी-देवता, ऋषि, मुनि, हर धर्म के सिद्ध-सन्त, पौराणिक तथा ऐतिहासिक महापुरुषों के द्वारा प्रकट होकर लिखवाए आध्यात्मिक पदों का दिव्य संग्रह

दिव्य ग्रन्थ-४
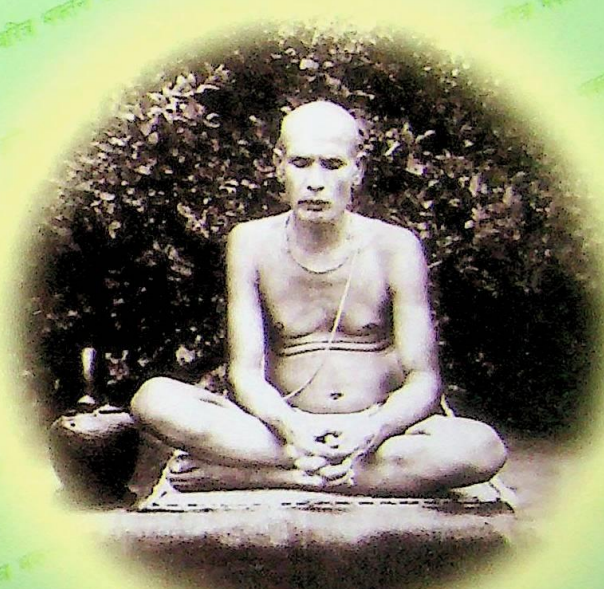
परमहंस राम मंगल दास

गोकुल भवन, अयोध्या

संत शिरोमणि

सन्त श्री परमहंस राम मंगल दास जी

(12.2.1893 - 31.12.1984)

विश्व के एक अद्वितीय ब्रह्मलीन संत थे जिनके समक्ष सब देवी-देवता, हर धर्म के पैगम्बर व सिद्ध-सन्त नित्य ध्यान में तथा प्रत्यक्ष प्रकट होकर बातें करते तथा आध्यात्मिक पद लिखवाते थे। उन्होंने अपने गुरुदेव की अत्यन्त कठिन सेवा की तथा गुरुदेव की पांच आज्ञाओं (महावाक्यों) का आजीवन पालन किया : "अयोध्या में रहना, चाहें तहां पर। कोई जमीन दे तो न लेना। मरे पर पास में कफन को पैसा न निकले। कोई मारे तो हाथ न चलाना। किसी से बैर न करना।" अनेक वर्षों से सोये नहीं, वे सदा अनहद नाद को सुनते रहते थे। अतः भक्तजन स्लेट अथवा कागज पर लिखकर प्रश्न पूछते। तत्पश्चात गुरुदेव अपने श्रीमुख से उनकी शंका समाधान करते व उपदेश देते।

वे करुणा के सागर थे तथा सदा नंगे पैर चलते थे कि कहीं कोई जीव मर न जाये। उनका जीवन अत्यन्त ही सरल व सादा था। सिर्फ एक अचला धोती पहने, बारहों मास एक सादी लकड़ी के तखत पर सुबह से रात तक बैठते तथा भक्तों को कल्याण मार्ग बताते।

श्री हरि चरित्र भक्तन चरित्र

श्री हरि चरित्र भक्तन चरित्र

(दिव्य रामायण सहित)

भगवान, देवी-देवता, ऋषि, मुनि, हर धर्म के सिद्ध सन्त, पौराणिक तथा ऐतिहासिक महापुरुषों के द्वारा प्रकट होकर लिखवाये आध्यात्मिक पदों का दिव्य संग्रह

दिव्य ग्रन्थ - ४

परमहंस राम मंगल दास
गोकुल भवन, अयोध्या

ग्रन्थ प्राप्ति स्थान व सम्पर्क सूत्र

आश्रमः-
श्रद्धेय श्री राम सेवक जी
गोकुल भवन
वशिष्ट कुण्ड
अयोध्या उ.प्र. 224 123
फोनः 05278-232484

प्रकाशकः-
Prof. Rajiv K. Varma
C/o Sri. S.C. Varma
A-436 Shahpura
Bhopal- M.P. 462 039
Tel.: 0755-2426124
email: rkvarma@uwo.ca

Prof. Rajiv K. Varma
Dept. of Electrical & Computer Engg.
University of Western Ontario
London, Ontario N6A 5B9, Canada
Tel.: 001-(519) 661-2111 ext. 85111
Fax: 001-(519) 661-3488
email: rkvarma@uwo.ca

वितरकः-
Sri. T.Sadagopan
Hony. Manager
2093, Type 2 Qrs.
IIT Kanpur, 208 016 U.P.
email: sada@iitk.ac.in

Dr. K.N. Mishra
127/W1/668 Saket Nagar,
Kanpur
Tel.: 0512-266225

Sri. B.N. Srivastava
C-258A, Nirala Nagar
Lucknow – 226 020
Tel.: 0522-2789830

ये दिव्य ग्रन्थ सर्वोदय बुक स्टाल कानपुर, लखनऊ तथा नई दिल्ली रेल्वे स्टेशनों पर भी उपलब्ध हैं।

प्रथम संस्करणः अगस्त 2003
500 प्रतियाँ

न्योछावरः रू० 50/-

मुखपृष्ठ चित्रः गुरुदेव परमहंस राममंगल दास जी का सर्वप्रथम चित्र (1946)

कम्प्यूटरीकरणः श्री टी. सदागोपन
मुखपृष्ठ सज्जाः श्री काशी मिश्रा

मुद्रकः
शारदा ग्राफिक्स (प्राइवेट) लिमिटेड
111-A /407, अशोक नगर
कानपुर - 208 012
फोनः 0512-2290791, 2256591

गणपति वन्दना

गणपति को प्रथमै करों वन्दन। मिलत सुक्ख दुख होत निकन्दन।।
रिध्दि सिध्द सोहत संग जाके। भाल विशाल सिन्दूर को चन्दन।।
अब हम पर नित दाया कीजै। वाहन मूष उमा के नन्दन।३।

सुनिये विनय गजानन अब हम सुनाने वाले।
अब पार बेड़ा मेरा, तुम हौ लगाने वाले।
है मूष की सवारी औ डील डौल भारी।
देवन में आदि पूजन अपनी कराने वाले।
कवियों को कार्य्य सारो, बुद्धी मेरी सुधारो।
हिरदय में मेरे बसिये, आनँद बढ़ाने वाले।६।

शारदा वन्दना

शरन मैं निशि दिन हूँ तेरी, सुनौ शारद महरानी जी।।
बसौ हिरदय में आ मेरे, सकल गुण की निधानी जी।।
तुम्हारे ही बदौलत से हुये कवि लोग ज्ञानी जी।।
अरज मेरी सुनौ चित दै, कहौं मैं कछु कहानी जी।४।

- परमहंस राम मंगल दास

गुरु वन्दना

श्री गुरु महिमा को कहै अति ही ऊँच मुकाम।
ताते गुरु पद को करौं बार बार परनाम।।

- भगवान राम

दो शब्द

हम 28 की उम्र में राम घाट पर अपने गुरु जी परमहंस बाबा बेनी माधौ दास जी महाराज के पास आये। दो माह बाद सबसे पहले शुरु शुरु ध्यान में राम विवाह देखा था। महारानी जी दस हजार सखिन के बीच में जै माल लेकर धीरे धीरे चलती थीं, सब सखी मंगल गाती थीं। 20 कड़ी का था। ऐसे स्वर मिले थे मालूम होता था एक जनी गा रही है। हम सुबह लिखना चाहते थे तो महाराज जी ने मना कर दिया। कहा "पहिले पहिले न लिखौ नहीं तो फिर कुछ न होगा।" तब सब भूल गए।

फिर एक दिन नित्य दरबार गए। वहाँ बीच में राजा जनक जी बैठे थे, गल मोच्छा रखाये, गोरे गोरे पतरे पतरे, बन्ददार लम्बा अंगरखा पहिने, सफेद धोती, चौकसिया टोपी सर पर थी। हमने पूछा "आप कौन हैं," तो कहा "हम राजा जनक हैं।" हम ने कहा "आप राजा जनक हैं तो हमको राम जी का कोई पद सुनावो।" तो खड़े होकर, कुछ झुक कर दाहिना हाथ सामने करके पद सुनाने लगे, चारौं तरफ ठौर पर घूमकर पहिली कड़ी सुनाकर मस्त हो गए। तब हमै सब याद हो गया।

इसके 6 माह बाद नानक देव राम घाट पर बट बृक्ष के नीचे दिन में 11 बजे प्रगट हुए। शुकुल धोती पहिने थे जैसी हमारे यहाँ जनेऊ में पहिराई जाती है - पीली रंगी इस रीति से बहुत पंडित अभी पहिरते हैं। सफ़ेद बाल चांदी चांदी ऐसे चमकते थे, दाढ़ी भी सफेद चमकती थी। बहुत गोरे थे, शरीर महकता था। हम दंडवति किया। फिर उनके गले के पास से पेट तक चाँदी कैसी पटरी प्रगट हो गई। उसमें 35 अक्षरी खुदी थी काली रोशनाई की। हमसे कहा "सुनावो।" हमने कहा "हम रोज़ इसका पाठ करते हैं।" सुनाया तो वह पटरी उलट गई, पेट की तरफ अक्षर हो गए। हम से कहा "यह स्तोत्र तुमको सिद्ध हो गया।" फिर हमने चर्णोदक उतारा तब अन्तर हो गए। फिर थोड़े दिन में प्रगट होकर थोड़ा बताया। फिर तीसरी बार सब बता कर अन्तर हो गए। महाराज (गुरुजी) ध्यान में बैठे थे।

जब हमारी अवस्था 42 रही होगी, महाराज का शरीर शान्त हो चुका था, तो तमाम अजर अमर सिद्ध संत आने लगे, झुंड के झुंड और कहैं हमारा पद लिख लो,

हमारा पद लिख लो। तो हम कहा, "का हमैं यादि रहैगा।" तो सरस्वती जी प्रगट हो गईं और आशीर्वाद दिया कि जो कोई जो कुछ तुमको बतायेगा या सुनायेगा सब तुम्हें यादि हो जायगा। तब से हमें यह सब यादि हो जाता है। हर मजहब के सिद्ध सन्त आते, सतसंग करते और अपना कोई पद सुना जाते। तो हम भोर में उठते ही पेन्सिल से कागज पर लिखते। दिन-दिन भर लिखते-लिखते थक जाते तो गोस्वामी जी (तुलसीदास जी) ने कहा - थोड़ी देर दिवाल के भल बैठकर आराम कर लिया करो, तो वैसा कर ने लगे, तो थकान चली जाती थी।

हमने दो किताब (कक्षा दो तक) पढ़ा है। जो हमको बहुत से अजर-अमर सिद्ध सन्तों ने तथा देवी-देवताओं ने दर्शन देकर लिखाया था, मैं श्री सरस्वती जी की कृपा और आशीर्वाद से उसको लिखने में समर्थ हो सका। किसी किसी महापुरुष ने एक दोहा या केवल एक पद ही लिखाया है और किसी ने अधिक लिखाया है। फिर ऐसे सिद्ध सन्त अभी तक दो हज़ार के ऊपर मिले हैं जिनके पद लगभग 3500 से ज्यादा ही होंगे। कभी गिने नहीं गए हैं। वह सब हम लिख लेते थे और वह हमारे भक्त साफ साफ नकल कर देते। मास्टर हरनाथ सिंह ने खुशखत लिखा है। चार जिलदें (ग्रन्थ) हैं।

इनको जो पढ़ेगा - प्रेरणा पायेगा, उन बातों पर चलेगा और तदनुसार अपनी दिनचर्या बनायेगा तो उसका जीवन सार्थक होगा, उसका कल्याण होगा।

जिसको जिस देवी देवता में प्रेम हो मन लगाकर और अपने इष्ट में विश्वास करके थोड़ा जप या पाठ नित्य करे।

द: परमहंस राम मंगल दास

परमहंस राम मंगल दास

गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड,

अयोध्या

प्रस्तावना

पूज्य श्री गुरुदेव कहते थे, "भगवान की आज्ञा के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकत है।" यह केवल भगवान जी की असीम दया है तथा पूज्य श्री गुरुदेव की अनन्त कृपा है जो इस दिव्य ग्रन्थ-4 का प्रकाशन संभव हो रहा है। श्री गुरुदेव ने अपनी पुस्तक, "श्री भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत" के दो शब्द में इन दिव्य ग्रन्थों के बारे में लिखा है, "चार जिल्दें (ग्रन्थ) हैं"। गुरु कृपा से उन चार दिव्य ग्रन्थों में से तीन का प्रकाशन हो चुका है तथा यह चतुर्थ समापन ग्रन्थ अब प्रकाशित हो रहा है।

इस दिव्य ग्रन्थ में सबसे अधिक पद अजर अमर सिद्ध सन्त श्री अंधे शाह जी के हैं जिनके गुरु स्वयं श्री शंकर भगवान तथा हनुमान जी थे। जिस प्रकार सभी पूर्व प्रकाशित दिव्य ग्रन्थों के नामकरण की प्रेरणा ग्रन्थों में ही समाहित थी (इसका वर्णन दिव्य ग्रन्थ-3 की प्रस्तावना में है), इस दिव्य ग्रन्थ-4 के नामकरण की प्रेरणा श्री अंधे शाह जी के पद 214 मूलग्रन्थ के पृष्ठ 90 (इस प्रकाशित ग्रन्थ के पृष्ठ 72) से मिली है। इस पद की अंतिम पंक्तियों में श्री अंधे शाह जी ने लिखवाया है:-

हरि चरित्र भक्तन चरित्र पढ़ै सुनै मन लाय।
अन्धे कह तन छोड़ि कै हरिपुर पहुंचै जाय।।

जिस प्रकार **श्री हनुमान चालीसा** का नाम चालीसा के अंतिम पदों में इस प्रकार आता है:-

जो यह पढ़ै **हनुमान चालीसा**। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।

इसी भावना से इस दिव्य ग्रन्थ का नाम संत श्री अंधे शाह जी की दिव्य वाणी के अनुसार "श्री हरि चरित्र भक्तन चरित्र" मान लिया गया है।

इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता अजर अमर सिद्ध सन्त श्री कृष्णदास पयहारी जी द्वारा लिखवाई दिव्य रामायण है जो अद्भुत है, अलौकिक है, भक्त भगवन्त प्रेम से परिपूर्ण है और परं आनन्ददायी है।

इसी रामायण के लिये श्री राधा जी ने प्रथम दिव्य ग्रन्थ की रचना के समय (सन् 1945 के लगभग) श्री परमहंस राममंगल दास जी के समक्ष प्रकट होकर लिखवाया था:

ऐहैं कृष्णदास पयहारी। कहिहैं हरि चरित्र सुखकारी।।
तब यह चरित समापति होई। भरिहैं प्रभु यश तत्वनि चोई।।

इस समापन दिव्य ग्रन्थ-4 में श्री कृष्णदास पयहारी जी ने ही प्रगट होकर दिव्य रामायण लिखवाई है और यही ग्रन्थ के अन्तिम भाग में है। उसमें इसकी रचना की तिथि 12 जून 1958 पड़ी हुई है। इन ग्रन्थों की दिव्यता का यही प्रमाण है। दिव्य रामायण के बाद श्री गुरुदेव ने कुछ सिद्ध सन्तों के चरित्र व पद लिखे हैं, जो काफी बाद में गुरुदेव के समक्ष प्रगट हुये।

पूज्य श्री रामसेवक दास जी को हृदय से प्रणाम करता हूँ जिनका इन दिव्य ग्रन्थों के प्रकाशन के लिये सतत् आशीर्वाद है। सभी आश्रमवासियों व भक्तों को उनके स्नेहपूर्ण सद्भाव के लिये नमन करता हूँ जिनका उल्लेख पूर्व प्रकाशित ग्रन्थों की प्रस्तावनाओं में हैं। इन ग्रन्थों के वितरण में अपूर्व सहयोग के लिये श्री जगदम्बा अवस्थी जी, डा० के.एन. मिश्रा जी, श्री बागेश्वरी जी, श्री गोपी जी, श्री दत्तात्रय जी तथा सर्वोदय बुक स्टाल, कानपुर, का मैं हृदय से आभारी हूँ।

इन दिव्य ग्रन्थों की उत्कृष्ट मुखपृष्ठ सज्जा के लिये श्री काशी मिश्रा जी को सादर धन्यवाद देता हूँ। बिना श्री सदागोपन जी व श्री प्रदीप भार्गव जी की अपरिमित सहायता के इन ग्रन्थों का प्रकाशन असंभव था, है, व होगा। उनके प्रति आभार शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

इन समस्त दिव्य ग्रन्थों के प्रकाशन कार्य के लिये श्री गुरुदेव ही प्रेरणा देते हैं, वे ही प्रयास कराते हैं, सब साधन जुटाते हैं तथा अपनी असीम कृपा से कार्य सम्पन्न कराते हैं। यह समस्त प्रकाशन कार्य उनका है, सिर्फ वे ही कर रहे हैं और कोई नहीं - यही सत्य है, यही सत्य है, यही सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीव लोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांक 19 अगस्त, 2003

पूर्व प्रकाशित दिव्य ग्रन्थों की प्रस्तावनाएँ

दिव्य ग्रन्थ - ३

भगवान जी व परंपूज्य श्री गुरुदेव की असीम कृपा व दया है जो उनका यह दिव्य ग्रन्थ-3 जो लगभग 50 वर्षों से गोकुल भवन आश्रम में सुरक्षित रखा हुआ था, अब 2002 ई० में लोक-कल्याण के लिये प्रकाशित हो रहा है। ये संपूर्ण कार्य केवल भगवान व गुरुदेव ही करा रहे हैं।

श्री गुरुदेव परमहंस राम मंगल दास जी द्वारा रचित इन दिव्य ग्रन्थों का नामकरण दिव्य रूप से हुआ है। ये नामकरण का संकेत दिव्य ग्रन्थों के पदों में ही दिया गया है जैसे, दिव्य ग्रन्थ-1 के नामकरण "श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" का संकेत भगवान राम के कुलगुरु श्री वशिष्ठ जी ने दिव्य ग्रन्थ-1 के पद 25 में इस प्रकार किया है:-

सोरठाः- खेल भक्त सँग कीन **राम कृष्ण लीला** भली।
जग हितार्थ हित दीन **भक्तामृत चरितावली**।२।

यही नाम दिव्य ग्रन्थ-1 के प्रारम्भ में लिखा हुआ है।

दिव्य ग्रन्थ-2 के नामकरण *"श्री भक्त भगवन्त चरितामृत सुख विलास"* का संकेत स्वयं मूल ग्रन्थ पृष्ठ 491 में इस प्रकार दिया है:-

" श्री भक्त भगवन्त चरितामृत सुख विलास सम्पूर्णम् "

इस दिव्य ग्रन्थ-3 का नाम मूल ग्रन्थ के मुखपृष्ठ या अन्त में नहीं दिया हुआ है। परन्तु यह आशा थी तथा विश्वास भी था कि पूर्व दिव्य ग्रन्थों की भाँति इस दिव्य ग्रन्थ -3 के नाम का संकेत भी इस ग्रन्थ में कहीं मिलेगा। सो ऐसा ही हुआ। इस दिव्य ग्रन्थ में सर्वाधिक पद श्री अंधे शाह जी की हैं। इस दिव्य ग्रन्थ -3 के मूल संस्करण में, जो गोकुल भवन आश्रम में सुरक्षित है, उसके पृष्ठ 462-463 में पूज्य "श्री अंधे शाह जी" ने यह लिखवाया है:

पदः- गरभ ऋण को भक्तों चुकाना पड़ेगा।
कहैं अंधे चेतो नहीं तो हड़ैगा।
बिना सतगुरु कीन्हे को आगे बढ़ेगा।
धुनी तेज लै रूप सन्मुख लढ़ेगा।४।

वही मातु पितु का दुलारा कढ़ैगा।
रहनी औ गहनि औ सहनि में मढ़ैगा।
रहै एक रस फिर न बातें कढ़ैगा।
सदा **संत भगवन्त कीरति** पढ़ैगा।८।

इसी को भगवत्कृपा से संकेत मानते हुये श्री अंधे शाह जी द्वारा दिये नाम "संत भगवन्त कीरति" को इस दिव्य ग्रन्थ-3 का नाम मान लिया है।

इस दिव्य ग्रन्थ में अनेक सिद्ध सन्तों ने प्रगट होकर यह लिखवाया है कि इन सम्पूर्ण दिव्य ग्रन्थों की रचना श्री भगवान की आज्ञा से ही हुई है तथा ये सारे उपदेश जन-जन के लिये हैं। विभिन्न संतों द्वारा लिखवाये पदों की कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण लाइनें नीचे लिखी हैं-

२०३ *।। श्री भर भर शाह जी ।।*

पद:- भर भर कहैं अब हमको, तुमको कुछ नहीं लिखवाना है।।
करता हूँ अब मैं बन्दगी हरि हुक्म जो था सो किया।

२०४ *।। श्री घट घट शाह जी ।।*

शेर:- हरि हुक्म की तामील करना ही हमारा काम है।
जिस जगह चाहैं जांय हम सकता न कोई थाम है।।
लिखना लिखाना समय पर देता बड़ा ही काम है।
पढ़ि सुनि के चेतैं नारि नर जो फंसे दुख के ग्राम हैं।
घट घट कहैं हम जा रहे करते तुम्हैं परनाम हैं।।

२१७ *।। श्री चमचम शाह जी।।*

पद:- जो नहिं मानै कहा हमारा सो फिरि धोका खाई।
चम चम शाह कहैं हरि अज्ञा रही सो दीन लिखाई।।

२३५ *।। श्री टकटकी माई जी ।।*

पद:- कहैं टकटकी चेतो बहिनो समुझाइत हम पुनि पुनि।।

यह पद संत श्री टकटकी माई जी ने यद्यपि श्री गुरुदेव परमहंसा राम मंगल दास जी को लिखवाया है किन्तु इस आशा से कि यह पद अनेक स्त्रियों बहिनों तक पहुँचेगा तथा उनके कल्याण का मार्ग बतायेगा।

।। श्री अंधे शाह जी ।।

पद:- सतगुरु करिके भेद जान लो जियति जाव ह्वै ब्रह्म परायन।
सुर मुनि सक्ती सब युग बरन्यो, वही वाक्य हम सब हित गायन।।

इस दिव्य ग्रन्थ की एक अतयन्त विशेष व प्रेरणादायक बात यह है कि इसमें दो ऐसे संत आये हैं जिनका कल्याण गुरुदेव परमहंस राममंगल दास जी ने किया, तथा यह बात उन संतों ने अपने पदों में इन पंक्तियों में लिखवाई है।

१७५ ।। *श्री राजेश्वरी माई जी* ।।

(मिती अगहन सुदी 2, सं. 1993 वि. तदनुसार 1936 ई०)

सोरठाः- आई कहन हवाल सुनिये श्री महराज जी।
आपने लीन्ह सम्हाल पूरण भा मम काज जी।।

चौपाईः- अवध पुरी सम धाम न दूजा। सुर मुनि करत आय नित पूजा।।
हरि की हम पर भइ अति दाया। अन्त आप की गोद बिठाया।।
दुख तन ते भा तुरत रवाना। मन में हर्ष स्वतः उमड़ाना।।

दोहाः- तेइस करोड़ बर्ष मोहिं, हरि ने दीन्हयो बास
राजेश्वरी मम नाम है, बचन मानिये खास।।

२१० ।। *श्री नानक राम जी वैश्य*।।

(मुकाम साहब गंज फ़ैज़ाबाद)

चौपाईः- अन्त कि बेरिया मुरली धारी। सन्मुख लखा खड़े सुखकारी।।
तन को त्यागि बैठि सिंहासन। जाय लीन श्री हरि पुर आसन।।
गीता पाठ मन्त्र जप कीन्हा। पर स्वारथ भी कछु करि दीन्हा।।
श्री महाराज आप की दाया। सारे पापन धोय बहाया।।
चालीस लाख बर्ष रहि वहँ पर। फिर द्विज कुल में जन्मौं यहँ पर।।
नानक राम कहैं हरखाई। सत्य बचन हम दीन लिखाई।६।

इस सभी दिव्य ग्रन्थों के प्रकाशन में पूज्य श्री राम सेवक दास जी की कृपा शुभाशीर्वाद व प्रेरणा है। उन्हें मेरा बारम्बार नमन। सभी भक्त जनों का निरन्तर सहयोग बना हुआ है जिनका उल्लेख पूर्व प्रकाशित दिव्य ग्रन्थों की प्रस्तावनाओं में कर चुका हूँ, उन सबको मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। प्रोफेसर एस.पी. दीक्षित जी तथा श्री बी.एन. श्रीवास्तव जी का विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ जिन्होने गुरुदेव श्री महाराज जी के कई चित्र इन दिव्य ग्रन्थों में छपने के लिये प्रदान किये।

इन सभी दिव्य ग्रन्थों की फोटोकापी 1995 दिसम्बर में छपवाने के उद्देश्य से की गई थी। 1996 में ग्रन्थ कम्प्यूटर में टाइप भी कर दिये गये किन्तु इनका प्रकाशन 6 वर्षों बाद हो रहा है। गुरुदेव श्री परमहंस राममंगल दास महाराज जी कहते थेः "हर काम का समय भगवान बाँधे हैं"।

गुरुदेव, आपकी अनन्त दया व कृपा से ही यह प्रकाशन कार्य हो रहा है। आप ही असीम कृपा कर इन ग्रन्थों को छपवाएँ व जन जन तक पहुँचाकर उनका कल्याण करें। हम सामर्थ्यहीन हैं - यही सत्य है, यही सत्य है, यही सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीव लोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांक 15 जून, 2002

दिव्य ग्रन्थ - 2

भगवान जी की असीम कृपा व परपूज्य गुरुदेव श्री परमहंस राममंगल दास जी महाराज की अनन्त दया से इस द्वितीय दिव्य ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है। इस आशा से कि यह अनेकानेक भक्त जनों के हाथों में पहुँचेगा व उन सबके कल्याण में पथ प्रदर्शक होगा - मन में अत्यन्त हर्ष हो रहा है।

इस ग्रन्थ का नामकरण दिव्य रूप से "श्री भक्त भगवन्त चरितामृत सुखविलास" हुआ है। इस ग्रन्थ की एक विशेषता यह है कि इसमें हर धर्म के संत तो आये ही है बल्कि हर जाति व हर पेशे (व्यवसाय) के संत स्त्री पुरुषों ने साक्षात् प्रगट होकर आध्यात्मिक पद लिखवाये हैं। उन्होने यह लिखवाया है कि किस प्रकार जीवन जीना चाहिये। तथा यह भी लिखवाया है कि विभिन्न सत्कर्म व दुष्कर्म करने के परिणाम इस लोक में तथा परलोक में क्या होते हैं। ये पद अत्यन्त ही प्रेरणास्पद हैं।

इन दिव्य ग्रन्थों की भाषा के बारे में एक बड़ी विशेष बात एक स्त्री सन्त श्री राम जनी जी ने पद 778 में लिखवाई है कि इन दिव्य ग्रन्थों के संबंध में जगत जननी श्री राधा महारानी (लाड़ली) जी की यह आज्ञा है:

दोहा:- उलट पुलट जो शब्द हों, सो न सुधारे कोयं।
कहैं लाड़िली नहीं तो, प्रेम जायगा धोय।।

यह जानने योग्य बात है कि प्रथम दिव्य ग्रन्थ "श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" के प्रथम भाग में श्री गुरु वशिष्ठ जी ने यह लिखवाया है कि इन दिंव्य ग्रन्थों की रचना जगतजननी श्री जानकी जी व श्री राधा जी की ही आज्ञा व कृपा से हुई है।

परं आदरणीय श्री रामसेवक दास जी का मैं आत्मिक रूप से कृतज्ञ हूँ जिन्होने श्री गुरुदेव भगवान के इन दिव्य ग्रन्थों को छपवाने की अत्यन्त कृपा पूर्ण अनुमति दी व सतत् शुभाशीर्वाद प्रदान किया है। गोकुल भवन के समस्त आश्रमवासियों तथा सभी भक्त जनों, जिनका आदरपूर्वक उल्लेख पूर्व ग्रन्थों की प्रस्तावनाओं में किया गया है, उन सभी का स्नेहपूर्ण सद्भाव व सहयोग इस दिव्य ग्रन्थ के प्रकाशन में निरन्तर बना हुआ है। उन सभी का मैं अत्यन्त ऋणी हूँ।

इस दिव्य ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर "रेफ बिन्दु" तथा गुरुदेव श्री परमहंस राममंगलदास जी महाराज की छबि का चित्रांकन बड़े मनोहारी रूप से श्री काशी मिश्रा जी ने किया है। उनके प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

परम पूज्य गुरुदेव महाराज जी के चरण कमलों में प्रार्थना है कि वे कृपा करें कि उनके सभी दिव्य ग्रन्थ जन जन तक पहुँचे तथा सर्व जगत का कल्याण करें। उन्हीं की कृपा से ही इन ग्रन्थों का प्रकाशन अभी हो रहा है व उन्हीं के आशीर्वाद से ही इन ग्रन्थों का प्रकाशन आगे संभव हो पायेगा - यही सत्य है, यही सत्य है, यही सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीव लोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांक: 10 मई 2002

क्षमा याचना

इन दिव्य ग्रन्थों के प्रकाशन में पूरा प्रयास किया गया है कि जैसा मूल ग्रन्थ में है वैसा ही प्रकाशित किया जाये। यदि इसमें कोई त्रुटि रह गई हो तो प्रकाशक अपनी इस भूल के लिये हृदय से क्षमाप्रार्थी है।

दिव्य ग्रन्थ - 1 द्वितीय भाग

भगवान की असीम दया व परंपूज्य गुरुदेव श्री परमहंस राममंगलदास जी की कृपा से इस दिव्य ग्रन्थ के प्रकाशन कार्य सम्पन्न होने पर अत्यन्त हर्ष हो रहा है। सब देवी देवताओं, ऋषि मुनियों तथा हर धर्म के सिद्ध सन्तों व महापुरुषों ने गुरुदेव के समक्ष प्रकट होकर जो आध्यात्मिक पद तथा वार्तिक (कथाएँ) लिखवाए उन्हें श्री गुरुदेव ने चार मुख्य दिव्य ग्रन्थों में संग्रहीत किया है। श्री गुरुदेव द्वारा रचित इन चार ग्रन्थों में दिव्य ग्रन्थ-1 "श्री रामकृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" का प्रथम भाग सन् 1999 में छपा तथा उसका विमोचन अयोध्या जी के श्रद्धेय संत श्री नृत्य गोपाल दास जी के कर कमलों द्वारा 31 दिसम्बर 1999 को हुआ। इस दिव्य ग्रन्थ का यह दूसरा भाग अब आपके हाथों में हैं।

यह ग्रन्थ श्री गुरुदेव भगवान की इच्छा व आशीर्वाद से तथा अनेक भक्तों के अप्रतिम सहयोग से ही छप सका है। गुरुदेव के अनन्य शिष्य परम आदरणीय श्री रामसेवक दास जी का मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जो श्री गुरुदेव के गोकुल भवन का समस्त कार्य गुरु उपदेशों के अनुसार संभाल रहे हैं। उन्होने अत्यन्त कृपा कर गुरुदेव भगवान के दिव्य साहित्य को प्रकाशित करने की अनुमति मुझे प्रदान करी तथा इस कार्य के लिये अपना अपूर्व सहयोग व आशीर्वाद दिया। गोकुल भवन आश्रम के ही श्री प्रेमानन्द जी के अपरिमेय सहयोग व विश्वास के लिये में उनका आभारी हूँ। श्री रामायणी जी व श्री परशुराम जी की सतत् शुभकामनाएँ इस कार्य के लिये मुझे प्राप्त हुई हैं जिसके लिये मैं उनको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। श्री अवस्थी जी अत्यन्त श्रद्धा व निष्ठापूर्वक जो प्रयास कर रहे हैं कि श्री गुरुदेव परमहंस राममंगल दास जी का साहित्य अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सके, वो अत्यन्त सराहनीय है।

स्वर्गीय श्री जगत नारायण बाबू जी को हृदय से नमन करता हूँ, जो इन सारे दिव्य ग्रन्थों के प्रकाशन के प्रेरणास्रोत थे तथा जिन्होने इन ग्रन्थों के प्रकाशन के लिये मेरा निरन्तर उत्साह वर्धन किया। वे 1944 से गुरुदेव के शिष्य थे तथा 1971 से गोकुल भवन में अन्त समय तक निरन्तर गुरुदेव की सेवा में रत रहे। वे कहते थे; "ये ग्रन्थ अलौकिक हैं। न पहले कभी ऐसे ग्रन्थ बने और न बाद में शायद कभी बनेंगे। हर परिवार में, सम्मान पूर्वक जैसे रामायण-गीता रखी जाती हैं, वैसे रखने लायक हैं। इनके नित्य पाठ से घर में रहने वालों को मार्गदर्शन मिलेगा व उनका कल्याण होगा।"

ये दिव्य ग्रन्थ श्री बलराम वर्मा जी के प्रयासों से गोकुल भवन आश्रम में सुरक्षित रखे हुये हैं। उन्होंने ग्रन्थों के बारे में बड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों से मुझे अवगत कराया, उसके लिये उन्हें बहुत धन्यवाद देता हूँ। श्री गणेश प्रसाद माथुर जी का ऋणी हूँ जिन्होंने श्री गुरुदेव महाराज जी के अनेक हस्तलिखित पत्र व उपदेशों का संकलन तथा उनके साहित्य के अंश मुझे दिये, जिनको प्रभु इच्छा से भविष्य में छपाया जायेगा। उनकी शुभकामनायें व आशीर्वाद पाकर मैं कृतकृत्य हुआ हूँ।

मन में अतीव इच्छा थी कि परंपूज्य गुरुदेव के अधिकाधिक चित्र इन ग्रन्थों में छापे जा सकें, ताकि भक्त जन गुरुदेव के अनेक रूपों के दर्शन कर सकें। मैं डा० रमेश निगम का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिन्होंने कृपा कर श्री महाराज जी के तीन फोटो एलबम मुझे दिये। इन एलबम के कई चित्र इस ग्रन्थ में समाहित हैं तथा कई अन्य चित्र श्री गुरु कृपा से भविष्य में छपने वाले ग्रन्थों में छापे जायेंगे। श्री बागेश्वरी नारायण श्रीवास्तव जी तथा डा० के० एन० मिश्रा जी ने जो हर पग पर मार्ग दर्शन किया व श्री गुरुदेव के चित्र उपलब्ध कराने में सहयोग दिया है, उसके लिये मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। श्री रविशंकर तिवारी को ग्रन्थों के वितरण में उनके सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

राजा भानु प्रताप सिंह जी का अति विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ जिन्होने परंपूज्य श्री गुरुदेव के चित्र, उनका एकमात्र वीडियो तथा आडियो कैसेट मुझे दिया है, ताकि उनके संशोधित तथा समुन्नत रूप सब पाठकों व भक्तों के लिये भविष्य में उपलब्ध कराये जा सकें। जब भी मुझे प्रूफ-रीडिंग में संशय होता वे देर रात तक जागते व कृपा कर उन संशयों का निवारण करते।

आई०आई०टी० कानपुर में प्रोफेसर टी.वी. प्रभाकर, डा. टी. अर्चना तथा श्रीमती रजनी मूना का परं आभारी हूँ जिन्होंने पूज्य गुरुदेव के वेबसाइट के निर्माण में पूर्ण सहयोग दिया है। इस वेबसाईट के माध्यम से सारे विश्व में कहीं भी कम्प्यूटर द्वारा श्री महाराज जी के दिव्य ग्रन्थ पढ़े जा सकते हैं। इस समय प्रथम दिव्य ग्रन्थ का प्रथम भाग वेबसाईट पर उपलब्ध है।

इस वेबसाईट का विकास किया जा रहा है तथा शीघ्र ही श्री महाराज जी का अन्य दिव्य साहित्य, चित्र, वीडियो व आडियो को इसमें समाहित कर लिया जायेगा। इस वेबसाईट का पता है:

www.rammangaldasji.org

आई०आई०टी० कानपुर के टेलिविज़न सेन्टर तथा उसमें कार्यरत श्री अरविंद मिश्रा जी का आभारी हूँ जिनके माध्यम से श्री गुरुदेव का वीडियो तथा आडियो के एडिटिंग का कार्य हो रहा है। श्री गुरुदेव के दिव्य ग्रन्थों की वेबसाईट डिजाइनिंग के लिये श्रीमती सन्ध्या मिश्रा को धन्यवाद देता हूँ।

इस दिव्य ग्रन्थ के अन्त में परमहंस श्री राममंगलदास जी की गुरु परम्परा के आदिगुरु "श्री स्वामी रामानन्द जी" जो श्री विष्णु भगवान के अंशावतार थे, उनके द्वारा प्रकट होकर लिखवाये इन ग्रन्थों की महिमा का पद समाविष्ट किया गया है। तदोपरान्त डा० सुधाकर अदीब द्वारा विरचित श्री परमहंस राममंगल दास जी की आरती सम्मिलित की गई है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में आई०आई०टी० के प्रोफेसर सुमित गांगुली जी का जो अनुपम सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिये मैं उनका ऋणी हूँ। श्री प्रदीप भार्गव जी ने कठिन समयाभाव के बावजूद भी इस ग्रन्थ को समय से छापा है उसके लिये मैं उनका अति कृतज्ञ हूँ।

इस ग्रन्थ को अत्यन्त श्रद्धा व लगन से श्री सदागोपन जी ने कम्प्यूटर में टाइप किया है व रूप सज्जा की है। इस कार्य के लिये उनके तथा उनके परिवार की तपस्या के प्रति आभार व्यक्त करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं।

इस ग्रन्थ की सपूर्ण प्रूफ-रीडिंग मेरी धर्मपत्नी श्रीमती मालिनी वर्मा ने की है। इस सहभागिता के बिना यह ग्रन्थ समय पर नहीं छप पाता।

इस प्रकाशन कार्य का एक एक अंग श्री गुरुदेव ने ही जुटाया है तथा उन्होने ही कराया है। वे ही इन दिव्य ग्रन्थों के प्रगटकर्ता व प्रकाशक हैं - यह सत्य है, सत्य है, सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीव लोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांक: 27 दिसम्बर 2001

दिव्य ग्रन्थ - १ प्रथम भाग

श्री महाराज जी की महिमा

भगवान श्री रामचन्द्र जी ने स्वयं प्रकट होकर श्री महाराज जी को लिखवाया है:-

श्री गुरु महिमा को कहै, अति ही ऊँच मुकाम।
ताते गुरु पद को करौं बार बार परनाम।।

श्री महाराज जी ने अपनी पुस्तक "भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत" के "दो शब्द" में लिखा है, "कुछ समय हुआ भगौती (माँ भगवती) का हुक्म हुआ कि कुछ भक्तों की कथाएँ लिख दो। अवस्था 82 की हो गई है, शरीर कमजोर है पर भगौती का हुक्म है तो धीरे धीरे अभी तक 300 से ऊपर कथाएँ लिखी हैं। पहिले इनमें से 200 छपैंगी, फिर भगवान की जैसी इच्छा होगी।"

जो बातें स्वयं श्री भगवान, देवी देवताओं व संतों ने श्री महाराज जी के बारे में इन चार दिव्य ग्रन्थों में कही हैं तथा उपरोक्त भक्तों की कथाओं में लिखी हैं, जो मैं अपनी निपट बुद्धि से जान सका, वे ही बातें उन्हीं की कृपा से मैं नीचे लिख रहा हूँ।

जगदीशपुरी धाम की यात्रा के वर्णन में महाराज जी ने लिखा है - "जब गौरांग जी के मंदिर में गये जहाँ वह छै भुजा से विराजमान हैं तो लम्बी दंडवति करने का विचार किया तो बड़ा प्रकाश हुआ। मालूम हुआ कि सारा संसार प्रकाशमान है। फिर लय दशा हो गई। ज्ञान, ध्यान, भान भूल गया। सीधा काठ ऐसा शरीर खड़ा रहा। तब भगवान ने अपना दाहिना चरण हमारी छाती पर लगाया। हम होश में आ गये। हमने चरण को माथे में लगा कर छोड़ दिया। वहाँ पर कबीर जी, मलूक साहेब, कर्मा माई, हरी दास, नित्यानन्द जी, रघुनाथ, अद्वैताचार्य और श्री बास के दर्शन हुये। सबने कहा, "महाराज, कृष्णावतार का यह सखा आप का सुखदेव है।" भगवान मुस्करा दिये। हमारे आँसुओं की धारा चलने लगी। वै प्रेम के आँसू बर्फ जैसे ठंडे होते हैं। यह प्रेम की नदी से बहते हैं। दुख की नदी के आँसू गरम होते हैं। दो नदी आँखों में हैं।"

बूढ़ी माता, हुसेन गंज, लखनऊ, की कथा में बूढ़ी माता ने श्री महाराज जी का हाल द्वापर का बताया था कि कृष्ण भगवान ने कहा है, "यह हमारा सखा सुखदेव ग्वाल है हर समय संग नाचता, गाता था और दूध लूटने में संग रहता था"।

इस दिव्य ग्रन्थ में श्री महाराज जी के बारे में इन्होने यह लिखाया हैः-

श्री भद्रसेन जी

राम मंगल दास तेरा नाम कहते संत जन ।
श्री गुरु जी के चरण सेवा में रहता था मगन ।।
दुनियां की मौज उड़ा चुका करता है अब प्रभु का भजन ।
किरपा हुई सरकार की अब छूटिगा आवागमन ।।

श्री सीता जी

गुरु दयाल तुम पर भये, दीन शब्द का रंग ।
आशिरवाद हमार यह, रहो सदा हरि संग ।।

श्री कलियुग महाराज जी

धन्य धन्य तुम धन्य हो धन्य धन्य तुम धन्य।
सब देवन के दरस भे तुम पर हम परसन्न।।
तुम हमार गुरु भाय हो हम तुमार गुरु भाय।
ताते विनती करत हौं बार बार सिर नाय।।
गुरु सेवा का फल यही आँखिन देखो भ्रात।
आवागमन न होय अब छूटा जग से नात।।
चहें तहाँ अब तुम रहौ राम कृष्ण हैं संग।
अब तुम्हारि रक्षा करैं शिव समेत बजरंग।।

श्री कलियुग महाराज जी को गुरुदीक्षा स्वामी रामानन्द जी ने दी थी और श्री महाराज जी स्वयं स्वामी रामानन्द जी की परम्परा के हैं।

श्री लक्ष्मी जी

बसो प्रभू के पास, हमको सब मालुम पता।

श्री पार्वती जी

सुनो पुत्र दुख भाग, अब जग में आओ नहीं।

श्री कबीर जी

सुर मुनि सब परसन्न हैं सुनिये तुमसे तात ।
ताते हमहूँ कहत हैं, तन मन से सब बात ।।

श्री वशिष्ठ जी

सब तुम पर नित खुश रहें गुरु सेवा तुम कीन ।
राम कृष्ण का खेल यह तुमरे संग जो कीन ।।

यह ग्रन्थ श्री महाराज जी के लिखे चार दिव्य ग्रन्थों के प्रथम ग्रन्थ का पहला भाग है। दूसरे भाग में श्री महाराज जी ने अपने पद में लिखा है।

गोलोक का कछु चरित दिल में था मेरे लिखता अभी।
श्री कृष्ण जी ने कह दिया अब कछु नहीं लिखिये कभी।।
अंदर से मेरे नाम की धुनि हो रही बसु याम है।
सुनते रहो इस शब्द को जो सत हमारा नाम है।।
और थोड़े दिन रहो अबहीं यहां कछु काम है।
आवागमन नहिं होय कबहूँ बसौ मेरे धाम है।।

यह पद श्री महाराज जी ने 1945 ईस्वी के लगभग लिखा था। इसमें श्री कृष्ण भगवान ने श्री महाराज जी को आशीर्वाद दिया था कि वे भगवान के साथ गोलोक धाम में ही रहेंगे। इसके उपरान्त एक विचित्र घटना हुई। श्री महाराज जी ने भक्तों की कथाओं में लिखा है, जो छप चुकीं हैं:-

"श्री राम सिंह, गंगवल स्टेट, जिला बहराइच के राजा थे। यह बहुत बीमार पड़े, मारकेश (ग्रहों के अनुसार मृत्यु योग) लग गया। घर का काम बहुत बाकी था। इनके संबंधी और घर के लोग हमारे पास आये, बहुत रोये। हमें दया आ गई तो हमने अपना सिर मान दिया तो अच्छे हो गये। मारकेश टल गया।

श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, कचहरी रोड, लखनऊ, के रानी इटौंजा के वकील हैं। इनका भी मारकेश आ गया। रानी बहुत दुखी हुई, सारे मुकदमे झंझट के पड़े थे। राजा साहब थे नहीं। सब महाबीर प्रसाद को सुपुर्द कर दिये थे। रानी ने अपनी करुण कहानी हमसे कही। हमें दया आ गई तो हम अपना सर तो मान ही चुके थे पहले राम सिंह को, धड़ महाबीर प्रसाद को मान दिया।

अब जब से भगवती ने रोक दिया है, सर, धड़ राम सिंह, महाबीर प्रसाद को माना था, तब से, कहा, दान जप करा दिया करो, यथा शक्ति धर्म जो तन मन से करेगा

उसका भला होगा और जिसका भाव तुम में होगा उसका काम भगवान पूरा करेंगे। तुमको यही करने का अब अधिकार दिया गया है। शरीर हमारा हो गया।''

राजा राम सिंह, गंगवल, का 9-11-1973 को शरीर छूटा। श्री महाराज जी ने 21-11-1973 को एक अप्रकाशित भक्त कथा में लिखा है ''भगौती ने मुझे बताया कि राम सिंह जब पहले बीमार पड़े थे तभी से मारकेश शुरू हो गया था। तुमने उनके लिये अपना सिर और महावीर प्रसाद के लिये अपना धड़ मान दिया। हमें इतने दिन आयु बढ़ा देने की आज्ञा हुई और मैने अन्त में उन्हें बैकुण्ठ पहुँचा दिया।''

श्री महाराज जी की पुनः भगवती जी से (रामसिंह से संबंधित) वार्ता 22-11-73 को हुई जो उन्होंने अपनी अप्रकाशित कथाओं में लिखी है:-

भगौती ने कहा ''हमारे ऐसा कोई भक्त नहीं है जो अपना सर व धड़ अपने भक्त के लिए हमैं माना हो। हम तुमको भी अपने पास राखैंगी। कृष्ण भगवान ने तुम से कहा था, ''कुछ दिन और रहौ थोड़ा काम तुम से कराना है। फिर हमारे पास आवोगे। अब तुम सर व धड़ हमें दे चुके तो भगवान से हम तुम को माँग लेंगी। भगवान हमारी बात न टालेंगे। वै दीन दयाल करुणासागर हैं।'' और यह कहा ''जब अपने पास रखौंगी तो ऐसी शक्ति तुमको दे दूँगी कि सब देवी देवताओं के लोक देख आवोगे, सब से मिल आवोगे।''

भगवती ने आगे कहा कि जिसकी सुरति तुम में लग जायगी वह तुम्हारे पास आ जायगा। वह तार ऐसा है कि खींचि लेता है छूटता नहीं। जब सुरति लगाने वाला आ जाता है तभी छूटता है। इसी तरह सुरति लगाने से देवी देवता सब आ जाते हैं। इस सुरति के तार को बहुत कम भक्त जानते हैं। इसका प्रचार जानकी जी ने किया है। प्रथम शंकर जी को बताया, हनुमान जी को बताया। भरत जी, लखनलाल, शत्रुहन को बताया, माण्डवी, उर्मिला, श्रुतिकीर्ति को बताया। इसका बड़ा विस्तार है। सब काम सुरति से होते हैं। थोड़ा लिखाया है।'' हमने कहा ''जैसी आपकी इच्छा हो वैसा ही हमैं मंजूर है।''

भगौती ने फिर कहा ''जिसका आप में सच्चा भाव और विश्वास होगा उसका काम ठीक होगा।''

17 दिसम्बर 1984 की रात को श्री काली जी महाराज जी के सामने विशाल रूप में प्रकट हुईं। वे अपने हज़ार हाथों में विभिन्न प्रकार के अस्त्र धारण किये हुई थीं। उन्होने श्री महाराज जी से कहा ''प्रिय पुत्र तुम्हारा इस संसार में कार्य पूरा हुआ। हम तुम्हें

लेने आईं हैं। अब तुम चलो।'' अगले ही दिन 18-12-1984 से श्री महाराज जी ने पूरी तरह से अन्न जल लेना छोड़ दिया। अन्ततः तेरह दिन के पूर्ण उपवास के बाद 31-12-1984 की रात को तीन बजे उन्होंने महासमाधि ले ली।

श्री गुरुदेव के महाप्रयाण के कई दिनों बाद तक भी भक्तों के मन में अनिश्चितता थी कि क्या उन्होंने वास्तव में शरीर छोड़ दिया है। क्योंकि उस समय श्री महाराज जी के शरीर में हृदय गति नहीं थी फिर भी आँखें खुलती बन्द होती थीं। ऐसा न कभी देखा गया था न सुना गया था। तो मैने परमपूज्य संत श्री देवरहा बाबा जी से ये सब बातें बताईं और पूछा। तब उन्होने कहा "बच्चा, यह सब सिद्ध सन्तों की लीला है। उन्होने शरीर छोड़ दिया है। वे तो भगवत् के स्वरूप थे। उनके बारे में जो कहा जाये वो थोड़ा है।''

इसके कुछ दिनों बाद पूज्य बुआजी (श्री महाराज जी की बहिन जी) जो स्वयं अत्यन्त उच्च सिद्ध अवस्था में थीं, उन्होने बताया कि श्री महाराज जी ने उनसे प्रकट होकर कहा था कि तुम हमारी दिव्य अन्तिम यात्रा देखोगी। बुआ जी ने बताया कि एक अलौकिक दिव्य विमान में श्री सीता जी, श्री राधा जी, श्री लक्ष्मी जी व श्री पार्वती जी बैठ कर आईं और श्री महाराज जी को अपने साथ ले गईं।

श्री महाराज जी के दिव्य ग्रन्थ

मैं निपट मूर्ख अज्ञानी श्री महाराज जी के दिव्य ग्रन्थों के बारे में क्या लिख सकता हूँ! श्री भगवान की असीम कृपा व इच्छा से तथा पूज्य श्री गुरुदेव परमहंस राम मंगल दास जी के आशीर्वाद से ही इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है।

गुरुदेव ने इन ग्रन्थों को 1933 ईस्वी से आश्रम में पूज्यनीय रूप से सुरक्षित कर रखा था। गुरुदेव अक्सर इन ग्रन्थों का भक्तों से पाठ करवाते। कुछ भक्तों को इन ग्रन्थों से कुछ पद उतार कर लिख लेने की आज्ञा देते। इन ग्रन्यों के कुछ अंश श्री महाराज जी की अनुमति से छपवाये गये पर पूरे ग्रन्थ अप्रकाशित ही रहे।

मेरे हृदय में बहुत इच्छा थी कि गुरुदेव की इस अमूल्य निधि का पूर्ण रूप से प्रकाशन किसी प्रकार से हो सके। श्री महाराज जी के शरीर छोड़ने के आठ वर्ष बाद 1992 में मैंने पूज्य योगी सन्त श्री स्वामी राम जी से प्रार्थना की कि इन ग्रन्थों को छपवाने की इच्छा है। उस समय मैं दो वर्षों के लिये कनाडा जा रहा था। उन्होंने कहा "जब भारत

लौट आओ तब करना।'' जब भारत लौट आया तब पूछा, तो कहा ''सब काम धीरे धीरे करो।''

15 दिसम्बर 1995 को आदरणीय श्री राम सेवक जी जिन्होंने श्री महाराज जी की अनन्य सेवा की है तथा अब सारे गोकुल भवन आश्रम का श्री महाराज जी के उपदेशानुसार संचालन कर रहे हैं, उन्होंने अत्यंत कृपा कर मुझे इन चारों ग्रन्थों तथा कथाओं को फोटोकापी करने तथा छपवाने की अनुमति प्रदान की। मैं उनको हृदय से नमन करता हूँ।

श्री वशिष्ठ जी ने स्वयं इस ग्रन्थ में पद 253 में लिखाया है कि जगत जननी श्री जानकी जी व श्री राधा महारानी जी की कृपा व आशीर्वाद से इस दिव्य ग्रन्थ की रचना हुई है। गुरु वशिष्ठ जी ने ही प्रकट होकर पद 25 में इस दिव्य ग्रन्थ का नामकरण ''श्री राम कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली'' किया है। सब से विचित्र बात यह है कि श्री राधा जी ने प्रथम ग्रन्थ के द्वितीय अप्रकाशित भाग में कहा है कि जब श्री कृष्णदास पयहारी जी प्रकट होकर अपने पद लिखवायेंगे तब इन ग्रन्थों का समापन होगा:-

ऐहैं कृष्णदास पयहारी। कहिहैं हरि चरित्र सुखकारी ।
तब यह चरित समापति होई। भरिहैं प्रभु यश तत्वनि चोई ।।

और वास्तव में चतुर्थ ग्रन्थ जिसकी समापन तिथि 12-6-58 ईस्वी पड़ी है उसमें अन्तिम संत पयहारी जी ही हैं जिन्होंने दिव्य रामायण लिखवाई है। जब श्री महाराज जी कथाएँ लिख रहे थे 82 की अवस्था में तब एक सन्त प्रगट हुये और उनसे सत्संग करने लगे। श्री महाराज जी ने कहा ''आप हमें जानते होते तो जब हमारा शरीर ठीक था तब आते तो हमको बताते तो हम सब लिख लेते, कितने दिन लगते'', तो कहा ''मैं आपको जानता था लेकिन आ नहीं सके, सब काम भगवान की आज्ञा से होते हैं।''

इससे सिद्ध होता है कि इन सारे ग्रन्थों की रचना कैसे भगवान की इच्छा से इतने व्यवस्थित रूप से हुई है। एक ही विषय पर बोलने वाले संत एक ही साथ एक क्रम में प्रगट हो कर लिखवाते थे। फिर वे यह भी कहते थे कि अमुक विषय पर आपको वे संत लिखवा चुके है। जैसे, श्री ईसा मसीह जी ने शंकर जी, शुकदेव जी व गुरु नानक जी का उल्लेख किया है। सच है - भगवान की लीला अपरम्पार है।

एक दिन मैं प्रथम ग्रन्थ को अपने पिताजी को पढ़ कर सुना रहा था कि अचानक श्री वशिष्ठ जी के पद पर दृष्टि पड़ी। उसमें वशिष्ठ जी ने संवत् 1990 अर्थात् 1933 ईस्वी में श्री महाराज जी को प्रगट होकर आज्ञा दी थीः-

उनइससै निन्नानवे जब संवत् लगि जाय।
तब यह चरित छपाइये साँची दीन बताय।।

उसी पृष्ठ के नीचे ग्रन्थ समापन तिथि 11 जुलाई 1945 पड़ी हुई थी। मन में प्रश्न उठा कि वशिष्ठ जी ने क्या विक्रमी संवत् 1999 में छपवाने की आज्ञा दी थी या ईस्वी संवत् 1999 में छपवाने का आदेश दिया था। कानपुर के योगी श्री महेश चन्द्र द्विवेदी जी ने इसको स्पष्ट किया कि वशिष्ठ जी की आज्ञा ईस्वी संवत् 1999 मे छपवाने की ही है। क्योंकि विक्रमी संवत् 1999 के अनुसार ईस्वी संवत् 1942 होता है। जब ग्रन्थ की समाप्ति 11 जुलाई 1945 में ही हुई तो ग्रन्थ 1942 में कैसे छप सकता था। इसके अतिरिक्त यदि 1942 में छपवाने की आज्ञा होती तो श्री महाराज जी अवश्य ही वशिष्ठ जी की आज्ञा पालन करते हुए इस ग्रन्थ को उस वर्ष छपवा देते। पर ऐसा नहीं हुआ। श्री महेश जी का हृदय से अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे सबसे पहले 1976 में श्री महाराज जी के बारे में बताया, अनेक उपकार किये तथा सदा मार्गदर्शन किया।

आदरणीय श्री जगतनारायण जी का मैं ऋणी हूँ जिनका मुझपर अत्यन्त स्नेह है तथा जिन्होने श्री महाराज जी के ग्रन्थों के प्रकाशन के लिये सदा ही उत्साह वर्धन किया।

मैं अपना हार्दिक आभार अपने अभिन्न मित्र श्री सदागोपन जी के लिये व्यक्त करता हूँ जो यद्यपि दक्षिण भारतीय हैं पर उन्होंने अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक और तन मन से इन ग्रन्थों को हिन्दी में कम्प्यूटर में टाइप किया तथा उनकी रूपरेखा तैयार की। श्री सदागोपन जी के परिवार से इस कार्य के लिये जो सहयोग प्राप्त हुआ उसके लिये मैं उनको सादर धन्यवाद देता हूँ।

इन ग्रन्थों की फोटोकापी एक मुस्लिम भक्त के द्वारा की गई जिनको मैं धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

गुरुदेव द्वारा समस्त दिव्य पद चार ग्रन्थों में संकलित किये गये हैं। "श्री राम कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" प्रथम ग्रन्थ के दो भागों का प्रथम भाग है। बाकी ग्रन्थ

तथा गुरुदेव द्वारा लिखित भक्तों की कथाएँ बाद में प्रभु कृपा से छपाई जायेंगी। ये सारे ग्रन्थ अवधी भाषा में हैं। इन ग्रन्थों की टीका का कार्य भी हो रहा है।

इस ग्रन्थ का प्रकाशन भगवान की असीम कृपा, सब देवी देवताओं, ऋषि मुनियों, पैगम्बरों, सिद्ध सन्तों व महापुरुषों के आशीर्वाद से हो रहा है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री महाराज जी के समस्त भक्तों की भगवान से प्रार्थना के फलस्वरूप ही हो रहा है।

यह सम्पूर्ण कार्य गुरुदेव श्री परमहंस राम मंगल दास जी महाराज ने ही किया है तथा करवाया है - यह सत्य है, सत्य है, सत्य है।

श्री गुरुदेव का परंतुच्छ दास
राजीवलोचन
(राजीव कुमार वर्मा)

दिनांकः 25 दिसम्बर 1999

दिव्य ग्रन्थ महिमा

हरि हरिभक्तन का चरित, है अति सुख की खानि।
रामानन्द यह कहत हैं, लेव वचन मम मानि।।

पढ़ै सुनै जो ग्रन्थ यह, तन मन प्रेम लगाय।
हर्ष शोक की शान्ति हो, भवसागर तरि जाय।२।

— श्री स्वामी रामानन्द जी

भक्त जनन का चरित यह पढ़ै सुनै जो कोय।
निश्चय पावै भक्ति पद, आतम अनुभव होय।।

— परमहंस राम मंगल दास

विषय सूची

सीतानाथ समारम्भां, रामानन्दार्य मध्यमाम्
अस्मदाचार्य पर्यन्ताम् वन्दे गुरु परम्पराम्
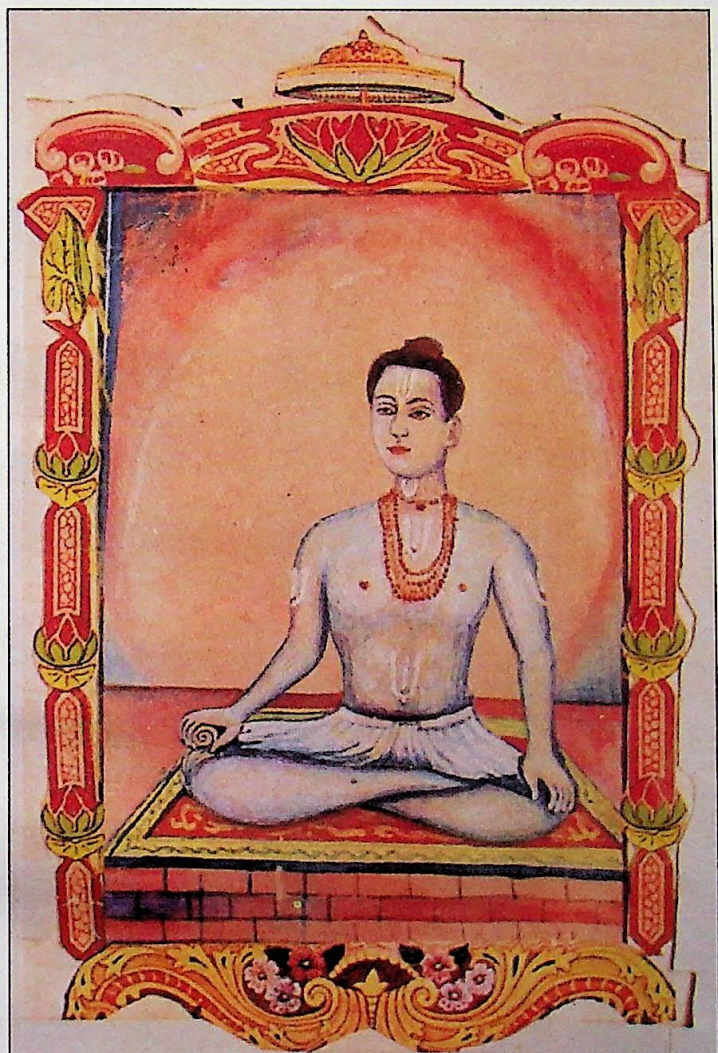
परं वन्दनीय श्री जगत्गुरु स्वामी रामानन्दजी महाराज
विष्णु भगवान के अंशावतार ।
परमपूज्य श्री परमहंस राममंगलदास जी की
गुरु परम्परा के आदि गुरु
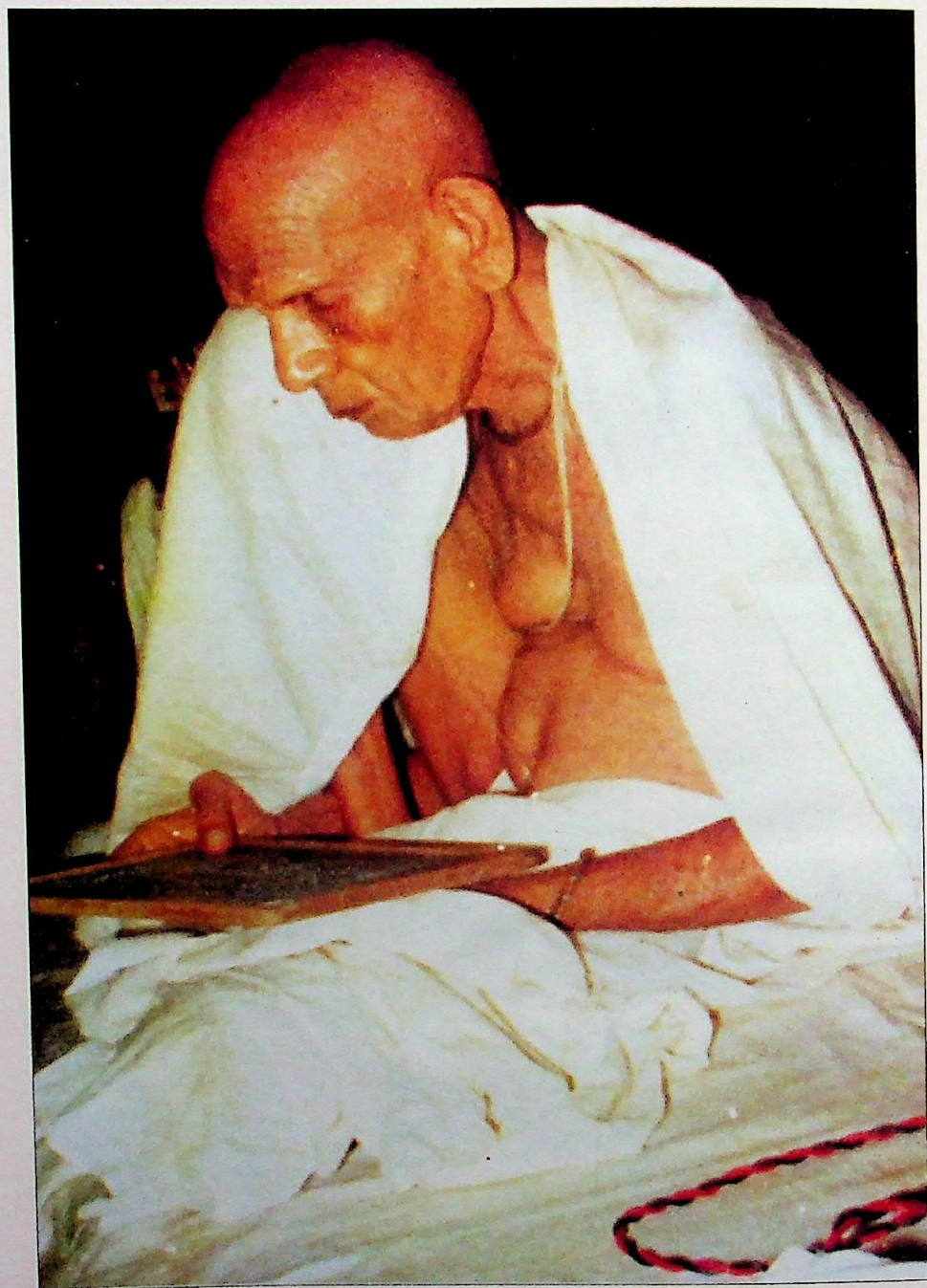
पूज्य गुरुदेव स्लेट पर लिखी भक्तों की
प्रार्थना पढ़ते हुये।
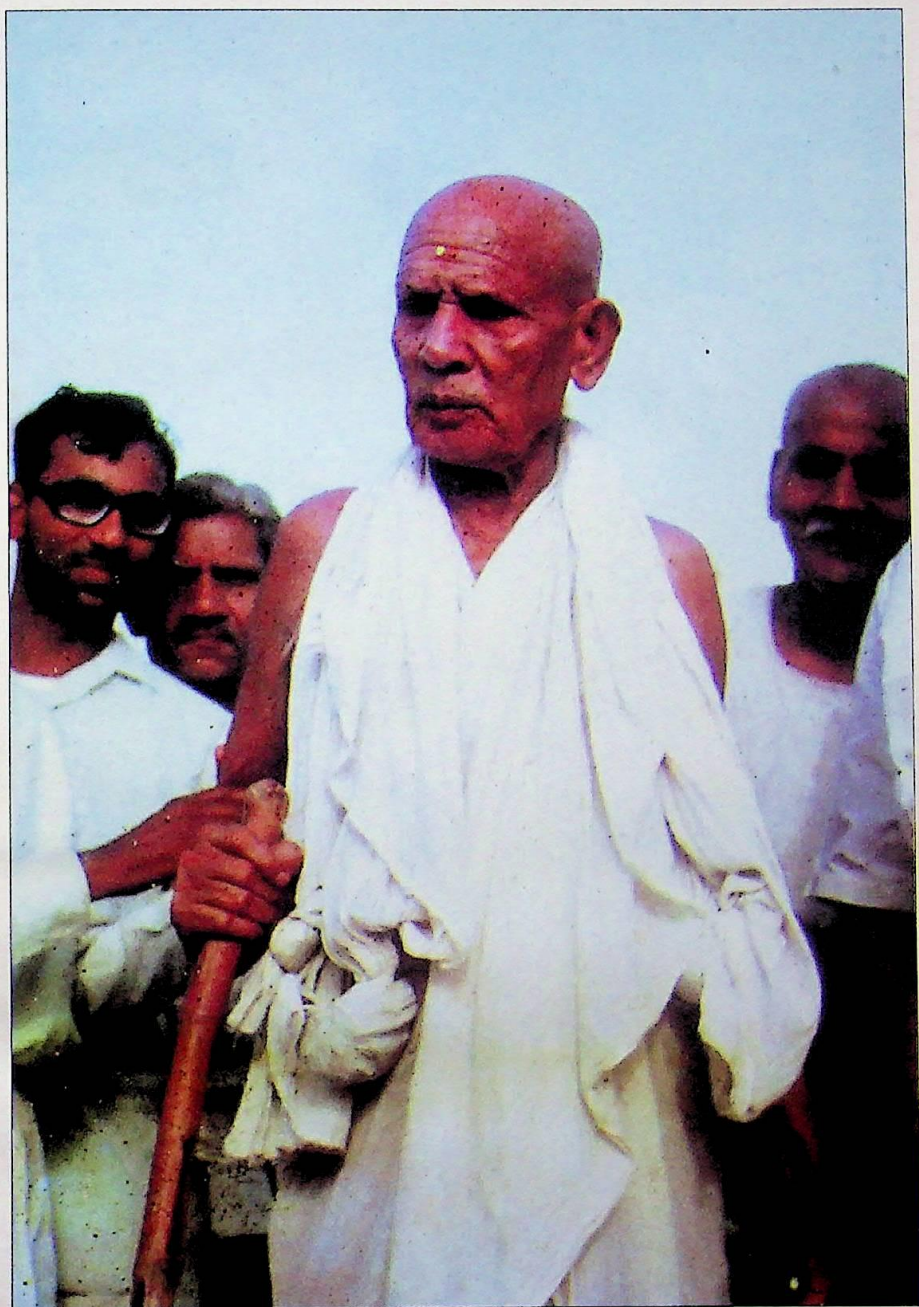
श्री परमहंस राम मंगल दास जी
यात्रा पर।
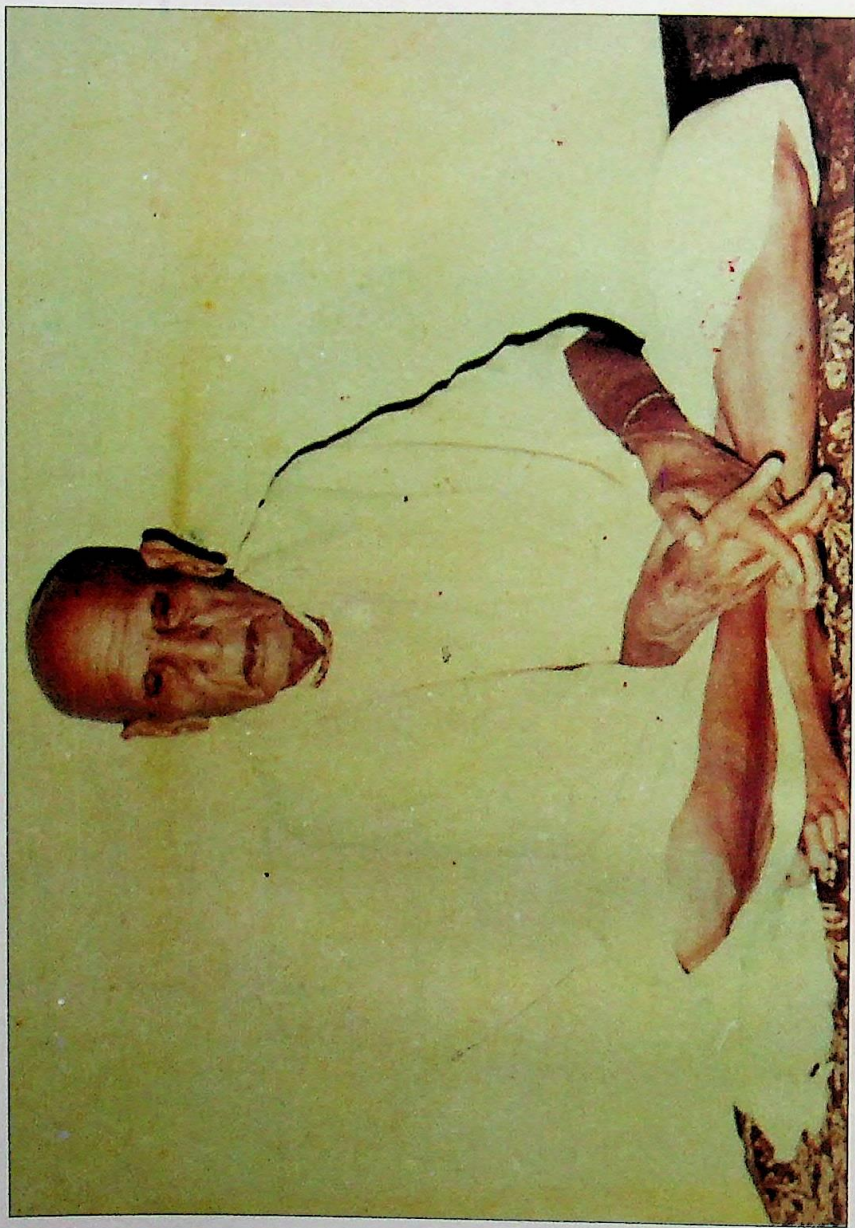
पूज्य श्री गुरुदेव।

पूज्य श्री परमहंस राम मंगल दास जी अपने निवास स्थान बजरंग भवन
में अपनी छोटी बहिन के साथ।
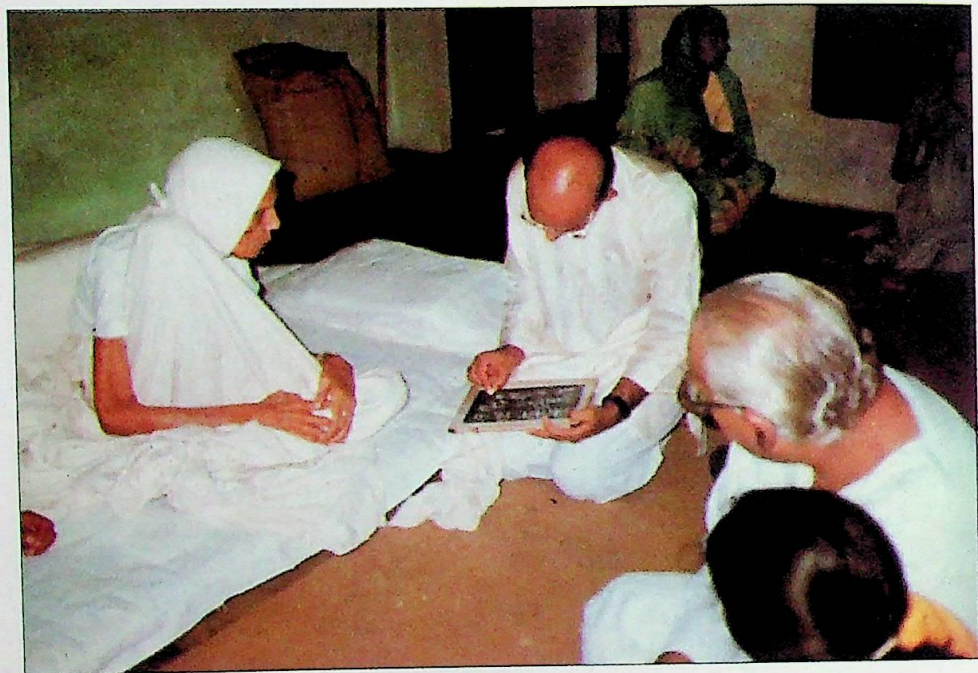
गुरुदेव के लिए भक्त स्लेट पर प्रश्न लिखते हुये।
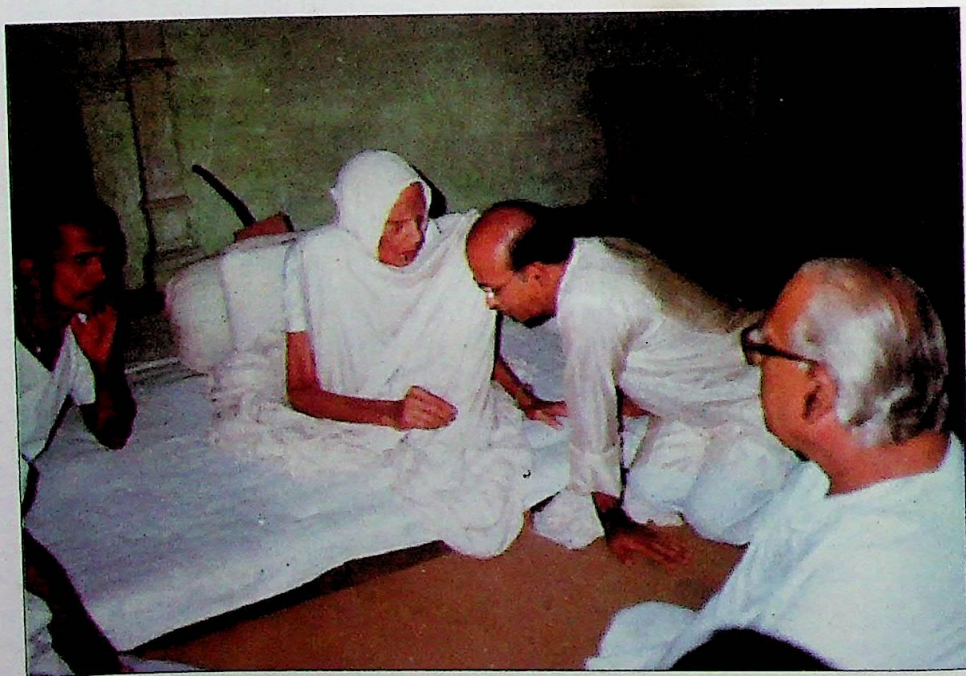
गुरुदेव प्रश्न का उत्तर देते हुये।

गुरुदेव भक्त को उपदेश देते हुये।
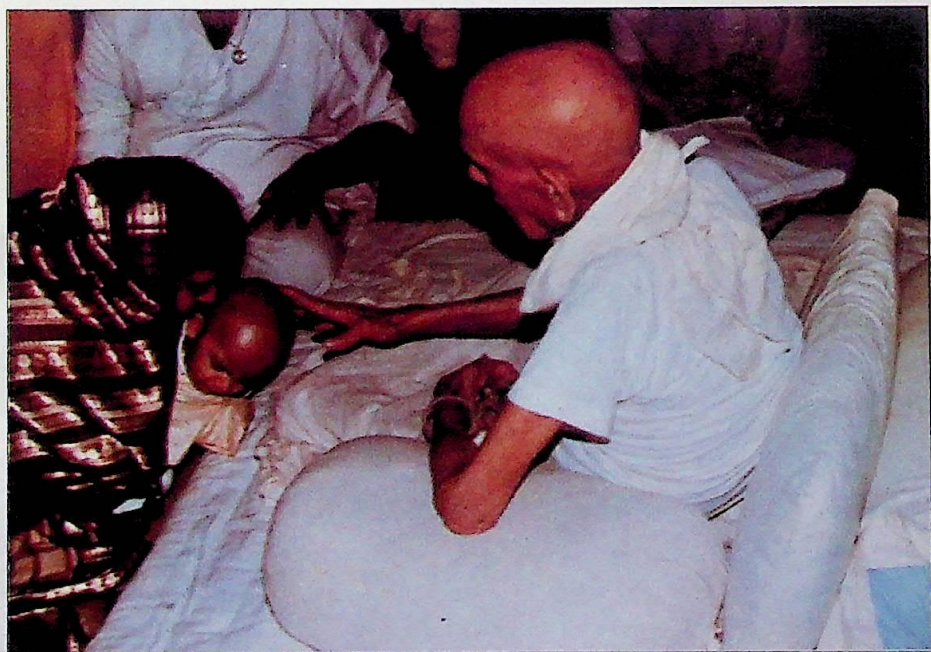
गुरुदेव बालक को आशीर्वाद देते हुये।

गुरुदेव शान्तिमय।

१ ।। श्री अंधे शाह जी ।।

पदः- अविद्या आलस की अबला।
बिरलै भक्त बचत कोइ या से बड़ी कठिन सबला।
जल भोजन हलका करै साधक तब न करै हमला।
अंधे कहैं शांति तब होवै जिमि फूटै तबला।४।

(२)

पदः- जो कोई राम नाम रस छक्का।
सतगुरु से सब भेद जानि के जियति गया ह्वै पक्का।
माया चोर शाँत ह्वै बैठे मारि सकत नहिं धक्का।
ध्यान प्रकाश समाधी होवै मिटै भाल के अँक्का।
सिया राम की झाँकी सन्मुख साथ में तीनौ कक्का।५।

सुर मुनि नित्य खिलावैं लाय के दिब्य दही के थक्का।
नागिनि जगी चक्र सब डोलैं खिले कमल के फंक्का।
अनहद सुनै अमी रस चाखै बहुत गगन ते झक्का।
अंधे कहैं जे चेतत नाहीं जानौ उन्हैं उचक्का।
अन्त त्यागि तन नर्क को जावै कौन सुनै तँह हंक्का।१०।

(३)

चौपाईः- कहु जग काहि न व्यापी माया। चिंता साँपिनि काहि न खाया।।
सतगुरु करि सुमिरन मन लाया। माया चिन्ता मारि भगाया।।
ध्यान प्रकाश समाधि में धाया। कठिन कुअँक को जियति मिटाया।।
हर शै से धुनि नाम कि पाया। सन्मुख राम सिया छबि छाया।।
सुर मुनि मिलैं लिपटि उर लाया। अनहद सुनि अमृत को पाया।५।

नागिनि जगी चक्र घुमराया। चौदह लोक घूमि फिरि आया।।
सातौं कमलन उलटि खिलाया। विविधि भाँति की खुसबू पाया।।
तन छूटा साकेत सिधाया। राम रूप ह्वै बैठक पाया।।
तुलसीदास ने सत्य सुनाया। कोटिन में कोइ यह पद पाया।।
शांति दीनता से मथु काया। अंधे कहैं करैं प्रभु दाया।१०।

शेरः- करै सतगुरु भजन जानै बड़ा आनंद आता है।
कहैं अंधे वही मानै जो प्रभु के रंग में माता है।।

(४)

पदः- परकास लै धुनि नाम सन्मुख रूप सीता राम का।
रोयाँ न बाँका कर सकै अंधे कहैं नर बाम का।
सतगुरु से जप बिधि जानि कै सरकस लखौ हरि नाम का।
अंधे कहैं तन छोड़ि कै बिश्राम लो निज धाम का।४।

(५)

पदः- दुनियाँ बाइसकोप तमाशा।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो यह तन बारि बताशा।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि कर्म शुभाशुभ नाशा।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हर दम निरखौ पासा।
अनहद सुनो पियो घट अमृत सुर मुनि मिलैं हुलासा।५।

नागिनि जगै चक्र सब घूमैं सातौं कमल बिकासा।
भाँति भाँति की गमकैं निकलैं दोनो स्वरन से खासा।
अन्त छोड़ि तन राम धाम ले होय न गर्भ में बासा।
यह मोहिं शिव बजरंग बतायो भा पूरन विश्वासा।
अंधे कहैं जियति जो जानै सो सच्चा हरि दासा।१०।

(६)

पदः- करो शुक्र हर वक्त खोदा का कुफुर तजो मत करना।
रहेम बिना हैवान बशर है खलक के गम हो परना।
ईमान ठीक इन्सान वही जियतै में होगा तरना।
कहैं अंध शाह यह संग लीक मुरशिद कहेता सो करना।४।

(७)

पदः- अहँकार है नर्क क द्वारा। ता में लागे कपट केंवारा।।
ताके संग में क्रोध कसाई। काम चमार बड़ा दुखदाई।।

धोबी लोभ संग में घूमै। मोह दुष्ट हर दम मुख चूमै।।
चिंता कर में लिहे है फाँसी। दौरि दौरि जीवन ले गाँसी।४।

माया पटकि बैठि जाय सीने। कहै भजन प्रभु का नहि कीन्हे।।
कलपन यम पुर में दुख पावो। कौन सहायक तँह बतलावो।।
आलस नींद कि यह सब सामा। बिरलै बचत कोई नर बामा।
सतगुरु करि हरि नाम क ध्यावो। अंधे कहैं गरभ नहि आवो।८।

(८)

पदः- बिरलै सफ़ा मिलत कोइ मन का।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै सो सब चोरन हन का।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से हो झनका।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख निसि औ दिन का।
सुर मुनि मिलैं शीश कर फेरै पाटे गर्भ के रिन का।
अंधे कहैं अंत निजपुर हो फेरि न जग में सनका।६।

(९)

पदः- जदां कदा सुमिरत नर नारी ऐसा सुमिरन ठीक नहीं।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै चोर सकत तब छीक नही।
नाम रूप परकास समाधी बिना मिटत बिधि लीक नहीं।
अंधे कहैं अन्त साकेत में जाय महा सुख कीक नहीं।४।

(१०)

पदः- बिना हरि के सुमिरे गिरे जा रहे हैं।
उधर को है जाना किधर जा रहे हैं।
जे आलस में माते बिगर जा रहे हैं।
यहाँ अच्छी अच्छी ग़िज़ा खा रहे हैं।
नरक की ग़िज़ा देखि चिल्ला रहे हैं।५।

बिना जाने औरों को समुझा रहे हैं।
नरक में तड़फ़ते औ मुँह बा रहे हैं।
यहाँ हँसते गाते औ हर्षा रहे हैं।

नरक एक पल की न कल पा रहे हैं।
यहाँ पाप करते औ अठिला रहे हैं।१०।

गहे जम नरक को लिहे जा रहे हैं।
जे सतगुरु से जप बिधि लिये ध्या रहे हैं।
बचन पै गये तुलि मजा पा रहे हैं।
धुनी नाम परकास लै धा रहे हैं।
सिया राम सन्मुख में छबि छा रहे हैं।१५।

लिखा बिधि का जियतै में कटवा रहे हैं।
मुनी देव मिलने को नित आ रहे हैं।
पकड़ि दोनों कर उर में लिपटा रहे हैं।
जगी नागिनी चक्र घुमरा रहे हैं।
कमल सब खिले कैसे गमका रहे हैं।२०।

सभी लोक देखैं औ बतला रहे हैं।
खटा खट सुनैं तार जो आ रहे हैं।
यह है मार्ग सूरति शबद गा रहे हैं।
कहैं अंधे तन तजि अवध जा रहे हैं।२४।

(११)

पदः- मोसे काहे करत हरि रोज रारि।
कर मेरो पकरि कलाई मुरकावत बहियाँ गले दोऊ डारि डारि।
दधि मोरी खाय मटकिया फोरत सारी के करते तार तार।
घर के लोग हमैं रिसियाते आप से गई मैं हारि हारि।४।

चितवत ही मन मोहि लेत हौ बसि में किह्यौ बृज नारि नारि।
चोली को नोचि डगर में फेंकत मुरली से हँसि मारि मारि।
दौरि गांसि मटकावत फिरि फिरि ठौर ठौर से टारि टारि।
अंधे कहैं सखी प्रभु प्रेम में शर्म भर्म दियो जारि जारि।८।

(१२)

पदः- बल बुद्धी आयू हरे पाप महा है दुष्ट।
तन पीड़ा ताकत हरे कैसौ होवै पुष्ट।

नर नारिन को दुख हरै भक्ति ज्ञान की गुष्टि।
अंधे कह हरि भजन बिन अन्त में जम हों रुष्ट।४।

(१३)

पदः- जलसा तमाशा हर समय घट ही में अपने हो रहा।
सतगुरु से मारग जान लो क्यों मोह नींद में सो रहा।
अनमोल तन श्वाँसा समै बेकार ही में खो रहा।
आखिर में फिर पछितायगा यह पाप बीज को बो रहा।
धर्म धन का नाश कर मल मूत्र में सुख टो रहा।
अंधे कहैं मानो बचन चेतो यहाँ पर को रहा।६।

(१४)

पदः- सतगुरु से मारग जानि कै सुमिरन कि बिधि को सीख लो।
अंधे कहैं तन मन जुरै तप धन कि प्यारे भीख लो।
धुनि ध्यान लै परकास सन्मुख राम सीता दीख लो।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनो अमृत गगन में चीख लो।४।

(१५)

पदः- जगत जंजाल में परना महा दुख है महा दुख है।
कहैं अंधे न हो तरना महा दुख है महा दुख है ।
उदर के हेतु धन हरना महा दुख है महा दुख है।
बिना जाने बका करना महा दुख है महा दुख है।
नहीं डरते हमें मरना महा दुख है महा दुख है।
पाप करमों में मन भरना महा दुख है महा दुख है।६।

शेरः- दुष्ट करम जे जगत में वै सब हैं जंजाल।।
अंधे कह भेजैं नरक नाना कष्ट कराल।।

(१६)

पदः- सच्चा भक्त कहीं तन त्यागै सीधे निजपुर जाता है।
अंधे कहैं कह्यो श्री सतगुरु सार वस्तु का ज्ञाता है।

शांति दीनता प्रेम से सुमिर्यौ राम सिया का ताता है।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप रंग में माता है।४।

जियति तरा औ तारै जीवन जो ग़रीब बनि आता है।
देखै सुनै औ जानै सब कुछ निज को खूब छिपाता है।।
जहाँ रहै तहँ सब तीरथ हैं मुद मंगल का दाता है।
अटल भया विश्वास भाव तब कौन उसे बिलगाता है।८।

शेरः- चारि ध्यान पर अजपा चार। चारेउ पर विज्ञान हैं चारि।
सतगुरु कह्यौ लीन उर धारि। अंधे कहैं मिल्यो सुखसार।।

(१७)

पदः- सतगुरु करु बाँको बाँको, सुमिरन करु माँ को माँ को।
गहि चोर न ढांको ढांको, बिधि लेख को आँको आँको।
सुनु नाम क चाको चाको, संग राम क ताको ताको।
याँ को है काको काको, सुनि भरिये हाँको हाँको।
जो प्रेम में पाको पाको, अंधे कहैं माँ को माँ को।५।

सोरठाः- सुनिये भक्तौं बैन, धारन उर में कीजिये।
अंधे कह हो चैन माँ को सुमिरन कीजिये।।

(१८)

पदः- भजन करि देखा करौ सिय राम।
सतगुरु करि सब भेद जान लो सुमिरौ आठौं याम।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि कर्म दोऊ हों खाम।
अंधे कहैं अंत साकेत में जाय करो विश्राम।४।

(१९)

पदः- दै गारी जम डाटैं पीटैं फेरि बनावैं अरुण सिखा।
कहैं बोलिये कुकरूँ कूँ अब तेरे करम में यही लिखा।
सतगुरु किहे न हरि को सुमिरे अधरम का फल दिहो दिखा।
अंधे कहैं नर्क दुख खानि कि लीला ध्यान में जाय लखा।४।

(२०)

पदः- अंधे कहैं जोड़ौ जोड़ौ हरि भजन से नाता जोड़ौ।
मोड़ौ मोड़ौ मोड़ौ गहि चोरन का मुख मोड़ौ।
फोड़ौ फोड़ौ फोड़ौ चट भरम का भाड़ा फोड़ौ।
छोड़ौ छोड़ौ छोड़ौ जग आना जाना छोड़ौ।४।

(२१)

पदः- अंधे कहैं कातौ कातौ सतगुरु करि नाम को कातौ।
मातौ मातौ मातौ तन मन से प्रेम में मातौ।
सातौ सातौ सातौ दिन बृथा में बीतत सातौ।
गातौ गातौ गातौ अनमोल श्वाँस नर गातौ।४।

शेरः- चकल्लस हो रही घट में बिना अनुभव न कोई जानै।
कहे अंधे करे सतगुरु भजे हरि को सोई जानै।।

(२२)

पदः- कथा औ कीर्तन पूजन पाठ सुमिरन कहीं होता।
कहीं पर यज्ञ भँडारा कहीं सेवा कहीं न्योता।
कहीं पर रहस औ नाटक कहीं ठेठर सनेमा है।
कहीं नौटंकी रामायण कहीं गीता क नेमा है।
कहीं गाना बजाना है कहीं व्याख्यान ठाना है।५।

कहीं कुस्ती औ कसरत है कहीं बहु अस्त्र सिखलाते।
कहीं सुर मुनि की बैठक में जाँय जो जिसके मन भाते।
कहीं मूरति की पूजा है मंदिर अस्तुति से गूँजा है।
कहीं तीरथ करने जाते कहीं पर लौटे आते हैं।
कहीं पीते न खाते हैं समाधी ही में माते हैं।१०।

कहीं औतार सब दर्शैं शीश पर आय कर परसैं।
कहीं सरिता उजागर हैं कहीं तालाब सागर हैं।
कहीं पर बाग फुलवारी कहीं पर कूप सुखकारी।
कहीं काली घटा छाई कहीं दामिन दमक आई।
कहीं पर ताल तलियाँ हैं कहीं बापी व गलियाँ हैं।१५।

कहीं पक्के बने पोखरा कहीं सुन्दर भवन दोहरा।
कहीं नाले बिना पानी कहीं पर बह रहा पानी।
कहीं पच्छिन का गाना है सुनो कैसा सुहाना है।
कहीं बादल गरजते हैं कहीं पर खुब बरषते हैं।
कहीं जादू के मंतर हैं कहीं टोना व जंतर हैं।२०।

कहीं बातों का लटका है कहीं दारू का चुटका है।
कहीं तटका उतारा है कहीं नोटिस प्रचारा है।
कहीं सरकस को करते हैं कहीं बहु रूप धरते हैं।
कहीं अस्तुति को करते हैं कहीं निन्दा पसरते हैं।
कहीं मारैं औ फटकारैं कहीं रोते को चुपकारैं।२५।

कहीं माँगै लगा बेहरी भरे रुप्यों से कसि केहरी।
कहाँ तक को करै बरनन जो घट में कार जारी है।
देखतै बन पड़ै भक्तौं यह जलसा बहुत भारी है।२८।

(२३)

पदः- होहु सुमिरन बिन बंटा धार।
सतगुरु करि जप भेद जानि लो मानो बचन हमार।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि हर शै में रंकार।
अनहद बाजै सुर मुनि गाजै पीजै अमृत धार।४।

नागिनि चक्र कमल सब जागैं महक करैं मतवार।
सिया राम हर दम रहैं सन्मुख अद्भुद अजब सिंगार।
माया मृत्यु काल दूरहि ते देखि के खाँय पछार।
अंधे कहैं अन्त निजपुर हो छूटै गर्भ क भार।८।

(२४)

पदः- तन मन जब एक में गलत नहीं, तब तक कोइ कारज फलत नहीं।
जब तक हरि नाम पै कलक नहीं, अन्धे कहैं सतगुरु मिलत नहीं।।

(२५)

पदः- अव्वल नम्बर असली नाम। सतगुरु करि सुमिरो बसु जाम।
ध्यान समाधि प्रकास तमाम। सन्मुख षट झाँकी रहै आम।

सुर मुनि संग बिराजैं बाम। जै जै कहैं भयो गुण ग्राम।
अंधे कहैं चेति लो धाम। समय स्वाँस अन्मोल है चाम।४।

(२६)

पदः- मन मजा करो हरि नाम मिला अब चोरन की क्या हस्ती है।
धुनि तेज दसा लै रूप लखौ अन्धे कहैं छाई मस्ती है।
भगि गया द्वैत नहि होय मौत सम ह्वै गो जंगल बस्ती है।
मुरशिद करि चेति के जियति तरो वरना यह माया फँसती है।४।

(२७)

पदः- हँसती हँसती सँग में लसती हर दम जीवन चसती है।
खँसती खँसती गँसती कसती जाय नर्क में ठँसती है।
कुस्ती लड़ती पेंच से मरती चलत न नेकौ हस्ती है।
जुरती फुरती सुरती ऐसी अंधे कहैं न भसती है।४।

(२८)

पदः- पहुँचि जाय त्रिपाद बिभूति में सतगुरु करि जो सुमिरन सीखे।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर दम राम सिया को दीखे।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद छिन छिन में अमृत रस चीखे।
नागिनि चक्र कमल सब जागै जियतै मरै बासना लीखे।
अंधे कहैं दीनता के बिन परमारथ की मिलत न भीखे।
नर तन पाय के जे नहिं चेतैं ते दोनो दिशि से हो तीखे।६।

(२९)

पदः- मन हमका अब धमकावो ना हम सरनि लेंय श्री सतगुरु की।
तब आय के हमरे कर जुरिहौ, औ बार बार चरनन परिहौ,
तब आपै छूटि जाय घुरकी।।
धुनि नाम प्रकास समाधि परै, तुमको संग लैकर जियति तरै,
फिर कौन गहै हमरी चुरकी।
सन्मुख षट रूप सदा राजै, सुर मुनि नित आय मिलैं. गाजैं,
अंधे कहैं गर्भ न फिर ढुरकी।२।

(३०)

पदः- मन हमका अब कलपावो ना अब सतगुरु करि तुम का पकरब।
तुम कपटी बड़े भगइया हौ, छिन छिन में करत कुदैय्या हौ,
अब नाम के संग तुम का रगरब।
धुनि ध्यान प्रकास समाधि पाय, सन्मुख में झाँकी छइउ छाय,
तब भूलि जाय तुम्हरा अकड़ब।
तब बादशाह हमको कहिहौ, साँचे वजीर बनि के रहिहौ,
अंधे कहैं हटे गर्भ जकड़ब।४।

दोहाः- हितैषी नाम है हरि का देव मुनि नित जिसे भजते।
कहैं अंधे लगै तन मन प्रेम तब तो जियति तरते।।

(३१)

पदः- मन हमका अब बहकावो ना हम ढूढ़ि के सतगुरु करिल्यावै।
तब भागि कहाँ को जावोगे, झकमारि के मम ढिग आवोगे,
लय नाम के संग में लगि जावै।
धुनि ध्यान समाधि औ तेज मिलै, सन्मुख षट झाँकी आय खिलै,
इस अनुपम आनन्द को द्यावै।
सब भँग खेल भयो एक मेल अंधे कहैं खरचब औ खावै।४।

(३२)

पदः- मन हमको अब डेरवावो ना सतगुरु करि तुमका ठीक करब।
जो पाप बजार लगाये हो, चोरन को संग मिलाये हो,
सब को गहि करके पकरब।
परकाश नाम धुनि हो समाधि, मिटि जावै सारी चट उपाधि,
बिधि लेख के ऊपर लीक करब।
सन्मुख षट रूप सदा दरसै, सुर मुनि आवैं सिर कर परसैं,
अंधे कहैं या बिधि नीक करब।४।

(३३)

पदः- मन हमका अब भरमावो ना हम तुम का सतगुरु करिल्यावै।
तुम पाप करम करते फिरते, मम चित्रगुप्त खाता भरते,

अब मानि बैन तलफावो ना हम तुम का सतगुरु करिल्यावै।
तन छिन भँगी, तुम बहु रंगी, या से अब नर्क पठावो ना,
हम तुमका सतगुरु करिल्यावै।
शुभ कामन में जब लागौगे तब संग में मेरे पागौगे,
बस शान्ति रहौ कहीं जावो ना, हम तुमका सतगुरु करिल्यावै।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो, चोरन की हटै उपाधी हो,
उनके दिसि नज़र उठावो ना, हम तुमका सतगुरु करिल्यावै।५।

क्या छबि सिंगार छटा चम चम, षट रूप लखौ सन्मुख हर दम,
तन स्वांस समय अस पावो ना हम तुम का सतगुरु करिल्यावै।
अनहद सुनिये अमृत छक करि, सुर मुनि भेटैं नित हंसि हंसि कर,
तब द्वैत की खाक लगावो ना, हम तुमका सतगुरु करिल्यावै।
नागिनि औ चक्कर कमल जगै, तन त्यागि के अपने धाम भगैं,
अंधे कहैं अब गर्भ में आवो ना, हम तुमका सतगुरु करिल्यावै।८।

(३४)

पदः- बिन ब्याही मरती हैं हौसन ब्याही मन ललचाती हैं।
गौने की मौने ह्वै बैठीं थौने की मुसक्याती हैं।
कबीर दास जी की यह बानी सतगुरु करि जे पाती हैं।
तिन ही को मुद मंगल दोउ दिसि गर्भ न चक्कर खाती हैं।४।

ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप सामने छाती हैं।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि संग बतलाती हैं।
नागिनि जगै चक्र षट डोलैं सातों कमल खिलाती हैं।
अंधे कहैं दया की मूरति दीनन को सिखलाती हैं।८।

(३५)

पदः- मौज उड़ाते हैं क्या राम आप से नेह लगाने वाले।
सतगुरु करि तन सोधन कीन्हा चोर भगाने वाले।
नागिनि जगी चक्र सब घूमैं कमल खिलाने वाले।
सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद अमृत पाने वाले।४।

धुनि परकाश दसा लै करतल कर्म मिटाने वाले।
षट झाँकी हर दम रहै सन्मुख नैन भिड़ाने वाले।
साँति दीनता प्रेम में बूड़े हँसि मुसक्याने वाले।
अंधे कहैं अन्त निजपुर ले गर्भ न आने वाले।८।

(३६)

पदः- अविद्या आलस की नारी।
अगणित रूप धरे है घूमत मन की मति मारी।
सतगुरु करि सुमिरन में लागो द्वैत देव फारी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रं रं रं जारी।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि निरखौ सुख भारी।
हर दम सन्मुख राज रहे हैं अद्भुद छबि प्यारी।६।

सुर मुनि मिलैं पियौ घट अमृत अनहद गुमकारी।
कमल चक्र शिव शक्ती जागै बिधि गति दे टारी।
जियतै मुक्ति भक्ति मिलि जावै दोउ दिसि बलिहारी।
समय स्वाँस तन दुर्लभ पायो चेतौ नर नारी।
अंधे कहैं अन्त पछितैहौ नर्क में हो ख्वारी।
यही भजन मोको बतलायो हनुमत त्रिपुरारी।१२।

(३७)

पदः- सतगुरु किया सुमिरन सिखा इस मार्ग पै जो आ गया।
ध्यान करि तन को मथा मन संग में लिपटा गया।
चोर सब डरि चुप भये उनको पकड़ि जकड़ा गया।
परकास लै औ नाम धुनि रग रोम सब भन्ना गया।४।

सिया राम राधे श्याम कमला बिष्णु सन्मुख छा गया।
नागिनि जगा चक्कर नचा कमलन क उलटि खिला गया।
अनहद सुना अमृत पिया सुर मुनि से नित बतला गया।
अन्धे कहैं तन छोड़ि के जग से वही बिलगा गया।८।

दोहाः- सतगुरु के ढिग जाइये द्वैत क ताला खोल।
अन्धे कह मानो बचन मिलै वस्तु अनमोल।।

(३८)

पदः- अन्धे कहैं निज कर्म धर्म पै ख्याल रखना चाहिये।
मल त्यागि के ह्वै फर्च फिर असनान करना चाहिये।
लघुशंका के हित पात्र में जल को ले जाना चाहिये।
हाथ पग फिर धोय करके कुल्ला कराना चाहिये।
परसाद जब बनि ठीक हो प्रभु को पवाना चाहिये।
पाय जब सरकार हों तब जल पिलाना चाहिये।६।

दीनता औ शान्ति से बिन्ती सुनाना चाहिये।
होंय अन्तर तब वही परसाद पाना चाहिये।
यह सीख भक्तों नारि नर सब को सिखाना चाहिये।
तन मन बचन से जीवों को हरि में लगाना चाहिये।
दुख देख कर के दया करि उसको समुझाना चाहिये।
तन त्यागि के हरि धाम को चढ़ि यान जाना चाहिये।१२।

(३९)

पदः- बसुदेव देवकी नन्द जसोदा नन्दन।
सतगुरु करि निरखौ जियति कटै भव फंदन।।
आनन्द कन्द बृज चन्द रहैं नित संगन।
सिंगार छटा छबि अद्भुद दुति है अंगन।।
क्या मन्द सुगन्ध समीर होत नहिं खन्डन।
ह्वै जावै बृज भरि मस्त बनाइत रंगन।।
मुरली की मधुरी तान अजब क्या ढंगन।
राधे जी बाँई तरफ़ खुशी कि उमंगन।।
दीनन के दीना नाथ प्रेम के बन्धन।
पतितन पर दाया करत हरत दुख द्वन्दन।५।

सुर मुनि सब जिनका करत रहत हैं बन्दन।
पारथ के संग में रन में हाँक्यो स्यन्दन।।
द्रुपदी का बनिगे चीर भई नहिं नंगन।
डरि गयो दुशानन सब तन भयो अपंगन।।

मीरा जी, ध्रू, प्रह्लाद नाम रंग रंगन।
तिन की हरि रच्छा करी करै को तंगन।।
अगणित पापी औ भक्त जीति जग जंगन।
श्री हरि पुर पहुँचे जाय गर्भ नहिं टंगन।।
चेतो नर नारी बनि के सच्चे मंगन।
तब तुम को मिलि जाय भीख नाम का कंगन।१०।

बाँटौ दीनन लखि बढ़ै कभी नहिं खंगन।
तप धन अनमोल है रतन न होवै भँगन।।
मन चोरन काबू करो उठाइ उछंगन।
अन्धे कहैं हर दम मगन बचन सहै व्यँगन।१२।

(४०)

पदः- जगत में आय नर नारी जे अपनी मृत्यु को भूलैं।
कहैं अंधे तरैं कैसे बिना सुमिरन गरभ झूलैं।
नात परिवार धन धरती सान औ मान में फूलैं।
दिवस निसि चैन नहिं मिलती बासना मारती हूलैं।४।

दोहाः- मन चंगा जब ह्वै गयो कठरा में है गंग।
श्री रैदास के वाक्य गहि अंधे ह्वै गे चंग।।

(४१)

पदः- करि देव तिलाँजुलि सान मान। जियतै बनि जावो भाग्यवान।।
अन्धे कहैं सच्चा यही ज्ञान। सुर मुनि संग होवै खान पान।।
परकास नाम धुनि लय औ ध्यान। अनहद की सुनिये बिमल तान।।
अमृत पीजै घट में उफ़ान। सन्मुख हो झाँकी षट महान।।
नागिनि औ चक्कर कमल जान। निज निज थानन से हो उथान।।
तन त्यागि के चलिये चढ़ि बिमान। श्री अवध में राजौ हरि समान।६।

दोहाः- सर कमान ते मारते नित प्रति मन औ चोर।
अंधे कह ठंढे भये तोर मोर नहि सोर।।
पायन में बेड़ी पड़ी, हाथ हथकड़ी जान
अंधे कह शुभ करम बिन मिल्यो नर्क दुख खान।२।

(४२)

पदः- है खुला हुआ दरबार दीन बनि जाय सो पावै भिच्छा।
अंधे शाह कहैं सतगुरु दै दीन हमै यह सिच्छा।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप जौन तब इच्छा।
अन्त त्यागि तन निजपुर पहुँचौ चढ़ि के हरि की रिच्छा।४।

(४३)

पदः- सतगुरु कृपा भरपूर जब बीजक पढ़ा हरि नाम का।
धुनि ध्यान लय परकाश सन्मुख रूप सीता राम का।
नर तन क फल जियतै मिलै अनमोल जो शुभ काम का।
अंधे कहैं तन तजि चला मारग गहा निज धाम का।४।

(४४)

पदः- जीव ब्रह्म माया का खेल। जानो सतगुरु से करि मेल।
मन को मारि के होहु अकेल। सारे चोर होंय तब फेल।
खोलि केवारी घर में पेल। नाम खजाना लेहु सकेल।
कर्म शुभाशुभ जावैं बेल। अन्धे कहैं ब्रह्म से मेल।४।

(४५)

पदः- सतगुरु से सुमिरन बिधि जानै सीतापुर सो जाइ सकै।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप सामने छाइ सकै।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि संग बतलाइ सकै।
नागिनि जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल खिलाइ सकै।
शान्ति दीनता प्रेम से भक्तों दीनन लखि बरताय सकै।
अंधे कहैं त्यागि तन जक्त में फेरि न चक्कर खाइ सकै।६।

(४६)

पदः- सीताराम के पुर तब पहुँचै जब सतगुरु से मेल करै।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप सामने आय ठरै।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि के पग शीश धरै।
कमल चक्र शिव शक्ती जागै सो भक्तै जियतै में तरै।

सब लोकन का देखि रजिस्टर करै मुआइना मौज परै।
अंधे कहैं भया मुद मंगल पाही छोड़ि के रहै घरै।६।

(४७)

पदः- सतगुरु के चरनन की रज का प्रेम से नैनन दे अंजन।
अंधे कहैं होय मन काबू चोरन का तब हो गंजन।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि सन्मुख भव के भय भंजन।
अंधे कहैं अंत निज पुर चलि बनि के बैठि गया सज्जन।४।

(४८)

पदः- करो सतगुरु भजो हरि को मिलै तब नाम का मंजन।
ध्यान धुनि नूर लै होवै हटै तब सब मनोरंजन।
छटा सिंगार छबि अनुपम सामने होंय भव भंजन।
कहैं अंधे जियति जानै मिटै तब गर्भ का गंजन।४।

(४९)

पदः- सतगुरु करो मारग मिलै तुम ख्याल पर माते चलो।
धुनि ध्यान लय परकास सन्मुख रूप छबि छाते चलो।
अमृत पिओ अनहद सुनो सुर मुनि से बतलाते चलो।
नागिनि जगा चक्कर चला कमलन को उलटाते चलो।
भक्त औ भगवान के जस को सदा गाते चलो।
अंधे कहैं निज धाम को चढ़ि यान हर्षाते चलो।६।

(५०)

पदः- सतगुरु करो पावो पता धुनि नाम पर माते रहौ।
ध्यान लय परकास सन्मुख रूप को छाते रहौ।
सुर मुनि मिलैं अनहद सुनौ अमृत को नित पाते रहौ।
नागिनि जगा चक्कर नचा कमलन को उलटाते रहौ।
दीनता औ शान्ति हो उसको भि बतलाते रहौ।
अंधे कहैं तन छोड़ि कै चढ़ि यान पर जाते रहौ।६।

(५१)

चौपाईः- जै श्री सिया राम भगवाना। सुर मुनि सब के प्राण समाना।।
जै राधिका कृष्ण भगवाना। सुर मुनि सब के प्राण समाना।।
जै कमला बिष्णू भगवाना। सुर मुनि सब के प्राण समाना।।
जै गिरिजा शंकर भगवाना। राम नाम का बाँटत दाना।४।

हर से आप बन्यो हनुमाना। सुर मुनि सबहुन कीन्ह बखाना।
अन्धा अपढ़ रहा अज्ञाना। दोउ स्वामी मिलिं दीन्ह्यो ज्ञाना।।
राम नाम की जाप को ठाना। सारे चोरन कीन्ह पयाना।।
सिया मातु के ढिग लै जाना। बिनय कीन्ह पायन मन माना।८।

(५२)

पदः- जानो भक्तों सीतापूर, सीतापूर, सीतापूर, सीतापूर, आ हा हा हा,
आ हा हा हा, आ हा हा हा, आ हा हा हा।१।
सतगुरु से जप भेद ले आवौ, मन को नाम के ऊपर लावौ,
सारे चोरन मारि भगावौ, बज्र केवार खोलि घर जावौ,
सीतापूर, सीतापूर, सीतापूर, सीतापूर, आ हा हा हा, ०।२।

ध्यान प्रकास समाधि में जावै, कर्म शुभाशुभ को कटवावै
हर शै से धुनि नाम की आवै, सन्मुख राम सिया छबि छावै,
सीतापूर, सीतापूर, सीतापूर, सीतापूर, आ हा हा हा, ०।३।
अमृत पान करै हर्षावै, अनहद सुनके तन पुलकावै,
सुर मुनि मिलैं बिहंसि उर लावैं, प्रेम के आँसू दृगन टपकावैं,
सीतापूर, सीतापूर, सीतापूर, सीतापूर, आ हा हा हा, ०।४।

नागिनि जगै चक्र घुमरावैं, सब कमलन को उलटि खिलावै,
गमकैं भाँति भाँति की आवैं, अंधे कहैं गरभ नहिं आवै
सीतापूर, सीतापूर, सीतापूर, सीतापूर, आ हा हा हा, ०।५।
रूप रंग हरि का बनि जावै, दिब्य सिंहासन बैठक पावै,
अजर अमर मुख बोल न आवै, कोटिन भानु की द्युति तन छावै,
सीतापूर, सीतापूर, सीतापूर, सीतापूर, आ हा हा हा, ०।६।

(५३)

पदः- भक्तौं यह दुनियां है झुंट्ठी।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानै तब आवै यह मुट्ठी।
माया माता नेक न बोलैं कबहूँ होंय न रुट्ठी।
अन्धे कहैं देंय तब आशिष ठोकैं दोउ कर पुट्ठी।४।

(५४)

पदः- भक्तौं यह दुनियाँ है कच्ची।
माया द्वैत कि फांस लिहे कर बांधि के निज रंग रच्ची।
या से जीव उबरि किमि जावै छोड़ै नर्क कि गच्ची।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै राह मिलै तब सच्ची।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप सामने टंच्ची।
अन्धे कहैं हारि तब जावै बनि बैठे जिमि बच्ची।६।

दोहाः- शान्ति दीनता को गहे, रहै न द्वैत क लेश।
अन्धे कह हरि को भजे, अवध में होवै पेश।।

(५५)

पदः- मन चोर रात दिन कूटैं, सब सुकृत जीव का लूटै।
छिन छिन में लारी घूटैं, अस जीव से बाँधे फूटैं।
तन छोड़ नर्क में जूटैं, किमि जग चक्कर से छूटैं।
अन्धे कह नहिं टूटैं, जे द्वैत पै ठोंके खूँटैं।४।

शेरः- आदत बुरी है जिसकी तन तजि नरक में खिसकी।
बोया है बेल बिष की, अन्धे कहैं वह उसकी।।

दोहाः- हरि सुमिरन जे जन करैं, कट जाँय सारे क्लेश।
अन्धे कह साकेत में, तन तजि होवैं पेश।।

(५६)

पदः- बिना मन को मारे भजन सुख कहाँ है।
कहैं अंधे निज कुल क धरना नहाँ है।

तजैं तन चलैं नर्क में दुख महाँ है।
यही बात श्रुति शास्त्र सुर मुनि कहा है।४।

(५७)

पदः- सुमिरन पाठ कीरतन पूजन कथा कहत हैं प्रेम नहीं।
नर नारी करैं मान बड़ाई छूटत नेम औ टेम नहीं।
चम चम चम चम चमकत देखौ देत सुगन्धी हेम नहीं।
अन्धे कहैं बिना मन जीते भक्तों दोउ दिशि क्षेम नहीं।४।

(५८)

पदः- लिखत सुनत औ पढ़त बतावत शब्द शब्द सब सच्चे।
अन्धे कहैं प्रेम नहिं नेकौ दोनो दिशि ते कच्चे।
जन्मत मरत बिना सतगुरु के पड़े दुःख के गच्चे।
नाम रूप परकास समाधी जियति मिलै तब सच्चे।४।

(५९)

पदः- मन को मारि चलौ साकेत।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानो जियति जाहु अब चेत।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि कर्म शुभाशुभ रेत।
अमृत पियौ सुनो घट अनहद सुर मुनि आशिष देत।४।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हंसि हंसि गोदी लेत।
रहौ मगन तब सदा एक रस बिगड़ सकै नहिं नेत।
अन्धे कहैं भजन में सच्चा वा से करिये हेत।
जैसा करौ वैस फल पाओ तन तुम्हार है खेत।८।

दोहाः- राम नाम सुमिरन करै, राम नाम का ध्यान।
अन्धे कह भक्तों वही, देत भक्ति औ ज्ञान।।

चौबोलाः- देत भक्ति औ ज्ञान महा परकाश दिखावै।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख छावै।
अनहद घंट में सुनौ अमी रस पान करावै।
षट चक्कर जगि चलैं कमल सातों लहरावैं।४।

स्वरन से उड़ै तरंग मस्त मन बोल न आवै।
जागि नागिनी चलै संग सब लोक लखावै।
सुर मुनि आवैं मिलन बिहँसि के हृदय लगावैं।
अन्धे कहैं सुनाय छोड़ि तन अवध सिधावै।८।

(६०)

पदः- हर शै से धुनि राम नाम की ररंकार भन्नाय रही।
अनहद सुनौ अमी रस पीकर सुर मुनि संग बतलाय रही।
नागिनि जगी चक्र षट नाचैं सातों कमल फुलाय रही।
निकलै महक स्वरन से अद्‌भुत छिन छिन में हर्षाय रही।४।

कर्म शुभाशुभ तेज समाधि में जाय के छार कराय रही।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि की छबि सन्मुख छाय रही।
मरी बासना नाम रूप की सूरत शब्द समाय रही।
अन्धे कहैं छोड़ि तन भक्तौं रूह अवधपुर जाय रही।८।

(६१)

दोहाः- जिस पतरी में खात हैं, उसी में करते छेद।
वै पापी घटिहा बड़े, नेक न आवत खेद।।
तन मन ते नहिं मानते, जात कुजात क भेद।
अन्धे कह यमपुर बसैं, भाषत सुर मुनि बेद।२।

(६२)

पदः- बाहर सर्प चलता है टेढ़ा, बिल में सीधा जाता है।
दुष्ट नारि नर नेक न मानैं उनके मन नहि भाता है।
अन्त छोड़ि तन नर्क जात जहँ रोये नहीं सेराता है।
अन्धे कहैं सत्य यह बानी चारों युग बिख्याता है।४।

दोहाः- जब से सृष्टी हर रची, जीव रहे चकराय।
अन्धे कह सतगुरु बिना कौन सकै निबुकाय।
जनमें बिन संसार में निजपुर सकत न जाय।
अन्धे कह सतगुरु बचन कर्म भूमि कहवाय।

सतगुरु नाम क दान दे सुमिरै तन मन लाय।
अन्धे कह मानो सही कर्म भर्म मिटि जाय।६।

(६३)

पदः- बनि दीन इस जग में रहौ, कटु बैन सुनि करके सहौ।
सतपंच में हर दम रहौ, परपंच को जियतै दहौ।
सतगुरु बचन को कसि गहौ, तब गर्भ में काहे ढहौ।
अन्धे कहै सब सुख लहौ, बातों में परि कर मत बहौ।४।

(६४)

पदः- सतगुरु से सुमिरन बिधि जानो। तब निज में निज को पहिचानो।।
परकास नाम धुनि लै सानो। सिय राम सामने में तानो।।
सुर मुनि संग नित हो बतलानो। अनहद सुनि अमृत पी पानो।६।

नागिनि का होवै हुसकानो। सब लोक घूमि फिर तन आनो।।
षट चक्कर का हो घुमरानो। सातौं कमलन का उलटानो।।
अन्धे कहैं जियतै लखि मानो। तब छूटै जग का चकरानो।१२।

(६५)

पदः- मन दुष्ट को दुष्टन के ढिग से अब हटाना ही भला।
सतगुरु से सुमिरन सीख लो तब लागिहै तेहरी कला।
आज तक इन सबौं ने जीवन को जग में है खला।
ध्यान धुनि परकास लय लो बन्द हो सब का गला।४।

रेफ़ बिन्दू दया सिन्धू का सबी जां झल झंला।
हर समय हर शै से रं रं पाप ताप को दे जला।
अद्वैत की लै धूरि तन में जिस भगत ने है मला।
अन्धे कहैं उस ने जियत ही गर्भ के दुख को तला।८।

(६६)

पदः- सतगुरु से सुमिरन सिख करके तन मन ठरि प्रेम से ध्यावति है।
धुनि ध्यान प्रकास समाधी हो सन्मुख षट रूप को छावति है।

सुर मुनि भेटैं अनहद सुनते अमृत पी कर हर्षावति है।
खुशबू की मस्ती मस्त करै मुख से कुछ बोलि न पावति है।४।
नागिनि जागै सब चक्र चलैं कमलन को उलटि खिलावति है।
नैनन से शीतल नीर झरै क्या रोम रोम पुलकावति है।
तन थर थरात है मन्द मन्द कर पग औ शीश हिलावति है।
अंधे कहैं तन तजि जाय वतन फिरि गर्भ बास नहि आवति है।८।

दोहाः- खर की गठियन में भयो घाटा नौ मन क्यार।
अन्धे कह मानो सही धोबी करत पुकार।।

(६७)

पदः- सतगुरु करै सो जानै हर शै से होती है धुनी।
अजपा यही है भक्तौं जियतै में पावै जो सुनी।
परकास ध्यान समाधि सन्मुख रूप भेटैं सुर मुनी।
अनहद बजै अमृत पियै बिधि लेख को देवै भुनी।
नागिनि जगा चक्कर चला कमलन खिलावै ह्वै गुनी।
अन्धे कहैं दोनो दिसा बलिहार निज कुल में चुनी।६।

(६८)

पदः- बर्त प्रार्थना औ त्यौहार। कर्म धर्म सारे ब्योहार।
बिना प्रेम के हैं बेकार। अन्धे कहैं मिलत नहि सार।
प्रेम नदी गंभीर अपार। सुर मुनि सब यह कह्यो पुकार।
मुक्ति भक्ति का यह दातार। नाम रूप का जानो तार।४।

(६९)

पदः- अन्धे कहैं सो है मगन जिसकी लगी हरि से लगन।
तन से मगन, मन से मगन घर से मगन बन से मगन।
दुख से मगन सुख से मगन मुख से मगन रुख से मगन।
मारे मगन जारे मगन डारे मगन हारे मगन।
डाटे मगन छाटे मगन काटे मगन पाटे मगन।५।
नंगे मगन रंगे मगन बंगे मगन टंगे मगन।
छीने मगन दीन्हे मगन सीने मगन पीने मगन।

लोटे मगन पोटे मगन सोंटे मगन झोंटे मगन।
सुनते मगन धुनते मगन गुनते मगन चुनते मगन।
लखते मगन चखते मगन भखते मगन भगते मगन।१०।

बैठे मगन पैठे मगन ठैठे मगन ऐंठे मगन।
हंसते मगन गंसते मगन फंसते मगन बसते मगन।
चुपके मगन लुक्के मगन ढुक्के मगन पुक्के मगन।
भूखे मगन सूखे मगन खाँसे मगन प्यासे मगन।
ताके मगन झाँके मगन हांके मगन ढाँके मगन।१५।

खेले मगन रेले मगन मेले मगन तेले मगन।
जल से मगन थल से मगन बल से मगन पल से मगन।
घूमत मगन झूमत मगन तूमत मगन चूमत मगन।
पहिरे मगन बहिरे मगन ठहरे मगन जहरे मगन।
खटके मगन सटके मगन झिटके मगन पटके मगन।२०।

झोंपड़े मगन क्वठरे मगन संकरे मगन टकरे मगन।
ठढ़िहाये मगन नहवाय मगन नचवाये मगन बिजलाये मगन।
गरियाये मगन दुलराये मगन पहिराये मगन निकसाये मगन।
घूरे पै मगन धूरे पै मगन खौरे पै मगन मौरे पै मगन।
लेपे से मगन छीपे से मगन टीपे से मगन दीपे से मगन।
काँपे से मगन तापे से मगन नापे से मगन चापे से मगन।२६।

(७०)

शेरः- सतगुरु औ मन्दिरों का भक्तों तवाफ़ करना।
अन्धे कहैं न दिल से नेकौ कभी बिसरना।।
आशिष मिलैगी सच्ची जियतै में हो सुधरना।
सेवा से प्राप्त सब हो छूटे गरभ का ठरना।२।

दोहाः- हर हालत में खुश वही जा के आँखी कान।
अन्धे कह मानो सही सुर मुनि कीन्ह बखान।।

(७१)

पदः- मुरशिद मुरीद मन भयो एक पोशीदा बातें होन लगीं।
अन्धे कहैं सूरति शब्द जमी मूरति सन्मुख में प्रेम पगी।
कहना है सुलभ करना कर्रा बड़े सुकृत से कोइ इस रंग में रंगी।
तन छोड़ि चला निज वतन खिला फिर गर्भ नर्क में नहीं टंगी।४।

चौपाईः- है परमारथ का गुप्त ज्ञान। सतगुरु करि बैठो धरो ध्यान।
अन्धे कहैं तन मन हो समान। खुलि जावैं भक्तौं नैन कान।।

चौपाईः- परस्वारथ में तन मन लगाय। अन्धे कहैं निज को दे मिटाय।
दोनो दिसि वाकी हो बधाय। तन त्यागि के हरि के धाम जाय।।

दोहाः- सेवा करना कठिन है कहव सुनव आसान।
अन्धे कह सतगुरु बचन वेद शास्त्र परमान।।

(७२)

पदः- तकदीर औ तदवीर में विश्वास ही का मेल है।
अन्धे कहैं सतगुरु करै सो जान ले क्या खेल है।
सूरति शब्द एक तार हो तब जीव ब्रह्म से मेल है।
तन छोड़ि के निज धाम ले कटि गई गर्भ की जेल है।४।

(७३)

पदः- हरि सुमिरन चुक्का जम दें मुक्का बड़े कुचक्का लिहे रुक्का।
पकड़ैं जिमि हुक्का मुख में थुक्का कहैं उचक्का हो तुक्का।
सतगुरु करि झुक्का मिला सलुक्का बजै धुधुक्का अति सुख का।
आलस गहि फुक्का भयो हलुक्का खाय मुनुक्का हरि रुक्का।
कहैं अन्ध तुरुक्का तन मन बुक्का नेक न पुक्का गा घुक्का।
पहिरे नहि टुक्का मस्त बनुक्का हंसि हंसि कुक्का सुख दुख का।६।

दोहाः- मन बूढ़ा नहि होत है तन बूढ़ा ह्वै जाय।
अन्धे कह मन बूढ़ हो सो निज घर को जाय।।
तन तो मर मर जात है मन नहि मरता मान।
अन्धे कह मन जाय मरि महा सुखी सो जान।२।

(७४)

पदः- जानौ राम नाम की बात।

सतगुरु से सुमिरन बिधि लेकर धरो प्रपंच पै लात।

जाय एकान्त में ध्यान जमावौ तब लागैगी घात।

मन औ नाम की होय एकता क्या रँहटा भन्नात।

तेज समाधि कर्म दोऊ मेटै जो शुभ अशुभ कहात।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख में ठहरात।६।

हर दम रहैं न अन्तर होवैं जो सब के पितु मात।

सुर मुनि आवैं हिये लगावैं कहैं भया मम भ्रात।

अनहद सुनो पिओ नित अमृत घट सागर हहरात।

नागिनि जगै चक्र सब बेधै सातौं कमल फुलात।

निर्भय मस्त गस्त सब छूटी एक रस दिन औ रात।

अन्धे कहैं अन्त तन तजि कै चढ़ि बिमान घर जात।१२।

शेरः- रग रोम जोड़ हाड़न हर शै से नाम होता।

अन्धे कहैं सो जाने घट में लगावै गोता।।

(७५)

पदः- राम नाम का लेहु शबाब। अन्धे कहैं न रहै अजाब।।

चोर बने घर बैठि शराब। सब आपै ह्वै जाँय लबाब।।

जियति में लूटौ खूब शबाब। चित्रगुप्त नहि लेहिं हिसाब।।

अन्त छोड़ि तन घर हो जाब। निर्भय कोई न देय जबाब।८।

(७६)

पदः- बाँधौ राम नाम का बिल्ला।

सतग़ुरु से सुमिरन बिधि जानो पहुँचौ ऊँचे टिल्ला।

ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप सामने खिल्ला।

कर्म भर्म औ शर्म छूटि गई नाम क लाग्यो किल्ला।

सुर मुनि नित प्रति लेंय बलँय्यां कबहूँ करैं न गिल्ला।

अन्धे कहैं अन्त निज हो छूटि गयो सब हिल्ला।६।

दोहाः- राम नाम का राज्य है, राम नाम सिरताज।
अन्धे कहैं सतगुरु करो सुमिरौ सब दुख भाज।।

(७७)

पदः- मानुष का तन पाय के जग में करत अकाज।
अन्धे कह चेतत नहीं संघ में सबै समाज।
अनेक जन्म के सुकृत ते मानुष तन हरि दीन।
अन्धे कह सुमिरन करो ह्वै जावौ लव लीन।४।

अन्धे कह सतगुरु करो लेव नाम धुनि चीन्ह।
नाहीं तो पछितावगे जम लेहैं जब छीन।
बाँधि नर्क में डारि दें भोगो कर्म अनुसार।
अन्धे कह सुमिरन करो जियति होय निस्तार।८।

दोहाः- हरि सुमिरन जे जानिगे ते सच्चे हुशियार।
अन्धे कह फंदे कटैं जियति भये भव पार।।

(७८)

पदः- बचि करि चलिये, बिलरिया दौरी।
सब सामान फ़ौज संग में लिहे जंग करत बरजोरी।
इस तन भीतर दस खिड़की हैं पहुँचत नौ की ओरी।
आगे जाय सकै नहिं भक्तौं नेक न मन को औरी।४।

या की पकड़ि से जो बचि जावै सो गहि कर फिरि कौरी।
होय अपंग भागि नहि पावै बैठि रहै एक ठौरी।
या की काट छाँट है ऐसी मन मति कर दे बौरी।
अन्धे कहैं बिना सतगुरु के धरै पाप सिर मौरी।८।

दोहाः- जैसे चंवरी साधि कै जोर से देव घुमाय।
कछु माछी महि गिर मरैं कछु बचि कै उड़ि जाँय।।
जिनको माया लेय गहि नर्क को देहि पठाय।
सतगुरु किरपा जे बचें अन्धे कह हर्षाय।।

(७९)

पदः- राम नाम खुद लेत तलासी।

सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो छोड़ो कपट औ हाँसी।

मन को चोरन से लै लेवै अपने संग में ठाँसी।

पाँचों को तब मारि निकारै कौन सकत तब गाँसी।४।

ध्यान प्रकास समाधि धुनी हो कर्म शुभाशुभ नाशी।

हर दम राम सिया रहैं सन्मुख और न दूजा भासी।

अन्धे कहैं अन्त निज पुर हो छूटै गर्भ की फाँसी।

अजर अमर हरि रूप रंग हैं वँह के सबै निवासी।८।

(८०)

पदः- साठि घड़ी के बीच में काल पकड़ि ले आय।

अन्धे कह सुमिरन बिना नर्क देय पहुँचाय।

प्रभु भेजा जिस हेतु तोहि तौन करत तू नाहिं।

अन्धे कह बिरथा जनम शुभ कर्मन बिन जाहिं।४।

दोहाः- मेरी मेरी कहत सब काया तेरी नाहिं।

अन्धे कह हरि भजन बिन काल कलेवा खाँहि।।

(८१)

पदः- करम की भूमी नर बाम की यह करोगे जैसा मिलैगा वैसा।

अन्मोल तन स्वाँस समय मिला है हटावो रैसा न हो अनैसा।

धुनि नाम लै तेज रूप सन्मुख कहौगे कैसा मगन हमेसा।

कहैं यह अन्धे निज कुल का पेसा करैं जे ऐसा चलैं निज देसा।४।

(८२)

पदः- दयामय नाम सब कहते दया सरकार हो जाये।

अधम जीवन को भी स्वामी ज़रा दीदार हो जाये।

करैं फिर पाप नहिं नेकौं जियति निस्तार हो जाये।

ध्यान परकाश लय धुनि नाम की एक तार हो जाये।

पियै अमृत बजै अनहद मधुर गुमकार हो जाये।५।

जगै नागिन चलैं चक्कर कमल फुलवार हो जाये।
उड़ैं गमकैं बहुत परकार की मतवार हो जाये।
मिलैं सुर मुनि करैं जै जै संग खेलवार हो जाये।
छटा पितु मातु की सन्मुख लखैं निशिबार हो जाये।
कहैं अन्धे तजै तन जब अवध घर बार हो जाये।१०।

दोहाः- राम नाम के स्वाद बिनु जीव भयो बरबाद।
अन्धे कह उनसे भली मल औ मूत्र की खाद।।

(८३)

पदः- अन्धे कहैं इस तन का कोई करार नाहीं।
सतगुरु करो भजो हरि इस जग में सार नाहीं।
धुनि नाम तेज लय हो जहँ पर विचार नाहीं।
सुर मुनि मिलैं लिपट कर बोलैं गँवार नाहीं।४।

सन्मुख में राम सीता सुख का शुमार नाहीं।
तन त्यागि लो अचलपुर जँह से निसार नाहीं।
नर तन को पाय जिसने लूटा बहार नाहीं।
तन तजि गया है यमपुर पाया शिकार नाहीं।८।

शेरः- सतगुरु करै भजै हरि जग जाल से वह निकलै।
अन्धे कहैं तजै तन वह फिर न गर्भ फिसलै।
सतगुरु करि सुमिरन करो होवै ठीक औ ठाक।
अन्धे कह हरि भजन बिन नर तन फीक औ फाक।४।

(८४)

पदः- सुमिरो राम नाम अनमोल।
सतगुरु से जप की बिधि जानौ भागैं चोरन टोल।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से रहि बोल।
सुर मुनि मिलैं सुनौ घट बाजा अमृत पियौ ढकोल।
सिया राम की झाँकी सन्मुख ताकौ आँखैं खोल।
अन्धे कहैं अन्त निज पुर हो फेरि न जग में डोल।६।

(८५)

पदः- संयोग वियोग लगा रहेता, यह सृष्टि क खेल बना रहेता।
दुख सुःख में भक्त जो सम रहेता, अन्धे कह सो शिव पद लहेता।।

दोहाः- भीतर बाहर सम रहै, यही भाव का अर्थ।
अन्धे कह मन नहिं मिलै जानौ यही अनर्थ।।

(८६)

पदः- घाटि करते हैं जे प्राणी, बड़े पापी हैं अभिमानी।
पड़ैं जब नर्क की खानी, करैं तब कैसे मन मानी।
कढ़ैं मुख हाय की बानी, कहैं यम दूत अज्ञानी।
मिलें सतगुरु न सुख दानीं, कहैं अन्धे है हैरानी।४।

दोहाः- घटिहन के घाटा पड़ै, नर्क में बोरे जाँय।
अन्धे कह हर दम दुखी, पकरि निचोरे जाँय।।

(८७)

पदः- सार भौम बाजत पढ़ि जग में सार वस्तु को नहि जाना।
वाक्य ज्ञान में प्राण नहीं है या से होय न कल्याना।
मान बड़ाई देत गिराई हर दम गाँसे अभिमाना।
सतगुरु करै मिलै तब मारग मुक्ति भक्ति पावै ज्ञाना।
अन्धे कहैं अन्त निजपुर ले छूटै जग आना जाना।
अपने कुल की रीति यही है सुर मुनि वेद शास्त्र माना।६।

(८८)

पदः- जब रसना नाम को रटन लगी तब मन भी काबू होवेगा।
कहैं अन्ध शाह सतगुरु किरिपा तब गर्भ में आय न रोवेगा।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो तहँ दोनो कर्मन खोवेगा।
सन्मुख पितु मातु की झाँकी हो तन त्यागि अवध सुख सोवेगा।४।

(८९)

पदः- गज गामिनी युवती सखी राधे के संग में जा रहीं।
श्याम को देखा झपट दौरीं पकड़ि बतला रहीं।

मन मोहनी मूरत में सूरति लगि गई मुस्क्या रहीं।
अन्धे कहैं धन्य भाग सब की जियति यह सुख पा रहीं।४।

(९०)

दोहाः- गोस्वामी तुलसी दास जी रामायन में गाय।
कालहिं कर्महिं इश्वरहिं मिथ्या दोष लगाय।।
आँखी कान खुलैं जबै सो इस भेद को पाय।
अन्धे कह सतगुरु बिना जीव रहे चकराय।२।

चौबोलाः- जीव रहे चकराय चलत नहिं कछु हुशियारी।
बिन सतगुरु के बने रहत मन की मति मारी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि होत करारी।
हर शै से सुनि लेहु रहत है रं रं जारी।४।

हर दम सीता राम रहैं सन्मुख सुख भारी।
सुर मुनि नित प्रति मिलैं कहैं तुम्हरी बलिहारी।
अन्त त्यागि तन चलौ रहौ साकेत मंझारी।
अन्धे कहैं सुनाय छूटि गई जग की पारी।८।

(९१)

पदः- नर तन पाय भज्यो नहि हरि को वाको जग चकराना होगा।
सतगुरु करै भजन बिधि जानै अवध जाय नहि आना होगा।
अमृत पियै सुनै घट बाजा मन्द मन्द मुशक्याना होगा।
नागिनि जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल खिलाना होगा।
नाम प्रकाश समाधि धुनी रं हर शै से सुनि पाना होगा।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख में छबि छाना होगा।६।

निर्भय औ निर्वैर एक रस बिधि का लिखा कटाना होगा।
सुर मुनि नित प्रति मिलन को आवैं प्रभु जस संग में गाना होगा।
भाँति भाँति के दिब्य पदारथ सुर शक्तिन गृह खाना होगा।
जौन लोक से तार आइहै वहाँ को ध्यान से जाना होगा।
ऐसा स्वागत कहत बनै नहिं प्रेम के लोर बहाना होगा।
अन्धे कहैं जियति जो जानै सो दोनो दिशि दाना होगा।१२।

(९२)

पदः- कौनिहुँ जनम अवध बस जोई। राम परायन सो नर होई।।
सतगुरु से सुमिरन बिधि जानै। नाम बीज ले बोई।।
नाम कि धुनि परकास समाधी, पाप ताप दे धोई।
सिया राम की झाँकी हर दम, सन्मुख वाके होई।
अन्धे कहैं अन्त निजपुर हो, फेरि गर्भ नहिं रोई।
यह पद पढ़ै सुनै गुनि लेवै, चतुर सयानो सोई।६।

(९३)

पदः- जनम भूमि प्रभु पुरी सुहाई। उत्तर दिशि सरयू सुख दाई।।
मंजन ते निर्मल ह्वै जाई। अन्धे कहैं न जग चकराई।।
सतगुरु से सुमिरन बिधि पाई। तन मन प्रेम से नित प्रति ध्याई।।
ध्यान प्रकाश समाधि में जाई। जियतै कर्म रेख कटवाई।४।

अनहद की हो बिमल बधाई। हर शै से हरि नाम सुनाई।
कुंडलिनी षट चक्र जगाई। सातौं कमल खिलैं फर्राई।।
सुर मुनि के संग हरि जस गाई। निर्भय औ निर्बैर कहाई।।
सिया राम छबि सन्मुख छाई। को बरनै मुख बोल न आई।८।

(९४)

पदः- चारि खानि जग जीव अपारा। अवध तजै तन नहिं संसारा।।
यह श्री तुलसीदास पुकारा। रामायन लिखि कीन्ह प्रचारा।।
पढ़ि सुनि गुनि चेतैं नर दारा। ते नहिं आवैं जगत मंझारा।।
सतगुरु करै भजै निशिबारा। दिब्य दृष्टि तब होय अपारा।४।

राम नाम धुनि हो एकतारा। हर दम सीताराम निहारा।
सुर मुनि मिलैं करैं जै कारा। कहैं भये सियराम का प्यारा।।
इस शरीर में अवध संवारा। धन्य धन्य धनि धनि करतारा।।
शाँति दीन हो उसे सुतारा। अन्धे कहैं मगन निशि बारा।८।

(९५)

शेरः- परीक्षा फल में सच्चा है सो कच्चा हो नहीं सकता।
कहैं अन्धे बचन मानो गरभ में रो नहीं सकता।।

नतीजा उसका है अव्वल जो हरि के भजन में लागा।
जानि मारग को सतगुरु से समै को नहिं किया नागा।।
ध्यान धुनि नूर लै पायो रूप सन्मुख में है तागा।
कहैं अन्धे तजा तन जब तो चट साकेत को भागा।३।

दोहाः- दया धर्म छोड़ै नहीं जब तक तन में श्वाँस।
अन्धे कह तन छोड़ि कै पावैं हरि पुर बास।।

(९६)

पदः- राम भरथ औ लखन शत्रुहन गबुहारे रोवैं न चुपावैं।
श्याम गौर अति कोमल सुन्दर सुर मुनि सब दर्शन को धावैं।
नृप दशरथ सब रानी पुर जन निरख निरख के हिये हुलसावैं।
पलंगन पर सब मचल रहे हैं आंखैं मीचैं गोद न आवैं।
पुर बासी गृह बासी बोलैं नजर लागि या से दुख पावैं।५।

दशरथ जी सुमन्त को भेज के श्री वशिष्ट जी को बुलवावैं।
बैठ बिमान पै श्री वशिष्ट जी रनवासै को तुरत सिधावैं।
देखैं बालक व्याकुल चारों नैनन से अश्रुवन झरि लावैं।
श्री गुरु मंत्र पढ़ैं कुस कर ले सब के तन पर फूक लगावैं।
सिर से पग तक कुस को फेरैं तुरतै कुँवर हँसैं मुख बावैं।१०।

माता लालन को कर गहि के श्रीगुरु के चरन परावैं।
सब के सिर पर कर गुरु परसैं आशिष देंय मगन गुन गावैं।
सतगुरु करै भजै निशि बासर नाना बिधि के खेल दिखावै।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि चारौं रूप सामने छावैं।
अमृत पियै सुनै घट बाजा नागिनि चक्र कमल जगि जावैं।
अन्धे कहैं अन्त श्री अवध में पहुँचि जाँय फिर गर्भ न आवैं।१६।

दोहाः- इस्बन्ध हींग की धूप दै नैनन काजल देय।
माथे अनखा टीप के राम राम कहि लेय।।
नजर न लागे बालकन सुबह शाम करि देय।
गृह की अबलायें सबै अन्धे कह सिखि लेंय।२।

(९७)

पदः- जाने दे मो को नन्द के ललनवां।
दूध दही सब दिन हौ लूटत संग सखा क्या बाँधे ढंगनवां।
गृह के सब मो पै रिसियाते मानत काहे न मेरो बचनवां।
तन मन श्वांसा समै आपका बार बार मैं चूमौं चरनवां।४।

बिन देखे कल पल भर नाहीं प्राण के प्राण हमारे सजनवां।
नाम आपका प्रेम से सुमिरैं ते धुनि सुनि छबि लखति द्रगनवां।
भीतर बाहर आपको देखै तिनहिं पवावत मिसिरी मखनवां।
अन्धे कहैं सखी सब हरि के प्रेम में हर दम रहतीं मगनवां।८।

(९८)

पदः- सतगुरु चरन कमल बलिहारी। सतगुरु बचन लीन उर धारी।
सतगुरु दरशन से सुख भारी। जियतै जीति लीन जग पारी।
सतगुरु करि सुमिरौ मन मारी। कर्म कि रेख देहु चट टारी।
अन्धे कहैं सुनौ नर नारी। तन तजि बैठो अवध मंझारी।४।

(९९)

पदः- काल कर्म ईश्वर को बिरथा काहे दोष लगाय रहे।
पुरस्वारथ में बड़ी शक्ति सतगुरु यह भेद बताय रहे।
धुनि ध्यान प्रकास समाधी हो षट रूप सामने छाय रहे।
अनहद बजै छकौ घट अमृत सुर मुनि उर लिपटाय रहे।४।

नागिनि जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल फुलाय रहे।
भाँति भाँति की गमकैं स्वरन ते निकलैं सुख उमड़ाय रहे।
राम कृष्ण औ बिष्णु लोक से तार खटा खट आय रहे।
अन्धे कहैं गुनो तो भक्तौं सब के हित पद गाय रहे।८।

(१००)

पदः- श्याम बिहारी मोरन के संग नाचैं माखन खाँय खिलावैं।
मुरली कूकि राग को छेड़त शब्द शब्द स्पष्ट सुनावैं।
सखा सखी ब्रज जन सब देखत प्रेम में मुख से बोलि न पावैं।

सुर मुनि नभ ते जै जै बोलैं भाँति भाँति के फूल गिरावैं।
अन्धे कहैं करो अब सतगुरु नाना बिधि के खेल दिखावैं।
अन्त छोड़ि तन हरि पुर राजौ गर्भ बास का दुःख मिटावैं।६।

(१०१)

पदः- श्री कृष्ण चन्द सुख कन्द साथ भृष भान नन्दनी झूलैं।
सब सखियाँ हिलि मिलि देत झूक, क्या मधुर मधुर है उनकी कूक,
वसुदेव सुवन गले डाले हाथ, भृष भान नन्दनी झूलैं।
अन्धे कहैं सुर मुनि नभ में छाय, फेकैं फूलन को कर उठाय,
जै जै की धुनि करि फूलैं।३।

शेरः- श्री हरि कृपा ते सतगुरु मिलते। सतगुरु कृपा ते श्री हरि मिलते।।
अन्धे कहैं जौन नहिं मनते, ते जग जाल क ताना तनते।२।

चौपाईः- अन्धे कहैं करो परस्वारथ। यह तन गुनौ न होय अकारथ।।
पुरस्वारथ करि लो परमारथ। जीति लेव घट में महाभारथ।२।

(१०२)

पदः- हरि सुमिरौ नैनन मूँद मूँद, अन्धे कह घर लो कूद कूद।
आलस को मारो खूँद खूँद, कटि जावै भव की फूँद फूँद।
अमृत घट टपकत बूँद बूँद जे पावत नहिं ते सूद सूद।
जम पकड़ि करैं सिर गूद गूद सब तन करि डारैं जूद जूद।४।

शेरः- प्रेम मुरशिद से जो करिहै वही सच्चा गदा होगा।
कहैं अन्धे जियति तरिहै गरभ रिन से अदा होगा।।

दोहाः- मायावी संसार में सदा रहौ ह्वै दीन।
अन्धे कह तप धन बचे सकै न कोई छीन।।

(१०३)

पदः- सतगुरु का करि ध्यान प्रथम तब सूरति शब्द कि जाप करो।
अजपा यह जाप कहावत है मारग विहंग में धाय परो।
रसना न हिलै माला न फिरै मन नाम के ऊपर लाय धरो।
धुनि सुनिये हर दम हर शै से जो रेफ़ बिन्दु सब से है खरो।४।

परकास से लय में पहुँचि जाव शुभ अशुभ कर्म जँह जाय जरो।
सन्मुख सिय राम लखौ भक्तों कर जोरि प्रार्थना नित्य करो।
जियतै भइ अदा गरभ बाकी नित सुमिरन करना वँह सखरो।
कहैं अन्ध शाह तन त्यागि चलो साकेत में लेहु अपन बखरो।८।

(१०४)

दोहाः- ऐकै अजपा के गहै खुलते चारिउ द्वार।
अन्धे कह सुर मुनि कह्यो सो हम कहा पुकार।।
सतगुरु बिन नहि मिल सकै राम धाम का पंथ।
अन्धे कह पढ़ि सुनि लिखौ भक्तौं कोटिन ग्रंथ।२।

(१०५)

पदः- नाम पै मन को लगावो बिना माला को लिये।
चोर सब तन से भगावो बिना माला को लिये।
रोग रोगिन क वतावो बिना आला को लिये।
अन्धे कहेतें वतन जावो संग बाला को लिये।४।

(१०६)

पदः- कोइ मान बड़ाई आय करै तब फूले नहीं समाते हो।
जब निन्दा कोई लगै करन तब काहे को गुस्साते हो।
यह बंधन भक्तौं बड़ा कठिन अपनै को आप बंधाते हो।
अन्धे कहैं झूठा ज्ञान मानि क्यों कुल में दाग लगाते हो।४।

(१०७)

पदः- सहज नहीं है तरना भक्तौं झरत सदा नौ झरना।
अन्धे कहैं मिलो सतगुरु से तब हो पार उतरना।।

(१०८)

पदः- चौबिस घंटा में साठि घड़ी।
सतगुरु करि सुमिरौ होहु बरी।
या के अन्दर होत काम सब बिन चेते कैसे सुधरी।
समय स्वांस अनमोल जात है दिन पर दिन भीजत गुदरी।

राम सिया हर दम रहैं सन्मुख नाम कि धुनि तन मन में ठरी।
अन्धे कहैं अन्त निजपुर हो सब के हित कही बात खरी।६।

(१०९)

पदः- मम कुल राम भजन की रीती।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो छूटि जाय अनरीती।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि राम सिया से प्रीती।
औसर चूकि अन्त पछितैहो वयस जात है बीती।
शान्ति दीनता प्रेम से भक्तों लागि जाव करि धीती।
अन्धे कहैं अन्त निज पुर हो जग बारू की भीती।६।

दोहाः- मौत और भगवान से डरता सो जानो सुखदाई है।
अन्धे कहैं जौन नहि डरता सो मानो दुखदाई है।।
अन्दर से जो उठत हैं उलटे सीधे शब्द।
सो हम मुख से कहत हैं और न जानै मद्द।२।

चौबोलाः- और न जानै मद्द हद्द बेहद्द कहाता।
नाम रूप लै तेज बिना सतगुरु को पाता।
मुक्त भक्त सो जान एक ही मद्द से नाता।
अन्धे कहैं सुनाय कढ़त यह मुख से बाता।२।

(११०)

पदः- जग में आये गे चले सुमिरयौ नहिं हरि नाम।।
अन्धे कह नाचत फिरै मिलत नहीं विश्राम।

चौबोलाः- मिलत नहीं विश्राम कीन जब रद्दी खाता।
कर्मन के अनुसार दुःख सुख रचा बिधाता।।
सकत न कोई छुटाय वहां किस से है नाता।
अन्धे कहैं पुकारि नारि नर सुनिये बाता।२।

(१११)

पदः- आये थे क्या करन लगे क्या करन यहँ पर।
अन्त छोड़ि तन चलो बतावोगे क्या वहँ पर।

शुभ अशुभ कर्म जो होत लिखैं सब जानत वँह पर।
अन्धे कह जस किह्यो सुःख दुख मिलिहै वँह पर।४।

दोहाः- ऐसा कर्म क खेल है कर्मै कहत प्रधान।
अन्धे कह सतगुरु कह्यो सो हम कीन बखान।।
सतगुरु मेरे जानिये शंकर जी हनुमान।
जिनकी किरपा दृष्टि ते खुलिगे आँखी कान।२।

(११२)

पदः- मन मोहन की अँखियाँ कटीली।
जसुमत कैसे कजरा आँजैं प्वटरी जात न छीली।
सुर मुनि मातु की जै जै करते भावावेस रसीली।
अन्धे कहैं लखै सो भक्तौं मन मति नाम नसीली।४।

दोहाः- भक्तन के लरिका रहैं हर दम श्री भगवान।
अन्धे कह सुर मुनि कह्यो वेद पुरान बखान।।

दोहाः- राम श्याम बिष्णु भजो कमला राधे सीता।
अन्धे कहैं मुक्ति भक्ति प्रेम हो पुनीता।।

शेरः- मुरशिद मुरीद सच्चे ते हैं खोदा के बच्चे।
अन्धे कहैं जे कच्चे ते खात फिरते गच्चे।।

दोहाः- पांच चोर तन में रहैं संग में एक छिछोर।
अन्धे कह किस बिधि बचो मानत नहि निशि भोर।।

(११३)

पदः- हमै जो मन को दे देवै भजन की बिधि बतावैं हम।
कथा औ कीर्तन पूजन पाठ सेवा सिखावैं हम।
देव मुनि संग में बैठें अमी रस को पिलावैं हम।
ध्यान धुनि तेज लय पावै रूप षट को लखावैं हम।४।

नागिनी को जगा करके छइव चक्कर नचावैं हम।
कमल सातौं खिला करके महक सुन्दर सुंघावैं हम।
बजै अनहद मधुर घट में उसे हर दम सुनावैं हम।
कहैं अन्धे छुटै तन जब तुरत निज पुर पठावैं हम।८।

(११४)

पदः- वेद औ वेदान्त सारे नाम के अन्दर भरे।
सतगुरु बिना कैसे लखै मन पर कपट पासा परे।
जे जानिगे ते मानिगे जियतै में भव सागर तरे।
अन्धे कहैं पढ़ि सुनि गुनै यह बचन सब के हित खरे।४।

(११५)

पदः- जानि सतगुरु से पूजन बिधि करै सो तो पुजारी है।
लगा तन मन किया जिसने भया जियतै सुखारी है।
प्रगट मूरति से हो करके कहैं तू तो स्वनारी है।
भाव जिसमें नहीं आवै कहैं अन्धे अनारी है।४।

(११६)

पदः- जप जग्य करो सतगुरु से जानि कोइ ऐसा दूसर कर्म नहीं।
सन्मुख में सीताराम लखौ जो सदा एक रस गर्म नहीं।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो जियतै तरि जावो भर्म नहीं।
अन्धे कह तन अनमोल मिला हा तुम को आती शर्म नहीं।४।

(११७)

पदः- श्री हरि भक्तन के रखवारी।
शंख चक्र गदा पदुम लिहे कर धनुष बाण मुरली अति प्यारी।
तीनो शक्ती संग में सोहैं अनुपम छटा बड़ी सुकुमारी।
अन्धे कहैं बिना सतगुरु के कोई न इनको सकत निहारी।४।

(११८)

पदः- पंच होय विश्वास की सूरति करो कमान।
तन का तरकस लेव करि शब्द बनावो बान।
बनो शिकारी ठीक सब नेकौ हुचै न तीर।
अन्धे कह सन्मुख रहैं हर दम सिय रघुबीर।४।

(११९)

पदः- सतगुरु से जानि वरजिस। निज तन में कीजै गरदिंस।।
देखो हरी को सब दिस। सुर मुनि खिलावैं किसमिस।।

चोरन का खेल ढिस मिस। चुप बैठिगे भगी रिस।।
चेतो नहीं तो हो खिस। जमदूत डारिहैं पिस।।
अन्धे कहैं सदा निसि। अति कष्ट गंध का बिस।१०।

(१२०)

पदः- सतगुरु शँभु हनुमत बीर।
जिनहिं सुमिरै बिघ्न बिनसत कटत भव भय पीर।
नाम धुनि परकास लय हो लखत सिय रघुबीर।
कहैं अन्धे वैश्नौ हैं भक्त अति गंभीर।४।

(१२१)

पदः- पकड़ै बिना भजन के हव्वा।
सतगुरु से जप भेद जानि जो तन मन प्रेम में तव्वा।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै से सुनि पव्वा।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि संग में चारेउ दव्वा।४।

हर दम सन्मुख दर्शन देवैं छिन छिन में कहैं बव्वा।
अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि गहि उर लव्वा।
नागिनि जगै चक्र सब नाचैं सातों कमल खिलव्वा।
अन्धे कहैं अन्त निज पुर हो आवा गमन मिटव्वा।८।

दोहाः- अनहद बाजा सुने ते मन बिचलित नहि होय।
अन्धे कह मानो सही छूटि जात है दोय।।

(१२२)

ठुमरी तीन तालः-
बसुदेव सुवन देवकी लाल संग राधे प्यारी डोलैं।
सब सखा सखी करते किलोल, कुँजन में रहि रहि मधुर बोल,
फूलन की कलियन खोलैं, संग राधे प्यारी डोलैं।
अन्धे कहैं धन्य धन उनकी भागि, जो हर दम निरखैं मन को तागि,
करि जियति सुफल लियो चोलैं, संग राधे प्यारी डोलैं।
सतगुरु करि जानो नाम रंग, सुर मुनि सब हर दम रहैं संग,
रहि रहि सब जै जै बोलैं।४।

(१२३)

पदः- मन को बसि करि कितने तरिगे।
सुर मुनि कवि कोविद यहि ऊपर कितनी कविता करिगे।
चंचल चपल चलाक भगैया या संग कितने गिरिगे।
सतगुरु करि जिन पकड़ब जाना संगै लीन निसरिगे।
कितने तनमैता अस कीनी आप को आप बिसरिगे।
अन्धे कहैं भये हैं ह्वै हैं धनि धनि जौन सपरिगे।६।

(१२४)

पदः- इम्तिहान हरि सुमिरन का दै कर के होवै पास वही।
तन मन प्रेम लगा के भक्तौं श्री सतगुरु के चरन गही।
सार्टी फिकेट जाय मिलि वाको सुर मुनि बोलैं खूब सही।
अन्धे कहैं धन्य सो प्रानी जा की हरि ढिग ठीक बही।४।

(१२५)

पदः- करिये हरि सुमिरन का परचा।
सतगुरु से सब भेद जानिके मति करना कहुँ चरचा।
चुपके बैठि हिसाब लगावो पावो पूरा खरचा।
अन्धे कहैं रजिस्ट्री आई अव्वल नम्बर परचा।४।

(१२६)

पदः- पांच प्राण असली हैं पंच। तामें जीव बड़ा सरपंच।
भया आत्मा ठीक वजीर। सब के ऊपर सिय रघुबीर।
अन्धे कहैं जौन दे पीर। वा को सज़ा देत गंभीर।
सतगुरु करि सुमिरै धरि धीर। सो होवै जियतै में वीर।४।

(१२७)

पदः- दया धरम जँह पर नहीं क्या गिरही क्या सन्त।
अन्धे कह वँह से बिलग रहत श्री भगवन्त।।

(१२८)

पदः- अन्धे कहैं नाम कर बाल। पकड़ो होय न बाँको बाल।
ना मानो तो बुरे हवाल। धरि कराह में देंय उबाल।

नाना बिधि के कष्ट कराल। देवैं उन्हैं बना सब ख्याल।
या से सतगुरु करि लो हाल। सुमिरौ मिटै सबै जंजाल।४।

(१२९)

पदः- पाँच चोर मिलि पंच भे मनुवां भा सरपंच।
अन्धे कह मिलि कै सबै जीव को लीन्हे टंच।।
निशि बासर भूखा रहै देत नहीं कोई रंच।
सब मिलि वाको ताकते बैठे ऊँचे मंच।।
सतगुरु करि सुमिरन करो छूटि जाय भव अंच।
अन्धे कह सुनि चेतिये चारि दिवस का ढंच।।

(१३०)

पदः- मनुवा जीव को देता घुड़की।
पाँचों चोरन को संग लै कर करवावत नित कुड़की।
ऐसा दुष्ट नेक नहि मानत जिमि जल में तड़ बुड़की।
छिन छिन में वह सफ़री खोजत मारि मारि के डुबकी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै बात यही है फुरकी।
सारे दुष्ट शान्त ह्वै बैठें राह मिलै निज पुर की।६।

सुर मुनि आय खिलावैं भक्तौं नित प्रति चूरा भुरकी।
हर दम षट झाँकी दें दर्शन नेक सकै नहि मुरकी।
अमृत पिओ सुनो घट अनहद तालैं मधुर सुधर की।
नागिनि चक्र कमल सब जागैं गमकैं लेउ उधर की।
अन्धे कहैं अन्त निजपुर हो जग छूटै जिमि चुरकी।
शान्ति दीन बनि तप धन जोरो सकै न कबहूँ ढुरकी।१२।

(१३१)

पदः- निज इष्ट को भुला कर मिलिहै कहाँ ठेकाना।
साठै घड़ी के अन्दर जम लाइहैं परवाना।
तब क्या कहोगे उनसे चलिहै न कुछ बहाना।
तन से निसारि तुमको इजलास पर बिठाना।
पेसी कराके वँह पर पूछेंगे क्या कमाना।५।

जैसा हिसाब होगा वैसे हुकुम सुनाना।
कर पैर मुख औ आँखैं इन्द्री विषय की काना।
यह सब गवाह होंगे साँचे करैं बयाना।
तब तो भला बतावो होगा कहाँ लुकाना।
सतगुरु से जानि सुमिरन बनि दीन तानो ताना।१०।

धुनि ध्यान नूर लय हो बिधि का लिखा मिटाना।
सुर मुनि मिलैं औ भेटैं बोलैं हृदय जुड़ाना।
नागिनि औ चक्र नाचैं कमलन क हो फुलाना।
महकैं तरह तरह की दोनो स्वरन से आना।
अनहद बजै सुनो घट अमृत क होगा पाना।१५।

पितु मातु सन्मुख राजैं जिनका रचा जहाना।
पढ़ि सुनि के जौन मानै जानो वही है दाना।
हैं बीज मात्र सच्चे धोखे क है जमाना।
तन त्यागि कर के अन्धे कहैं गर्भ हो न आना।
सब के हितार्थ यह पद हमने सही बखाना।१५।

(१३२)

पदः- राम नाम का खाव अचार।
ना यह खट्टा ना यह कड़ुवा मीठा है मजेदार।
सबै मिठाई या में समाईं पावत अजब बहार।
जिन पायो तिन ही बतलायो हनुमत शिव दातार।४।

कितने अजर अमर ह्वै चेते पायो सत्य विचार।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हर दम रहै निहार।
धुनि औ तेज दशा लय करतल कर्म भये जरि छार।
अन्धे कहैं जानि सतगुरु से मन को लेहु सम्हार।८।

चौपाईः- जनमत मरत लखत सुनि जानत। तबहूँ मन यह नेक न मानत।।
सतगुरु करि जे सुमिरन ठानत। ते संघै लै घट में छानत।।
राह मिली तब ताना तानत। अन्धे कहैं बना अब बानत।३।

(१३३)

पदः- नृत्य करत त्रिभुवन भुवाल।
क्रीट मुकुट सोहैं भाल कानन कुण्डल हैं आल।
रूप रंग अति विशाल बंशी की धुनि रसाल।
सखा सखी देत ताल ऊपर करि कर उछाल।४।

बाजन पर रहत ख्याल घुँघरू करते कमाल।
गावत पद चारि ताल बाँधत बोलन पराल।
झुकि झुकि सब हाल हाल नाचत अंगन सँभाल।
निरखै सो हो निहाल अन्धे कहैं कटै जाल।८।

दोहाः- मन जब तक पावत नहीं अपना ठीक मुकाम।
अन्धे कह तब ही तलक घूमत है बदनाम।।

(१३४)

पदः- अन्धे कहैं करो ख्याल सन्मुख त्रिभुवन भुवाल।
ऐसे हरि हैं दयाल पल में करि दें निहाल।
सतगुरु के पग विशाल चूमौ चलि हो कमाल।
खुलि है धुनि बिमल ताल छूटै सब जगत जाल।४।

(१३५)

पदः- नौ सरिता को पैर के मछली दसयें में जब जावै।
करि अस्नान त्रिबेनी भक्तौं बर्त सर्त फल पावै।
अन्धे कहैं बढ़े फिरि आगे मुद मंगल ह्वै जावै।
अन्त त्यागि तन लेय अचल पुर आवागमन मिटावै।४।

(१३६)

पदः- मुरली काहे रहि रहि बाजत।
बिरहा बिथा में सब सखि व्याकुल तू हरि अधर पै राजत।
सुर मुनि सुनि सुनि हिय हर्षावैं फेंकैं सुमन औ गाजत।
अन्धे कहैं धन्य सो प्राणी जो हरि नाम में माँजत।४।

दोहाः- चरन कमल में मन लगै हर दम हरि दर्शाय।
गंगा जमुना सरस्वती अन्धे कहैं नहाय।।

(१३७)

पदः- है मिला नाम क्या बिना दाम सतगुरु की बोलौ बलिहारी।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो सन्मुख में राधे गिरधारी।
शरनि तरनि औ मरनि जियति अन्धे कहैं छूटी भव पारी।
तन छोड़ि चलो निज धाम रहौ दोनो दिसि छाई जैकारी।४।

(१३८)

चौपाईः- जब तक तन में जी दम रहेता। दुख सुख आन पड़े सो सहेता।
सतगुरु से लै नाम को गहेता। अन्धे कहैं महा सुख लहेता।।

शेरः- दुख सुख को सम नहि मानता। पढ़ि सुनि के बातैं तानता।
सो हरि को नहि पहिचनता। अन्धे कहैं अज्ञानता।
दाया धरम जिसमे भरा। अन्धे कहैं वह है तरा।
हरि रूप सन्मुख में खरा। धुनि तेज लै में है ठरा।४।

दोहाः- खुश खुर्रम हर दम रहौ नाम कि धुनि को पाय।
अन्धे कह सुख सार यह इसी से सब प्रगटाय।।

(१३९)

पदः- पढ़ै सुनै औ गुनै भागवत घट के पट खुलि जाते हैं।
नाम कि धुनि परकास दसा लै बिधि के लेख मिटाटे हैं।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख में छबि छाते हैं।
सुर मुनि मिलैं सुनै नित बाजा अमृत पी हर्षाते हैं।
नागिनि जगै चक्र षट घूमैं सातों कमल खिलाते हैं।५।

महकैं अद्‌भुद स्वरन ते निकलै बार बार मुस्क्याते हैं।
आप तरैं औरन को तारैं सच्चे भक्त कहाते हैं।
अन्त छोड़ि तन निज पुर राजैं आवागमन मिटाटे हैं।
अन्धे कहैं बचन सतगुरु के गहि ऐसे बनि जाते हैं।
तिनकी जै जै कार जियति में लोक वेद जस गाते हैं।१०।

(१४०)

पदः- भगवान कि सब मिलि जै बोलो। अन्धे कहैं जै जै जै बोलो।।
भगवान दया सागर की जै। भगवान कृपा सागर की जै।।

भगवान छिमा सागर की जै। भगवान करुणा सागर की जै।।
भगवान दीन बन्धू की जै। भगवान प्रेम सिन्धू की जै।८।

भगवान आपकी की जै होवै। भक्तन के दुख की छै होवै।।
भगवान आपकी जै जै जै। सन्मुख तब झाँकी बै बै बै।।
छूटैं तन मन से मैं मैं मैं। बंधि जाय तार बस तैं तैं तैं।।
सुर मुनि सब बोलैं जै जै जै। निज कुल की कीन्हे सै सै सै।१६।

(१४१)

पदः- सुमिरन बिन आना जाना। पढ़ि सुनि कै कथते ज्ञाना।।
मन माना ताना ताना। अन्धे कहैं यह अज्ञाना।।
वँह चलिहै नहीं बहाना। जब खुलि जाँय आँखी काना।।
तब जानो ठौर ठिकाना। सतगुरु ढिग यह परवाना।८।

(१४२)

पदः- कितने मही पै आय कमा के चले गये।
सतगुरु से जानि मारग सुख पा के चले गये।
सुर मुनि के संग हरि जस गा के चले गये।
अनहद को सुनि के अमृत पा के चले गये।
नागिनि औ चक्र कमल जगा के चले गये।५।

सन्मुख में रूप हरि का छा के चले गये।
धुनि नाम तेज लय में समा के चले गये।
दाया औ धर्म करि के करा के चले गये।
घर घर से बाछ लाय लुटा के चले गये।
पूजन व पाठ करि के कराके चले गये।१०।

जप यज्ञ हवन करि के कराके चले गये।
कीर्तन कथा को सुनि के सुना के चले गये।
पूछा जो दीन बनि के बता के चले गये।
कितने असार सुःख दिखा के चले गये।
कितने तो पाप बीज जमा के चले गये।१५।

कितने तो तीर्थ घूमि घुमा के चले गये।
कितने तो दुख अपार उठा के चले गये।
औरों को दुःख दे के दिला के चले गये।
कितने तो आय बचि के बचा के चले गये।
कितने जमन के हाथ बिका के चले गये।२०।

निज को गँभीर बेल वंधा के चले गये।
कितने सिंहासन चढ़ि के हँसा के चले गये।
परिवार मित्र नात रुला के चले गये।
कितने जवारि ग्राम हँसा के चले गये।
कितने तो डंड बैठक बता के चले गये।२५।

कितने तो ताल ठोंकि लड़ा के चले गये।
कितने तो सूर बीर बढ़ा के चले गये।
कितने तो अस्त्र शस्त्र सिखा के चले गये।
कितने तो जल अगिन में समा के चले गये।
कितने तो मही खोदि लुका के चले गये।३०।

कितने तो शीश काटि कटा के चले गये।
कितने मही पै आय थुका के चले गये।
कितने शरम से मूँह को छिपा के चले गये।
कितने ज़हर को खाय मूँह बाके चले गये।
कितने तो कर्ज ले के चुका कर चले गये।३५।

कितने तो धोका दे के बका कर चले गये।
कितने तो जंत्र मंत्र सिखा कर चले गये।
कितने तो अन्धे पागल बना कर चले गये।
कितने तो मंत्र फूँक जिला कर चले गये।
कितने करेजा काढ़ि औ खा कर चले गये।४०।

कितने ज़मी खुदाय तुपा कर चले गये।
कितने तो जल में फेंकि फेंका कर चले गये।
कितने अगिनि में फूँकि फुँका कर चले गये।
कितने तो तुरत मारि दिखा कर चले गये।
कितने तो मास नोचि नोचा कर चले गये।४५।

दीनों को देखि कितने दया कर चले गये।
कितने तो देखि देखि चुपा कर चले गये।
कितने तो भीख माँगि मंगा कर चले गये।
कितने तो आय माँगि औ खा कर चले गये।
कितने तो लूटि मारि ले आकर चले गये।५०।

कितने तो जेल फाँसी पा कर चले गये।
कितने तो डाकू चोर बना कर चले गये।
कितने तो ठगि ठगाय पछिता कर चले गये।
कितने तो अपने तन को पवा कर चले गये।
भूखन को कितने देख भगा कर चले गये।५५।

कितने तो जौन माँगा दिला कर चले गये।
कितने न खाया खरचा दबा कर चले गये।
कितने तो दूसरों को लिखा कर चले गये।
देवों में सारी सम्पत्ति लगा कर चले गये।
कितने तो नाम जग में खुदा कर चले गये।६०।

अन्धे कहैं जै कारे पितु माँ के चले गये।
वै हो गये स्वीकार जो आ के चले गये।६२।

(१४२)

दोहाः- सतगुरु से उपदेश लै सुमिरै तन मन लाय।
अन्धे कह साधक वही प्रेम के रंग रंगि जाय।।

सोरठाः- प्रेम में लीन नहाय परमानन्द में मगन है।
अन्धे कहैं सुनाय गुनिये कैसी लगन है।।

(१४३)

पदः- निज कुल हरि सुमिरन परिपाटी।
सतगुरु करि जप भेद जानि लो तब न बिलरिया काटी।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि कर्म शुभाशुभ चाटी।
सुर मुनि नित्य पवावैं भक्तौं घी शक्कर औ बाटी।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख छबि दें साटी।
अन्धे कहैं अन्त निजपुर हो जग छूटै जिमि माटी।६।

(१४४)

पदः- वैराग बिना सन्यास बृथा श्री तुलसी दास कही बानी।
अन्धे कहैं भक्तों चेत करो नहीं अन्त में होवै हैरानी।
सतगुरु करि पकड़ौ नेम टेम मन प्रेम के संग होवै पानी।
धुनि ध्यान प्रकाश समाधी हो सुधि बुधि वँह पर जावै सानी।४।

सुर मुनि सब भेटैं आशिष दे राखे निज कुल की कुल कानी।
सन्मुख में हर दम छाय जाँय श्री राम ब्रह्म औ महरानी।
तन छोड़ि अवध में पहुँचि जाव जो सदा एक रस रजधानी।
यह विहंग मार्ग कहलावत है कोटिन में जानै कोइ प्रानी।८।

(१४५)

पदः- सतगुरु से जानि मारग नर तन सुफ़ल बनाया।
अन्धे कहैं वही तो पितु मातु का कहाया।
उसकी भलाई दोउ दिसि जियतै में है कमाया।
सच्चा वही है साधक बच्चा तुम्हैं सुनाया।
धुनि ध्यान तेज लय पा दोनो करम जलाया।
षट रूप उसके सन्मुख हर दम छटा को छाया।६।

सुर मुनि मिलैं लिपटि कर नैनों से जल बहाया।
अमृत पिये भरा घट अनहद सुनै बधाया।
नागिनि जगा के सारे लोकन में घूमि आया।
चक्कर चला के कमलन एक तार है फुलाया।
तन त्यागि चढ़ि सिंहासन साकेत को सिधाया।
सूरति शब्द का मारग भक्तों यही कहाया।१२।

(१४६)

पदः- गोपिन का प्रेम अगाध रहा हर दम श्री हरि का याद रहा।
नर तन उसका बरबाद रहा जिन जान्यो नहीं क्या बाद रहा।
जब तक संसारी स्वाद रहा तब ही तक दुःख बिबाद रहा।
निज को जिन माना खाद रहा सो तो साधक उसताद रहा।४।

जेहि नाम रूप उन्माद रहा निर्भय हर दम आज़ाद रहा।
लय तेज ध्यान धुनि नाद रहा अपने कुल की मरजाद रहा।
अन्धे कहैं सो हमजाद रहा सिद्धिन में फंसि जग मांद रहा।
बन शाँति दीन मन सांदि रहा वह चल बिभूति तिरपाद रहा।८।

दोहाः- तीनि मार्ग हैं भजन के अन्धे कह सुनि लेहु।
मीन विहँग पिपीलका सतगुरु से गुनि लेहु।।
शब्द के ऊपर सुरति धरि चलि एकांत धुनि लेहु।
जियतै में सब बासना ब्रह्म अगिनि भुनि लेहु।।

(१४७)

पदः- बिजुली लगी हुई घट भीतर पावै कोटिन में कोइ बार।
सतगुरु करि तरकीब लेय सिखि सो देखै उजियार।
छये ठौर इंजन हैं लागे दसौं दिसन में तार।
एक जगह से खटका दाबौ तन भर में चमकार।
ध्यान होय लय दसा नाम धुनि रोम रोम रंकार।५।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हर दम लो दीदार।
अनहद सुनो पियो घट अमृत करैं देव मुनि प्यार।
नागिनि जगै चक्र सब नाचै कमल खिलैं एक तार।
अन्धे कहैं अन्त निज पुर हो छूटै गर्भ क भार।
जियतै में तै कीजै भक्तों नर तन सुख का सार।१०।

(१४८)

पदः- जै रणधीर बीर हनुमान।
दासन में तव श्रेष्ट कहावत सुर मुनि कीन बखान।
बल अतौल है अंग बज्र का विद्या बुद्धि निधान।
गदा सदा दहिने कर सोहत सुनत नाम की तान।
राम सिया हर दम रहैं सन्मुख जो सब सुख की खान।
अन्धे दोउ कर जोरि के मांगै मुक्ति भक्ति का दान।६।

(१४९)

पदः- सतगुरु सरनि में जिसने मन मति लगाई होगी।
अन्धे कहैं उसी की दोउ दिसि बधाई होगी।

धुनि ध्यान तेज लय में जाकर समाई होगी।
शुभ अशुभ कर्म भक्तों जियतै मिटाई होगी।
अनहद बिमल मधुर सुनि अमृत पिलाई होगी।
सुर मुनि के संग बैठक हरि जस गवाई होगी।६।

नागिनि जगा के लोकन फेरी लगाई होगी।
चक्कर घुमा के सारे कमलन खिलाई होगी।
दोनो स्वरन से महकैं सुन्दर उड़ाई होगी।
प्रिय श्याम की छटा छबि सन्मुख में छाई होगी।
नैनो से नैन छिन छिन हंसि हंसि भिड़ाई होगी।
तन त्यागि चढ़ि सिंहासन निज पुर को धाई होगी।१२।

(१५०)

पदः- करो जब सतगुरु मिलै तब मारग निज धाम जाने का यह तरीका।
नहीं तो भक्तों जगत में घूमौ करम है बाधा श्री हरी का।
धुनि ध्यान लय तेज रूप पाकर हटा दो जियतै में दुख करी का।
निर्बैर निर्भय रहो एक रस कहैं यह अन्धे अब मरी का।४।

दोहाः- श्रेष्ट प्रेम सब सखिन का सुर मुनि कह्यो सुनाय।
अन्धे कह सतगुरु सरनि कोई इस मार्ग पर जाय।।

(१५१)

पदः- श्याम तेरी बंशी मो को करि डाली बावरी।
ऐसी वा में गांस फांस लागि जाति तावरी।
छिन छिन बोलै बोली आव आव आव री।
कछु न सुहाय कहो सोंचै कौन दाँव री।
भूषन बसन औ भूख प्यास भूलैं सब मन कहैं चलो चलो
धाव धाव धाव री।५।

कूदि पड़े जमुना जी में ऐसी तान चाव री।
पार होंय सारी सखी प्रभु नाम नाव री।
पास में पहुँचि जाँय कहैं हाँ बजाव री।

कोई बैठी कोई ठाढ़ी कर जोरैं सुकुमारी,
नैनन ते नीर जारी, देखा ठाँव ठाँव री।
अन्धे कहैं ऐसा नेम, एक रस सदा प्रेम,
वाकी सब दिसि क्षेम, हरि गुण गाव री।१०।

(१५२)

पदः- सतगुरु सरनि जो जावै सुमिरन कि बिधि बतादें।
धुनि ध्यान तेज लय हो बिधि का लिखा मिटा दें।
सिंगार छबि छटा क्या षट रूप सन्मुख छा दें।
सुर मुनि के संग हरि जस नित प्रति उसे सुना दें।४।

अमृत पिलाय अनहद घट में मधुर बजा दें।
नागिनि जगा के सारे लोकन में भी घुमा दें।
चक्कर चला के कमलन एक तार से खिला दें।
अन्धे कहैं तन छूटै निज पुर में जा बिठा दें।८।

(१५३)

पदः- सतगुरु करि मन जे मारि गये। सन्मुख सिय राम निहारि गये।।
सब चोर उन्हीं से हारि गये। जियतै कर्मन गति टारि गये।।
धुनि नाम प्रकास संभारि गये। लय में चलि सुधि बुधि ढारि गये।।
बहु जीवन को निसतार गये। अन्धे कहैं अवध सिधारि गये।८।

(१५४)

पदः- धनि धनि धनि काशी के बासी।
जहाँ रहत हर समय शिवा शिव जो सब सुख के रासी।
अन्त समय हर दहिने कान में राम मंत्र दें ठांसी।
दिब्य रूप ते चढ़ि सिंहासन जीव जात अविनासी।
हरि के धाम में पहुँचि गयो है छूटा दुख चौरासी।५।

मनिकर्णिका घाट पै सब को जारि देत करि रासी।
विष्णु क चरनोदक श्री गंगा बहती बारह मासी।
फूँकि भस्म फेंके सुर सरि में राखत नहीं जरा सी।

गंगा जल से ठौर धोय कै चलते छोड़ि उदासी।
अन्धे कहैं भजन बिन मुक्ती मिलत बसत जो काशी।१०।

(१५५)

पदः- भजन करने का मज़ा पावैंगे वह।
सतगुरु को करि मन नाम पै लावैंगे वह।
हर समय सिय राम को ताकैंगे मुश्क्यावैंगे वह।
अन्धे कहैं तन छोड़ि के फिरि गर्भ नहि आवैंगे वह।४।

(१५६)

पदः- जिसने भगवान के भजन में मन को जोड़ लिया।
उसने जियतै में गर्भ बास से मुख मोड़ लिया।
सर्व शक्तिमान जिन्हैं सुर मुनि वेद कहते हैं।
हर दम सन्मुख में लखैं सुख का मज़ा ओढ़ लिया।
निर्भय निर्बैर सदा भक्त वही रहते हैं।
अन्धे कहते हैं वही भर्म भाड़ा फोर लिया।

(१५७)

पदः- रूप रस गंधि बिकारों से जिन्हैं बाहर कहते।
नाड़ी नस आदि के बंधन से बिलग भी रहते।
प्रेम बस भक्त संग खेलते खाते गहते।
अन्धे कहते हैं मुक्त भक्त जक्त नहिं ढहते।४।

(१५८)

पदः- जसोदा नन्द का लाला कन्हैया है बड़ा बाँका।
करो सतगुरु भजन जानो हर समय सामने टाँका।
ध्यान धुनि नूर लय होवै मिटैं बिधि के लिखे आँका।
जगै नागिनि चलैं चक्कर खिलैं सब कमल के फाँका।
मिलैं सुर मुनि सुनो बाजा चखौ अमृत गगन ढाँका।
कहैं अन्धे चलौ तन तजि जहाँ है लोक पितु माँ का।६।

(१५९)

पदः- जसोदा नन्द का लाला संवलिया है बड़ा प्यारा।
करो सतगुरु भजो देखो हर समय सामने ढारा।
रमा हर जा में है रहता और सब से रहै न्यारा।
नाम धुनि नूर लय पावो जौन बिधि रेख को फारा।४।

नागिनी चक्र नीरज सब जगैं महकैं एक तारा।
सुनौ अनहद छकौ अमृत देव मुनि संग खेलवारा।
त्यागि तन जाव निज पुर को मिटा भव जाल का भारा।
कहैं अन्धे महा सुख है मातु पितु नैन के तारा।८।

(१६०)

पदः- सब्द पै लागि जाय जब सुरती।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानै गर्भ की बाकी फुरती।
माया अपना दल लै भागै कबहूँ आय न घुरती।
नाम कि धुनि परकास समाधी दोउ कर्मन लै हुरती।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख झाँकी जुरती।
अन्धे कहैं छोड़ि तन अवध में पहुँचि जाव तब फुरती।६।

(१६१)

पदः- मन जिसका लगा है नाम से। नहीं जाता कभी बुरे काम से।।
करैं बातैं मगन सिया राम से। आसक्ती हटी धन धाम से।।
भया जिस दिन बिलग नर चाम से। गया निज पुर दिब्य बीमान से।६।

(१६२)

पदः- राम कहने का मज़ा पाते हैं हम।
अन्धे कहैं सतगुरु कृपा से सत्य लिखवाते हैं हम।
नाम की धुनि हर समय हर शै से सुनि पाते हैं हम।
हर समय षट रूप सन्मुख लखते मुशक्याते हैं हम।
ध्यान औ परकाश लय में जाय मिलि जाते हैं हम।५।

बाजा बजै अनहद सुनै सुर मुनि से बतलाते हैं हम।
कमल नागिन चक्र जागै खुशबू में माते हैं हम।
तन तो अजर औ अमर है सब लोकों को जाते हैं हम।
भूख प्यास न शीत ऊसन हरि का जस गाते हैं हम।
नारि नर प्रभु को भजो कर जोरि समुझाते हैं हम।१०।

(१६३)

पदः- अन्धे कहैं भजौ नित गुनि गुनि। सतगुरु से लो मंत्र को सुनि सुनि।।
तन मन को लो जियतै भुनि भुनि। माया चोर सकैं नहिं घुनि घुनि।।
हर शै से हो नाम कि धुनि धुनि। सिया राम को निरखौ पुनि पुनि।।
यही भजन करते सब ऋषि मुनि। तप धन खूब लेहु धरि चुनि चुनि।८।

(१६४)

पदः- जो कोइ राम नाम में सट्टा।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जाना गर्भ कौल को कट्टा।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि रूप सामने अंट्टा।
अमृत पियै सुनै घट बाजा सुर मुनि दें नित गट्टा।४।

मुख में धरत घुलत नहिं देरी उतरैं कंठ से झट्टा।
नागिनि जगै चक्र हों चालू कमल खिलैं सब फट्टा।
अन्धे कहैं अन्त निजपुर हो छूटै कुल का बट्टा।
नर नारी तन दुर्लभ पायो भजन में लागौ चट्टा।८।

(१६५)

दोहाः- दोनो दिसि खट्टा रहै जो न भजै भगवान।
अन्धे कह तन छोड़ि कै नर्क को करै पयान।।

चौबोलाः- नर्क को करै पयान जहाँ पर दुख है भारी।
हाय हाय चिल्लाँय वहाँ सब नर औ नारी।
नाना बिधि के कष्ट पलक नहिं सकते मारी।
लपटैं गन्ध की उड़ैं रहत तहँ अति अंधियारी।४।

हरि का सुमिरन कीन लीन जिन मन को मारी।
ते जावैं साकेत न आवैं गर्भ मंझारी।
सरनि मरनि औ तरनि लीन जिन जियति निहारी।
अन्धे कहैं सुनाय दीन बहु जीवन तारी।८।

(१६६)

पदः- मेरे मन चुप्प ह्वै रहिये हमैं सतगुरु करि आने दो।
पड़ा भव जाल के दुख में खोज प्रभु का लगाने दो।
जरा सी करि निगाह देवैं मुझे नटका पकड़ाने दो।
नाम की देंयगे दारू चखैं आनन्द आने दो।
जगै नागिनि चलै संग में तबक चौदह फिरि आने दो।

सुधैं षट चक्र भन्नावैं कमल सातौं खिलाने दो।
महक दोउ स्वरन से निकलै मस्त ह्वै सर हिलाने दो।
पियै कौसर बजै अनहद देव मुनि संग बतलाने दो।
धुनी रंकार की होती वो हर शै से सुनाने दो।
ध्यान परकास लै में जाय के सुधि बुधि भुलाने दो।१०।

छटा षट रूप की हर दम मेरे सन्मुख में छाने दो।
मिलै संसार से फुरसत लिखा बिधि का मिटाने दो।
रहैंगे हर समय जग में मगन हरि चरित गाने दो।
दीन जो भजन हित आवै उसे बिधि वत बताने दो।
तरक्की दिन पै दिन होवै मुझे ऊपर चढ़ाने दो।१५।

मेल हम तुम करैं प्यारे चोर तन से भगाने दो।
जियत ही होय सब करतल दया हो अब न ताने दो।
कहैं अन्धे बचन मानो रीति कुल की पै आने दो।१८।

(१६७)

पदः- सतगुरु करो मिटै सब मेख। अन्धे कहैं कटै बिधि लेख।।
सारी सृष्टि में निज को देख। निज में सारी सृष्टि को देख।।
धरो न कोई झूठा भेष। पासै भजन कि मिलै न रेख।।
पढ़ि सुनि कितने देते लेख। हरि की लीला अ़गम अलेख।८।

(१६८)

चौपाईः- अति प्रिय मोहिं अवध के बासी। मम धामदा पुरी सुख रासी।।
सतगुरु करै पास ही भासी। नाम पै मन को देवै ठाँसी।।
निरखै तँह पर अवध निवासी। अन्धे कहैं मिटी चौरासी।।
जिनके लागि प्रेम की गाँसी। राम रूप बैठे अविनासी।४।

(१६९)

चौपाईः- सिया राम मै सब जग जानी। करौं प्रणाम जोरि जुग पानी।
तुलसीदास कही यह बानी। सत्य सत्य सुर मुनि सब मानी।
सतगुरु करि सुमिरन जब ठानी। सारे चोर गये ह्वै पानी।
राम नाम की धुनि फरियानी। हर शै से हर दम भन्नानी।
तेज समाधि में मन को सानी। सुधि बुधि जहँ पर जाय भुलानी।
उतरौ सन्मुख सारंग पानी। बाम भाग राजैं महरानी।६।

कठिन कुअंक कि मिटी निशानी। गर्भ कि छूटि गई हैरानी।
शाँति दीनता बिन दुख खानी। कैसे जीव तरै अज्ञानी।
सब से तुच्छ आप को मानी। तुलसी दास भक्त भे ज्ञानी।
मानस लिख्यो सर्व गुन खानी। पढ़ि गुनि तरे तरैं बहु प्रानी।
जे घट में घुसि कै लियो छानी। ते समुझैं अन्धे की बानी।
जिनकी मन मति है बौरानी। उन मानस की कदरि न जानी।१२।

पदः- सतगुरु करि जिन सुमिरन जाना ते नहिं जगत में भिनके।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख रहते जिनके।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि करतल ह्वै गइ तिनके।
अन्धे कहैं धन्य ते प्राणी गुरु भाई हम उनके।४।

(१७०)

पदः- करमा कुबिजा गणिका सेवरी प्रेम प्रभू से कीना।
अन्त त्यागि तन निजपुर पहुँचीं सिंहासन आसीना।
सीधी सादी चारौं माई तीरथ ब्रत नहि कीन्हा।
अन्धे कहैं प्रीति विश्वास से हरि को बसि करि लीन्हा।४।

(१७१)

पदः- सर्व शक्तिमान रूप नाम हरि का जान लो।
सतगुरु से भेद जानि नेम टेम ठान लो।
शरनि तरनि मरनि जियति घट में घुसि छान लो।
तेज होय लय में जाय सुधि बुधि को सान लो।
दिब्य दृष्टि देखौ सुनौ सुख के नैन कान लो।
बिमल बिमल अनहद धुनि अमृत का पान लो।६।

सुर मुनि औ शक्तिन गृह खान पान मान लो।
नागिनी जगाय षट चक्कर घुमरान लो।
सातौं कमलन को उलटि दलन की फुलान लो।
भाँति भाँति की सुगन्ध स्वरन से उड़ान लो।
निर्भय निर्बैर सदा मुक्ति भक्ति ज्ञान लो।
अन्धे कहैं तन को त्यागि अवध जाय थान लो।१२।

(१७२)

पदः- जैहौ कहाँ सुमिरन बिन सुनिये।
महा कष्ट है नर्क में जीवन हर दम दुख में भुनिये।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानि के मन को नाम पै धुनिये।
ध्यान प्रकास समाधी होवै सन्मुख सिय हरि चुनिये।
राम भजन है सार जगत में भाषत वेद शास्त्र सुर मुनिये।
श्वाँसा समय शरीर अमोल है बिनय अन्ध की गुनिये।६।

शेरः- करम धरम औ शरम भरम सब बहैं प्रेम सरिता में।
अन्धे कहैं दशा विज्ञान की जानै सो परिता में।।

(१७३)

पदः- जै जै बोलौ गौरंग नित्यानन्द की।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो हर दम जोड़ी लखौ आनन्दकन्द की।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि हर शै से हो रं रं छन्द की।
अन्धे कहैं अन्त निजपुर हो जो है पुरी सिया रामचन्द्र की।४।

दोहाः- पुरी दरशिहै दिब्य जब पाप जाँय सब भागि।
अन्धे कह सतगुरु शरनि जाय सो जावै जागि।।

(१७४)

पदः- अलकैं मनोहर सुन्दर हरि की हैं घूँघर वाली।
मोर मुकुट सिर कानन कुंडल पीत बसन तन दुति ढाली।
पगन में घूँघुर छम छम बाजैं मुरली तान निराली।
अन्धे कहैं लखै सो प्रानी सूरति हो मतवाली।४।

(१७५)

पदः- अस प्रभु अजर अमर अविकारी। भजत तिनहिं ते जीव सुखारी।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि हर शै से हो रं रं जारी।
अनहद सुनै पियै घट अमृत सुर मुनि मिलैं करैं बलिहारी।
नागिनि जगै चलैं षट चक्कर सातौं कमल खिलैं एक तारी।
एक सहस अरतालिस किस्म की गमक स्वरन ते निकसत प्यारी।५।

तन मन मस्त वरनि को पावै सारद शेष की रसना हारी।
छबि सिंगार छटा सिय राम की हर दम सन्मुख रहे निहारी।
अन्त छोड़ि तन अवध में राजै फेरि न आवै गरभ मँझारी।
समय स्वाँस तन दुर्लभ पायो या से चेत करो नर नारी।
सतगुरु करि सुमिरन बिधि जानो अन्धे कहैं पुकारी।१०।

(१७६)

पदः- ररंकार धुनि हर शै से हो मचा है हा हा कार।
सतगुरु करो भेद तब पावो अन्धे कहैं पुकार।
अमृत पियौ बजै घट बाजा सुर मुनि करते प्यार।
नागिन जगै चक्र षट सोधैं सातौं कमल फुलार।
उड़ैं तरंग रोम सब पुलकै नैन बहै जल धार।५।

तेज होय लय दसा जाव चलि कर्म होंय जरि छार।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि हर दम लो दीदार।
धुनै घुनै सो सुनै लखै तब जियति होय निस्तार।

चन्द्र सूर्य दोउ एक जाँय ह्वै सुषमन गोता मार।
नओ द्वार चट बन्द जाँय ह्वै दस में खेल प्रचार।१०।

(१७७)

पदः- भजिये ररंकार महराज।
सतगुरु से सब भेद जानि के सारो अपना काज।
स्वयँ सिद्धि जो अजर अमर हैं सबके हैं सिरताज।
सब में व्यापक सब से न्यारे सब उनहीं का राज।४।

शाँति दीन ह्वै सुरति शब्द,पै धरि के सुनहु अवाज।
सुर मुनि शक्ती सबै ध्यावते सन्मुख रहै विराज।
अन्धे कहैं चेति नर नारी काया डारौ माँज।
अन्त त्यागि तन चढ़ि सिंहासन निज पुर जावो भाज।८।

(१७८)

दोहाः- रं रं की ध्वनि होत है अमित भानु परकास।
अन्धे कह सतगुरु शरनि सुनै लखै निज पास।।
सूरति चेला जानिये शब्द गुरू है जान।
अन्धे कह जब मेल भा तब न होय बिलगान।।
जल से जल की लहरि उठि फेरि जात ह्वै एक।
अन्धे कह नहिं बिलग हो कीजै युक्ति अनेक।।
सतगुरु शरनि में जाय के भजन करै मन लाय।
अन्धे कह निर्मल भया आवागमन नशाय।४।

दोहाः- ररंकार सरकार हैं सब में सब से न्यार।
अन्धे कह सतगुरु सरनि जानि होहु भवपार।।

(१७९)

पदः- सतगुरु करि सुमिरो ररंकार। हैं शून्य समाधि में निराकार।।
सरगुण निर्गुण औ निर्विकार। सब में औ सब से रहत न्यार।।
उत्पति पालन परलय संहार। सब सुःखौं के हैं यही सार।।
बोलत हर दम हर शै से तार। जो जानि जाय सो भव से पार।।
अन्धे की सुनिये अब पुकार। बल बुद्धि हीन मैं अति गंवार।१०।

(१८०)

पदः- आरति श्री सतगुरु की कीजै।
मुक्ति भक्ति करतल करि लीजै।।
नाम कि धुनि परकास समाधी रूप सामने कीजै।
सुर मुनि संत मिलन को आवें अमृत घट में पीजै।
नागिनि चक्र कमल सब जागैं खुशबू बहु बिधि लीजै।
अन्धे कहैं अन्त सत लोकै चढ़ि बिमान चलि दीजै।६।

(१८१)

दोहाः- सूरति शब्द समाइ गइ नाम सनेही जान।
अन्धे कह सतगुरु बचन आवागमन नसान।।

दोहाः- युक्ति मुक्ति औ भक्ति ज्ञान सब अपने ही हैं पास।
अन्धे कह सतगुरु करो सिखौ मिटै भव त्रास।।
ररंकार की धुनि सुनो होय समाधि प्रकास।
अन्धे कह हर दम दरस अन्त अचलपुर बास।।

(१८२)

दोहाः- तहस नहस सब चोर हों बहस छोड़ि धरु ध्यान।
साहस कभी न त्यागिये ढाढ़स से हो ज्ञान।।
मुक्ति भक्ति जियतै मिलै खुलि जाँय आँखी कान।
सखा सखी संग में लिये रहस करैं भगवान।।
अन्धे कह तन छोड़ि के निजपुर करो पयान।
राम रूप ह्वै कर वहाँ बैठो सुभग बिमान।३।

(१८३)

दोहाः- जिरह छोड़ि अजपा सिखौ गिरह न काटैं चोर।
बिरह उठै तब प्रेम की सुनो नाम का शोर।।
ध्यान प्रकास समाधि हो छूटै मोर व तोर।
हर दम सन्मुख में रहैं राधे नन्द किशोर।।
अन्धे कह सतगुरु शरनि सूरति शब्द में ज़ोर।
यही भजन सुर मुनि करैं सब का मानु निचोर।३।

(१८४)

पदः- नाम पै मन लगा करके चोर जिन शाँति करि डारा।
कहैं अन्धे वही जग से जियति ही हो गया न्यारा।
सुनै अनहद छकै अमृत गगन ते वह रहा धारा।
जगी नागिनि सुधे चक्कर कमल सब फूले एक तारा।
महक से छा गई मस्ती बहै नैनों से जल धारा।

रोम पुलकैं कंठ गदगद बदन क्या काँपता सारा।
मिलैं सुर मुनि लिपटि करके बिहँसि सब बोलैं जैकारा।
ध्यान परकास लय पहुँचा कर्म शुभ अशुभ भे छारा।
धुनी हरि नाम की होती उठै हर शै से रंकारा।
छटा सिय राम की हरदम सामने होत दीदारा।१०।

छोड़ि तन चढ़ि सिंहासन पर गया साकेत को प्यारा।
भक्त तँह अमित हैं बैठे रूप रंग प्रभु के सुख सारा।
चेति करिके करो सतगुरु भजन में लागो नर दारा।
नहीं तो फेरि पछितैहौ काल के गाल हो चारा।
बड़ा अनमोल नर तन है भजन के हित गया ढारा।
इसे क्यों मुफ़्त में खोते मिलै ऐसा न फिरि बारा।१६।

(१८५)

पदः- गुन बनते गृह बनत नहीं हैं बर कन्या के ब्याहन में।
अन्धे कहैं करो मत शादी पड़िहैं दुःख अथाहन में।
जैसे जीव निकसि किमि पावै कंटक गाड़े राहन में।
सोचि बिचारि लौटि घर आवै सुःख नहीं मन चाहन में।४।

जैसे ऊँचा नीचा कूचा बना जहाँ तहँ पाहन में।
नेक निगाह चूकि जो जावै चोट नीकि हो माहन में।
सतगुरु करै भजन बिधि जानै फिरि न जाय भव दाहन में।
अन्त छोड़ि तन अवध में पहुँचै बैठै शाँति से साहन में।८।

(१८६)

पदः- जौने रूख के तरे जुड़ाते, उसी की साखैं काटि गिराते।
पाप ताप में हैं मन माते, अन्त छोड़ि तन नर्क को जाते।

हर दम हाय हाय चिल्लाते, दोनो दिसि ते ह्वै गे ताते।
हरि के भजन में जे लगि जाते, अन्धे कहैं वही सुख पाते।४।

(१८७)

पदः- मन भजन की बिधि में सटा नहीं, बिधि लेख भाल से कटा नहीं।
धुनि तेज समाधि में अंटा नही, सन्मुख सिय राम की छटा नहीं।
जब सान मान तन घटा नहीं, अन्धे कहैं दोउ दिसि पटा नहीं।
सतगुरु करि प्रेम से हटा नहीं, सो अजा के हाथ से फटा नहीं।४।

(१८८)

पदः- ऊसर बरषा त्रण नहिं जामा। सन्त हृदय जिमि उपजै न कामा।।
सतगुरु से लै राम क नामा। सुमिरन में अर्पौ मन जामा।।
ध्यान धुनी परकास तमामा। लय में करो कर्म दोउ खामा।।
सन्मुख राम सिया बसु जामा। निरखौ संग में सुर मुनि आमा।।
अन्धे कहैं संग सब सामा। जियति जानि चलिये सुख धामा।।
है अनमोल न लागै दामा। सच्चे ग्राहक का यह कामा।।

चौपाईः- नीमन पुरुष नीमनी नारी। अन्धे कहैं न होवै ख्वारी।
लोना पुरुष औ लोनी नारी। अन्धे कहैं न होवै ख्वारी।।

(१८९)

पदः- बिरथा समय जो खोता। वह खाय जग में गोता।।
पढ़ि सुनि बना जो तोता। वह है अजा क पोता।।
मन नाम संग नोता। वह कर्म दोनो जोता।।
जो चेतिगा न सोता। अन्धे कहैं वह होता।४।

(१९०)

पदः- सुमिरन बिन कोई बचा न बची। अन्धे कहैं प्रभुहिं जंचा न जंची।।
सतगुरु करि जक्त पचा न पची। सो अजा के रंग टंचा न टंची।।

(१९१)

पदः- सुमिरन में जौन पगी न पगा। अन्धे कहैं अवध भगी न भगा।।
सतगुरु करि जानि सगी न सगा। सो गर्भ में फेरि टंगी न टंगा।।

(१९२)

पदः- सतगुरु दाया के सागर हैं। सुर मुनिन से रूप उजागर हैं।।
अन्धे कहैं सब गुण आगर हैं। श्री राम बिष्णु नट नागर हैं।४।

(१९३)

पदः- लकड़ी को घुन धुनि रहा कर दे छेद अनेक।
ऐसे हरि सुमिरन करो बनि जावो तब नेक।
सारी लकड़ी घुनि गई कैसी कीन्ही टेक।
अन्धे कह छुट्टी भई कौन सकै तेहि छेक।४।

(१९४)

पदः- श्री गीता श्री रामायण जी। मुद मंगल की हैं दायन जी।।
सुर मुनि सब के मन भायन जी। नित नेम से करते गायन जी।।
हरि कृपा से बटि गो बायन जी। सब लोकन में जस छायन जी।।
धरि ध्यान गयन लखि आयन जी। अन्धे कहैं सत्य सुनायन जी।८।

(१९५)

पदः- सतगुरु किरपाल दयाल प्रभू हम को एक आस तुम्हारी है।
तुमरे सम दूसर और नहीं को पतितन को हितकारी है।
तुम बंधन भव का काटि देत जियतै सुखमय नर नारी हैं।
अन्धे कह सन्मुख छाय रही झाँकी तुमरी बलिहारी है।४।

(१९६)

शेरः- दुलारे प्यारे सिय राम के हैं जे ख्याल हर दम जमाय रहेते।
कहैं यह अन्धे गरभ न झूलैं निजधाम उनको बिठाय रहेते।।

शेरः- कैद से फुरसत मिली जब गर्भ का रिन चुक गया।
अन्धे कहैं सुनि गुनि भजौ आना व जाना रुक गया।।
न तुम हम में न हम तुम में तो तुम हम से कहौगे क्या।
कहैं अन्धे बिना सुमिरन के तन मन से लहौगे क्या।२।

दोहाः- हरि सुमिरन जे नहिं करैं हबड़ी के संग चोर।
रबड़ी मल की लिहे कर मुख में देवै घोर।।

अन्त समय जमदूत आ गबड़ी खेलैं तोर।
चमड़ी से करि देंय बिलग ऐसे हैं बर जोर।।
दमड़ी तक नहिं नाम की पीटैं करि करि सोर।
अन्धे कह फिरि नर्क में जाय के देवैं बोर।३।।

(१९७)

पदः- भक्तौं आवै जाय सो माया।
चौरासी का चक्कर तब तक जब तक गर्भ बकाया।
सतगुरु करो भजन बिधि जानो सोधन होवै काया।
सारे चोर शाँति ह्वै बैठें मन उनसे हटि आया।
नाम के संग रंगै फिरि ढँग से मुद मंगल दरसाया।५।

अमृत पिऔ सुनौ घट बाजा मधुर मधुर चटकाया।
सुर मुनि मिलैं उछंग उठावैं जय जय कहि गुन गाया।
नागिनि जागि लोक चौदह में सुख से तुम्हैं घुमाया।
षट चक्कर तब चलैं दरस भै सातौं कमल फुलाया।
अद्भुद महक स्वरन से जारी रोम रोम पुलकाया।१०।

कंठ रुँधि जाय बोल न फूटै नैन नीर झरि लाया।
हालै शीश बदन थरावैं पलक भाँजि नहिं पाया।
लय परकास नाम धुनि जारी हर शै से भन्नाया।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख में छबि छाया।
तुरिया तीत दशा यह जानो सहज समाधि कहाया।
अन्धे कहैं अन्त साकेतै चढ़ि सिंहासन धाया।१६।

१९८ ।। श्री दरिया साहब जी ।।

(मारवाड़)

पदः- दरिया कह रंकार धुनि हर शै से सुनि लेहु।
सतगुरु से बिधि जानिके सूरति शब्द पै देहु।
सरनि तरनि औ मरनि सब जियतै ही लो जान।
दरिया कह मानो बचन खुलि जाँय आँखी कान।४।

१९९ ।। श्री गुलाल साहेब जी ।।

पदः- सतगुरु के ढिग जाय के गुप्त भजन सिख लेहु।
कह गुलाल धुनि नाम की हर शै से सुनि लेहु।
राम नाम सुखसार है कह गुलाल हर्षाय।
या के बिन जाने सुनौ ठीक ठौर नहि पाय।४।

२०० ।। श्री बीरू साहेब जी ।।

पदः- बीरू पीजै नाम की, कह बीरू लो मान।
चढ़ै अमल उतरै नहीं सुनो नाम की तान।
सतगुरु बिन नहिं मिल सकै मुक्ति भक्ति का ज्ञान।
बीरू कह मानो सही चारों युग परमान।४।

२०१ ।। श्री यारी साहेब जी ।।

पदः- यारी नाम से कीजिये जियति होय कल्यान।
य़ारी कह तब जाय खुलि राम नाम की तान।
सब में ब्यापक औ बिलग सुर मुनि कीन्ह बयान।
यारी कह सतगुरु बिना मिलत नहीं यह ज्ञान।४।

२०२ ।। श्री बावरी साहेब जी ।।

पदः- सतगुरु से बिधि जानि कै जपिये अजपा जाप।
कहैं बावरी नाम धुनि हर दम सुनिये आप।
इसी में सारा खेल है मुक्ति भक्ति औ ज्ञान।
कहैं बावरी जिन गह्यो ते भे पुरुष महान।४।

२०३ ।। श्री भीखा साहेब जी ।।

दोहाः- भीख भिखारी को मिलै होय भिखारी दीन।
भीखा सतगुरु की सरनि नाम रूप ले चीन्ह।।

पदः- सुरति निरत करै शब्द के ऊपर रूप सामने छाय रह्यो है।
भीखा कहैं बनत बस देखत नैनन नैन भिड़ाय रह्यो है।
नाम की धुनि परकास समाधी बिधि का लिखा मिटाय रह्यो है।
अन्त त्यागि तन सुनिये भक्तौं जीव नित्यपुर जाय रह्यो है।४।

२०४ ।। श्री पूरन दास जी ।।

दोहाः- पूरन दास के बचन को सुनो सबै मन लाय।
सतगुरु से उपदेश लै सुमिरौ भव दुख जाय।।

२०५ ।। श्री गोसांई दास जी ।।

सोरठाः- कहत गोसांई दास राम नाम में मन रंगौ।
भव दुख होवै नाश तन छूटै निज पुर भगौ।।

२०६ ।। श्री मलिक मुहम्मद जी ।।

चौपाईः- मलिक मुहम्मद नाम हमारा। जायस में भा जन्म हमारा।
मुसलमान के गृह में जानो। बचन हमार सत्य सब मानो।
संतन की संगति हम कीन्हा। राम भजन में तन मन दीन्हा।
सतगुरु बिन कोइ भेद न पावै। पढ़ि सुनि के धीरज नहि आवै।४।

२०७ ।। श्री हुलास दास जी ।।

दोहाः- होय हुलास हुलास कह सतगुरु से बिधि जान।
नाम कि धुनि परकास लै रूप से हो पहिचान।।
सबै पदारथ पास हैं भटकत घूमत जीव।
कह हुलास सतगुरु शरनि जीव से होवै सीव।।

२०८ ।। श्री गोविन्द साहेब जी ।।

दोहाः- गोविन्द भजि गोविन्द भये गोविन्द घट ही माहिं।
गोविन्द कह सतगुरु बिना गोविन्द मिलते नाहिं।।

२०९ ।। श्री कुरबान शाह जी ।।

।। श्री अयोध्यापुरी का ध्यान।।

पदः- राम के बांये, लखन के दहिने, राज रही हैं महरानी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, गोस्वामी जी की बानी।
राम के बांये, लखन के दहिने, राज रहीं त्रिभुवन माता।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी दास कही बाता।
राम के बांये, लखन के दहिने, राज रहीं त्रिभुवन रानी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी दास की यह बानी।६।

राम के बांये, लखन के दहिने, राज रही हैं जनक-लली।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी दास की बात भली।
राम के बांये, लखन के दहिने, राज रहीं सीता-प्यारी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, गोस्वामी कहें छबि न्यारी।
राम के बांये, लखन के दहिने, राज रहीं सीता रानी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसीदास का मन मानी।१२।

राम के बांये, लखन के दहिने, राज रही हैं बैदेही।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसीदास लखैं येही।
राम के बांये, लखन के दहिने, श्री सिया जी की झाँकी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसीदास रहै ताकी।
राम के बांये, लखन के दहिने, झाँकी श्री त्रिभुवन माँ की।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, गोस्वामी उर में टाँकी।१८।

राम के बांये, लखन के दहिने, बैठीं जनक दुलारी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी रहै निहारी जी।
राम के बांये, लखन के दहिने, सोहैं जनक-कुमारी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी लखैं सुखारी जी।
राम के बांये, लखन के दहिने, राजैं जनक किशोरी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी दोऊ कर जोरी जी।२४।

राम के बांये, लखन के दहिने, राजैं मुद मंगल माई।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसीदास कह्यौ गाई।
राम के बांये, लखन के दहिने, राज रहीं त्रिभुवन जननी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी पल में सुख भरनी।
राम के बांये, लखन के दहिने, राजैं शक्तिन की शक्ती।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी छिन में दें भक्ती।३०।

राम के बांये, लखन के दहिने, राजैं जनक नन्दिनी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी विश्वनन्दिनी जी।
राम के बांये, लखन के दहिने, अद्‌भुत जनक सुता राजै।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी छबि लखि दुख भाजै।
राम के बांये, लखन के दहिने, बैठीं जनक की छोरी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी भये चकोरी जी।३६।

राम के बांये, लखन के दहिने, राजैं जनक लाडिली जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी यही आंड़ ली जी।
राम के बांये, लखन के दहिने, राजैं जनक की छौरी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी गह्यौ पिछौरी जी।
राम के बांये, लखन के दहिने, राजैं जनक-भवानी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी हिये समानी जी।४२।

राम के बांये, लखन के दहिने, राजैं जनक की धनियां जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी तन मन सनियां जी।
राम के बांये, लखन के दहिने, राजैं जनक की बेटी जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी देखैं लेटी जी।
राम के बांये, लखन के दहिने, राजत जनक की कन्यां जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी लखैं अनन्यां जी।४८।

राम के बांये, लखन के दहिने, राजैं जनक की बिटिया जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी बिधि गति मिटिया जी।
राम के बांये लखन के दहिने, राजैं जनक बिटेऊ जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी छबि लखि लेऊ जी।
राम के बांये, लखन के दहिने, राजत जनक की लड़की जी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी लखि भव तड़की जी।५४।

राम के बांये, लखन के दहिने, पुत्री लखौ सुनैना की।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी के उर अयना जी।
राम के बांये, लखन के दहिने, अद्भुत भूमि सुता बैठीं।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी सब उर हैं पैठीं।
राम के बांये, लखन के दहिने, कौशिल्या की बैठि बहू।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी नित प्रति लखत रहूँ।६०।

राम के बांये, लखन के दहिने, बैठि पतोहू दशरथ की।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी लखि सब समरथ की।
राम के बांये, लखन के दहिने, बैठीं लव कुश की मैया।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी लखि लखि सुख पैया।
राम के बांये, लखन के दहिने, बैठीं जनक केर मिश्री।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी लखि सुधि बुधि बिसरी।६६।

राम के बांये, लखन के दहिने, झाँकी श्री जनक धिय की।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी उघरैं लखि हिये की।
राम के बांये, लखन के दहिने, भरत शत्रुहन की भाभी।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी सब के हित फाभी।
राम के बांये, लखन के दहिने, झाँकी श्री भूमिजा की।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी चरन चूमि छाकी।७२।

राम के बांये, लखन के दहिने, झाँकी श्री महिजा जी की।
ध्यान सकल कल्याण का दाता, तुलसी लखु सहजा जी की।७४।

दोहा:- परमेश्वर के भजन बिन, मिलै न कबहुँ शान्ति।
कुरबान शाह कह हर समय घेरे रहती भ्रान्ति।।
दाया पापिन पर करै, भक्तन पर हरि प्रेम।
धन्य धन्य वे जीव हैं, जे सुमिरैं नित नेम।।
झूठा अपना मतलबी औ दरिद्र कंजूस।
साधक इनका संग करै तो होवै बनहूस।।
इनकी संगत जो करै अन्त में नरकै जाय।
नाना भाँति के कष्ट तहँ रोये नहीं सेराय।४।

साधक इनसे अलग हो तब होवै कल्याण।
कुरबान शाह कह मानिये, सुर मुनि कीन बखान।
तपधन जाहिर मत करो, या से होती हानि।
कहैं शाह कुरबान सब, सुर मुनि की यह बानि।।
चोर चूहरी लूट लें रहै न तप कछु पास।
पहुँच सकौ नहि निज वतन करैं दोऊ दिसि नास।।
शान्ति दीनता लेहु गहि, सतगुरु बचन को मान।
तब दोनो दिसि जाय बनि, कहैं शाह कुरबान।८।

२१० ।। श्री अंधे शाह जी ।।

पद:- अरे हाँ रे अन्धे राम नाम श्रुति सार।
सुर मुनि सब नित प्रति हैं ध्यावत सब में सब से न्यार।
निरगुनि निराकार अविनाशी तीनि लोक उजियार।
भक्तन की भक्ती से सरगुन बनि करता खेलवार।
जल भोजन संगै में करता सोवत पाँव पसार।५।

नाना बिधि के खेल देखावै अमित रूप ले धार।
शरनि तरनि औ मरनि जियति हो जो पावै मन मार।
सतगुरु करै भजन बिधि जानै घट ही में सब कार।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि खुलि जावै रंकार।
रासि क नाम राम का यह है रेफ़ बिन्दु सरकार।१०।

महा मंत्र औ मंत्र परम लघु बीज मंत्र सरदार।
कूटस्थो अक्षर यहि कहते सब का प्राण अधार।
उत्पति पालन परलय करता सब का है यह तार।
अगम अथाह अलेख अकथ है कोई न पायो पार।
अभ्यंतर धुनि होत अखंडित हर शै से झंकार।१५।

ब्रह्माण्डों से तार आवते सुनि सुनि हो मतवार।
हुकुम होय तौ कहौ किसी से नाहीं लो चुप मार।
नागिनि चक्र कमल सब जागैं महक उड़ै निशि बार।१८।

(२११)

शेरः- जियति जिंद ब जिंद जानौ जिनके दाया तन नहीं।
अन्धे कहैं जम पुर में जैसे मानते जम गन नहीं।।
मृग त्रसना ज्यों ओस क मोती तृणवत है जग सपना।
अन्धे कहैं बिना हरि सुमिरे चौरासी में टपना।।
नीच बुद्धि के नीचे लड़के ऊँच बुद्धि के ऊँचे।
अन्धे कहैं गती ऊँचन की नीच नर्क जाँय कूचे।३।

(२१२)

दोहाः- चौदह भाग शरीर के बिलग बिलग ह्वै जाँय।
फिरि अपनै जुरि जात हैं अन्धे कहैं सुनाय।।
खंड मंड यह योग है राम भजन ते होय।
अन्धे कह इस भेद को बिरलै जानत कोय।।
अपने तन अगणित लखौ अगणित ते फिरि एक।
अन्धे कह सतगुरु करो मन को डारौ सेंक।।
पढ़ब सुनब औ लिखब तजि गहौ नाम की टेक।
अन्धे कह सतगुरु शरनि अनुभव होंय अनेक।।

मनसा बाचा कर्मणा सतगुरु शरनि जो जाय।
अन्धे कह देखै सुनै बरनत नहीं सेराय।५।

जो जितना देखै सुनै करि लेवै विश्वास।
अन्धे कह सो जाय तरि बात कही हम खास।।
हरि की लीला अगम है हरि ही जानन हार।
अन्धे कह सतगुरु शरनि गहै सो होवै पार।।
अपने तन से निकसि के मुरदा तन में पेल।
काया का परवेस यह अन्धे कह है खेल।।
नाना सिद्धी जान के पड़े भरम के भार।
अन्धे कह जन्मैं मरैं जग से लागो तार।।
महा जाल सब जानिये राम भजन है सार।
अंधे कह सतगुरु करो टूटै द्वैत केवार।१०।

(२१३)

दोहाः- सतगुरु से बिधि जानि कै पियो नाम की चाह।
अन्धे कह जियतै मिटै जनम मरन की दाह।।
सतगुरु से सुमिरन सिखौ सबै पदारथ पास।
अन्धे कह चेतत नहीं कटै न भव की फांस।।
राम कृष्ण औ बिष्णु जी तीनौ शक्ती साथ।
अन्धे कह सतगुरु शरनि सूरति शब्द में पाथ।।
सुर मुनि शक्ती सब मिलैं सिर पर फेरैं हाथ।
अन्धे कह जै जै करैं जियतै होहु सनाथ।।
सुमिरन ऐसा कीजिये और न जानै कोय।
सतगुरु से उपदेस लै सूरति शब्द समोय।५।

सरगुन तन में रहत हैं निरगुन कथते ज्ञान।
अन्धे कह वै मन मुखी छूटा नहि अज्ञान।।
निर्गुन सरगुन एक हैं या में भेद न कोय।
अन्धे कह वै मानिहैं जिनकी छूटी दोय।७।

चौपाईः- जिनकी छूटी दोय जियति में वै हैं जागे।
सतगुरु शरनि से शांति दीन बनि भज़न में लागे।

नाम कि धुनि परकास समाधि में जाय के पागे।
अन्धे कहैं सुनाय छोड़ि तन निजपुर भागे।
सिया राम प्रिय श्याम रहत हैं उनके आगे।
सुर मुनि आय के देंय दिब्य भोजन बिन माँगे।६।

(२१४)

दोहाः- प्राण में जीव क बास है जीव में आतम जान।
आतम में परमात्मा अन्धे कहैं समान।।
रेफ़ बिन्दु की जाप को सतगुरु से ले जान।
ध्यान प्रकाश समाधि हो रूप से हो पहिचान।।
अजपा जाप को जान लो खुलि जाँय चारौं द्वार।
मुक्ति भक्ति जियतै मिलै अन्धे कहैं पुकार।।
शब्द में सूरति जब पगी भई बासना नास।
अन्धे कह हर दम मगन छूटी भव की त्रास।।
मोरि तोरि मय तैं नहीं भीतर बाहर एक।
अन्धे कह धुनि नाम की सब को डारयौ छेंक।५।

नाम कि धुनि परकास लै रूप सामने छाय।
अन्धे कह सो भक्त है सुर मुनि करैं बड़ाय।।
भाल में श्री हरि भक्ति का देवैं तिलक लगाय।
दुलरावैं मुख चूमि कै अन्धे कह हर्षाय।।
हरि चरित्र भक्तन चरित्र पढ़ै सुनै मन लाय।
अन्धे कह तन छोड़ि कै हरि पुर पहुँचैं जाय।।
बार बार सुर मुनि कह्यौ मिलै न ऐसा बार।
अन्धे कह हरि भजन बिन नर तन को धिक्कार।।
राम नाम की चोरी डाका बिरलै जानै कोय।
अन्धे कह जो जान ले मुक्त भक्त हो सोय।१०।

(२१५)

पदः- मान अपिमान न लागै जा को सो है ध्यानी ज्ञानी ।
अंधे कहैं जियति ही तरिगा धन्य धन्य सो प्रानी।

नाम रूप परकाश दसा लय काटिसि कर्म निशानी।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दें छबि तानी।४।

शाँति शील संतोष दीनता सरधा छिमा सयानी।
दया धर्म औ प्रेम भाव विश्वास सत्य गुण खानी।
सतगुरु करै भजै तन मन ते तब इस पद को जानी।
ताते होय अनर्थ कभी नहिं पायो अति सुख खानी।८।

शेरः- दीनता शाँति जब आवै मिलै निर्वाण पद वाको।
कहैं अंधे मिली छुट्टी गया हटि गर्भ को चाको।।

(२१६)

दोहाः- राधे रूठि के बैठि गईं मुख पै चलै कोडार।
सखा सखी बिन्ती करैं बोलैं नहिं चुपमार।।
श्याम तहाँ पहुँचे तुरत करि गहि लीन उठाय।
चलो प्रिया अब रहस हो तुम बिन कछु न स्वहाय।।
राधे श्याम के संग चलीं सखा सखी चलि दीन।
अंधे कह सब रहस में भये तबै लवलीन।३।

(२१७)

पदः- धीरे चलो सुकुमार प्रिय प्यारी।
सखा सखी सब ब्याकुल बैठे नैन बहै जलधार प्रिया प्यारी।
तुम बिन रहस होयगो कैसे प्राण के प्राण हमार प्रिय प्यारी।
श्यामा श्याम के संग चलीं जब सखा सखी चटकार प्रिय प्यारी।
हिलि मिलि रहस करन सब लागे राधे कि ओर निहार प्रिय प्यारी।५।

छम छम छम छम घुँघरू बाजैं बीच बीच बलिहार प्रिय प्यारी।
नाना साज बजैं तहँ संग में मधुर मधुर गुमकार प्रिया प्यारी।
सावन है मन भावन भक्तों जल बरसैं एकतार प्रिय प्यारी।
ताल तान धुनि स्वर सम मानो गावत राग मलार प्रिय प्यारी।
बंशी मोहक स्वर से बाजै सुर मुनि सब मतवार प्रिय प्यारी।१०।

नभ ते फूलन की झरि लावैं बोलैं जय जय कार प्रिया प्यारी।
सतगुरु करै लखै सो लीला सन्मुख हों निशि बार प्रिया प्यारी।
आवागमन क काम जाय कटि जो बिधि लिखा लिलार प्रिया प्यारी।
जे जनि चेति जियति में जागे तरिगा सब परिवार प्रिया प्यारी।
उनकी सरवरि कौन सकत करि अंधे कहैं पुकार प्रिय प्यारी।
अन्त छोड़ि तन गये अचलपुर बैठि गये चुपमारि प्रिया प्यारी।१६।

(२१८)

पदः- जिसका राम नाम खुलि जावै।
हांड़ हांड़ औ जोड़ जोड़ रग रोम रोम भन्नावै।
सब लोकन हर शै से होती निशि बासर हहरावै।
उसी तार की धुनि पर बैठे चट साकेत सिधावै।
जब तक खुलै न धुनी नाम की रसना ही से ध्यावै।५।

जपत जपत तनमैता होवै तब सुनने में आवैं।
कथा कीर्तन पाठ औ पूजन सब में आनन्द पावै।
छबि सिंगार छटा सियराम कि सन्मुख वाके छावै।
कर का मनका छूटि जाय तब मन का माल फिरावै।
सतगुरु से सब भेद जान ले अजपा यही कहावै।१०।

प्रेम भाव में शक्ति बड़ी है माथ से हाथ गहावै।
सहज समाधि यही है जानो महा सुखी ह्वै जावै।
आतम परमातम है एकै जानै द्वैत नशावै।
मारै गरियावै चहै कोई लखि लखि के मुशक्यावै।
तब विज्ञान दशा हो भक्तौं खेलै घर घर खावै।
कर्म धर्म औ शर्म भर्म नहिं अंधा सत्य सुनावै।१६।

दोहाः- अहंकार रावन भयो कपट भयो मारीच।
अंधे कह ये दुष्ट हैं भजन में डारैं बीच।।
अंधे कह ये तब हटैं जब तुम बनि जाव नीच।
शाँति छिमा तब संग रहै छूटै द्वैत क कीच।२।

(२१९)

पदः- न हम ज्ञानी न हम ध्यानी गुरु किरपा से कछु जानी।
किया तन मन कि कुरबानी गया धुनि तेज लय सानी।
लखैं प्रभु संग महरानी छटा सन्मुख रहै तानी।
कहैं अंधे वो अज्ञानी जो नर तन पाय अभिमानी।४।

(२२०)

पदः- ज़माना उसका है अच्छा जो हरि सुमिरन में लागा है।
कहैं अंधे जो नहिं चेता वो दोनो दिसि ते नागा है।
सुखी वह किस तरह होवै बंधा माया के धागा है।
कहैं अंधे गहैं जमगण बकैं तू तो अभागा है।४।

घसीटत लै चलैं नर्कै बाँधि खम्भे में टाँगा है।
कहैं अंधे न कल पल भरि भरैं मुख औंटि रांगा है।
करै सतगुरु भजै हर दम मिलै भक्ती क बागा है।
कहैं अंधे जियति तरिगा वही सोते से जागा है।८।

(२२१)

पदः- बाजा बाजैं घट में अनहद भक्तौं सुनिये सुरति लगाय।
सतगुरु से जप जतन जानि कै छोड़ि देव पंडिताय।
या से सार वस्तु नहि मिलिहै लूटत मान बड़ाय।
अमृत पियो गगन ते टपकै स्वाद न सकौ बताय।
सुर मुनि आय आय दें आशिष दोनो करन उठाय।५।

नागिनि जगै चक्र षट बेधैं सातौं कमल फुलाय।
उड़ै तरंग मस्त ह्वै जावै मुख से बोलि न जाय।
गद गद कंठ रोम सब पुलकैं नैन नीर झरि लाय।
हालै शीश बदन सब कांपै सो सुख वरनि न जाय।
तेज समाधि नाम धुनि हर दम हर शै से भन्नाय।१०।

सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख दें छबि छाय।
अंधे कहैं अन्त निज पुर हो आवागमन नशाय।१२।

(२२२)

"समय" यानी "वख्त" से और अंधे शाह जी से जो बार्ता हुई थी उसका पद लिखाया है :

पदः- समै जो नाम है मेरा तो मैं उनको दिखा दूँगा।
जे परस्वारथ दया छोड़े नाम उनका मिटा दूँगा।
होय दुनियां में थू थू थू अन्त दोज़क पठा दूँगा।
जे हरि सुमिरन में हैं लागे उन्हें निजपुर बिठा दूँगा।
सुनैं अनहद अमी पीवैं देव मुनि से मिला दूँगा।
जगै नागिनि चलै संग में तबक चौदह घुमा दूँगा।६।

चक्र षट बेधि घुमरावैं कमल सातौं फुला दूँगा।
महक से मस्त तन मन हो रोम सारे पुलका दूँगा।
कंठ गद गद शीश हालै नैनों से जल गिरा दूँगा।
ध्यान धुनि तेज लय होवै लिखा बिधि का कटा दूँगा।
छटा सिंगार छबि षट रूप की सन्मुख टिका दूँगा।
कहैं अंधे समय भाषा वही तुम को लिखा दूँगा।१२।

(२२३)

दोहाः- जब तक भाव विशाल नहिं तब तक नर तन फीक।
अंधे कह तन मन जुरे, तब ह्वै जावै नीक।।

कवित्तः- बाजी कहैं बाजी बंशी बाजी कहैं बाजी बंशी
बाजी कहैं बाजी बंशी साँवरे सुघर की।
बाजी उठि धाई बाजी देखवे को दौरी आई
बाजी मुरझाईं सुनि तान गिरधर की।
बाजी न धरत धीर बाजी ना संभारै चीर
बाजिन के उठी पीर बिरहा अनल की।
बाजी कहैं कैसी बाजी बाजी कहैं वैसी बाजी
बाजी कहै ऐसी बाजी मेरे प्राण हरि की।४।

(२२४)

पदः- रहस करत नन्द लाल, संग लीन्हे गोपी ग्वाल।
बाजा तहँ बाजत अति विशाल, राधे सब ऊपर करत ख्याल।

नाचत फिरि बैठत करि उछाल, दौरत झुकि झूमत हांल हाल।
छरकत हंसि हंसि फिर देत ताल, नभ ते सुर फेंकत सुमन माल।४।

जय जय जय करि करि निहाल, निरखत एकटक नहिं पलक हाल।
जलचर औ थलचर समुद्र ताल, मोहे अस ह्वै गे मनहु नाल।
बंशी की धुनि रसाल, ब्रह्माडौं में गई साल।
अंधे कहैं जमै ख्याल, सन्मुख त्रिभुवन भुवाल।८।

शेरः- चला वक्त फिरि दस्त आता नहीं। बिना वक्त भा कोई ज्ञाता नहीं।।
सबी वस्तु का वक्त ही तो है दाता। कहैं अंधे चारों जुगों में बिख्याता।।

(२२५)

पदः- क्या साँवलो सलोनो जसुदा को लाल।
कसकत मसकत कैसी चलत चाल।
शिर क्रीट मकुट कुंडल विशाल।
तन सुभग बसन घुंघुवारे बाल।४।

धरि अधर सुघर वंशी रसाल।
कूकत गावत क्या राग आल।
अंधे कहैं हर दम करौ ख्याल।
सन्मुख राजैं त्रिभुवन भुवाल।८।

(२२६)

पदः- समय श्वाँस तन बल धन पायो हरि सुमिरन करि लीजै जी।
ऐसा दाँव फेरि नहिं पइहौ बिरथा आयू छीजै जी।
सत्गुरु करि जप भेद जानि कै मन को काबू कीजै जी।
नाम रूप परकास समाधी होय कर्म गति मीजै जी।४।

नागिनि चक्र कमल जगि जावैं घट में अमृत पीजै जी।
अनहद सुनो देव मुनि आवैं सत्संगति नित कीजै जी।
अन्त त्यागि तन चढ़ि विमान पर निजपुर आसन लीजै जी।
अंधे कहैं छूटि जग चक्कर फेरि गर्भ नहिं भीजै जी।८।

(२२७)

पदः- मेरे पर प्रभु तेरी दाया तेरे पर सुधि मेरी हो।
मुक्ति भक्ति तब तो मिलि जावै अंधे कहैं न देरी हो।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि आपको सन्मुख हेरी हो।
आना जाना प्रेम में साना छूटी जग की फेरी हो।४।

सत्गुरु से सुमिरन बिधि लीजै बाजै दोउ दिसि भेरी हो।
यही भजन सब से है सच्चा सुर मुनि कहते टेरी हो।
तन मन से जब लागि जाव तब चोर सकैं नहिं घेरी हो।
अन्त समय पछितैहौ रोइहौ जम गहि देंय दरेरी हो।८।

(२२८)

पदः- सा स्वर बास करत त्रिकुटी पर रे नासा पर जानो।
गा का बास कंठ में सोहत मा हिरदय में जानो।
पा का बास नाभि में देखो धा इन्द्री पर जानो।
गुदा चक्र पर बास है नी का सातों स्वर परमानो।
ज्ञानेश्वर कहैं हरि सुमिरन बिन मिलै न ठीक ठेकानो।
सत्गुरु से सुमिरन विधि लेकर तनमयता में सानो।६।

(२२९)

पदः- नदी के तट पर कबर के अन्दर खाक तख्त पर सोय रहे।
कमर गई झुकि चौथापन भा पाप बीज नित बोय रहे।
दया धर्म के निकट न जाते चोरन संग मन नोय रहे।
अंधे कहैं अन्त चलि नर्क में फटकि फटकि के रोय रहे।

दोहाः- कल्पन भोगैं नर्क में अंधे कह गोहराय।
नाना जोनिन जन्मते फेरि जगत में आय।।
बिन हरि सुमिरे सुख कहाँ चौरासी चकराँय।
जे सुमिरन में लागिगे अंधे कह हरषाँय।२।

(२३०)

पदः- करिये राम भजन निशि वासर।
सत्गुरु से सुमिरन विधि जानि कै परै न कबहूँ आँतर।

है अनमोल समै स्वाँसा तन कहते सुर मुनि गाकर।
चेतो जुटौ जियति हो करतल बनि जाव वीर हौ कादर।
सारे चोर शाँत ह्वै जावैं मन हो तुमरा चाकर।५।

ध्यान प्रकाश समाधी होवै शुभ औ अशुभ जलाकर।
सुनो नाम धुनि रं रं होती हर शै से भन्नाकर।
अमृत पिओ बजै घट अनहद सुर मुनि संग बतलाकर।
नागिनि जगै चक्र षट नाचैं सातौं कमल फुलाकर।
उड़ै तरंग कहौ क्या मुख से मन्द मन्द मुसक्याकर।१०।

गद गद कंठ रोम सब पुलकैं नैनन नीर बहाकर।
प्रेम की नदी उमड़ि बहि चलिहै ज्ञान करार गिराकर।
तब विज्ञान दशा ह्वै जावै बाल भाव उर आकर।
नेम अचार बिचार गये भगि निर्भय अति सुख पाकर।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख हों छबि छाकर।१५।

तुरिया तीत दशा भई भक्तौं सहज समाधि में जाकर।
सब में सब से परे गयो ह्वै यह अमोल धन पाकर।
बड़ी युक्ति से पावत कोई द्वैत किंवार हटाकर।
सुरति शब्द का राज योग यह अंधे कहैं सुनाकर।
अन्त त्यागि तन निज पुर राजौ हरि सा रूप बनाकर।२०।

(२३१)

पदः- सुरति शब्द लगै एकतार।
सतगुरु करि यह भेद जानि कै निज को लेहु सुधार।
इसी से अनहद घट में सुनिये मधुर मधुर गुमकार।
इसी से अमृत गगन में पीजै हर दम बहती धार।
इसी से सुर मुनि दर्शन देते उर लगाय करि प्यार।५।

इसी से कुँडलिनी संग चलती सब लोकन दीदार।
इसी से षट चक्कर हों सोधन सातों कमल फुलार।
इसी से उड़ै तरंग बहुत बिधि तन मन हो मतवार।
इसी से गद गद कंठ जात ह्वै नैन बहै जल धार।
इसी से शीश बदन सब हालै रोम रोम पुलकार।१०।

इसी से ध्यान समाधी होवै तेज धुनी रंकार।
इसी से अपने इष्ट को देखो सन्मुख हैं निशिबार।
इसी से अन्तर ध्यान जाव ह्वै कोइ न सकै निहार।
इसी से परकाया प्रवेश हो चोर जाँय सब हार।
इसी से नर नारिनि बतलाइ क जियतै दीजै तार।१५।

इसी से अजर अमर ह्वै जावै मृत्यु लात से टार।
इसी से कर्म रेख मिटि जावै बिधि जो लिखा लिलार।
इसी से आदि शक्ति श्री सीता शिव को दीन संभार।
इसी से पवन तनय को श्री सिय करि कै दीन दुलार।
इसी से ज्ञान दशा विज्ञान हो खुलते चारौं द्वार।२०।

इसी से कितने भक्त जक्त भे को करि सकत शुमार।
इसी को सुर मुनि जानि मानि कै जग हित कीन प्रचार।
इसी से मुक्ति भक्ति है मिलती प्रेम भाव ज़रदार।
इसी से शाँति शील संतोष औ सरधा छिमा ज्वहार।
इसी से दाया सत्य धर्म विश्वास दीनता धार।२५।

इसी को राम श्याम नारायण बरन्यो बड़ा सुतार।
इसी से अन्त छोड़ि तन चलि कै बैठो भवन मँझार।
इसी से चार पदारथ मिलते वा की शक्ति अपार।
इसी से मन की बात जाइ खुलि जो कोइ करै बिचार।
इसी से निर्गुण सरगुण जानो इसी से हो निराकार।३०।

इसी से जल भोजन औ बस्तर सादा हो सब क्यार।
इसी से साधक सिद्ध जाय ह्वै अंधे कहैं पुकार।३२।

दोहाः- राग हटा अनुराग भा आइ गयो वैराग।
अंधे कह सब बासना गई आप ही भाग।।
भीतर बाहर एक रस तब भक्तौं भा त्याग।
अंधे कह सो मुक्त है बांधे भक्ति की पाग।।
ज्ञान भक्ति दोउ एक हैं जानै बिरलै कोय।
अंधे कह जे जानिगे आवागमन न होय।।

द्वैत क फाटक जब हटै ज्ञान भक्ति तब होय।
अंधे कह सतगुरु शरनि सूरति शब्द मिलोय।४।

(२३२)

पदः- जुक्ती से मुक्ती मिलै जुक्ती से हो ज्ञान।
जुक्ती से भक्ती मिलै जुक्ती से विज्ञान।१।
जुक्ती सुर मुनि की कही अंधे कीन्ह बखान।
जुक्ती को जान्यो सही ते भे भक्त महान।२।
सूरति शब्द कि जुक्ति यह सतगुरु द्वारा जान।
अंधे कह माने बचन खुलि जाँय आँखी कान।३।
दिब्य दृष्टि तब जाय ह्वै गुप्त प्रगट लो जान।
अंधे कह सतगुरु कृपा यही है ब्रह्म क ज्ञान।४।
तप धन लेय बचाय जो सो है पूरा सूर।
अंधे कह कैसे बचै निज को मानै घूर।५।

(२३३)

पदः- है चन्द रोज़ की ज़िन्दगी सुमिरन करो सुमिरन करो।
सुमिरन जो की जी तोड़ कर हर शौक से मुख मोड़ कर,
वह जाइहै निज वतन पर सुमिरन करो सुमिरन करो।
सबसे बड़ी यह बन्दगी सुमिरन करो सुमिरन करो।
मिलती इसी से सिद्धगी सुमिरन करो सुमिरन करो।
बानी बुज़ुर्गों की कही मुरशिद करो पकड़ौ सही,
दुनियां ए तेरी है नहीं सुमिरन करो सुमिरन करो।
अंधे कहैं मानो सखुन जियतै में रब के जाव बन,
अन्मोल स्वाँसा समय तन सुमिरन करो सुमिरन करो।६।

(२३४)

दोहाः- नाम रूप परकास लय पावे रसिया तौन।
अंधे कह साकेत में चलि बैठै मुख मौन।।

(२३५)

पदः- हरि सुमिरन का मजा लै ले रसिया।
सतगुरु से जप भेद जानि कै तन मन प्रेम में फँसिया।
अनहद सुनो अमी रस चाखौ हर दम गगन से खसिया।
नागिनि चक्र कमल जगि जावैं स्वरन से उड़ै सुबसिया।४।

सुर मुनि मिलैं धन्य धन्य बोलैं उर में जावैं लसिया।
ध्यान प्रकाश समाधि नाम धुनि हर शै में है बसिया।
सियाराम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख लखु रहे हँसिया।
अंधे कहैं अन्त निजपुर हो फेरि गर्भ नहिं धँसिया।८।

(२३६)

पदः- सतगुरु से जप बिधि जानकर मेहनत करो मेहनत करो।
नित नेम टेम को ठान कर मेहनत करो मेहनत करो।
मेहनत में लौ जब लागिहै सब चोर तन से भागिहैं,
मन शाँत ह्वै अनुरागिहै मेहनत करो मेहनत करो।
अनहद कि मधुरी तान हो, अमृत क घट में पान हो,
तब प्रेम में मस्तान हो मेहनत करो मेहनत करो।४।

नागिन जगै चक्कर चलैं, खुशबू उड़ै नीरज खिलैं,
सुर मुनि लिपटि करके मिलैं मेहनत करो मेहनत करो।
धुनि ध्यान लय परकाश हो, षट रूप सन्मुख भास हो,
जियतै गरभ दुख नाश हो मेहनत करो मेहनत करो।
सूरति क सारा खेल है करती शबद से मेल है,
मिलता खजाना रेल है मेहनत करो मेहनत करो।
अंधे कहैं जे मानिगे ते इस रहस्य को जानिगे
तन छोड़ि अति सुख खानिगे मेहनत करो मेहनत करो।८।

(२३७)

पदः- काया में सब खेल बना है देखन वाले थोड़े जी।
सीता राम सीता राम राधे श्याम राधे श्याम।।
बिन सतगुरु कोइ भेद न पावै रहते कोर के कोरे हैं जी।
सीता राम सीता राम राधे श्याम राधे श्याम।।
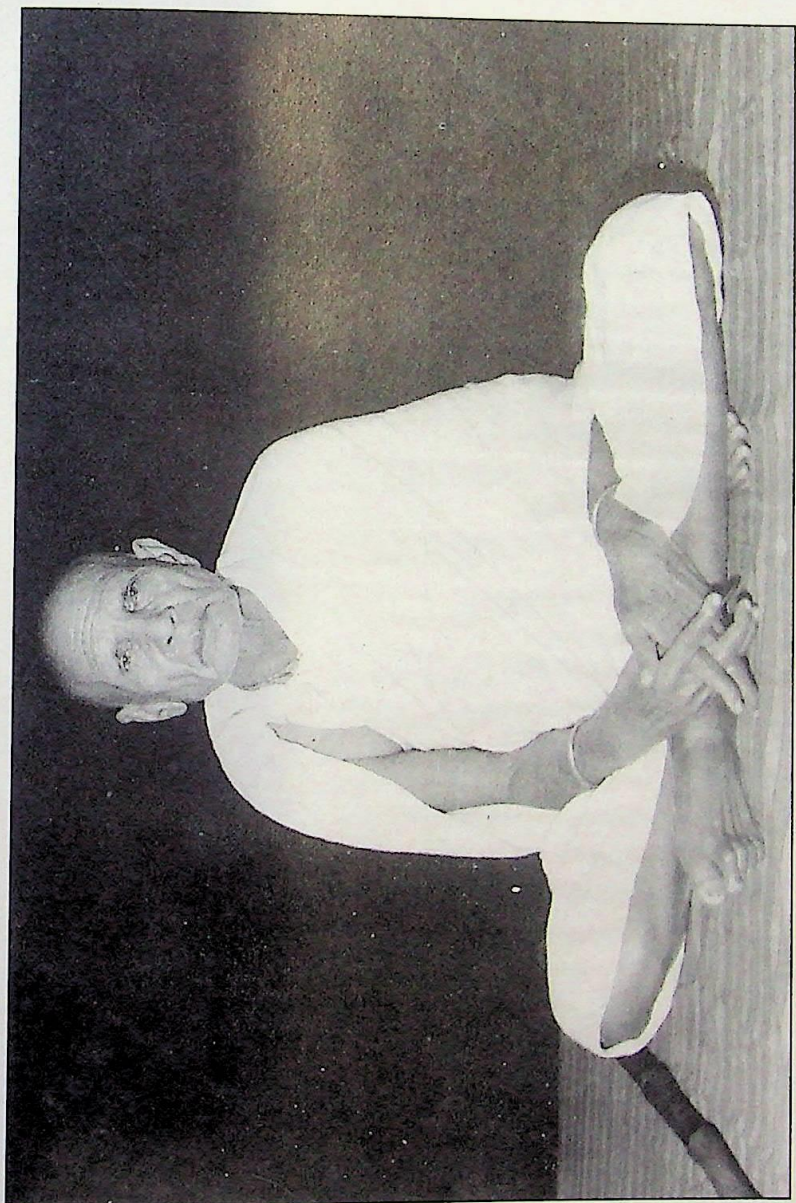
श्री गुरुदेव दयामय।

श्री गुरुदेव तखत पर।
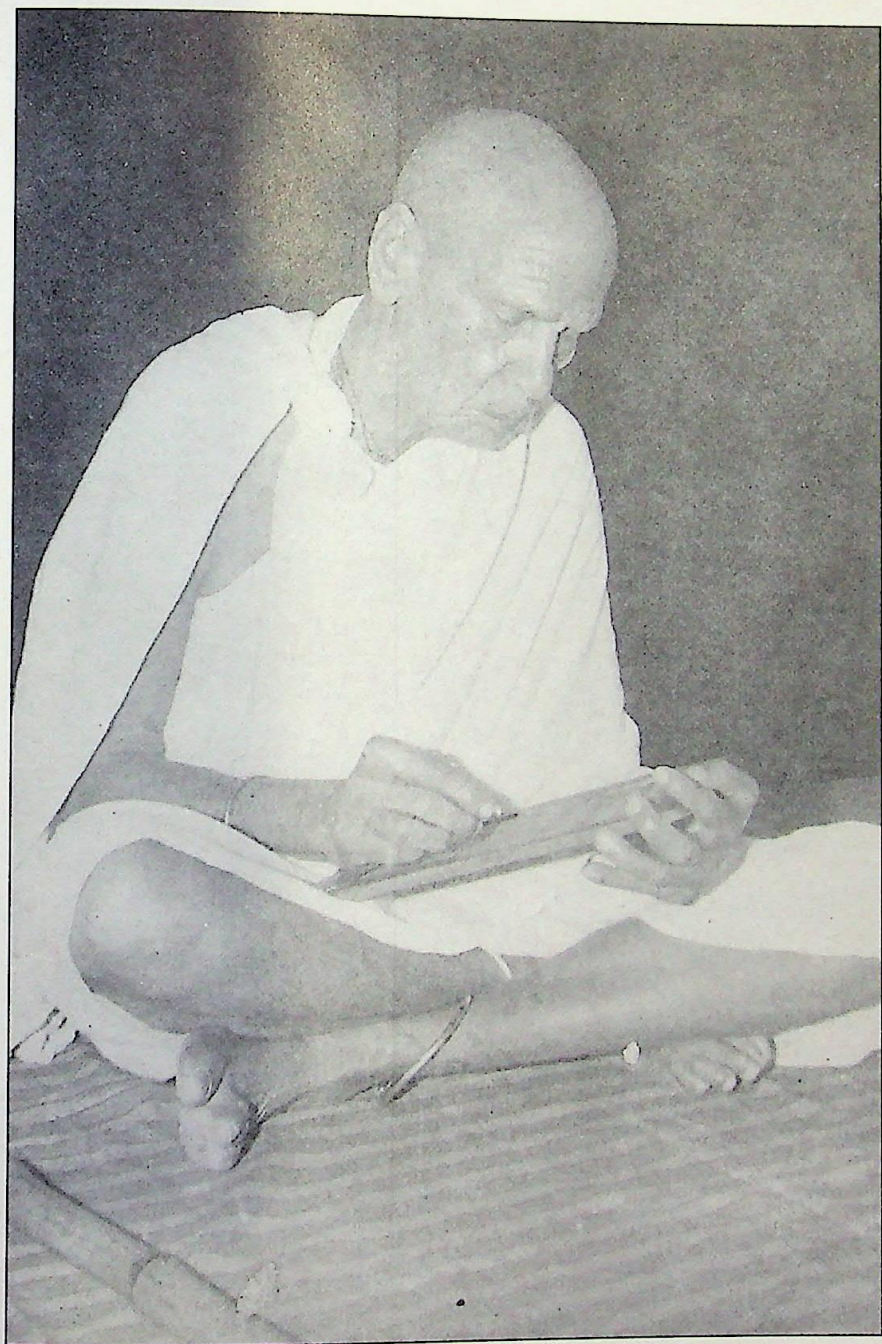
श्री गुरुदेव स्लेट पर लिखते हुये।
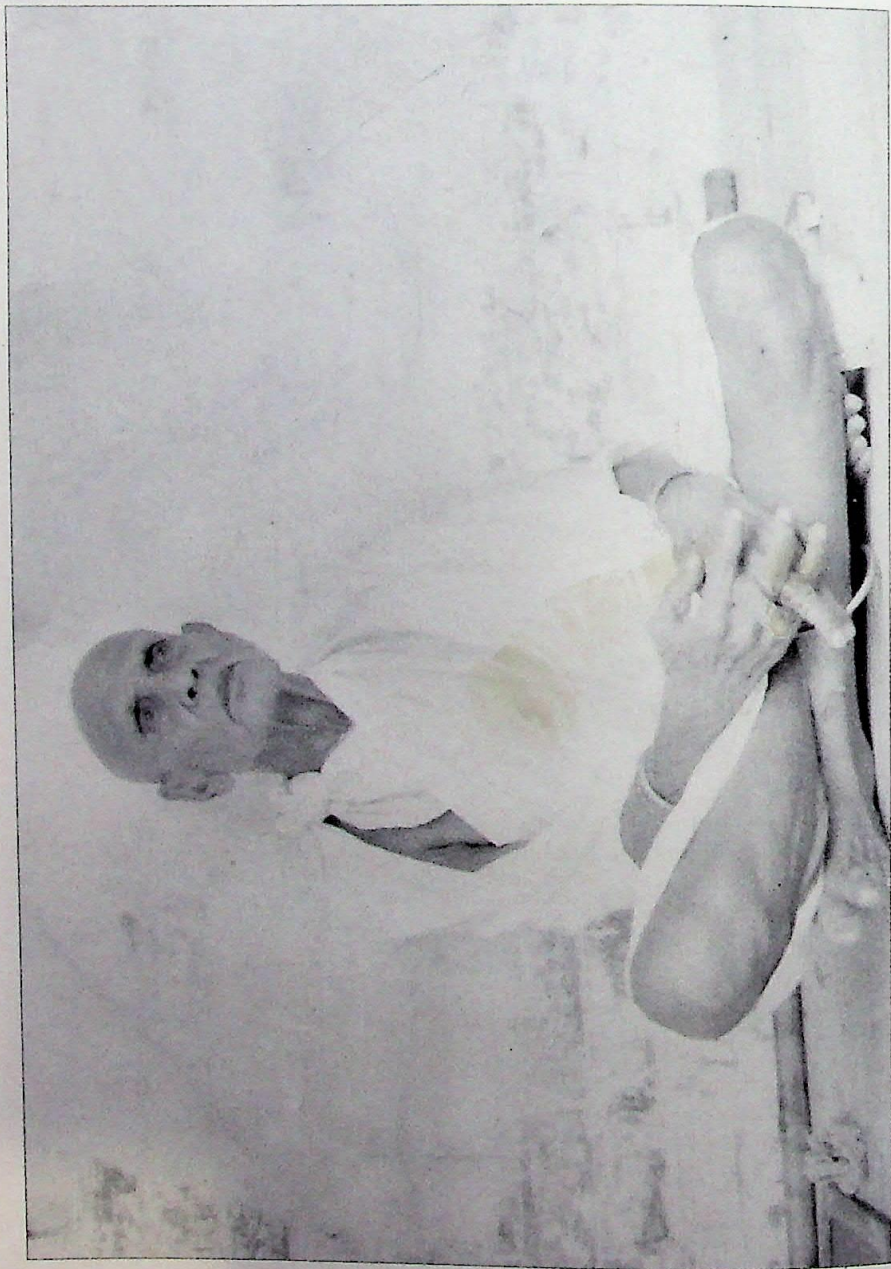
श्री गुरुदेव तखत पर भाव में लीन।

पढ़ि सुनि लिखि कंठस्थ लीन कै बोलत दोउ कर जोरे हैं जी।
सीता राम सीता राम राधे श्याम राधे श्याम।।
अंधे कहैं अंत जम पकड़ैं जाय नर्क में बोरे हैं जी।
सीता राम सीता राम राधे श्याम राधे श्याम।४।

(२३८)

पदः- जेहि जाने की तय्यारी। सो सूरति लेय सँभारी।
रंकार का तार है जारी। बस उसी पै करै सवारी।।
सुर संतन यही पुकारी। दोनो दिसि जै जै कारी।।
अंधे कहैं लगै न बारी। पहुँचे चट भवन मंझारी।८।

२३९ ।। श्री भगत राम जी ।।

(अपढ़, बैंगलौर)

दोहाः- सियाराम प्रिय श्याम रमा हरि भजिये तन मन लाय।
भगत राम कहैं प्रगट ह्वै उर में लेहिं लगाय।।
शूल पाणि औ गदा धर रहैं तुम्हारे संग।
भगत राम कहैं जियति ही जीति जाव जग जंग।।

।। शाँति की बालू, दीनता का जूना, बरतन मलने का निमूना।।

पदः- बरतन माँजौ पांचौं।
अपने गुरु से भेद जानि कै इन से मन लै टांचौ।
तब यह तुमको डरैं हमेशा राम नाम रंग राचौ।
बालमीकि भागवति औ मानस श्री गीता को बांचौ।
वेद शस्त्र उपनिषद सांगिता यही कहत हैं सांचौ।५।

शान्त दीन बनि तन में घुसि कै राम सिया को जांचौ।
नर तन सुफ़ल करौ जियतै में चन्द रोज का ढांचौ।
मरना पैदा होना छूटै फेरि न जग में नाचौ।
जो नहिं मानो सुर मुनि बानी मिलै न कौड़ी कांचौ।
या से चेति क अजर अमर हो बरतन मांजौ पांचौ।१०।

२४० ।। श्री वली शाह जी ।।

पदः- बैर करै जो कोई तुम से तो तुम उसकी खैर करौ।
इस प्रकार संसार में रहकर अपने तन में सैर करो।

देखौ सुर मुनि दर्शन देवैं सब के खुश ह्वै पैर परौ।
सिया राम प्रिय श्याम रमा हरि सन्मुख राजैं जियति तरौ।४।

शुभ कारज करिये तन मन से दुख आवै तबहूँ न डरौ।
नाम कि धुनि पर लगी रहै लौ निर्भय हो टारे न टरौ।
यह बिधि जानि श्री सतगुरु से अपने हिरदय माँहि धरौ।
वली शाह कहैं भिच्छा करिकै भक्तों अपना उदर भरौ।८।

२४१ ।। श्री अंधे शाह जी ।।

पदः- भगतौं निकली वहाँ भगतैया ।
जियतै में मन किह्यो न काबू करत फिरत धुरतैया।
सतगुरु करो भजन बिधि जानो छूटे कपट खटैय्या।
अमृत पियो सुनो घट अनहद बाजत बिमल बधैय्या।
नागिनि जगै चक्र षट बेधैं सातों कमल खिलैय्या।५।

सुर मुनि आय आय कर भेटैं जै जै कार करैय्या।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि सन्मुख जग पितु मय्या।
अन्धे कहैं अन्त निजपुर हो छूटै जग दुख दैय्या।८।।

(२४२)

पदः- जानौ राम नाम की मौज।
सतगुरु करो भेद तब पावो कंगलन भागै फौज़।
तेज समाधि रूप हो हासिल कर्म रेख दें गौंज।
अन्धे कहैं अन्त निज पुर हो छूटै जग दुख हौज।४।

(२४३)

शेरः- जब प्रेम हमारा है प्रभु से परपंच हमारा क्या करिहै।
अन्धे कहैं राम नाम की धुनि परपंच को टंचि के खुद जरिहै।।
पाक रह बेबाक रह। अन्धे कहैं हरि पास रह।२।

(२४४)

दोहाः- सतगुरु से उपदेस लै छोड़ो सान औ मान।
चारौं धाम के किहे का तब फल पावो जान।

पर नारायन पास में तन तजि करो पयान।
है चौथा बैकुँठ यह अन्धे कह हम जान।४।

दोहा:- तन मन प्रेम लगाय के तीरथ ब्रत जिन कीन।
अन्धे कह बैकुँठ गे सिंहासन आसीन।
पर स्वारथ औ दान करि गे बैकुँठ मँझार।
अन्धे कह दोनो दिसा उनकी जै जै कार।४।

(२४५)

पदः- इज्जत उसी की सच्ची हरि भजन जिसने जाना।
दुनियावी इज्जत कच्ची छूटै न आना जाना।
सतगुरु से जानि सुमिरन तब मन को प्रेम साना।
अन्धे कहैं उसी का साकेत में ठेकाना।४।

(२४६)

पदः- जे जन करैं बास पराग।
जाप बिधि सतगुरु से जानै जाय मन तब जाग।
ध्यान धुनि परकास लै हो मिटै भव की आग।
राम सीता लखै सन्मुख देव मुनि संग लाग।
गंगा जमुना सरस्वती दें दिब्य पूड़ी साग।
अन्धे कहैं तन त्यागि कै चढ़ि यान निजपुर भाग।६।

(२४७)

पदः- कथा सुनाना सुनना भक्तौं हवन प्रार्थना का करना।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप सामने भा तरना।
अन्धे कहैं जीतिये मन को सतगुरु करि चरनन परना।
यही उपाय देव मुनि सब हित बार बार युग युग वरना।४।

(२४८)

पदः- सेवा सुमिरन कीर्तन पूजन। जप औ पाठ कथा औ दरसन।।
शाँति दीन बनि लूटौ तप धन। अंधे कह सतगुरु दै तन मन।४।

दोहा:- शुभ कामन में जब तलक मन नहिं धरता धीर।।
अंधे कह तब किमि मिटै भव सागर की पीर।।

(२४९)

पदः- सिय राम के दर्शन भये नहीं सो तो वक्ता अज्ञानी है।
सुर मुनि सब कैसे मिलैं उसे पढ़ि सुनि बोलत मृदु बानी है।
जब कथा बन्द करिकै बैठें मन करत फिरत सैलानी है।
अंधे कहैं कैसे गती होय आखिर होती हैरानी है।४।

(२५०)

पदः- मति सुनो कथा उस वक्ता की जिन सिया राम को नहि जाना।
उसमें तो खाली वाक्य ज्ञान वह सान मान में है साना।
मन अपना काबू किहे बिना कहीं खुलते हैं आँखी काना।
कहें अंध शाह तन छोड़ि चलै नाना बिधि दुख नहि कल्याना।४।

(२५१)

पदः- श्री वशिष्ट जी विश्वामित्र को लव सतसंग क भेद बतायो।
राम नाम की र रंकार धुनि हर शै से सुनि सुख उमड़ायो।
राम सिया की झाँकी अद्भुद सन्मुख आय छटा छवि छायो।
सुर मुनि आय आय कियो जै जै हर्ष हर्ष उर में लिपटायो।४।

नागिनि जगी चक्र षट बेधे सातों कमलन महक उड़ायो।
अनहद बाजा बाजन लागे अमृत पियो गगन झरि लायो।
भयो प्रकाश दशा लय पहुँचो कर्म रेख पर मेख मरायो।
अंधे कहैं धन्य ते प्रानी जिन सतगुरु करि तन फल पायो।८।

(२५२)

पदः- धन्य मन्सूर मस्ताना रहा निर्भय न चिल्लाना।
शकल जब देखी फाँसी की चूम कर खूब हाँसी की।
हमै निज धाम को भेजिहौ गले में डोर को सजिहौ।
बहुत पत्थर के पारों से मारते हँसते यारों से।
बहुत लखि लखि के चिल्लाते होय मुरछा औ गिर जाते।
हाथ औ पैर काटेगे नाक औ कान छाँटेगे।६।

ज़वाँ मुख से निकलवाया आँख दोनों को कढ़वाया।
खून के बूँद जो गिरते अनहलहक शब्द सुनि पड़ते।

फेरि सूली पै चढ़वाया नेकहूँ भय नहीं खाया।
छोड़ि तन निज वतन धाया प्रभु निज पास बैठाया।
दोऊ दिसि ते विजय पाया कहैं अंधे न जग आया।
हुये हैं और होवैंगे त्यागि तन जग न रोवैंगे।१२।

(२५३)

चौपाईः- वाक्य ज्ञान वाले जे प्रानी। निज कुल की मेटी कुल कानी।
निज को समुझि रहे बड़ ज्ञानी। बिरथा बने फिरत अभिमानी।
अन्त समै होवै हैरानी। जम गहिं नर्क में देवैं सानी।
सतगुरु करि सुमिरन जिन जानी। अंधे कहैं धन्य ते प्रानी।४।

चौपाईः- ठाढ़े चलते लेटे बैठे। साधन करि सब चोरन ऐंठे।
अंधे कह घट भीतर पैठे। चौरासी के छूटे ठैंठे।२।

बार्तिकः- नाम के अन्दर प्रकास, समाधि, सरूप, सब लोक; रूप के अन्दर नाम, प्रकास, समाधि; प्रकास के अन्दर नाम, रूप, समाधि; समाधि के अन्दर नाम, रूप, प्रकास, सब लोक; मैं अंधा क्या वरनन करूँ, सतगुरु शिव जी, हनुमान जी ने कहा है उस पर मेरा अटल विश्वास है।

दोहाः- जहाँ भाव तहँ प्रेम है जहाँ प्रेम तहँ भाव।
अंधे कह सतगुरु बचन गहौ मगन ह्वै जाव।।
भजन क साधन प्रेम है भजन क साधन भाव।
अंधे कह मानो सही न मानौ चकराव।२।

चौपाईः- चींटी चिड़ियन दीन्ह्यो चारा। ते पहुँचे बैकुण्ठ मंझारा।
दया धर्म का फल यह भाई। अंधे कहैं करै सो पाई।२।

(२५४)

पदः- श्री वशिष्ट जी विश्वामित्र को लव सतसंग का भेद बतायो।
राम नाम की र रंकार ध्वनि हर शै से सुनि सुख उपजायो।
भयो प्रकास दशा लय पहुँच्यो कर्म रेष पै मेष मरायो।
अनहद सुन्यो अमी रस चाख्यो सुर मुनि विहँसि विहसि उर लायो।४।
नागिनि जगी चक्र षट वेधे सातौं कमल तरंग उड़ायो।
राम सिया की झाँकी अद्‌भुद सन्मुख आय छटा छवि छायो।

अंधे कहैं धन्य ते प्राणी जिन जियतै करतल करि पायो।
अंत छोड़ि तन गे साकेतै आवा गमन ते छुट्टी पायो।८।

(२५५)

पदः- बार बार हरि को हैं टेरत प्रेम बिना प्रभु मसकत नाहीं।
अंधे कहैं भजन यह झूठा नेकौं आगे चसकत नाहीं।
सतगुरु करि सुमिरन जिन जाना तिनको मुरही भसकत नाहीं।
अन्त छोड़ि तन गये अमरपुर फेरि जगत में खसकत नाहीं।४।

(२५६)

पदः- राम भजन बिन नर तन सूना।
अंधे कहैं मरा जिमि चूना।
सतगुरु करि सुमिरन जिन जाना वाको पकड़ि न पायो भूना।
अन्त छोड़ि तन गये अचलपुर गर्भ वास के खेल को भूना।४।

दोहाः- ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि दरशन कीर्तन पूजन से।
अंधे कहैं होय मुद मंगल प्रेम लगे जब तन मन से।।

(२५७)

पदः- अनहद बाजा कौन बजावै।
जितने बाजा रूप हैं उनके निज आवरन बजावैं।
ताल तान स्वर धुनि सम रहती भेद विलग नहिं जावै।
राग रागिनी समय समय पर आइ के नाचैं गावैं।४।

देखत सुनत बनत है भक्तौं जो मन को ठहरावै।
एक तार हरदम है बाजत यह नौबत कहवावै।
हरि दरवाज़े पहुँचै साधक रंक से राव बनावै।
अंधे कहैं शरनि सतगुरु की जो चाहै सो पावै।८।

दोहाः- ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप पाठ जप से दरसै।
अंधे कहैं भया मन संगी हर दम तब आनद बरसै।।

दोहाः- मन समाइगा नाम में ताकी मृत्यु न होय।
अंधे कह सतगुरु बचन छूट गई तब दोय।।

सूरति लागी शब्द में काल न आवै पास।
अंधे कह सो जानिये भया राम का दास।२।

दोहाः- सुमिरन ऐसा कीजिये औ न जानै कोय।
अंधे कह पट जाँय खुलि आवा गमन न होय।।
संसय तो छूटी नहीं पढ़े संसकृत जान।
अंधे कह जन्मैं मरैं मिलैं न ठीक ठेकान।२।

(२५८)

पदः- कथा सुनाना सुनना भक्तौं हवन प्रार्थना का करना।
ध्यान प्रकास समाधि नाम धुनि रूप सामने भा तरना।
अंधे कहैं जीति लो मन को सतगुरु करि चरनन परना।
यही उपाय देव मुनि जुग जुग बार बार सब हित वरना।४।

(२५९)

पदः- राम नाम कागज़ पर लिखते। तिनको देखा प्रभु संग चसते।
गाली दिहे न कबहिं भखते। मारे ते हंसते नहिं कंखते।
हर दम अपने इष्ट को लखते। सतगुरु से सब भेद को सिखते।
द्वैत भाव उर में नहिं रखते। अंधे कहैं बैठि सुख तखते।८।

(२६०)

(१)

दोहाः- अर रर साधौ गुनौ कबीर।
इड़ा पिंगला एक हों सुखमन में चलि जाव।
तिरबेनी श्नान करि अन्धे कह हरषाव।
भला सब सुर मुनि तुमरी जै बोलैं।४।

(२)

अर रर साधौ सिखौ कबीर।
सतगुरु से अजपा सिखौ गगन मगन ह्वै जाव।
अन्धे कह जियतै तरौ मिलै न ऐसा दाँव।
भला साका सब जुगन रहै जारी।४।

(३)

अर रर भक्तौं सुनौ कबीर।

तिरबेनी में जौन कोइ मन को दे नहवाय।

अन्धे कह तन त्यागि के निजपुर बैठे जाय।

भला दोऊ दिसि बड़ी बड़ाई हो।४।

(४)

अर रर भैय्या लिखौ कबीर।

सुखमन में परि मारिये गोता द्वैत नसाय।

अन्धे कह तन छोड़ि के सत्य लोक लो धाय।

भला दोनो दिसि वाकी जय होवै।४।

(५)

अर रर मित्रों कहौ कबीर।

कुँज गली घट में बनी घूमत राधे श्याम।

अन्धे कह जियतै लखौ अन्त मिलै निज धाम।

भला सतगुरु बिन पहुँचव मुशिकिल है।४।

(६)

अर रर संतौ पढ़ौ कबीर।

सुर मुनि जुग श्रुति क़हत हैं भजन करौ मन जीति।

अन्धे कह तब जाय ह्वै ठीक राम से प्रीति।

भला दोनो दिसि बाजै बिजय ढोल।४।

(७)

अर रर सिधौ लिखौ कबीर।

भोजन बसन में सादगी शाँति दीनता होय।

अन्धे कह सतगुरु शरनि सूरति शब्द मिलोय।

भला निर्भय निर्बैर न जग घूमै।४।

(८)

अर रर भैय्या बाँचु कबीर।

सतगुरु से उपदेस लै भार झोंक सब भार।

समय स्वाँस तन है मिला अन्धे कह सुखसार।

भला सुर मुनि औ सक्ती भला करैं।४।

(९)

अर रर भैय्या कहौ कबीर।

दुख में धीरज को धरै सुमिरै श्री भगवान।

अन्धे कह रक्षा करैं हर दम हर हनुमान।

भला यह बात भक्त के मतलब की।४।

(१०)

अर रर भक्तौं गहौ कबीर।

सूरति शब्द कि जाप से होत दशा विज्ञान।

अंधे कह हम से कह्यौ शंकर जी हनुमान।

भला विश्वास करो करतल होवै।४।

(११)

अर रर सन्तौं पढ़ौ कबीर।

सूरति शब्द कि जाप से खुलते आँखी कान।

अंधे कह सब युगन में सुर मुनि कीन बखान।

भला करि जतन मगन हो जियतै में।४।

(१२)

अर रर सन्तौं गुनौ कबीर।।

सूरति शब्द कि जाप से खुलते चारौं ध्यान।।

अंधे कह हर दम लखौ श्री सहित भगवान।।

भला जो भीतर है वह बाहेर है।।

पदः- निर्गुण सर्गुण के परे मन बानी के पार।।

कारज कारन के परे सब में सब से न्यार।।

सब ईशों का ईश है जानै सो भव पार।।

अंधे कह सतगुरु करौ टूटै द्वैत किंवार।।

(२६१)

पदः- मन मति हरत लखत ही श्याम आप की चाल ढाल मतवाली।

छवि सिंगार छटा की सोभा चितवनि अजब निराली।

मुरली की धुनि श्रवन परै जस जाय जिगर में साली।

बिरह की पीर हरै सब सुधि बुधि कर्मन की गति टाली।

अमृत पियै सुनै घट अनहद सुर मुनि कर गले डाली।५।

तरह तरह की गमक स्वरन ते निकसत भक्तौं आली।
नागिनि जगी चक्र सब नाचत कमल खिले सब डाली।
तेज समाधि नाम धुनि रं रं हर शै में है ढाली।
सतगुरु करो भजन बिधि जानो चेत करो अब हाली।
जनम मरन का नाच कठिन मन मूसर दुनियाँ गाली।१०।

अंधे कहैं धन्य ते प्राणी जिन पायो बन माली।।
अन्त छोड़ि तन निजपुर पहुँचे छूटी गर्भ की जाली।१२।

(२६२)

पदः- दुर्बल बने क्यों घूमते अति बल तुम्हारे पास है।
अंधे कहैं सतगुरु करो झूठी जहाँ की आस है।
नाम की धुनि लय दशा क्या होत अजब प्रकास है।
षट रूप हर दम सामने बोलै तु सच्चा दास है।४।

नागिनि जगै चक्कर चलैं कमलन क होत विकास है।
तन मन मुअत्तर महक से जो उड़ रही हर सांस है।
अनहद सुनो अमृत चखौ घट झरत बारह मास है।
तन छोड़ि चल साकेत लो जहँ अमित भक्तन बास है।८।

(२६३)

दोहाः- सूरति लागी शब्द पर नवों द्वार भे बंद।
अंधे कह सन्मुख लखौ हर दम आनन्द कंद।।
सूरति लागी शब्द पर खुलिगा दसवां द्वार।
अंधे कह सन्मुख रहैं श्री सहित सरकार।।
सूरति लागी शब्द पर भयो महा परकास।
अंधे कह जियते मिटी काल मृत्यु की त्रास।।
सूरति लागी शब्द पर भई समाधी जान।
अंधे कह जियते कटी कर्मन की गति मान।।
सूरति लागी शब्द पर ररंकार धुनि होय।
अंधे कह हर दम मगन छूटि गई मन दोय।५।

सूरति लागी शब्द पर षट चक्कर घुमराँय।
अंधे कह सातों कमल फूलें महक उड़ाँय।।

सूरति लागी शब्द पर कुँडलिनी जगि जाय।
अंधे कह चौदह तबक जाय के दीन दिखाय।।
सूरति लागी शब्द पर सुर मुनि दर्शन दीन।
अंधे कह निज कर उठा सबहुन जै जै कीन।।
सूरति लागी शब्द में सारी श्रृष्टि क ध्यान।
अंधे कह सब सृष्टि में निज को लो पहचान।।
सूरति लागी शब्द में खुलिगे चारौं ध्यान।
अंधे कह सो मानिये जा के आँखी कान।१०।

सूरति लागी शब्द में खुलिगे चारौं द्वार।
मुक्ति भक्ति जियतै मिली अंधे कहैं पुकार।।
सूरति लागी शब्द में अनहद नाद सुनाय।
अंधे कह तब मन मगन नेक नहीं बिलगाय।।
सूरति लागी शब्द पर करी अमी रस पान।
अंधे कह घट में भरा सागर एक महान।।
सूरति लागी शब्द में भई दशा विज्ञान।
अंधे कह सुधि बुधि गई बाल भाव भा जान।।
सूरति लागी शब्द में पांच तत्व चमकांय।
अंधे कह तन चारि जो विलग विलग दिखलांय।१५।

सूरति शब्द कि जाप यह भक्तौं अगम अपार।
अंधे कह सतगुरु शरनि, सो कछु जानन हार।।
अजपा या को कहत हैं कर मुख हिलै न नैन।
अंधे कह सब जुग कहा सुर मुनि सब हित बैन।।
सूरति शब्द के मार्ग सम सुलभ मार्ग नहिं कोय।
अंधे कह सतगुरु शरनि पावत भक्तौं कोय।१८।

दोहाः- हाकिम वही है उसका वही हुकूमत करता है।
अंधे कहैं बिना सुमिरन के जीव जन्मता मरता है।१।
सूरति शब्द की जाप से सब में ब्रह्म दिखाय।
अंधे कह सुमिरन करै सो जियतै लखि पाय।२।

पदः- अफ़लातून बने जे घूमत भजन में मन को नहिं लाते।
अंधे कहैं अन्त चलि नर्क में पल भर कल कोइ नहिं पाते।।
आँखी कान खुले नहिं अपने औरन को उपदेश करैं।
अंधे कहैं ज्ञान यह झूँठा अन्त छोड़ि तन नर्क परैं।२।

२६५ ।। श्री खुशाली शाह जी ।।

पदः- अरे मन शान्त ह्वै बैठो मुझे गुरु पास जाने दो।
बहुत दुख सह हुआ रोगी पता हरि का लगाने दो।
करैं प्रभु दीन पै दाया जरा नाड़ी दिखाने दो।
नाम की जाय मिलि बूटी चढ़ै रंग मुझको खाने दो।
सुनै अनहद कि धुनि प्यारी अमी पी मुस्कराने दो।५।
देव मुनि गृह निमंत्रण हो दिब्य भोजन को पाने दो।
जगे नागिन चलैं संग में लोक सब घूमि आने दो।
चक्र षट बेधि घुमरावैं कमल सातों खिलाने दो।
महक क्या स्वरन से निकले मस्त ह्वै सर हिलाने दो।
तार सब लोकों से आवैं खटा खट उनको आने दो।१०।
धुनी एक तार जारी हो रगन रोवन सुनाने दो।
ध्यान परकास लय में जाय कर सुधि बुधि भुलाने दो।
मिलै संसार से फुरसत करम की गति मिटाने दो।
छटा षट रूप की हरदम मेरे सन्मुख में छाने दो।
भिखारी दीन जो आवै उसे बिधिवत बताने दो।१५।
तरक्की हो मेरी तेरी उसे आगे बढ़ाने दो।
लखैं सब सृष्टि में निज को सृष्टि निज में दिखाने दो।
जियति करि लेय सब करतल अन्त निज धाम जाने दो।
रहै जब तक जगत में तन सदा हरि जस को गाने दो।
खुशाली शाह की बिनती कृपा हो अब न ताने दो।२०।

२६६ ।। श्री अंधे शाह जी ।।

पदः- सुरतिया शब्द पर जिसकी लगी रहती लगी रहती।
ध्यान परकास लै में जा पगी रहती पगी रहती।

कमल औ चक्र कुँडलिनी जगी रहती जगी रहती।
छटा खट रूप की सन्मुख टँगी रहती टँगी रहती।
देव मुनि सँग सतसंगति सगी रहती सगी रहती।
कहैं अंधे अजा संग से भगी रहती भगी रहती।६।

(२६७)

पदः- सूरति लगी जब शब्द पर बस काम हो गया।
अंधे कहैं असुरन क दल चुप चाप सो गया।
धुनि नाम तेज लै दशा बिधि लेख खो गया।
सन्मुख में रूप षट का दीदार हो गया।४।

शेरः- सतगुरु बचन पै जिसका विश्वास हो गया।
अंधे कहैं बस जान लो वह पास हो गया।
सूरति शबद के मार्ग को जो जान कर हटा।
अंधे कहैं तन छोड़ि कै वह नर्क में सटा।४।

(२६८)

दोहाः- नाद विन्दो उपनिषद में उलटा ह्वैगा ध्यान।
अंधे कह हनुमान हर हमको दीन्हों ज्ञान।।
सूरति बाँयें वेद धरि सुनो शब्द की तान।
अंधे कह सर्वत्र ते ररंकार भन्नान।।
ध्यान प्रकाश समाधि हो सुधि बुधि वहाँ भुलान।
अंधे कह सन्मुख रहैं षट झाँकी सुख खान।।
अनहद बाजा घट बजै करो अमी रस पान।
अंधे कह सुर मुनि मिलैं मानैं प्राण समान।।
षट चक्कर नागिनि जगै सातौं कमल फुलान।
अंधे कह तन छोड़ि कै लो साकेत में थान।५।

दोहाः- सूरति शब्द कि जाप यह अजपा या को नाम।
अंधे कह सतगुरु करो सारो अपना काम।
नैन जीभ कर नहिं हिलैं अपनै होवै जाप।
अंधे कह देखौ सुनौ मेटौ भव की ताप।४।

सोरठाः- है अनादि यह खेल सुर मुनि की बानी कही।
जीव ब्रह्म से मेल अंधे कह तब हो सही।।

शेरः- आलस ने बस में कीन्हा भारत के नर व नारी।
अंधे कहैं इसी से वे हो रहे दुखारी।।

शेरः- धुनि गैब की घहरा रही हर शै से जो सुनते हैं जी।
अंधे कहैं वे ब्रह्म को सरवत्र में मनते हैं जी।।

दोहाः- बंधा माया में बंधा कैसे छूटै दोय।
अंधे कह सतगुरु शरनि निरबंधा सो होय।।

(२६९)

पदः- भजन करने का मज़ा पाते हैं वह।
अंधे कहैं सतगुरु शरनि मन नाम पै लाते हैं वह।
बिधि लेख को निज भाल से जियतै में कटवाते हैं वह।
ध्यान धुनि परकास लै में जाय कर माते हैं वह।
अनहद सुनैं अमृत पियैं सुर मुनि से बतलाते हैं वह।
नागिनि जगा सब लोकों में फेरी लगा आते हैं वह।६।

षट चक्र चालू करिके सातौं कमल उलटाते हैं वह।
महक से हो कर मगन रहि रहि के मुशक्याते हैं वह।
षट रूप की अद्‌भुद छटा छबि सामने छाते हैं वह।
दीनता औ शाँति गहि पूछै तो बतलाते हैं वह।
एकांत में इस भेद को जा कर के सिखलाते हैं वह।
तन छोड़ि कर के यान चढ़ि साकेत को जाते हैं वह।१२।

(२७०)

चौपाईः- अहह तात लछिमन बड़ भागी। राम पदारबिन्दु अनुरागी।।
सतगुरु करि सुमिरन में लागी। तन मन प्रेम में दीन्हेव पागी।।
ब्रह्म अगिन वाकी गई जागी। बिधि का लिखा जियति में दागी।।
कमल चक्र कुँडलिनी जागी। सुर मुनि मिलैं लिपटि उर लागी।४।

राम नाम की धुनि है जागी। हर शै से हर दम रटि लागी।
राम सिया सन्मुख में तागी। तेज समाधि में सुधि बुधि टाँगी।।
अन्त छोड़ि तन निजपुर भागी। अंधे कहैं जगत को त्यागी।७।

पदः- अनहद बाजा सुनि रहा अमृत का हो पान।
अंधे कह हरि शरनि भा ज्ञान ध्यान विज्ञान।।

२७१ ।। श्री नन्हें शाह जी ।।

(मुकाम शाहबाद)

पदः- चोरन के गुरु थानेदार।
लै लै आवो धरि धरि जावो तब हम करैं शुमार।
चोरी करौ औ डाका मारौ होय न बाँको बार।
मारौ काटौ बाँधि बहावौ सरिता ताल मँझार।
कोई बोलि सकै नहिं तुमसे हम खुद हैं रखवार।५।

झूँठे को हम साँच बनावैं साँच को झूँठ में डार।
अन्त समय यम लेने आवैं तब को सकै सम्हारि।
डारि नर्क में करैं मरम्मत तड़फ़ौ करौ गोहारि।
कानन सुना औ आँखिन देखा नन्हें कहैं पुकारि।
या से चेति भजन में लागौ पाप होंय जरि छार।१०।

२७२ ।। श्री गोस्वामी तुलसी दास जी ।।

पदः- हम से कौन बड़ो परिवारी।
कुरमा है बड़ो भारी।
सत स्वई पिता धर्म स्वइ भ्राता सरधा श्री महतारी।
सील बहिनि संतोष पुत्र है छिमा हमारी नारी।
आशा सासु त्रिशना है सारी लोभ मोह ससुरारी।५।

अहँकार स्वइ ससुर हमारे सो सब को फटकारी।
मन दिवान सूरति स्वइ राजा बुधि बड़ि मित्री भारी।
पाँचौं चोर बसत हैं तन में इन ही को डर भारी।
ज्ञान है गुरु विवेक है चेला रहत सदा हितकारी।
राम नाम की बसत नगरिया तुलसी पीतम प्यारी।१०।

पदः- राम चरण अभिराम काम-प्रद तीरथ-राज विराजे।
शंकर-हृदय भगति भूतल पर प्रेम अक्षय-वट भ्राजे।

श्याम-वरण पद-पीठ अरुण-तल लसत विशद नख श्रेणी।
जिमि रवि सुता शारदा सुर सरि मिलि चलीं ललित तिरबेनी।४।

अंकुश कुलिश कमल ध्वज सुन्दर भँवर तरंग बिलासै।
मज्जहिं सुर सज्जन मुनि जन मन मुदित मनोहर बासै।
बिनु बिराग जप जोग यग्य ब्रत बिनु तप बिनु तन त्यागे।
सब सुख सुलभ सद्य तुलसी प्रभु-पद-प्रयाग अनुरागे।८।

२७३ ।। श्री कबीर दास जी ।।

पदः- कर नैनों दीदार महल में प्यारा है।
काम क्रोध मद लोभ बिसारो शील सन्तोष क्षमा सत धारो,
मद्य मांस मिथ्या तज डारो हो ज्ञान अश्व असवार भरम से न्यारा है।।
धोती नेती बस्ती पाओ आसन पद्म युक्ति से लाओ,
कुंभक कर रेचक करवाओ पहले मूल सुधार कारज हो सारा है।।
मूल कँवल दल चतुर बखानो क्लीँ जाप लाल रँग मानो,
देव गणेश तँह रूपा थानो ऋद्धि सिद्धि चँवर डुलारा है।।
स्वाद चक्र षट दल विस्तारो ब्रह्म सावित्री रूप निहारो,
उलटि नागिनी का सिर मारो, तहाँ शब्द ओंकारा है।।
नाभी अष्ट कमल दल साजा, स्वेत सिंहासन बिष्णु विराजा,
ह्रीँ जाप तासु मुख गाजा लक्ष्मी शिव आधारा है।५।

द्वादश कमल हृदय के माहीं, संग गौर शिव ध्यान लगाहीं,
सोऽहं शब्द तहाँ धुनि छाई गण करते जै कारा है।।
षोड़स कमल कंठ के माहीं, तेहि मध्य बसे अविद्या बाई,
हरि हर ब्रह्मा चँवर ढुराई जहँ श्रीँ नाम उच्चारा है।।
तापर कँज कमल है भाई, बक भौरा दुइ रूप लखाई,
निज मन करत तहाँ ठकुराई सो नैनन पिछवारा है।।
कमलन भेद किया निर्वारा यह सब रचना पिण्ड मंझारा,
सत्संग करि सत्गुरु सिर धारा वह सतनाम उचारा है।।
आँख कान मुख बन्द कराओ अनहद भींगा शब्द सुनाओ,
दोनों तिल एक तार मिलाओ तब देखो गुलज़ारा है।१०।

चन्द्र सूर एकै घर लाओ सुषमन सेती ध्यान लगाओ,
तिरबेनी के संग समाओ भौंर उतर चल पारा है।।
घंटा शंख सुनो धुन दोई सहस कमल दल जग-मग होई,
ता मध्य करता निरखो साईं बंक नाल धस पारा है।।
डाकिनी साकिनी बहु किलकारें जम किंकर धर्म-दूत हँकारे,
सत्तनाम सुन भागे सारे जब सतगुरु नाम उचारा है।।
गगन-मंडल बिच अमृत कुइया, गुरुमुख साधू भर भर पीया,
निगुरा प्यास मरे बिन कीया जा के हिये अंधियारा है।।
त्रिकुटी महल में विद्या सारा घनहर गरजें बजे नगारा,
लाल वर्ण सूरज उजियारा चतुर कंवल मंझार शब्द ओंकारा है।१५।

साधु सोई जो यह गढ़ लीना नौ दरवाज़े परगट कीन्हा,
दसवाँ खोल जाय जिन्ह दीन्हा जहाँ कुफल रहा मारा है।।
आगे स्वेत सुन्न है भाई मानसरोवर पैठि अन्हाई,
हंसन मिलि हंसा होइ जाई मिले जो अमी अहारा है।।
किंगरी सारंग बजे सितारा अक्षर ब्रह्म सुन्न दरबारा,
द्वादश भानु हंस उजियारा षट दल कमल मंझार शब्द ररंकारा है।।
महा सुन्न सिंध विषमी घाटी बिन सतगुरु पावे नहिं बाटी,
व्याघर सिंघ सर्प बहु काटी तहँ सहज अचिंत अपारा है।।
अष्टदल कमल पार ब्रह्म भाई दहिने द्वादश अचिंत रहाई,
बाँये दस दल सहज समाई यूँ कमलन निरवारा है।२०।

पांच ब्रह्म पांचों अण्डबीनो पांच ब्रह्म निःअक्षर चीन्हों,
चार मुकाम गुप्त तहँ कीन्हों जा मध्य बन्दीवान पुरुष दरबारा है।।
दो पर्बत के संघ निहारो भँवर गुफा तहँ सन्त पुकारो,
हंसा करते केलि अपारो वहाँ गुरुन दरबारा है।।
सहस अठासी दीप रचाये हीरा पन्ना लाल जड़ाये,
मुरली बजत अखण्ड सदाये तहँ सोऽहं झुनकारा है।
सोऽहं हद्द तजी जब भाई सत्त लोक की हद पुनि आई।
उठत सुगन्ध महा अधिकाई जाको वार न पारा है।
षोड़श भानु हंस को रूपा बीना सत्त धुन बजे अनूपा,
हंसा करत चंवर सिर भूपा सत्त पुरुष दरबारा है।२५।

कोटिन भानु उदय जो होई एते ही पुनि चन्द्र खलोई,
पुरुष रोम सम एक न होई ऐसा पुरुष दीदारा है।
आगे अलख लोक है भाई अलख पुरुष की तहँ ठकुराई,
अरबन सूर रोम सम नाहीं ऐसा अलख निहारा है।
तापर अगम महल एक साजा अगम पुरुष ताही को राजा,
खरबन सूर रोम एक लाजा ऐसा अगम अपारा है।
ता पर अकह लोक है भाई पुरुष अनामी तहाँ रहाई,
जो पहुँचे जानेगा वोही कहन सुनन से न्यारा है।
काया भेद किया निर्बारा यह सब रचना पिण्ड मंझारा,
माया अविगत जाल पसारा सो कारीगर भारा है।३०।

आदि माया कीन्हीं चतुराई झूठी बाज़ी पिण्ड दिखाई,
अविगत रचनरची अण्ड माहीं ता का प्रतिबिंब डारा है।
शब्द विहंगम चाल हमारी कहें कबीर सतगुरु दइ तारी,
खुले कपाट शब्द झुनकारी पिण्ड अण्ड के पार सो देश हमारा है।३२।

२७४ ।। श्री गोस्वामी तुलसी दास जी ।।

पदः- कलयुग काम धेनु रामायन।
बछरा सन्त पियति निसि बासर, सदा रहत मुद दायन।
ज्ञान विराग श्रिंग दोउ सुन्दर, नेत्र अर्थ समुझायन।
चारिव खुर सोइ मुक्ति मनोहर, पूँछ परम पद दायन।४।

चारौं थन सोइ चारि पदारथ, दूध दही बरसायन।
शिव ने दुही, दुही सनकादिक, याग्यवलिक मन भायन।
निकली बिपुल बिटप बन चरि के, राम दास चरवायन।
तुलसी दास गोबर के पाछे सदा रहत पछुवायन।८।

२७५ ।। श्री ख़फ़ीफ़ शाह जी ।।

पदः- तन मन मुरीद मुरशिद को देय, तब मलक से फ़लक पर हो रहेना।
जियते में गोश औ चश्म खुलें, तब साफ़ होय दिल का ऐना।
हर वक्त खुदा का ज़िकिर करो, यह सखुन सबौं से कह देना।
मेरी लाश ज़रा भी खराब न हो, कच्ची कबर में दफ़न करा देना।४।

२७६ ।। श्री काफ़िर शाह जी ।।

शेरः- अगर पैसा खुदा देवै गरीबों की मदद करना।
कहैं काफ़िर सुनौ यारों अन्त चलि बिहिश्त में रहना।।

२७७ ।। एक गैबी आवाज ।।

शेरः- छोड़ि मिट्टी का महेल सब रुह वासिल होंयगे।
नफ़्स योंही रोज सब आता रहा जाता रहा।।

अर्थः- मिट्टी का महल यह शरीर है और रुह आत्मा का नाम है। मुसलमानों में सब रूहें मरने के बाद कब्रों में जमा होती रहती हैं जो प्रलय में एक साथ इकट्ठा होकर खुदा के सामने न्याय के लिए जायँगे। इस शेर का यही मतलब निकलता है कि सारी रुहें इस काया को छोड़ कर परमात्मा में लीन हो जायँगी और जिन के अन्दर बासना है .... (अप्राप्त)

२७८ ।। श्री हुसेनी तेली जी ।।

(अपढ़, जगदीशपुर, सीतापुर)

शेरः- खोदा से प्रेम है जिसका वही प्यारा खोदा का है।
वही तन छोड़ि निज पुर ले वही ढारा खोदा का है।।
चाकरी में जो नहिं चूकै वही बन्दा खुदा का है।
वही इस खलक से न्यारा वही ज़िन्दा खोदा का है।२।

दोहाः- तन तुम्हार यह रेल है मन है ड्राइवर जान।
मन को काबू कीजिए तब होवै कल्यान।।
खान पान सन्मान में जाको रहेता प्रेम।
वाको जियते में नरक कैसे होवै छेम।२।

२७९ ।। श्री अंधे शाह जी ।।

दोहाः- मन मति के काबू बिना जीवन है धिक्कार।
अंधे कह सुर मुनि बचन कैसे हो भव पार।।

२८० ।। श्री राम दीन जी।।

शेरः- जो षट रुपों को अपनाये वही तय्यार बैठे हैं।
जे मन से हारिगे यहँ पर लिहे दुख भार बैठे हैं।।

दोहाः- कामी क्रोधी लालची गुरु द्रोही नर नारि।
अन्त समय जम आय के उनको लेहिं पछारि।।
चतुराई चौपट भई ज्ञान गुष्टि गई भागि।।
पढ़ि सुनि उपदेसन लगे मन गो तन से भागि।।
ज्ञान भक्ति झूठै कथैं जान्यो नहिं कछु सार।
अन्त समय जम लेंय गहि चलै नैन जल धार।३।
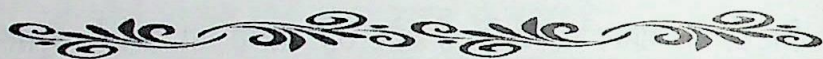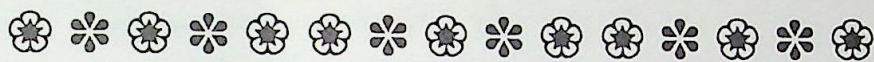
।। दिव्य रामायण ।।

- श्री कृष्ण दास जी पयहारी
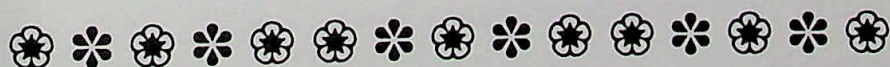
श्री अनन्तानन्द गुरु जी को हम शीश नवाई जी।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते कछु हमहूँ तुमको बतलाई जी।
पयहारी श्री कृष्णदास हम को कहते सब भाई जी।
कछु दिन दूध पान हम कीन्हो अब कछु नाहीं पाई जी।
राम नाम परताप से हमरी क्षुधा पियास बुझाई जी।
श्री कलियुग के आखिर तक हम को जग रहना भाई जी।
श्री गिरिजा पति औढर दानी से आशिष हम पाई जी।
देखैं नाना चरित मनोहर बरनत नहीं सेराई जी।
तन मन से जब प्रेम लगावै निर्भय होवै भाई जी।
इच्छा मरन की शक्ती होवै जब चाहै तब जाई जी।१०।

सूरति शब्द की जाप है अजपा मुक्ति भक्ति सुखदाई जी।
शान्ति शील सन्तोष क्षिमा औ दाया सरधा आई जी।
होय दीन तब द्वैत रहै नहि हर दम रूप देखाई जी।
पन्द्रह बिधि कि जाप खुलै तब रोम रोम सुनि पाई जी।
सब सुर मुनि नित दरशन देवैं प्रेम से हंसि बतलाई जी।
लय में पहुँचि जाय जब प्रानी तन मन सुधि बिसराई जी।
हरि की इच्छा से बढ़ि आगे महाशून्य में जाई जी।
महाशून्य को बेधन करिकै तब गोलोक मंझाई जी।
श्री गोलोक में कृष्ण मनोहर दर्शन करि सुख पाई जी।
वहाँ से चलि साकेत पुरी में पहुँचि जाय हर्षाई जी।२०।

राम ब्रह्म के दर्शन होवैं शोभा वरनि न जाई जी।
जियतै में जो जानि लेय सोई मरि कै फिरि जाई जी।
सत्य पुरुष से जानि कै साधन करै जौन सो पाई जी।
नाहीं तो अगणित जन्मन तक चक्कर काटै भाई जी।
संतन में सामर्थ होत दें कर्म कि रेख मिटाई जी।
राम नाम को जानि लीन कछु ता को बल है भाई जी।
हरि हर दम संग रहत हैं उनके सत्य बचन यह आई जी।
जो कछु कहैं करैं प्रभु तुरतै नेक देर नहि लाई जी।
प्रेम से वश संतन हरि कीन्हो प्रीति अधिक अधिकाई जी।
राम भजन में कछु खरचा नहिं कौड़ी लगै न पाई जी।३०।

भूल भुलैया में पड़िगे हैं राह न ढूढ़त भाई जी।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जाति अभिमान में बूड़े आई जी।
पार कहाँ से होवें वै तो स्वयं सिद्ध बनि जाई जी।
अन्धा ज्ञान कथैं पढ़ि सुनि कै नर्क पड़ैं वै जाई जी।
नीच नीच सब तरत जात हैं राम नाम जपि भाई जी।
धनि कलियुग गुरु भाई तुम्हारी देखा हम चतुराई जी।
अपनै तो परिवार पै किरपा करत सबै कोइ भाई जी।
कौन जवाब देंय हम तुमको रीति सदा चलि आई जी।
जैसा चाहौ तैस करौ तुम राज्य तुम्हारी आई जी।
अब कछु हाल और बतलावैं सुनिये चित्त लगाई जी।४०।

कसनी कितनौ परै रैन दिन सब सह लेवै भाई जी।
करि विश्वास टरै नहिं नेकौं चाहै शरीर कटि जाई जी।
करै समर यश होय जगत में तब हरि के ढिग जाई जी।
पास होय दुख नाश होंय जो असल होय ठहराई जी।
कच्चे गुरु क चेला कच्चा पक्के का करि पाई जी।
यह लीला श्री राम ब्रह्म की देखत ही बनि आई जी।
भीतर बाहर सम ह्वै जावै सो कछु जानै भाई जी।
अपनै आप ते कहत देखिये अपनै खेलत भाई जी।
कहीं पै भोजन नाना बिधि के कहीं पै सत्तू पाई जी।
कहीं पै टुकड़ा मांगि के खावैं कहीं पै चना चबाई जी।५०।

कहीं पै शाल दुशाला ओढ़े कहीं पै फटी दुलाई जी।
कहीं पै जाड़ेन थर थर काँपैं कहीं पै फूस लुकाई जी।
कहीं पै सुन्दर भवन में रहते कहीं कुटी में जाई जी।
कहीं पै कौड़ी कानी नाहीं कहीं पै द्रब्य लुटाई जी।
कहीं पै असवारी पै चलते कहीं पै पैदर धाई जी।
कहीं पै दाता बने बैठ हैं कहीं मंगता ह्वै जाई जी।
कहीं पै भूख के मारे व्याकुल कहीं पै देत हटाई जी।
कहीं पै धूनी ताप रहे हैं कहीं पै भस्म रमाई जी।
कहीं पै बैठे मूड़ मुड़ाय कहीं जटा रखवाई जी।
कहीं पै बैठे पाठ करत हैं कहीं कीरतन भाई जी।६०।

कहीं पै माला को जप करते कहीं पै ध्यान लगाई जी।
कहीं पै जड़ समाधि कियो धारन कहीं पै लय को भाई जी।
कहीं नाम को मानि रहे हैं कहीं रूप सुखदाई जी।
कहीं नाम औ रूप न मानैं केवल शून्य सोहाई जी।
कहीं शून्यहूँ को नहिं मानत सत्य लोक को भाई जी।
कहीं मूर्ति की पूजा करते कहीं नहीं मन भाई जी।
ज्ञानी ह्वै कहिं ज्ञान कथत हैं कहीं न ज्ञान सोहाई जी।
कहीं हंसत कहिं रंज करत हैं कहीं मौन ह्वै जाई जी।
कहीं अन्न को पावत नाहीं कहीं पै फलन को खाई जी।
कहीं पै खाली दुग्ध पियत हैं कहीं पै पत्ती पाई जी।७०।

कहीं पै केवल कन्द पावते कहीं पै राखी खाई जी।
कहीं पै जल ही को अहार करैं कहीं जलहु नहिं पाई जी।
कहीं पै मारैं मार खाँय अरु कहीं रहैं समुझाई जी।
कहीं पै वृक्ष के नीचे बैठे कहीं मैदान में भाई जी।
कहीं पै उलटा झूलि रहे हैं कहीं पै बाँह उठाई जी।
तीनि काल अस्नान करैं कहुँ कहिं अस्नान न भाई जी।
इतर फुलेल मलें कहिं तन में कहिं पर देह रुखाई जी।
तिलक लगावैं कहीं पै सुन्दर कहीं तिलक नहिं भाई जी।
कहीं पर खड़े रहैं निशि बासर कहिं पर पौढ़े भाई जी।
कहीं पर नीच बने बैठे हैं कहिं पर ऊँच कहाई जी।८०।

कहीं पै आपै तीरथ बनिगे कहिं पर पर्वत भाई जी।
कहीं पै यज्ञ हवन करते हैं कहीं पै बन्द कराई जी।
कहीं पै अपनी मूर्ति बनाय के आपै पूजत भाई जी।
आपै भोजन आप बनावैं आपै भोग लगाई जी।
आपै आप को ध्यान करत हैं आपै देखैं भाई जी।
आपै आप को पाय रहै हैं आपै आप पवाई जी।
आप आप हैं आप आप ही आपै आप हेराई जी।
आपै आप आप अपनावैं आपै आप दुराई जी।
आपै करनी आपै भरनी आपै आप बनाई जी।
अपनै अपनी निन्दा करते अपनै स्तुति गाई जी।९०।

अपनै एक अनेक कहूँ नहिं अपनै सब में भाई जी।
अपनै सबै वस्तु बनि बैठे अपने ढूढ़न जाई जी।
अपनै आप को जानि लेत हैं अपनै देत बकाई जी।
अपनै अपने कहे में परिकै अपनै चक्कर खाई जी।
अपनै यहि बिधि खेल बनाया अपने रहे बताई जी।
साँचे गुरु से जानि लेय अभ्यास करै चित लाई जी।
प्रथम ध्यान जो करै गुरु का हरि प्रसन्न हों भाई जी।
यह मर्य्याद बनाई हरि की सुर मुनि संतन गाई जी।
राम रूप सब सृष्टी दर्शै ज्ञान गुमान हेराई जी।
महा ज्ञान का दर्जा यह है निर्विकार ह्वै जाई जी।१००।

प्राण में जीव जीव में आतम आतम में हरि भाई जी।
शब्द प्राण औ शब्द जीव है शब्दै आतम आई जी।
सत्य पुरुष का नाम शब्द है जौन रकार कहाई जी।
सब में ब्यापक या को जानो सांच तुम्हैं बतलाई जी।
नाना चरित इसी से प्रकटैं इसी में जात समाई जी।
इस बिधि को जो जानि लेय सोई यह गारी गाई जी।
नाही तो वह समुझि न पैहै पढ़ के फल क्या पाई जी।
जब कछु साधन करिकै देखी तब आनन्द हिय आई जी।
पढ़न सुनत ते परे होय तब आपै आप देखाई जी।
गंगोतरी जल गिरत जहाँ ते बास खास वँह पाई जी।११०।

सुर मुनि दर्शन देत कृपा करि घूमन सब कहुँ जाई जी।
राम नाम जो सुमिरन करिहै होय सुखी सो भाई जी।
सब लोकन में वाकी खातिर तुम को ठीक बताई जी।
गारी कीन समाप्त श्री गुरु चरनन में परि भाई जी।११४।

दोहाः- आदि शक्ति श्री जानकी, नाना रूप बनाय।
जीवन को पालन करैं, मातु रूप ते आय।।
श्री सीता श्री राधिका, श्री रुक्मिणी जान।
ब्रह्माणी गिरिजा रमा, काली दुर्गा मान।।
दया के सागर मातु सब, कृष्णदास कहैं मान।
छिन छिन में सुधि लेत हैं, बालक अपनो जान।।

चाबे को चाबैं पशू, उनका यह नित काम।
मानुष का तन पाइकै जपैं निरन्तर नाम।।
नारी सारी सम लख्यौं, गुरु प्रताप ते जान।
धन को धरती जानिये, मानो बचन प्रमान।५।

सुनत कहत जानैं नहीं, या से मानैं दूर।
कृष्णदास कहैं सब जगह, राम रमे भरपूर।।
साहब के नायब हैं, जिनका नाम है काल।
कृष्णदास कहैं भजन बिन, जाय काल के गाल।।
निर्गुण सर्गुण आप ही, निर्विकार निरधार।
कृष्णदास गुरु ज्ञान बिन, सबै बात बेकार।।
चाम चाम में मिलि गयो, प्रगट्यौ चाम ते चाम।
कृष्णदास हरि भजन बिन, कौड़ी का नहिं चाम।।
अगणित युगन ते होत हैं, उत्पति परलय मान।
कृष्णदास कहैं अमर हम, सतगुरु दीन्हों ज्ञान।१०।

प्रेम करैं घनश्याम सों, तन मन करिके एक।
कृष्णदास कहैं सो लखै, फरक परै नहिं नेक।।
हरि इच्छा ते हरा हरि, बाँस प्रगट एक कीन।
ब्रह्मा ने काट्यौ उसे, सवा पोढ़ लै लीन।।
शिव ने तेहि बेधन कियो, सात छिद्र करि दीन।
हर ने बंशी लीन लै, जाय के हरि को दीन।।
पांच बर्ष की आयू के, रहै जबै घनश्याम।
तब यह मुरली बन गई, लगे बजावन श्याम।।
फटै न टूटै बाँसुरी, कभी न मैली होय।
अपनी लीला आप ही, जानै और न कोय।१५।

शिवा कुञ्ज की भूमि पर, प्रगट्यौ बाँस को मान।
प्रीतम प्रिया बिहार को, जहाँ बन्यौ अस्थान।।
बाँस भयो आदृश्य वह, तुरतै लीजै मान।
ध्यान में देख्यौ सुर मुनिन, मानौ बचन प्रमान।।
जा को देंय जनाय हरि, सो कछु पावे जान।
नाहीं तो ढनगत फिरे, ढेला बाट को मान।।

कृष्णदास कहैं जो हमैं, श्री गुरु दीन लखाय।
सो हम तुम से दीन कहि, मानो मन हर्षाय।१९।

पदः- लखौ हिय सब के राजा राम। काल मुख बनो न खाजा राम।।
साज सब संग में साजा राम। रहत हैं हर दम ताजा राम।।
होय आरत कहै आजा राम। देत पट जल औ नाजा राम।।
बिसारयौ कौने काजा राम। कीन तुम बहुत अकाजा राम।।
बड़े बेशरम न लाजा राम। बड़े हैं दीन नेवाजा राम।१०।

राम बिन कौन नेवाजै राम। दूत यम जब शिर गाजैं राम।।
गर्भ में उलटा लटके राम। बन्द तहँ सब दिशि फटके राम।।
शाम दोपहर औ तड़के राम। मिलत चारा बे खटके राम।।
किहे बिनती तब सटके राम। थूँकि कै फिर क्यों गटके राम।।
फूलि माया में मटके राम। जियत भर ऐसे भटके राम।२०।

गदा शिर पर जब चटकै राम। पकरि कै कसि कै पटकैं राम।।
उठाय के ऐसे झिटकैं राम। टूटि कै सब तन छिटकै राम।।
जाय के नर्क में फटकैं राम। उठैं बहु गन्ध कि लपटैं राम।।
जगत के सुक्ख में अटकैं राम। काल उन्ही को गटकै राम।।
सहैं सब की फटकारैं राम। काम सब वाको सारैं राम।३०।

सुनो जब अनहद बाजा राम। बनो परजा से राजा राम।।
लगावो शब्द में सूरति राम। काम सब पूरन होवैं राम।।
उठै धुनि रोम रोम ते राम। रहैं हर दम ही सन्मुख राम।।
तत्व दर्शें जब पाँचौं राम। खड़े लेटे चलते पर राम।।
श्याम पीले लाले रंग राम। हरे औ श्वेत रंग हैं राम।४०।

चक्र षट बेधन होवैं राम। खिलैं तब कमल सातहु राम।।
होय जागृत कुण्डलिनी राम। बढ़ै आनन्द दिनो दिन राम।।
करौं अस्नान त्रिवेणी राम। दरश तब हों जोती के राम।।
ध्यान में पहुँचि जाव जब राम। चरित बहु बिधि के देखौ राम।।
जाव जब शून्य भवन में राम। रहै नहि सुधि बुधि वँह पर राम।५०।

जाव फिर महाशून्य में राम। कहावै जड़ समाधि वह राम।।
चलो फिर कृष्ण लोक में राम। परो चरनन में समुहे राम।।

लगावैं कर गहि सीने राम। मिलै आनन्द बहुत ही राम।।
जाव साकेत पुरी तब राम। महा परकाश वहाँ पर राम।।
पहुँचिगे सत्यलोक में राम। धाय कर दोउ गहि लीन्हेउ राम।६०।

खेलायो दुलरायो तँह राम। सिंहासन बैठायो तब राम।।
पियायो अमृत अनुपम राम। सबै इच्छा गति ह्वै गई राम।।
भयो मुख मौन खुलै नहि राम। मनो पाषाण के प्रतिमा राम।।
बसन तन कानन कुण्डल राम। श्याम तन शिर पर मुकुट है राम।।
भयो अब बारह वर्ष के राम। अचल ह्वै गयो न जाओ राम।७०।

रूप बनि गयो राम को राम। जानिये बड़ी मोक्ष यह राम।।
बड़ी ताकत है नाम में राम। चढ़ैं पंगुल गिरि तरुवर राम।।
चपल भे मूक जानि कै राम। पढ़ैं अन्धे नित पोथी राम।।
सुनैं बहिरे तँह आय के राम। बिना रसना धुनि होवै राम।।
तार कबहूँ नहिं टूटै राम। जाप अजपा यहि कहते राम।८०।

नाम रंकार राम का राम। बीज या को शिव कहते राम।।
राशि का नाम यथारथ राम। यही सब के अन्तरगत राम।।
रूप को कहते सब हैं राम। सगुन लीला के कारण राम।।
नाम गति अति ऊँची है राम। बिना सतगुरु नहिं पावो राम।।
भक्ति भक्तन की बड़ी है राम। निर्गुण ते सगुन बनत हैं राम।९०।

प्रेम तन मन से जब हो राम। मुदित मन संग में खेलैं राम।।
खाँय संग भोजन जल को राम। करैं नाना बिधि बातैं राम।।
जानि कै तब ही मानै राम। कहे से कभी न जानै राम।।
देंय नित सुर मुनि दर्शन राम। सदा आनन्द एक रस राम।।
तुरिया तीत दशा भै राम। भीतर औ बाहेर एकै राम।१००।

दीन पद बिना मिलैं नहि राम। प्रेम नहिं नेरे आवत राम।।
दास बनि खोजौ स्वामी राम। मिलैं पासै में तुम को राम।।
कहैं यह कृष्ण दास जी राम। आप आपै बनि जाओ राम।१०६।

कजली:- माया महा ठगिनि है भाई धक्का बड़े बड़ेन को देत।
बैठी छिपि कै पता लगै नहिं संग पांच हैं प्रेत।
कपट कतरनी कर में लीन्हे किह्यो न वासे हेत।

त्रिभुवन पति की छाया जानो है यह बड़ी सचेत।
अपने काम ते चूकत नाहीं काटि लेय सब खेत।५।

संतन की खुब करैं परिच्छा राति दिवस सुधि लेत।
पक्का होय किसान बचै सो सदा चित्त में चेत।
सच्चा ह्वै कर खेल खिलाड़ी डिगै न तनकौ नेत।
दुख सुख झेलै भजे निरन्तर होय न नेक अचेत।
कृष्णदास कहैं श्री गुरु किरपा होय हंस सो श्वेत।१०।

दोहाः- कहना तो अति सुलभ है, करना कर्रा काम।
कृष्णदास कहैं सो लखै, जपै निरन्तर नाम।।
आपै जपते आप को, हमै दियो बिश्राम।
कृष्णदास हम हरि लखैं, सुनैं अभ्यन्तर नाम।२।

चौपाईः- ब्राह्मण सो जो ब्रह्म को जानै। द्वैत भाव उर में नहिं आनै।।
द्विज सो है जो वेद पढ़ावै। तन मन प्रेम लगाय बतावै।।
कर्म धर्म के मार्ग लखावै। तब वह द्विज बैकुण्ठ को जावै।।
पण्डित परम तत्व को जानै। करि पावै तब ठीक ठिकानै।।
पर बोधै जो सरनि में आवै। सो पण्डित उत्तम गति पावै।।
कृष्णदास कहैं ठीक बतायन। जो गुरु कृपा जानि हम पायन।६।

छन्दः- गीतावली है ग्रन्थ उत्तम अमित करुणा रस भरा।
अक्षरै अक्षर प्रेम टपकै, जानि लेवै सो खरा।
दरशै चरित सब सामने रघुनाथ जी ने जो करा।
सब ग्रन्थ तुलसीदास जी के पढ़त में चित हो हरा।
सुनिहैं जो प्रेम लगाय के तिनका भला पांसा पड़ा।५।

तरिहैं अधम ते अधम प्रानी सेतु यह जग का करा।
सुर मुनि कि कृपा कटाक्ष ते है पुल बना महि पर धरा।
अमृत अनूपम पान करिये छूटिहै तिरगुन लरा।
जो राम नाम प्रभाव जानै काम वा को सब सरा।
कहैं कृष्णदास सुनाय आवा गमन से सोई मरा।१०।

दोहाः- चारि लोक पासै अहैं, मानो बचन प्रमाण।
काली दुर्गा कृष्ण औ राम ब्रह्म अस्थान।।

चौपाईः- श्री राम लोक उत्तर दिशि जानो।
श्री कृष्ण लोक पश्चिम दिशि मानो।।
पूरब श्री दुर्गा जी माई। दक्षिण श्री काली सुखदाई।२।

दोहाः- आदि शक्ति श्री जानकी, काली जी को जान।
ब्रह्माणी गिरिजा रमा, इनसे दुर्गा मान।।

चौपाईः- मातन के सिंगार कहै को। सन्मुख तेज अपार सहै को।।
भवन बिचित्र बने सुखकारी। जाय न सकै दृष्टि अति भारी।।
माला भाँति भाँति के भाई। डालिन में तँह धरे सोहाई।।
नाना बिधि की धरी मिठाई। थारन की छबि बरनि न जाई।।
मध्य भवन माता सुख दाई। ऊँचे सिंहासन छबि छाई।।
उत्तर मुख कमलासन मारे। पीत बसन तन ऊपर डारे।६।

दोहाः- हार मिठाई दिब्य सब, शोभा के हित जान।
सब ज्यों के त्यों ही धरे, रहैं लीजिये मान।।

चौपाईः- श्री गुरु कृपा दरश हम कीन्हा। चरनन ऊपर शिर धरि दीन्हा।।
मातन दोउ कर शिर पर परसे। मानहुँ अमृत के घन बरसे।।
कह्यौ जाव साकेत पुरी को। बनि बैठो तुम रूप हरी को।।
अजर अमर तुम को हम कीन्हा। अचल भयो अब पुत्र प्रबीना।४।

दोहाः- चलत समय दोउ पग अपन, मम शिर पर धरि दीन।
ध्यान छूट तन मन मगन, दोउ मातन बर दीन।।

चौपाईः- मातन के जे भजन करत हैं। तन मन प्रेम से नहीं टरत हैं।
शान्ति शील सन्तोष धरत हैं। सरधा दाया छिमा करत हैं।
सत्य दीन पद हृदय धरत हैं। तिनके सारे काम सरत हैं।
हर हनुमान एक हैं भाई। भक्तन हित द्वै रूप बनाई।
तन मन ते जो प्रेम लगावैं। मुक्ति भक्ति इन हाथन पावैं।५।

दोहाः- राम नाम का कोष है, इनके पास अथाह।
दीन भाव ह्वै जाय जो, करैं रंक से साह।।

कजलीः- लक्ष्मी नारायण संग सोहैं क्षीर समुद्र शेष की सेज।
कोटिन भानु लजाँय जहाँ पर ऐसा वहाँ क तेज।

झाँकी की छबि बरनि सकै को कबिन की गति दुमरेज।
पालन करत जक्त पितु माता नित जल भोजन भेज।
कृष्णदास कहैं शब्द गहै सूरति से सो रँग रेज।
निर्विकार निर्गुण अविनाशी बिछी श्वेत तँह मेज।६।

कजरीः- श्यामा श्याम के संग में डोलैं बृज कुञ्जन में करैं किलोल।
गले में बाँह टेढ़ि दृग चितवनि बोलैं मधुरे बोल।
झाँकी की छबि बरनि सकै को उपमा अमित अतौल।
दुइ सहस्त्र हैं नेत्र शेष के निरखत रूप अमोल।४।

सहसौ मुख अस बन्द भये हैं मानहु भये अडोल।
नभ ते पुष्प देव मुनि बरसैं निरखि बजावैं ढोल।
धनि धनि बृजबासी नन्द यशुमति निरखैं नित दृग खोल।
कृष्णदास कहैं प्रेम भाव करि चहै सो लै ले मोल।८।

कजरीः- राजैं कृष्ण के संग रुक्मिणी राधे सति भामा गुणवान।
पुरी द्वारिका परम मनोहर सुर मुनि जहाँ लुभान।
जग मग जग मग होति चहुँ दिशि कोटिन भानु समान।
दरशन करत हरत अघ सारे तन मन प्रेम से मान।४।

झाँकी की छबि बरनि सकै को नैनन नहीं जबान।
निरखत बनै परै नहिं पलकैं ज्ञान गुमान हेरान।
ध्यान समाधि क काम नहीं है मानो बचन प्रमान।
कृष्णदास कहैं हरि सर्वेश्वर सब ज्ञानन की जान।८।

कजरीः- झूला झूलि रहे गिरधारी संग बृष भानु दुलारी हैं।
ढारैं हिलि मिलि सब सखि देवैं सुघर कुमारी हैं।।
यमुना तट बंसी बट तरु अति सुन्दर डारी हैं।
रेशम की पचरंगी डोरी सुन्दर सारी हैं।
मलया गिरि चन्दन सिंहासन खुशबू न्यारी हैं।५।

कीम खाब बाफदा व मुसरू बिछे संवारी हैं।
साख में मखमल हरा लपेटा क्या हुशियारी हैं।
डोरी कटै न टूटै जासे मानो बचन करारी हैं।

ता में पड़ा हिंडोला सोहतं युगुल बिहारी हैं।
झाँकी की छबि बरनि सकै को मंगल कारी हैं।१०।

यमुना मन्द मन्द तँह बहती पावन अति सुखकारी हैं।
शीतल मन्द सुगन्ध पवन तँह चलती प्यारी हैं।
फूलन की वर्षा सुर नभ ते करत निहारी हैं।
जय जय कार कि धुनि की गूँजनि बृज सुख भारी हैं।
राधे कृष्ण की मूरति सब जन हिये में धारी हैं।
कृष्णदास कहैं प्रिय प्रीतम पर हम बलिहारी हैं।१६।

कजरी:- क्या बाँकी झाँकी बनी श्री अवधेश कुमारन की।
शिरन पै मुकुट श्रुतिन में कुण्डल जड़े सितारन की।
राम भरत औ लखन शत्रुहन भव भय टारन की।
बिष्णु शम्भु औ शेष जिन्होंने पृथ्वी धारन की।४।

आये प्रभु के संग चरित लीला बिस्तारन की।
गाय गाय नर भव निधि तरिहैं सबै सुधारन की।
कृष्णदास नित बिनय करैं चारौं सरकारन की।
हम को यही लालसा हर दम चारौं रूप निहारन की।८।

कजरी:- चलतीं ठुमुकि ठुमुकि आँगन में जनक के जनक दुलारी जी।
कटि किंकिणी पगन पैजनियाँ बाजै प्यारी जी।
भूषण बसन बदन में रचि रचि मातु सँवारी जी।
सुर मुनि दरशन को नित आवैं छबि उर धारी जी।४।

ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जाति की सुघर कुमारी जी।
उमिरि में मानौ सबै बराबरि बिधि ने ढारी जी।
खेलैं खेल मनोहर सब मिलि मंगल कारी जी।
कृष्णदास कहैं बाल चरित्र पर हम तन वारी जी।८।

।। अथ नगर भ्रमण वर्णन।।

राग कजरी:- देखन चले नगर गुरु अज्ञा शिर धरि राम लखन लै संग।
वय किशोर एक श्याम गौर एक कर धनु कसे निषङ्ग।
सुन्दर परम अनूप रूप दोउ लाजैं अमित अनङ्ग।

सुर मुनि निरखि चकित छकित भे होश भयें सब दंग।
चाल चलत कुंजर सम झूमत उर अति भरा उमंग।५।

गुल गुलाब से कोमल मानो बज्र समान हैं अंग।
शूर बीर रणधीर धुरन्धर होय काल लखि तंग।
विश्वामित्र कि यज्ञ सुफल कियो करि कै निश्चर भंग।
चरनन रज परि तरी अहिल्या रही पषाण अपंग।
स्वयं आप अवतरे जगत हित बिष्णु शेष शिव संग।१०।

कारन करन अकर्ता आपै नहीं रूप औ रंग।
रूप रंग बनि जात छिनक में कौन करै जग जंग।
पहुँचि गये जब जनक नगर में बालक बहु भे संग।
गली गली औ थली थली औ भवन भवन यह रंग।
जँह देखो तँह घूमि रहे हैं राम लखन दोउ संग।१५।

ज्ञान गुमान शान सब जन की उड़ि गई मनहुँ पतंग।
भये अचेत नहीं कछु सुधि बुधि मानहु डस्यौ भुजंग।
सात घरी पर सब की मुरछा जागी फिरि भे चंग।
आये गुरु के ढिग दोउ भाई करुणा निधि सुख अंग।
कृष्णदास कहैं सन्मुख रहते रंगौ नाम के रंग।२०।

।। अथ फुल बगिया बर्णन।।

जनक फुल बगिया अति सुखदाय।
भाँति भाँति फल फूल लगे तँह शोभा बरनि न जाय।
चातक कीर सारिका कोकिल बोलत आनन्द छाय।
हंस मयूर महरि औ होरिल रहे किलोल मचाय।
चकई चकवा बहु रंग पच्छी कँह लगि तुम्है बताय।५।

षट रंग मृगा तँहा पर देखा नाभि से महक उड़ाय।
दादुर कमठ मीन सागर में करत बास सुख पाय।
एक सहस फुल बगिया जनक के सत्य तुम्हैं समुझाय।
दस दस सहस बीगहा केरी निरखत मन ललचाय।
दुइ दुइ सहस रहैं तँह माधौ सेवा के हित भाय।१०।

यह आनन्द कहाँ तक बरनौ कहत कहत अधिकाय।
सुर मुनि घूमन को नित आवैं मानुष रूप बनाय।
एक एक बगिया के मध्य में पोखर एकै एक सुहाय।
निर्मल बारि भरा अति गहरा पृथ्वी तलक देखाय।
कन्द मूल अति मधुरे चिक्कन लम्बे गोल हैं भाय।
नृप ने ऐसे बाग संवारे कृष्ण दास कहैं गाय।१६।

।। अथ फुलवारी भ्रमण वर्णन।।

कह्यौ मुनि विश्वामित्र सुनाय। फूल पूजन हित लाओ जाय।।
श्री गुरु चरनन शीश नवाय। चले फुल बगिया दोनौ भाय।।
पहुँचि फुलवारी गे जब आय। देखि सुन्दर छबि अति सुखदाय।।
चहूँ दिशि घूमन लागे जाय। देखि माली गन पहुँचे आय।।
कह्यौ हरि फूल उतारन आय। श्री गुरु पूजन के हित भाय।१०।

सुनत सब माली हिय हुलसाय। कहैं प्रभु आप कि बगिया आय।।
उतारौ फूल जौन मन भाय। कहौ हम सब देवैं उतराय।।
कहत हरि मन्द मुसुक्याय। उतारैं हम औ लछिमन भाय।।
लीन एक कदली पत्र मंगाय। सरोवर में तहँ लीन धोवाय।।
बनायो दुइ दोना हरि भाय। दीन एक लछिमन को पकराय।२०।

बाम कर दोनो लीन्हे भाय। टहलने लगे चमन पर जाय।।
छुवैं जो कली तुरत खिलि जाय। तूरि लें वाको दोनो भाय।।
धरैं दोनों में मन हर्षाय। महक फूलन की अति सुखदाय।।
गये मालिन के ज्ञान हेराय। कहन चाहैं कछु कहा न जाय।।
फूल लै खड़े भये दोउ भाय। खिला गुलशन एकदम हर्षाय।३०।

दौरि कर माली सब तँह आय। खड़े कर जोरे बोलि न जाय।।
केतकी केंवड़ा है तँह भाय। नेवारी बेला औ मोतिआय।।
गुलाब गुल बाँस व चम्पा भाय। मालती जूही औ मोगराय।।
हीना और कदम्ब हैं भाय। तुलसी रामा श्यामा आय।।
सेवती गुल सब्बो तँह भाय। दुपहरी गुल मेहंदी सुख दाय।४०।

चाँदनी कुंद व गोड़हर भाय। गुलाचीनो कचनार सुहाय।।
अगस्त पिय बास कुरैया भाय। विष्णु क्रान्ता गल गल मल आय।।

बैजन्ती सूर्य मुखी तँह भाय। कटहरी गुल फिरंग सुख दाय।।
गलैंधा मिलौनिया सुख दाय। कनैरो मौलसिरी तँह भाय।।
मनहरन सदा सुहागिन भाय। दिल लगा गुलअनार सुखदाय।५०।

पाँड़री अमिलतास सुखदाय। लगे गुलशन बहार बृक्षाय।।
तरंग योजन छबि छावन भाय। पचरंग सोहन श्याम घटाय।।
संकोचन दल देवन तँह भाय। कनक मन्दार गोल गुल आय।।
पहाणी फूल बहुत रँग भाय। कहाँ तक नाम कौन कहि पाय।।
देख कर मन प्रसन्न ह्वै जाय। मँहक से तर दिमाग ह्वै जाय।।

बृक्ष जंगल में बहु रंग भाय। ग्राम के सब कोइ जानत आय।।
कन्द फल मूल व मेवा भाय। मिठाई इनकी कही न जाय।।
डेकारैं आवैं जो कोइ खाय। मस्त तन मन से होवै भाय।
कहैं समुझावैं कैसे भाय। श्री गुरु किरपा कछु कहि जाय।।
शब्द पक्षिन का मधुर सुनाय। सरोवर की शोभा अधिकाय।७०।

रंग रंग कमल खिले सुखदाय। भँवर गुंजार कही ना जाय।।
हंस चकई चकवा तँह भाय। कमठ मछली दादुर सुखदाय।।
मोर होरिल चातक मन भाय। कोकिला कीर रंग रंग आय।।
लालमुनिया तूती सुख पाय। दहिंगला श्यामा फुदकी भाय।।
दुबचरा धौर बनेवा भाय। पेरुल्ला कौड़िल्ला सुख दाय।८०।

सीक पर लेदुका सावन भाय। सारिका सारस मौज उड़ाय।।
टिटिहिरी कर बानक तँह भाय। घाघ चानक लावा सुखदाय।।
छपटुआ चाहा है तहँ भाय। गलारैं औ खञ्जन सुखदाय।।
भुजैला बुल बुल कड़रा भाय। पतेना कठ फोरवा हुलसाय।।
कबूतर कई रंग के भाय। परेई तड़ बुड़की सुख दाय।६०।

मुरगाबी गौरैया तँह आय। सुरखाव कि शोभा कही न जाय।।
बैगमा शारदूल कहवाय। तीनि कुञ्जर लै जो उड़ि जाय।।
शुतुर हैं मुर्ग वहाँ पर भाय। तेज घोड़ा नहि जिनको पाय।।
गीध ढेल बाँस खट खटा भाय। बत्तक औ तीतिर अति सुखदाय।।
बाज बहरी जुर्रा तँह आय। कुही मँगवा सिकरा तँह भाय।१००।

मुसरिहा महरि छटा गुरिन भाय। शुवक औ भाद बकुल चुपकाय।।
धोबिनिया बेहना हैं तँह भाय। काक कटनास औ गादुर भाय।।
चील्ह औ अवाबील तँह आय। तहाँ पर शोभन चिड़िया भाय।
देंय कछु वाको शकुन बताय। जाय कोइ रोज़गार हित भाय।।
मिलै गर मारग में वँह आय। खड़ा हो सर्प फनै फैलाय।११०।

बैठिहौ वा के ऊपर भाय। देखिकै फिरि लौटै नहिं भाय।
होयगा बादशाह वह जाय। सृष्टी का खेल विचित्र है भाय।।
कहाँ तक कौन सकै बतलाय। सूँसि घरियाल मगर सुख पाय।।
खेल करैं जल में धूम मचाय। जंगली जीव जौन कोइ भाय।।
रहे आनन्द सबै सुख पाय। सिंह औ शेर कुञ्जरौ भाय।१२०।

तेंदुवा बन कुत्ता बन आय। अरना भैंसा औ गैड़ा भाय।।
हडूर औ भालू बिगवा आय। सिमिटुआ पेट चोर तँह भाय।।
डाँढ़ औ झाँर व जमबुकौ आय। हिरन घोड़राह नील तँह गाय।।
लोमड़ी शशा रहै हर्षाय। साहि औ बन बिलार सोंधिआय।।
चिलार बराह नकुल तँह आय। गोह सल्हू बिष खोपड़ा आय।१३०।

डाँग सुरवार औ बानर भाय। घूस औ मूस साँप बिछुआय।।
ऊसरौ साँड़ा गोजर आय। गिलहरी बृक्षन पर हैं भाय।।
कभी नीचै खेलैं सुखपाय। ओद सरिता के तट पर भाय।।
रहत हैं मानो मन हर्षाय। ग्राम के पशुन क हाल बताय।।
रहे अब थोरे देहिं लिखाय। गाय औ भैंस व घोड़ा भाय।१४०।

ऊँट खर मेढ़ा अजा कहाय। फील औ सुअर श्वान तँह भाय।।
ग्राम के सिंह जौन कहवाय। बिलारैं मूष कई रंग भाय।।
खेलते आपस में हर्षाय। कलित्तुर फूल बिरंजौ भाय।।
नगर में घूमैं मन हर्षाय। सरोवर तहाँ बने हैं भाय।।
पियैं जल हलुआ खाँय अघाय। पालकी औ गज रथ तहँ भाय।१५०।

नाल की बूचा पीनस आय। मियाना डोला है सुख दाय।।
चलैं लै धीमर मन हर्षाय। झिलमिला जाकट करतब भाय।।
बिना जाने कोइ खोल न पाय। मझोली गाड़ी अद्धा भाय।।

फिरिक रब्बा लहकड़ा कहाय। सिंहासन भाँति भांति के भाय।।
बनत हैं देखत कहा न जाय। अठारह खण्ड जनक गृह भाय।१६०।

बना है सुन्दर अति सुखदाय। पुरी के बासिन का है भाय।।
सात ही सात खण्ड मुद दाय। नगर के चारों दिशि फुलवाय।।
पूर्व दिशि फुलवारी मधि आय। बना श्री गिरिजा भवन सुहाय।।
सरोवर दक्षिण दिशि सुखदाय। मोहारा आठ बने तँह भाय।।
झरोखा नौ लागे सुखदाय। बना लाले पत्थर का भाय।१७०।

सोवरन पत्र बने चमकाय। मूर्ति काले पत्थर की भाय।।
पधारी पश्चिम मुख सुख दाय। होति पूजा अति प्रेम से भाय।।
भोग बहु बिधि के लागैं आय। बड़ा आनन्द कहा नहि जाय।।
जात ही सुधि बुधि जाय हेराय। वहाँ सब जीवन मेल सोहाय।
कहाँ तक कहौं कहा नहि जाय। दूध मोती हंसन हित भाय।१८०।

और सब फल और हलुआ पाय। घास चित बहलावन हित खाँय।।
रहे निशिबासर मौज उड़ाय। कोटि चाकर हैं जनक के भाय।।
करैं सब कार्य हिये हर्षाय। पवन तहँ मन्द चलत सुखदाय।।
रहैं सब जीव सुखी तँह भाय। जनकपुर शोभा कही न जाय।।
जहाँ पर आदि शक्ति भई आय। होय नहिं कमती बढ़तै जाय।१९०।

बाँटने से सौ गुन हो जाय। एकता ऐसी कहीं न जाय।।
चलैं संग दौरैं बैठैं आय। सत्यता ऐसी वँह पर भाय।।
जीव जल पक्षिन पशुन सगाय। स्वराज्य हम इसको कहते भाय।।
चोर कहिं परत नहीं दिखराय। राति औ दिन एकै रस भाय।।
खजाने पड़े खुले सुखदाय। जीव को जीव न कोई खाय।२००।

ऐसि हरि की इच्छा वँह भाय। जनक योगी ऋषिराज कहाय।।
भजन परताप बड़ा है भाय। राम अनुकूल सदा सुखदाय।।
नहीं आसक्त किसी पर भाय। सदा अनइच्छित जनक कहाय।।
भजन में मस्त रहैं ऋषि राय। धुनी अभ्यन्तर सुनते भाय।।
रूप हरदम सन्मुख सुखदाय। समाधी सहज यही कहलाय।२१०।

तार एक तार होय जब भाय। ध्यान जप संगै होतै जाय।
देय सुर मुनि नित दर्शन आय। हंसैं खेलैं संगै बतलाँय।।

कहैं यहि राज योग सब भाय। सुरति जौ शब्द में लेय लगाय।।
जाप अजपा यह है सुखदाय। चलै कर जिह्वा नैन न भाय।।
नाम धुनि रोम रोम खुलि जाय। एकता हो तब सब में भाय।२२०।

जिधर देखैं तहँ वही देखाय। गुरू से मिलत ज्ञान यह भाय।।
और कोइ नहीं सकै बतलाय। अधिक जो कहैं लिखा नहिं जाय।।
लिखत में आलस तुम को आय। चरित कहैं रनिवास का भाय।।
सुनयना लीन्ह सिया बोलवाय। जाव गिरिजा पूजन सुखदाय।।
चलीं लै संग सखी हर्षाय। आय गईं गिरिजा मन्दिर माय।२३०।

पगन दोउ धोये सखी यक आय। पोंछि साफ़ी से दीन सुखाय।।
गईं मन्दिर में शीश नवाय। बन्द चहुँ दिशि ते पट करवाय।।
झरोखन प्रतिमा परत देखाय। सखी सब जगं मोहन में भाय।।
खड़ी कोइ बैठी अति सुख पाय। कीन पूजन बहु बिधि ते भाय।।
प्रेम वश मुख से बोलि न जाय। दोऊ कर माला रहीं उठाय।२४०।

बढ़ा अति प्रेम उठै नहि भाय। बड़ी कोशिश करि लीन उठाय।।
उठैं कर ऊपर को नहिं जाँय। झुकी हैं खड़ी नैन झरि लाय।।
छूटि कर माल अवनि गिरि जाय। श्याम मूरति पाषाण कि भाय।।
हँसीं औ प्रगटीं ताते माय। पकरि कै छाती लीन लगाय।।
होश कीजै सिया अति सुखदाय। मिलैं बर तुमको जो मन भाय।२५०।

खुशी सिय भईं बैन सुनि माय। परीं चरनन में तन उमगाय।।
उठीं कर जोरि बोलि नहीं जाय। भईं परवेश मूर्ति में भाय।।
चलीं सिय आईं बाहेर धाय। भेद यह और कोई नहिं पाय।।
दीन पट फेरि तुरत खोलवाय। गई सखि देखन एक फुलवाय।।
चतुर वह बड़ी सलोनी भाय। देखि कर आई रहा न जाय।२६०।

आय सीता से दीन बताय। चलौ दोउ देखौ रूप अघाय।।
सुघरता जिनकी कही न जाय। चलीं सिय लीन सखी कर धाय।।
लता की ओट देखायो जाय। देखि छबि छकीं मनो निधि पाय।।
मणी फणि की जैसे मिलि जाय। सखी सब देखि के गईं लोभाय।।
बिरह के बाण चुभे उर आय। भई मूरछा उन सब को भाय।२७०।

पड़ीं बेहोश कहा नहि जाय। राम ने सिया को देखा भाय।।
नैन से नैन मिले सुख पाय। राम के उर में सीता आय।।
सिया के उर में राम समाय। कहै लीला वँह की को भाय।।
देव मुनि नहीं सकैं बतलाय। कह्यौ लछिमन ते राम सुनाय।।
जनक की तनया यह है भाय। स्वयम्बर रचा इसी हित भाय।२८०।

जो तोरै धनुष बरै लै जाय। जनक प्रण कीन्हों है यह भाय।।
तुम्हैं हम साँची दीन बताय। लखन ने लख्यौ सिया सुखदाय।।
भाव माता को उर में लाय। चलौ अब श्री गुरु के ढिग भाय।।
देर करने का समय न आय। पहुँचिगे गुरु ढिग दोनो भाय।।
दीन दोउ दोना मन हर्षाय। करन पूजा लागे मुनि राय।२९०।

बैठि दोनो भाई सुख पाय। गये सब माली अति सुख पाय।।
काम अपने अपने पर आय। होश में सीता सब सखि आय।।
उठीं फिर मन्दिर पहुँचीं जाय। कियो पूजन फिरि वैसै भाय।।
जैस पहले हम दीन बताय। भई परसन्न बहुत ही माय।।
प्रेम की रीति कही नहि जाय। प्रगट फिरि मूर्ति ते ह्वै के माय।३००।

लीन तब सीतै उर में लाय। कह्यौ मिलिहैं तुम को रघुराय।।
जिन्हैं तुम बाग में देखा जाय। सखी एक तुम्हैं गई लै धाय।।
सबी सखि पीछे पहुँचीं जाय। देखि सब सुधि बुधि गई हेराय।।
वही पति तुमको मिलिहैं आय। धनुष को तोड़ैं छिन में भाय।।
रहै यश जग में उनको छाय। डारिहौ उर जय माला आय।३१०।

ब्याह तब उन संग ह्वै है जाय। करावैं बिधि तँह ब्याह को आय।।
पढ़ैंगे वेद मधुर स्वर गाय। प्रथम हो हमरी पूजन आय।।
फेरि गणपति की हो सुखदाय। चढ़ाओ चन्दन अक्षत लाय।।
फूल शिर माल गले सुखदाय। दान तँह बहु प्रकार करवाय।।
नृपति रानी पग पूजैं आय। परैं भाँवरि तब मन हर्षाय।३२०।

बरैं संग तीनौ बहिनी आय। भरत औ लखन शत्रुहन भाय।।
बिदा ह्वै अवधपुरी में जाय। करौ आठौं आनन्द अघाय।।
पुत्र तुमरे दो होवैं आय। नाम लव कुश उनको कहवाय।।

बड़े हों शूर बीर सुखदाय। देंय सब प्रजा क दुःख नशाय।।
जगत बिजयी होवैं दोऊ भाय। कह्यौ यह गिरिजा बचन सुनाय।३३०।

भईं मन मगन न प्रेम समाय। सिया को उमा माल पहिराय।।
गले का अपने दीन्हों भाय। भईं परवेश मूर्ति में माय।।
गईं सिय बाहेर तब फिरि आय। कह्यौ सब सखिन से चलिये धाय।।
भई कछु देर मातु रिसिआय। गईं सब संग सखी सुखदाय।।
भवन में पहुँचि गईं हर्षाय। जाय माता ढिग बैठीं जाय।३४०।

सुनयना देखि के अति सुख पाय। खुशी हौ आज बहुत मुददाय।।
कह्यौ गिरिजा दियो दर्शन माय। भेद कछु सकैं नहीं बतलाय।।
मातु के सन्मुख कहत लजाय। बढ़ा परवाह प्रेम का भाय।।
राम छबि सन्मुख परत देखाय। शक्ती औ शक्तीमान कहाय।।
करी यह लीला जग हित आय। जौन हम लीला तुम्हैं सुनाय।३५०।

भई सब पाँच घरी में भाय। कहैं पद कृष्णदास यह गाय।।
पढ़ै या सुनै प्रेम बढ़ि जाय।३५३।

।। अथ धनुष भङ्ग वर्णन ।।

कह्यौ श्री विश्वामित्र सुनाय। उठौ श्री राम भक्त सुखदाय।।
धनुष को खण्डन कीजे जाय। जनक परिताप मिटै सुख पाय।।
खड़े भे सहजै श्री रघुराय। निरखि अभिमानिन दुख अति पाय।।
गये वे सकुचि बोलि नहिं जाय। लीन मुख नीचै को लटकाय।
चले गुरु चरनन शीश नवाय। सिंह जैसे गज ऊपर जाय।१०।

लखन ने लख्यौ राम को भाय। जानि गे धनु तोरैं सुखदाय।।
दाबि दहिने पग धरनि को धाय। आवरण जौन लखत सब भाय।।
कह्यौ पृथ्वी देबी मुद दाय। कृपा करि संभरि के बैठौ माय।
कमठ श्री शेष दिग्गजौ भाय। सुनौ दिगपाल बराहौ भाय।।
साधिये सब जन चित्त लगाय। सहायक पृथ्वी जी के भाय।२०।

देव मुनि सब से कहौं सुनाय। चित्त हरि चरनन लेव लगाय।।
नहीं तो बड़ा गज़ब ह्वै जाय। मही आवरण उलटि जो जाय।।
लखन यह सब को बिनय सुनाय। खड़े भे प्रभु चरनन उर लाय।।

नगर नर नारी बिनवैं भाय। इष्ट अपने अपने सुखदाय।।
सुनयना जनक सिया मुद दाय। मनै शिव गणपति गिरिजै ध्याय।३०।

राम जब पहुँचे धनु ढिग जाय। दृष्टि एक सिया पै कीन्हों भाय।।
बिकलता प्रेम की ऐसी आय। मिलैं कब प्राणनाथ सुखदाय।।
राम ने धनु दहिनायो धाय। सूर्य्य भे पीठी पर मुददाय।।
दिवस था पांच घरी तब भाय। खड़े भे पूरब मुख सुखदाय।।
ताकि के राँ बीज को भाय। खींचि दृष्टी से उर पधराय।४०।

नाम आपै का जौन कहाय। प्रलय पालन उत्पति सुखदाय।
शम्भु ने भरयौ बीज यह भाय। सकै को तोरि बिना रघुराय।।
धनुष को जौन उठायो जाय। गँवायो आधी ताक़त भाय।।
उसी से अधिक अधिक गरुवाय। कीन हर लीला हरि हित भाय।।
श्री गुरु द्विजन को शीश नवाय। लियो मन ही मन कोशल राय।५०।

उठायो धनुष दीन सुखदाय। आप ही आप चाप चढ़ि जाय।।
पकरि कै दोउ गोसन को भाय। चह्यौ एकै में देंय भिड़ाय।।
टूटि दो खण्ड भये तब भाय। गयो सब लोकन शब्द सुनाय।।
डिगी सुर मुनिन समाधी भाय। कहैं का भयो जानि नहि जाय।।
कमठ औ शेष गये घबड़ाय। गये दिग्पालन होश उड़ाय।६०।

दिग्गजौ बाराहौ अकुलाय। गिरे कछु होश रह्यौ नहि भाय।।
संभारयौ पृथ्वी देवी भाय। सुमिरि उर राम नाम सुखदाय।।
आवरण बच्यो न उलट्यो भाय। नाम परताप बड़ा मुददाय।।
लखन श्री राम चरण उर लाय। खड़े थे महि दाबे सुखदाय।।
जनकपुर व्यापेव कछु नहि भाय। भक्त की सदा सुनत हरि आय।७०।

धनुष में चाप रही जो भाय। हरे मखमल की अति सुखदाय।।
टूटि कै आधी धनु संग भाय। गई श्री इन्द्रपुरी हर्षाय।।
करैं पूजन सुर पति नित भाय। प्रेम तन मन करि हिय हर्षाय।।
दूसरा खण्ड मही धंसि जाय। एक योजन पर ठहरयो भाय।।
पूजतीं पृथ्वी जी नित आय। जानते सुर मुनि सब हैं भाय।८०।

होत अवतार जबै जब भाय। काम तब वही धनुष दे आय।।
शम्भु तब वही भूमि पर जाय। जहाँ कछु चिन्ह जगत हित भाय।।

परत झाँवा सा है दिखलाय। दरश करते तँह पर सब जाय।।
करैं सुर मुनि नित फेरी जाय। भूमिका है पुनीत अति भाय।।
खड़े हों शिव हरि सुमिरि के भाय। करैं आकर्षण धनु चित लाय।९०।

खण्ड दोउ पहुँचें आपै आय। चमकते वैसे जैस रहाय।।
पढ़ै हर राम मन्त्र हर्षाय। जुरैं दोउ खण्ड आप ही जाय।
प्रवेशैं बीज फेरि हर्षाय। उठैं कैलाश में पहुँचें जाय।।
करैं शिव पूजन नित प्रति आय। लगावैं फेरी अति सुख पाय।।
देव सब दर्शन को नित जाँय। करैं पैकरमा मन हर्षाय।१००।

राम का हाल सुनो अब भाय। तूरि धनु गुरु ढिग बैठे आय।।
भावना जा की जैसी आय। लख्यौ हरि को सो वैसै भाय।।
लखन तब बैठि संग में जाय। गुरु के बाँये मन हर्षाय।।
बैठि सब सभा के जन तब जाँय। खड़े थे सब के सब तँह भाय।।
उठावत तानत तोरत भाय। रहै सब ठाढ़ न परयौ दिखाय।११०।

भये दुख गाढ़े नहीं सुझाय। मनो जादू कोइ दीन चलाय।।
टूटि कै धनुष गिरयौ महि भाय। परयौ नैनन से सबै दिखाय।।
कियो ये चरित राम ने भाय। जानिगे सुर मुनि प्रेम लगाय।।
फूल बरसैं सुर नभ ते भाय। करैं जै जै की धुनि हर्षाय।११८।

।। अथ जय माल वर्णन।।

जानकी लै दोउ कर जयमाल चलीं हर्षाय प्राण पति ओर।
संग सखी बहु मंगल गावैं सुन्दरि बयस किशोर।
देखत बनै कहे छबि को कबि आनन्द हिये हिलोर।
बिधि हरि हर के ईश जहाँ पर बैठे धनुष को तोर।
देखत छटा कटा सब ह्वैगे मुनि संग श्यामल गौर।५।

जनक क प्रण पूरन जिन कीन्हो ऐसे हैं बर जोर।
अभिमानिन के मूँह मसि लागी सूझत नहिं निशि भोर।
परशुराम को गर्भ खींचि उर में धरि लियो बटोर।
करि प्रणाम उत्तर दिशि चलि भे छूट्यौ तोर व मोर।
मौन भये पर्बत पर जाय के भजन कियो चित जोर।१०।

ठाढ़े एक पाँव कर जोरे प्रेम में सुधि बुधि छोर।
सात सहस्र बर्ष जब बीते शिव ने किये निहोर।
बाणी नभ ते भई ऐसि तँह गरजैं जिमि घनघोर।
मुक्ति भक्ति तुमको हम दीन्हीं अजर अमर तन तोर।
श्री किशोरी जी की लीला सुनिये तत्व निचोर।

पहुँचि गईं जँह श्याम सुहावन मन भावन चित जोर।
प्रेम बिबश कर उठैं नहीं दोउ लागी चरनन डोर।
पलक परैं नहिं नयन नीर झरि तन ह्वै गो सर बोर।
फेरि स्वरूप सँभारि लीन सिय पहिरायो दृग जोर।
कृष्ण दास कहैं सुमन बृष्टि नभ ते सुर करते शोर।२०।

बजावैं दुन्दुभि बाजा भाय। कहैं देवन से बिष्णु सुनाय।।
काम अब तुम सब का हो भाय। कृपा करि आये सब सुखदाय।।
जानते शिव ब्रह्मा कछु भाय। कहैं हम जौन बचन सुखदाय।।
सुफ़ल कीन्ही मुनि यज्ञ को भाय। अहिल्या तरी चरन रज पाय।।
होय अब ब्याह सिया संग भाय। जाँय श्री अवध दीन सुखदाय।१०।

रहैं तेरह बरसै रघुराय। अवधपुर बासी अति सुख पाय।।
केकयी नृप से कहैं सुनाय। हमै कछु माँगे दीजै राय।।
कहैं दशरथ जो मन में भाय। माँगिये देहैं हम हर्षाय।।
कहैं केकयी सुनो सुखदाय। त्रिबाचा कीजै कहौं सुनाय।।
करैं त्रिबाचा दशरथ राय। खुशी हो कहैं केकयी माय।२०।

राम को पठय देहु बन राय। भरथ को राज देहु हर्षाय।।
सुनत ही राजा तब घबराय। गिरैं धरनी पर होश न भाय।।
खबरि यह सब रानिन ह्वै जाय। पुरी भर में फिर जावै छाय।।
सुनैं श्री राम खबरि यह भाय। धरैं शिर अज्ञा मन हर्षाय।।
चलैं संग सीता लछिमन भाय। तनिक नहिं प्रेम शोक उमगाय।३०।।

चरन मातन के पकरैं धाय। फेरि नृप के ढिग पहुँचैं जाय।।
करैं परनाम चित्त हर्षाय। निरखि राजा मन दुख अधिकाय।।
मांगि के बिदा चलैं जब भाय। नृपति के मुख से बोलि न जाय।।
दृगन के ओट होंय जब भाय। सिंहासन से राजा गिरि जाय।।
होय तँह भीड़ बड़ी दुखदाय। कहै को शोक की बातैं भाय।४०।

चलैं पंखा नृप पर सुखदाय। अर्क शीतल गुलाब छिड़काय।।
होश हो दो घंटे में भाय। दुःख से घायल हों नृप राय।।
राम कहि राम राम कहि भाय। देंय सुर पुर को प्राण पठाय।।
नगर का हाल कहैं क्या भाय। जाय सब के तन ज़रदी छाय।।
प्राण तो राम ले गये भाय। कहैं सब पुर नर नारी हाय।५०।

भरथ जी क्रिया करैं तब भाय। जहाँ बिल्व हर शम्भु सुखदाय।।
राम का हाल सुनो चित लाय। अवध का हाल कहत दुख आय।।
पहुँचिगे गंगा तट पर जाय। मिले केवट चरनन लपटाय।।
उठाय के उर प्रभु लीन लगाय। निरखि सीता औ लछिमन भाय।।
कहैं प्रभु पार उतारो भाय। सुनै केवट अति मन हर्षाय।६०।।

कहै केवट सुनिये रघुराय। धुवावो चरन भक्त सुखदाय।।
धोय मैं चरन लेंव जब भाय। तुरत ही पार करौं सुख पाय।।
कहैं प्रभु धोवो जलदी भाय। सुनत ही लावै जल हर्षाय।।
कठौता कच्छप पीठि क भाय। निरखि किरपा निधि मन मुसुकाय।।
संग में सीता लछिमन भाय। न बोलैं मन ही मन सकुचाय।७०।

बढ़ावैं पग तब श्री रघुराय। धोय ले केवट प्रेम से भाय।
धोवावैं सिया लखन सुखदाय। छकै चरणोदक हिय हर्षाय।।
चढ़ावै पार तुरत लै जाय। कहैं प्रभु उतराई ले भाय।।
निकारैं मुंदरी सिय सुखदाय। दाहिने कर से मन हर्षाय।।
हंसै औ चरनन में परि जाय। नहीं कछु लेहौं सब कछु पाय।८०।

सुनैं यह प्रेम बचन रघुराय। चितै सीता औ लछिमन भाय।।
कहैं प्रभु तुम्हैं दीन हम भाय। रिधि सिधि सम्पति गृह भरि जाय।।
रहौ जब तक तुम जग में भाय। करो सुख सदा मगन गुन गाय।।
अन्त में ऐहौ मम ढिग भाय। सिंहासन चढ़ि सुन्दर सुखदाय।।
पहुँचिहैं चित्रकूट जब जाय। मुदित मुनि नर नारी बन राय।९०।

फूल फल बे रितु के फरि जाँय। बिपिन की शोभा कही न जाय।।
मनो ऋतुराज मदन हर्षाय। कीन है बास वहीं पर भाय।।

जाइहैं मिलन भरथ सुखदाय। अवध से चित्रकूट को धाय।।
सहित पुरवासिन संग सब माय। शत्रुहन गुरु वशिष्ठ सुखदाय।।
पहुँचि जब भरथ राम ढिग जाँय। उठैं प्रभु भेटैं मन हर्षाय।१००।

शत्रुहन को भेटैं रघुराय। गुरु के चरन परैं हर्षाय।।
मिलैं सब मातन को सुखदाय। अवध के नर नारिन हर्षाय।।
राम सब के उर गये समाय। हरयौ सब सोच मुदित सब भाय।।
भरथ औ लखन शत्रुहन भाय। मिले उर में नहिं प्रेम समाय।।
भरथ शत्रुहन दोउ सुखदाय। परैं सीता के चरनन धाय।११०।

उठावैं सिया लेंय उर लाय। भये अति प्रेम विवश दोउ भाय।।
मिलैं श्री वशिष्ठ को सिय जाय। परैं चरनन में हिय हर्षाय।।
गुरु आशीष देंय तब भाय। रहो सिय सदा सोहागिन जाय।।
मिलैं फिरि सब सासुन सिय धाय। परैं चरनन में अति हर्षाय।।
मिलैं तीनों बहनैं अस भाय। मानो एकै में प्रगटीं भाय।१२०।

पुरी के नर नारिन हर्षाय। मिलैं क्षण ही भर में सुखदाय।।
लखन श्री गुरु व मातन धाय। मिलैं पुर नर नारिन हर्षाय।।
कहैं कछु भरत बचन मुद दाय। राम हंसि भरतै दें समुझाय।।
सुनो ज्ञानी विज्ञानी भाय। प्रीति हम हीं तुमरी लखि पाय।।
न जानैं बिधि हरि हर अंसाय। नहीं मन बानी वँह पर जाय।१३०।

प्रेम क पन्थ बड़ा है भाय। बसे हो मेरे उर सुखदाय।।
सम्हारो निज स्वरूप को भाय। कहीं कोइ दूसर परत देखाय।।
जनम जो तुमरो होत न भाय। पाप से मही जात गरुआय।।
जाय के राज सम्हारो जाय। अवधि बीते हम आउब भाय।।
सुनैं यह बचन राम के भाय। भरथ जी परैं चरनन में धाय।१४०।

राम कर गहि भरथहिं उर लाय। मिलैं फिरि प्रेम बढ़ै अति भाय।।
पिघिल पाथर ऐसा ह्वै जाय। बनैं तँह चरन चिन्ह सुखदाय।।
बनै तँह चरन चिन्ह सुखदाय। देहिं प्रभु चरन पादुका लाय।।
भरथ शिर पर धरि लें हर्षाय। आय कर नन्दिग्राम पधराय।।
करैं पूजन तन मन चित्तलाय। सम्हारैं राज काज सुखदाय।१५०।

करैं सेवा शत्रुहन अघाय। जाँय फिरि पंचवती सुखदाय।।
देखि बन चित्त शान्त ह्वै जाय। कहैं प्रभु सुनिये लछिमन भाय।।
कुटी एक यहँ पर लेहु बनाय। सुनत ही लछिमन हिय हर्षाय।।
बनावैं पर्ण कुटी सुखदाय। रहैं तामें तीनों जन भाय।।
वहाँ की शोभा अति सुखदाय। बिपिन कुसमय को देय भुलाय।१६०।

फलैं फूलैं सुन्दर सुखदाय। तोड़िये आज फूल फल भाय।।
एक शाखा के रहन न पाय। कलहि फिर देखौ मन हर्षाय।।
वही शाखा में वैसै भाय। वहाँ के पशु पक्षी सब भाय।।
बैर आपस का देंय हटाय। राम की छबि देखन हित भाय।।
कुटी के पास में बैठैं आय। लखन सिय निरखि निरखि सुख पाय।१७०।

डरैं नहिं धनुष बाण दिखलाय। लाय सिय कन्द मूल कछु भाय।।
तोड़ि कै सब ढिग देंय बहाय। पाय कै सब पूरन ह्वै जाँय।।
पियै जल सरिता में हर्षाय। मगन रहैं निशि बासर सब भाय।।
दरिद्री को ज्यों धन मिलि जाय। कछुक दिन बीते वँह पर भाय।।
राक्षसी शूर्प नखा एक आय। भयानक रूप बड़ी दुखदाय।१८०।

बाल दोउ पगन तलक हैं भाय। नगन तन दशन बड़े मूँह बाय।।
जीह नाभी तक लटकै भाय। श्रवण दोउ बड़े बड़े हैं भाय।।
एक ओढ़ै एक लेय बिछाय। कहैं लछिमन ते बचन सुनाय।।
ब्याह हमरे संग कीजै भाय। बनाओ अपनी बनिता भाय।।
करैं सेवा हम चित्त लगाय। न पैहौ ऐसी नारी भाय।१९०।

तीन्हू लोक फिरौ चहै धाय। तुम्हारा दुःख देखि कै भाय।।
दया मेरे उर में गई आय। आप महलन के बासी भाय।।
बदन में कोमलता अधिकाय। बिपिन के हम बासी हैं भाय।।
कार्य ये छाजै हम को भाय। लै आवैं कन्द मूल फल धाय।।
पवन सम बिलम्ब न होवै भाय। रहौ तीनो जन बैठे भाय।२००।

कन्द औ मूल फलन को खाय। पिलावैं ठौरै जल हम लाय।।
बीच धारा का निर्मल भाय। कहो कछु मुख ते लछिमन भाय।।
देर काहे को रहे लगाय। समय फिर ऐसा मिलै न भाय।।

फेरि मन में पछितैहौ जाय। तपस्वी जैसे तुम हो भाय।।
वैस ही हमको जानो भाय। काम को जीति लीन हम भाय।२१०।

नहीं कोइ तन पर बसन सुहाय। शान्ति सन्तोष शीलता आय।।
क्षिमा दाया सरधा अधिकाय। दीनता प्रेम सत्यता भाय।।
यही लक्षण ते सन्त कहाय। मिलेव तन पर स्वारथ हित भाय।।
होय तन सुफ़ल लेहु अपनाय। खड़ी हौं कर जोरे मैं भाय।।
आप ही के हित तन यह पाय। दया के सागर आप कहाय।२२०।

दया अब कीजै हम पर भाय। अतिथि वह कहलावत है भाय।।
जौन कोइ पहले पहले जाय। रुची अनुकूल मिलैं तेहि भाय।।
नहीं तो मिटै न तन की हाय। आप सब जग दाता कहवाय।।
लेत सुधि निशिदिन हित करि भाय। मनोरथ जा को जैसी भाय।।
करत हौ पूरन मन हर्षाय। ऐस स्वामी जो जावै पाय।२३०।

छाड़ि सो अन्त कहाँ को जाय। करै सेवा तन मन चित लाय।।
अन्त के समय स्वर्ग सो जाय। करै छल जो कोइ उनसे भाय।।
फटै धरती सो जाय समाय। सुनैं यह बचन राम रघुराय।।
कहैं लछिमन से सुनिये भाय। राक्षसी बड़ी दुष्ट यह भाय।।
बतकही कैसी करत बनाय। काटि लेहु नाक कान उठि भाय।२४०।

कहेन हंम तुमसे सत्य सुनाय। सुनैं जब लखन बचन अस भाय।।
चलैं क्रोधातुर चला न जाय। लिहे दहिने कर छूरी भाय।।
बाम कर केश पकड़ि लें धाय। झिटकि कै महि पर देंय गिराय।।
बैठि छाती पर जावैं भाय। काटि लें नाक कान तब भाय।।
छोड़ि दें भागै अति बिलखाय। रुधिर सब तन में अस लगि जाय।२५०।

जानिये अग्नि देव गे आय। जाय खर दूषण ढिग चिल्लाय।।
देखि कर चीन्ह न पावैं भाय। कहै तब आपन चरित सुनाय।।
तुम्हारे जियत हमैं दुख भाय। नाक औ कान लीन कटवाय।।
श्याम बालक कहि गौर से भाय। निहारैं भगिनी यह मम आय।।
क्रोध उर में तब नहीं समाय। कहैं सब निश्चर कटक बुलाय।२६०।

चलो देखें हम दोनौ भाय। कहाँ से आये को हैं भाय।।
काल के गाल में पहुँचे आय। चलैं सब प्रभु के ढिग को धाय।।

लखैं हरि निश्चर सेना आय। कहैं प्रभु सुनिये लछिमन भाय।।
शरासन बान सम्हारो लाय। कटक निश्चरन का आवत भाय।।
मारि हम तुम मिलि देहिं गिराय। उठावैं राम धनुष को भाय।२७०।

चढ़ावैं चाप भक्त सुखदाय। करैं टंकोर जबै रघुराय।।
जाँय सब दुष्ट तबै घबड़ाय। कटक खर दूषण का गिरि जाय।।
होश नहिं रहै कहै का भाय। राम संग लछिमन चाप चढ़ाय।।
खड़े यह कौतुक देखैं भाय । घड़ी जब पांच बीति जाँय भाय।।
चेत हों सब को उठैं रिसाय। रहै आधी तन ताक़त भाय।२८०।

लेय आधी भय तहँ पर खाय। परैं पग डग मग चला न जाय।।
गिरैं औ उठैं चलैं फिरि भाय। मनै मन खर दूषण दुख पाय।।
कहै क्या पड़ी बिपत्ति यह भाय। जानि कछु पड़ै नहीं मोहिं भाय।।
करुँ क्या धीर धरा नहि जाय। पलटि जो परौं हंसी हो भाय।।
सुनै रावण तो अति रिसिआय। यही अब सूझत और न भाय।२९०।

कहै सेना में हांक सुनाय। सुनो सब बीरों मम सुखदाय।।
पाँव पीछे कोइ धरय्यौ न भाय। नहीं तो होई बड़ी हंसाय।।
चलै लै सब को कहि सुनि भाय। पहुँचतै युद्ध करैं रघुराय।।
राम औ लछिमन के शर भाय। एक ते लाखन होवैं जाय।।
भरा हुंकार बीज दुखदाय। भागि कै कोइ उबरै नहिं भाय।३००।

हतैं सब सेना दोनो भाय। चलैं फिरि पर्ण कुटी सुखदाय।।
देखि कै सीता मन हर्षाय। प्रेम वश बोल न मुख से आय।।
हाल यह रावन जब सुनि पाय। हर्ष करि मन ही मन मुसुकाय।।
जीति को सकै बिना रघुराय। बली खर दूषण मो सम भाय।।
बैर करिहौं हठि प्रभु सों जाय। मारिहैं कर कमलन ते आय।३१०।

तरौं भवसागर मरतै भाय।। सहित परिवार मनै हर्षाय।।
रचै तब रावण एक उपाय। कहै मारीच से सुनिये भाय।।
बनो तुम कपट मृगा बनि जाय। सोबरन कैसा रूप बनाय।।
जहाँ पर राम लखन सिय माय। वहाँ पर ह्वै कर निकस्यो जाय।।
देखिहैं सीता तब सुखदाय। कहैं रघुबर से बचन सुनाय।।३२०।

सोबरन मृग यह पकड़ो धाय। पालने योग्य प्राण पति आय।।
मिलै गर नहीं तो बाण चलाय। मारि के छाल दिहेव मोहिं लाय।।
अवध जब चलब सबै देखराय। देखि सब के तन मन हर्षाय।।
लखन यह जानि न पैहैं भाय। करैं जो चरित राम सिय माय।।
सिया हरि के उर जाँय समाय। हरैं हम माया की तब भाय।३३०।

श्राप मोहिं तीन जन्म की भाय। मिटी है एकै दुइ रहि जाय।।
एक का योग लग्यो अब आय। एक द्वापर में मिटिहै जाय।।
श्री सनकादिक चारों भाय। जात रहै बैकुण्ठै मुद दाय।।
श्री उर प्रेरक इच्छा भाय। दिहेन लौटारि जाय नहिं पाय।।
श्राप उन दीन्ही रिसि करि भाय। राक्षस तीनि जन्म हो आय।३४०।

कहेन हम नारायण से जाय। भई प्रभु खता बड़ी दुखदाय।।
कह्यौ प्रभु सुनिये मन चित लाय। बचन भक्तन के बृथा न जाँय।।
प्रेरना हरि की से सब भाय। होत है खेल जक्त गुन गाय।।
कई संघटन होंय जब आय। लेंय औतार तबै हरि जाय।।
मानि लीजै हम तुम्हैं बताय। उबारैं हरि तीनौ जन्माय।३५०।

फेरि जय बिजय होहु तुम आय। पारषद मेरे प्रिय दोउ भाय।।
सुनेन यह बचन हरी के भाय। गई चिन्ता दुख दूरि पराय।।
राज दुइ सै छप्पन युग भाय। किहेन लंका में अति सुख पाय।।
दैत्य सतयुग में ह्वै कर भाय। हिरण्य कश्यप हिरण्याक्ष कहाय।।
वहाँ से हम दोउन को भाय। उबारयौ आपै हरि सुखदाय।३६०।

धरयौ बाराह रूप हरि जाय। फेरि नर सिंह रूप को भाय।।
आइहैं द्वापर में फिरि भाय। नाम शिशुपाल दन्त बक्राय।।
उबारैं आपै फिरि हरि आय। जाँय बैकुण्ठ वही दर्जाय।।
यहाँ पर कुम्भ करण रवणाय। नाम हम दोउन का है भाय।।
भक्त हित प्रणतपाल हरि भाय। धरत हैं रूप बहुत बिधि आय।३७०।

दया के सागर आप कहाय। देखि दुख हरि से रहा न जाय।।
अधम ते अधम होय जो भाय। लेंय हरि वाको चट अपनाय।।
रहै साँचा तन मन ते भाय। बास पासै में पावै जाय।।

काटि कै कोटि दफ़े शिर भाय। चढ़ायन शिव को मन हर्षाय।।
शीश फिर नये प्रगट भे आय। शम्भु परताप न देर लगाय।३८०।

शम्भु ने दीन्हेव मोहिं चेताय। गया था कछु परदा उर आय।।
तरौ औ तारौ कुल सब भाय। भाग्य अब उदय बिधाता दाँय।।
हमारे मामा तुम कहवाय। कार्य ये जाय के सारो भाय।।
करैं प्रभु इच्छा पूरी भाय। प्रेम तन मन ते देइ लगाय।।
मारिहैं चलिहैं रघुबर धाय। संग तुमरे करिहैं खेलवाय।३९०।

जिधर तुम जैहौ तिधरै जाँय। करैं संग पांच कोश दौराय।।
मारिहैं बान जबै लगि जाय। पुकारयौ लछिमन को तब भाय।।
कहैं सीता लछिमनै सुनाय। रहे हैं राम तुम्हैं गोहराय।।
जानि कछु जावैं लछिमन भाय। कहैं मारीच कपट मृग आय।।
मारि प्रभु दीन्हेव उसे गिराय। हाँक यह कपट कि हमैं बुझाय।४००।

न मानैं सीता कहैं सुनाय। बटकही लछिमन यह न स्वहाय।।
खबरि लै आवो जलदी धाय। कहाँ पर मारयौ मृग रघुराय।।
चलैं लछिमन एक लीक खँचाय। कहैं याही में रहियो माय।।
निकसिहौ बाहेर जो कहुँ माय। तुम्हैं कोइ राक्षस लेय उठाय।।
चलैं कहि लछिमन खोजन धाय। रहैं बैठी माया की माय।४१०।

जाँय रथ लै हम जंगल भाय। यहाँ से तुमरे साथे धाय।।
बैठि जाय छिपि कै रथ ठहराय। भेष अभ्यागत का करि भाय।।
खेल जब तुम्हरे संग हो भाय। जाँय हम माता के ढिग आय।।
उधारन अधमन के हित भाय। करैं क्या लीला मातु पिताय।।
मांगिहै भिक्षा हम हर्षाय। मातु कहिहैं यहँ लीजै आय।४२०।

जाव नेरे तब देखब जाय। लीक एक बनी चौतरफ भाय।।
कहब मातु सुनिये चित लाय। भीख हम बंधी न लेवैं भाय।।
आइहैं बहरे जब श्री माय। कन्द फल मूल लिये सुखदाय।।
उठाय कै काँधे पर लै धाय। फेरि रथ पर बैठारब जाय।।
उड़ाउब रथ वायू सम भाय। बाटिका अशोक पहुँचब जाय।४३०।

कहै यह भविष्य रावण गाय। तुरत मारीच हिंया हर्षाय।।
करै लीला वह वैसै आय। जाँय हरि माता तब ही भाय।।

जाय कर गीध लड़ै तहँ भाय। हरावै छीनै जानकी माय।।
चोंच से घाव करै वहु भाय। रुधिर तन बहै बिकल ह्वै जाय।।
सम्हरि कर रावण उठै रिसाय। काटि पर दे कृपाण से भाय।४४०।

धरणि पर गिरै राम कहि भाय। उड़ै नहिं पावै अति दुख पाय।।
जाय लै रावण सीता माय। धरै आशोक बाटिका जाय।।
निश्चरी बहुत लेय बुलवाय। दिखावैं भय सब मूँह को बाय।।
राक्षसी त्रिजटा एक कहाय। धैर्य्य माता को देवै भाय।।
जाँय तहँ राम लखन सुखदाय। जटायू कहैं हाल सब गाय।४५०।

देखि कै गीध के दुख को भाय। राम तेहिं उर में लेहिं लगाय।।
कहैं तुम प्राण को राखो भाय। देंय हम दिब्य स्वरूप बनाय।।
कहै तब गीध प्रभु सुखदाय। हमारी भाग्य उदय भै आय।।
जन्म भर मुर्दा आमिष खाय। आज हरि गोद में लियो बिठाय।।
नहीं कोइ त्रिभुवन मम सम भाय। रूप नयनन ते निरख्यौ भाय।४६०।

श्रवण ते सुनौ बचन सुखदाय। मुनी जन करते तप अति भाय।।
देत प्रभु तब कहुँ दर्शन जाय। आज धनि भाग्य हमारी आय।।
पठओ धाम आपने भाय। कहै अस चलै राम कहि भाय।।
बैठि सिंहासन मन हर्षाय। गीध की कृपा उबीध बनाय।।
पिता सम जानै श्री रघुराय। जाइहैं सबरी के गृह भाय।४७०।

राम औ लखन हिया हुलसाय। खाइहैं कन्द मूल फल भाय।।
प्रेम की प्रीति कही ना जाय। आइहैं ऋषि मुनि तहँ बहु भाय।।
सरोबर जल के कारण धाय। करैं परनाम सबै रघुराय।।
पूँछि कै प्रभु सब से कुशलाय। कहैं सब कृपा करो मुददाय।।
सरोवर जल निर्मल ह्वै जाय। सुनैं प्रभु मन्द मन्द मुसुकाय।४८०।

कहैं लै चलिए सेवरी माय। चलैं ऋषि मुनि संग दोनो भाय।।
संग लै सेवरी अति सुखदाय। जाँय पंपा सर पहुँचैं जाय।।
कहैं लछिमन ते राम सुनाय। उतारो चरनोदक सुखदाय।।
ऋषी औ मुनिन क प्रेम लगाय। परै जब यामे सुनिये भाय।।
होय जल निर्मल दुख सब जाय। सुनत ही लछिमन हिय हर्षाय।४९०।

उतारैं चरनोदक सुख दाय। छोड़तै चरनोदक के भाय।।
न होवै शुद्ध और गन्धाय। लखन ते कहैं राम मुसक्याय।।
छोड़िये आपन लछिमन भाय। लखन अपनौ तब छोड़ैं जाय।।
न होवै शुद्ध रहै वैसाय। राम तब कहैं लखन ते भाय।।
छोड़ि कर हमरौ देखौ जाय। लखन लै चरणोदक तब जाँय।५००।

छोड़ि दें शुद्ध न होवै भाय। कहैं ऋषि मुनिन ते राम सुनाय।।
चहैं सेबरी तो यह दुख जाय। न बोलैं ऋषि मुनि ज्ञान हेराय।।
खड़े कर जोरे सन्मुख भाय। चलैं नैनन ते आँसू भाय।।
दया हरि के उर तब अति आय। कहैं सेवरी से हरि हर्षाय।।
छोड़िये चरणोदक सुखदाय। परै जब सेबरी का सुखदाय।५१०।

तुरत ही जल निर्मल ह्वै जाय। कहैं ऋषि मुनिन ते राम सुनाय।।
भक्ति परभाव देखिये भाय। फंसे हो कर्म काण्ड में भाय।।
करो सुमिरन तन मन चित लाय। जाँय अभिमान सबन के भाय।।
कहैं सेबरी धनि धनि सुखदाय। मिलैं हनुमान वहाँ पर आय।।
बिप्र को रूप धरे सुखदाय। देंय सुग्रीब को आपु मिलाय।५२०।

देंय सुग्रीब हाल बतलाय। जात आकाश में देखा भाय।।
कहत श्री राम राम चिल्लाय। निरखि मम तन पट दियो चलाय।।
लीन मैं धरयौ प्रेम से भाय। कहैं प्रभु लाओ पट वह भाय।।
लाय कै तुरतै देवैं आय। शोच करि उर में लेंय लगाय।।
बोल कछु मुख से कढ़ै न भाय। कहैं सुग्रीब सुनो सुखदाय।५३०।

शोच काहे को करत हौ भाय। काज एक करो हमारो भाय।।
देंय हम सिया को पता लगाय। सुनत ही राम कहैं हर्षाय।।
कहौ सुग्रीब काज का भाय। देंय सब हाल अपन बतलाय।।
सुनैं प्रभु कहैं क्रोध करि भाय। एक ही बाण से देंव गिराय।।
सकैं नहिं ब्रह्मा शम्भु बचाय। कहैं सुग्रीब सुनो रघुराय।५४०।

परीक्षा हमैं दिखाओ भाय। पड़ै परतीति मेरे मन आय।।
करौं सेवकाई तन मन लाय। कहैं प्रभु कहौ करैं तो भाय।।
होय परतीत जौन से आय। जाय के सप्त ताड़ दिखराय।।

कहै प्रभु एकै बार दहाय। मारिहै बालि क सोई भाय।।
नहीं तो मोहिं प्रतीत न आय। सुनत प्रभु देवैं बाण चलाय।५५०।

गिरैं एक दम सातौं अरराय। होय सुग्रीब खुशी अति भाय।।
परै चरनन पर उठा न जाय। उठाय के प्रभु लेवैं उर लाय।।
मित्र कहि बार बार हर्षाय। कहैं प्रभु जावो बालि गृह भाय।।
यहाँ हम खड़े बिटप तर भाय। जाँय सुग्रीब डेराते भाय।।
निरखि के दौरै शोर मचाय। बिकल करि सुग्रीवै दे आय।५६०।

भागि करि आवै हरि ढिग भाय। देंय एक सुमन माल रघुराय।।
कहैं हम तुम्हैं चीन्ह नहिं पाय। दोऊ जन एकै रंग हौ भाय।।
जाव अबकी हम करब उपाय। चलैं सुग्रीब भिरैं फिरि जाय।।
पकड़ एकै जस हो दुखदाय। बिटप के ओट से श्री रघुराय।।
हिये में मारैं शर कसि भाय। लागतै तुरत पार ह्वै जाय।५७०।

गिरै वह बिकल मही पर भाय। आय शर तरकस में घुसि जाय।।
मन्त्र प्रभाव मानिये भाय। मनै मन सुमिरै श्री सुखदाय।।
राम तब जाँय पास में धाय। लखत ही करुणा उर में आय।।
कहैं तब बालि सुनो रघुराय। बध्यौ कौने कारण मोहिं भाय।।
कहैं प्रभु सुनिये मन चित लाय। नीति त्यागे कर फल यह आय।५८०।

बालि कहैं जानि गयन हम भाय। सिया हरि रावण लै गयो भाय।।
कार्य्य हित सुग्रीवहिं मित्राय। आप की अर्द्धाङ्गी सिय आय।।
हाल हमसे जो कहतेव भाय। देखतेव बल मेरा हर्षाय।।
मारि सब निश्चर रावण भाय। सिया को देतेंव तुम्हैं गहाय।।
कौन था काम बड़ा रघुराय। लंक को मूली के सम भाय।५९०।

उखारि समुद्र में डरतेंव धाय। सुनैं यह बचन राम रघुराय।।
बीर रस भरे बालि के भाय। कहैं प्रभु तुमको देंय जिआय।।
राज्य कीजै पंपा पुर जाय। अमर औ अचल करौं सुनु भाय।।
फेरि तुमको कोइ मारि न पाय। कहैं तब बालि सुनो सुखदाय।।
मुनी बहु बिधि ते करैं उपाय। दरश कहुँ मुशिकल से हो भाय।६००।

अन्त में रूप न सन्मुख आय। सामने खड़े आप मम आय।।
निरखि कै शोभा हिय हर्षाय। अन्त में नाम आप का भाय।।

कढ़ै जो मुख से भव तरि जाय। कहत हौ प्राण राखिये भाय।।
हमै अस समय न मिलिहै आय। तयारी मेरी है रघुराय।।
सिंहासन आवत परत दिखाय। टहलुआ अंगद लिहेव बनाय।६१०।

राज सुग्रीव को दीन्हेव भाय। चलै कहि राम नाम सुखदाय।।
चतुर्भुज रूप हिये हर्षाय। करै रोदन तारा बिलखाय।।
खींचि माया प्रभु दें समुझाय। परै अंगद प्रभु चरनन धाय।।
उठाय के हरि उर लेंय लगाय। राज सुग्रीव को दें रघुराय।।
कहैं अंगद से बचन सुनाय। रहौ तुम सतयुग तक हर्षाय।६२०।

आइहौ फिर मेरे पुर भाय। कहैं सुग्रीव से श्री रघुराय।।
सिया को पता लगावो भाय। लेंय सुग्रीव कपिन बोलवाय।।
कहैं सब उनसे हाल सुनाय। जाँय सब दिशि बानर बहु धाय।।
खोजि आवैं कहुँ पता न पाय। कहैं तब जाम्ब वन्त हंर्षाय।।
बिना हनुमान कौन सुधि लाय। देंय मुंदरी तब श्री रघुराय।६३०।

कहैं यह सिया को दीन्हेव जाय। लेन सुधि पवन तनय तहँ जाँय।।
जाय लंका में पहुँचैं जाय। घूमि सब भवन भवन लें जाय।।
लेंय तहँ बहुत रूप धरि भाय। जौन जैसे पौढ़ा बैठाय।।
लखैं सब को वह देखि न पाय। नाम परताप बड़ा मुद दाय।।
बने शिव प्रभु के हित कपि भाय। बिभीषण को गृह परै देखाय।६४०।

लखैं बहु तुलसी के बृन्दाय। लिखा गृह राम नाम सुखदाय।।
विभीषण सोये रहै सुख पाय। समय दो पहर क जानो भाय।।
करैं आराम सबै कोइ पाय। निरखि बाहेर तब बैठैं आय।।
रूप तब एकै राखैं भाय। कहैं अब कारज सब बनि जाय।।
राम का दास यहाँ कोइ भाय। कीर्तन राम नाम का भाय।६५०।

करैं हनुमान हिये हर्षाय। सुनत ही जागि बिभीषण आय। ।
धाय कर चरनन में गिरि जाँय। उठावैं पवन तनय सुखदाय।
लगावैं उर में अति हर्षाय। हाल सब बिधिवत देंय बताय।
बिभीषण सुनैं शान्त चित भाय। बिभीषण पता देंय बतलाय।।
पहुँचि तब माता के ढिग जाँय। अशोक के बृक्ष पै बैठि के भाय।६६०।

लखैं माता को मन हर्षाय। देंय मुँदरी तब वहाँ गिराय।।
ढनगि के माता के ढिग जाय। देखि कै सुन्दर मुँदरी माय।।
उठावैं दहिने कर सुखदाय। मुद्रीका दस माशे की भाय।।
सोवरण अति उत्तम सुखदाय। जड़ा ता में अमोल नग भाय।।
नगै में झाँकी सुघर सुहाय। बनी सिय राम की झाँकी भाय।६७०।

देखतै बनै कौन कहि पाय। निरखि के कहैं कौन लैं आय।।
रची माया से ऐसि न जाय। मनै मन कहैं जानकी माय।।
प्राण पति की यह मुँदरी आय। कहैं मुँदरी से श्री सिय माय।।
कहो मुँदरी तुम कहाँ से आय। कौन लै आयो देव बताय।।
होय परतीति हिया हर्षाय। कहैं मुँदरी सुनि लीजै माय।६८०।

शम्भु मोहिं इच्छा ते प्रगटाय। लियो गिरिजा शिव ते मुददाय।।
पूजती रहीं प्रेम ते माय। ब्याह के समय राम हर्षाय।
प्रथम गिरिजा पूज्यौ सुखदाय। दीन हमको श्री गिरिजा माय।।
राम के दहिने कर पहिराय। छगुनियाँ की शोभा अधिकाय।।
देखि सब सुर मुनि मन हर्षाय। फेरि गणपति को पूज्यौ माय।६९०।

दीन गणपति मणिमाल पिन्हाय। राम के गले कि छबि अधिकाय।।
देव मुनि कहि न सकैं कोइ भाय। आपने पूज्यौ गिरिजा माय।।
दीन चूड़ामणि शीश सुहाय। बनी झाँकी शिव उमा कि माय।
शीश पर धारयौ मन हर्षाय। फेरि गणपति को पूज्यौ माय।।
गजानन दीन्ह्यो माल पिन्हाय। शुकुल रंग गजमुक्ता सुखदाय।७००।

चमक अति गले माझ लहराय। ब्याह करि चले अवध रघुराय।।
बिष्णु धनुबान दीन सुखदाय। दीन बिधि कुण्डल मुकुट लगाय।।
इन्द्र दियो चंवर छत्र पंखाय। लक्ष्मी ब्रह्माणी दियो आय।।
घेंघरा सारी चोली माय। इन्द्राणी दियो सिंहासन लाय।।
आपके बैठन हित सुखदाय। दीप मणि दियो शेष हर्षाय।७१०।

भवन परकाश हेतु सुखदाय। दियो बेड़ा श्री शंकर आय।।
सोबरण के नग जड़े स्वहाय। करन चारों भाइन सुखदाय।।
लखत आँखिन परकाश समाय। सरस्वती गंगा यमुना आय।।

दीनि टिकुली झूमड़ि टीकाय। बेनी पान कोथली पकपानाय।।
दीन श्री दुर्गा जी हर्षाय। दीन काली सेंदुर सुरमाय।७२०।

सोबरण मणी जड़ित डिबिआय। शम्भु ने दीन चन्द्रिका लाय।।
लगायो माथे तुम सुखदाय। दीन काली खाँड़ा एक लाय।
राम ने लीन प्रेम से माय। दुधारा कहैं जिसे सब माय।
काल के काल को देय नशाय। फेरि दुर्गा कटार लै आय।।
राम को दीन्हीं मन हर्षाय। बसन भूषन सिंगार कहाय।७३०।

दीन पृथ्वी देवी बहु लाय। नरमदा कज्जल दीन्हों लाय।।
सोबरण की डिब्बी सुखदाय। दन्त मंजन सुगन्ध सुखदाय।
दीन श्री धेनु मती हर्षाय। दीन कंघा गोदावरी आय।।
और ताम्बूल सुघर डिब्बाय। फुलेलो इत्र दियो हर्षाय।।
श्री सरयू सौ किसिम क लाय। भरा सिंगार दान सुखदाय।७४०।

सोबरन सीसिन की छबि छाय। जनक के न्योंतहरी सुर आय।।
दीन जाके जो मन में भाय। रूप दुइ सब सुर लीन बनाय।।
एक नभ एक मिथिला पुर आय। गये सब अवध तलक संग भाय।।
पठै कर लौटे निज गृह आय। दीन हम हाल सांच बतलाय।।
समुझिये अपने मन में भाय। लै आये हमै पवन सुत माय।७५०।

राम के खबरि के हेतु पठाय। कह्यौ कछु चीन्ह जाउ लै भाय।।
दिहेव तब सिया क हिया जुड़ाय। बैठि अशोक बृक्ष पर माय।।
सघन पत्तन की ओट लुकाय। बैन मुँदरी के सुनि सिय माय।।
भई अति मगन प्रेम उर छाय। लीन मुंदरी शिर में धरि माय।।
मनो श्री राम मिले सुखदाय। आय हनुमान चरण परि जाँय।७६०।

कहैं सब हाल मातु से भाय। देर अब नहीं होय कछु माय।।
आइहैं नाथ जाव हम धाय। मारि सब निश्चर देंय नशांय।।
चलैं संग लै आनन्द गुण गाय। धर्म की युद्ध करैं रघुराय।।
हुकुम मोहिं दीन्हेव नहीं है माय। नहीं तो लै चलतेंव हर्षाय।।
मारि सब निश्चर रावण राय। देखतिंउ आँखिन यह सुख माय।७७०।

बीच समुद्र में लंक डुबाय। चिन्ह तक रहन न पावत माय।।
नाम परताप रहेउ उर छाय। सुनैं यह बैन जानकी माय।।

लेंय हनुमान को हृदय लगाय। कहैं हनुमान सुनो मम माय।।
भूख अब हमको रही सताय। हुकुम अब हमको दीजै माय।।
खाँय फल तूरिकै खूब अघाय। कहैं सिय रखवारे बहु भाय।७८०।

खाहु कैसे फल तुम सुख पाय। कहैं हनुमान मनै हर्षाय।।
देव अज्ञा हमको तुम माय। खाँय फल सब को देखैं जाय।।
कौन है बीर यहाँ पर माय। कहैं माता जाओ हर्षाय।।
चलैं हनुमान चरन शिर नाय। सुमिरि मन राम नाम को भाय।।
बढ़ावैं रूप कौन कहि पाय। खाँय फल बृक्षन देंय ढहाय।७९०।

निशाचर मारैं पकरि के धाय। लड़ाई अक्ष कुमार ते आय।।
होय अति घोर थकै वह भाय। पकरि दोउ करन ते लेंय उठाय।।
उतानै पटकैं मही पर भाय। होश ताको कछु रहे न भाय।।
धरैं दाहिन पग छाती धाय । टूटि छाती पग धरनि में जाय।।
मनहुँ तरबूज़ फूटिगा भाय। खबरि जब रावण पास मे़ जाय।८००।

पठावै मेघनाद को भाय। आय के युद्ध करै अधिकाय।।
बाँधि कै ब्रह्म फाँस लै जाय। मानि मर्य्याद फाँस की भाय।।
न बोलैं तनकौ चुप्प ह्वै जाँय। सनातन की मर्य्यादा भाय।।
तोड़ने से महिमा घटि जाय। राम ने मर्य्यादा हित भाय।।
बालि को बध्यौ ओट बिटपाय। नाम परताप उन्हीं के भाय।८१०।

देंय सुरमुनि शापो अशिषाय। बँधायो कार्य हेत हर भाय। ।
मनै मन पवन तनय हर्षाय। जाँय लै दशमुख के ढिग भाय।।
धरैं अंजनि सुत को तहँ जाय। कहै रावन हनुमान से भाय।।
बृक्ष क्यों तूरे फलन को खाय। पकरि फिरि अक्ष कुमार उठाय।।
मही पर पटके अति रिसिआय। निशाचर मारे तहँ बहु धाय।८२०।

किये यह कौन काम तू आय। जान से मारे मम पुत्राय।।
शोक की उठत कलेजे हाय। कहैं हनुमान सुनो चित लाय।।
भला कहुँ निज स्वभाव मिटि जाय। भूख बस फल हम लीन्हे खाय।।
बृक्ष गे कूदत चढ़त ढहाय। बड़े कमज़ोर रहे बिटपाय।।
सह्यौ नहिं तनकौ भार को भाय। हमारे यहाँ के जो बृक्षाय।८३०।

घूमि हम आवैं उन पर भाय। न टूटैं कबहूँ हैं वैसाय।।
भई नहि भेंट ऐस बिटपाय। अहैं हम जंगल बासी भाय।।
रहैं बृक्षन ही पर सुख पाय। निशाचर मारेन तब हम भाय।।
लियो उन पहले दाँव चलाय। सुनो कहुँ ऐसा होत है भाय।।
चोर क करी क कटारी खाय। पेट ही भरेन न बाँधेन भाय।८४०।

डाटते हो हम को गुर्राय। पढ़ेव तुम चारिउ वेद को भाय।।
किहेव टीका सुर मुनि मन भाय। नीति को तन मन से बिसराय।।
दिहेव तुम रावण मद में आय। हरेयौ माता को बन में जाय।।
भेष साधू का धरि के भाय। कपट का कार बुरा है भाय।।
मृत्यु तुमरी अब गइ नगचाय। सामने हरतिउ जो कहुँ आय।८५०।

परत तब तुमको मालुम भाय। बनत हौ बीर चोर हौ भाय।।
शरम तुमको तनकौ नहिं आय। हुकुम नहिं दियो हमैं रघुराय।।
नहीं तो देखतेव मम बल भाय। मारि सब कटक निशाचर भाय।।
तुम्हैं सब देतेंव खेल देखाय। तुम्हैं औ कुम्भ करण को भाय।।
पकरि घननाद को संग मिलाय। पगन दोनो से काँड़ि के भाय।८६०।

गिलावा करतेंउ खूब बनाय। बाँधने से क्या बिगरेयौ भाय।।
कार्य के हेतु प्रभु बँधवाय। ब्रह्म शर तोड़ि देंय जो भाय।।
घटै महिमा हरि दीन बड़ाय। दिखाऊं कछु लीला दुखदाय।।
किह्यौ तुम जौन तुम्हैं बिन आय। राम के भक्तन के दुखदाय।।
तुम्हैं नहिं कोइ सुर सकै बचाय। ठानि हरि हूँ से बैर को भाय।८७०।

रहौगे कहाँ कहौ तुम जाय। चहौ जो अपनी सुनो भलाय।।
दीन ह्वै मिलौ राम से जाय। प्रभू मम दीनानाथ कहाय।।
दीन को तुरतै लें अपनाय। कपट तजि निर्मल जो ह्वै जाय।।
पास ही बास करै सो भाय। बड़े पण्डित तुम तौ कहलाय।।
गई पाण्डित्य कहाँ वह भाय। सुनै रावण यह बचन रिसाय।८८०।

कहै यह बानर हमै सिखाय। बीरता देख लेव हम भाय।।
आइहैं लै बानर ऋक्षाय। चबैना भरे के हैं नहि भाय।।
रहै समुझाय हमै क्या आय। भला कहुँ बानर भालू जाय।।

लड़ाई कीन्ही दे बतलाय। सकै को जीति हमन सुत भाय।।
नाम जिनका घननाद कहाय। जक्त में सबको दीन हराय।८९०।

मुक बिल जंग कीन को भाय। दण्ड हम लीनेन सब से भाय।।
भया को ऐसा जग उमराय। पड़े बन्दी खानेन में आय।।
देखि तो आओ को को भाय। कहौ स्वामी तुम राम को भाय।।
हमारे स्वामी शम्भु कहाय। कृपा से उनकी हम सुखदाय।।
कमी नहि कोई बात की भाय। हमैं तो आवत बड़ी हंसाय।९००।

ऋक्ष बानर का करिहैं आय। नहीं कोइ अस्त्र सिखे हैं भाय।।
रहैं जंगल फल पाती खाय। आपके स्वामी की बुधि भाय।।
गई कहुँ चली पता नहिं पाय। लै आयन जब से सिया उठाय।।
तभी से सुधि बुधि गई हेराय। राम तो रमें हैं सब में भाय।।
दूसरे राम कहाँ ते आय। सदा निर्गुण निर्लेप कहाय।९१०।

कामना राम में कहाँ ते आय। पढ़ा नहि लिखा मूर्ख तू आय।
बतकही सिखि लीन्हें कहुँ जाय। कहैं हनुमान सुनो दुखदाय।।
ऋक्ष औ बानर तुम्हें हराय। बालि को जानत हौ तुम भाय।।
रह्यौ कखरी छ महीना जाय। कहाँ बल गवा रहा तब भाय।।
बोलि नहिं सक्यो बड़े बलदाय। समाधि में रह्यौ कि ध्यान में भाय।९२०।

कि डर से स्वाँसा लिहेव चढ़ाय।। कहैं मसला सब जग में भाय।।
जौन गरजे सो बरसि न पाय। लड़ै को ऋक्ष गणन ते भाय।।
तुम्हारी सेना देखि पराय। अकेले जाम्वन्त संग भाय।।
नहीं कोइ सन्मुख में ठहराय। बालि सुत अंगद जब चलि आय।।
देखिहौ वा के बल को भाय। पूछिये मेघनाद ते भाय।९३०।

कीन्ह अति युद्ध मेरे संग आय। नहीं कोइ चोट मेरे तन आय।।
चोट उनके तन शालै भाय। बुलाय के देंह छुऔ तो भाय।।
छुअत ही मूँह पीला पड़ि जाय। शरम के मारे कहत न भाय।।
झूठ ही इन्द्र जीत कहवाय। जीति जो इन्द्रिन लेवै भाय।।
उसै को जग में सकै हराय। भजन में युद्ध में बल अधिकाय।९४०।

होय तेहि अंग बज्र सम भाय। इन्द्र अपसरन में परि के भाय।।
दीन सब तन मन अपन गंवाय। सिपाही बिषय भोग के भाय।।

कहावैं इन्द्र औ जल बरसाय। पड़ै कोइ उनपर आफ़त आय।।
जाय हरि के ढिग रोवैं जाय। दया आवै बिष्णु के भाय।।
काम उनका तब सब बनि जाय। शम्भु के सेवक तुम कहवाय।९५०।

इसी से बिष्णु न बोलैं भाय। एकता बिष्णु व शम्भु की भाय।।
जानते हम कछु हैं सुखदाय। लै आय मेघनाद जो भाय।।
शेष की सुलोचना कन्याय। नाग थे लड़े कौन शस्त्राय ।।
बताओ हमको तुम समुझाय। परयौ संग्राम नहीं कहुँ भाय।।
रह्यौ गल मुंदरी खूब बजाय। अरे मति मन्द अभागे राय।९६०।

रहै नहि धन बल यह तन जाय। देर मोहिं जाने की है राय।।
कहत ही प्रभु चढ़ि आवैं धाय। किहेव तुम समर लखब हम भाय।।
काल के काल श्री रघुराय। मरैं पर हो जब चींटी भाय।।
देंय हरि वाके पंख जमाय। खता कछु तुमरी है नहिं भाय।।
समय जैसा बुद्धी वैसाय। दशानन दसौं दिसन ते आय।९७०।

तुम्हैं अब लीन अँधेरिया छाय। परत है यासे नहीं देखाय।।
नैन धोखे के बने हैं भाय। जानकी जगत मातु को लाय।।
जान की कुशल चहत हौ भाय। न बचिहौ कहूँ पै जाइ के भाय।।
कहौं मैं सत्य तुम्हैं समुझाय। सुनै यह बैन दशानन राय।।
क्रोध में देही सब कपि जाय। कहै रावण तब अति रिसिआय।९८०।

इसै अब जान से मारो भाय। बाँटि के रत्ती रत्ती भाय।।
धरौ मुख में जहँ तक अटि जाय। रहै हड्डी तक एक न पाय।।
पीसि दशन ते लीलेउ भाय। चिन्ह कहुँ तनिक रहै जो भाय।।
बधब हम तुम सबको रिसिआय। सभासद बहुत रहैं तहँ भाय।।
कहैं रावण से बैन सुनाय। दूत कहुँ मारा जाय न भाय।९९०।

बात यह युगुन युगुन चलि आय। दण्ड कछु दै दीजै मन भाय।।
कहै नहिं कहूँ भागि बनि जाय। सुनत रावण अति हिय हर्षाय।।
ठीक सब कह्यौ बात सुखदाय। बिचारौ सब मिलि जौन उपाय।।
वही होवै क्यों देर लगाय। बिभीषण कहैं सुनो बड़भाय।।
बात एक हमरे उर में आय। पूँछ में जीण बसन बँधवाय।१०००।

तेल में तर दीजै करवाय। फेरि दीजे अग्नी लगवाय।।
जाय जरि पूँछ चिन्ह हो भाय। न जावै फिर रघुबर ढिग भाय।।
जाय जंगल में रहै लुकाय। शरम के मारे बदन छिपाय।।
निशा में निकसै दिवस न भाय। कहै रावण तुम ठीक बताय।।
हमारे भाई अति सुखदाय। कहै लै आओ वीरौं जाय।१०१०।

धाम मेरे से बसन उठाय। तेल चाँदी पात्रन में भाय ।।
लै आओ देर न कीजै धाय। लगावो लूम में अग्नी भाय।।
तमाशा देखौ सब हर्षाय। सुनत ही दौड़े निश्चर भाय।।
लै आवैं बसन व तेल उठाय। पूँछ में बसन लपेटैं आय।।
बढ़ै वह धीरे धीरे भाय। बसन जीरन रावन गृह भाय।१०२०।

रहै नहिं नये लेय मँगवाय। चुकैं जब नये कहै रिसिआय।।
जाओ गृह गृह से लाओ जाय। सबन को थोड़ी देर बिताय।।
देहों चौगुन बसन मँगवाय। लै आवैं गृह गृह ते सब धाय।।
रहैं नहिं नये पुरानौ भाय। पूँछ में जाँय सबै खपि भाय।।
ज्ञान पर सब के परदा आय। रहैं नहिं बसन लंक में भाय।१०३०।

जौन जो पहिरे वही देखाय। कहैं रावन ते सबै सुनाय।।
वस्त्र चुकि गये कहाँ ते लाय। कहै रावन सुनिये सब भाय।।
तेल अब डारौ पूँछ पै जाय। तेल जब परै पूँछ पै भाय।।
पता नहि लगै कहाँ को जाय। मँगावै तेल बहुत फिरि भाय।।
न होवै तर तब अति रिसिआय। लै आओ घृत हण्डा बहु भाय।१०४०।

सोबरन के सुन्दर सुखदाय। भिजावो पूँछ को खूब अघाय।।
चुवै जब धरती तर ह्वै जाय। लै आवैं घी सब बीर उठाय।।
न भीजै राम दूत लूमाय। कहै रावन तब बचन सुनाय।।
पुरी भर से लै आओ जाय। सबन से कहि दीजै समुझाय।।
उन्हें हम दस गुन देव मंगाय। चलैं लै लै आवैं सब भाय।१०५०।

तेल घृत नगर रहन नहि पाय। पूँछ पर छोड़त जितनै भाय।।
नाम परताप खपत सब जाय। चुकै जब रहै न पुर में भाय।।
कहै तब रावन अति रिसिआय। पूँछ में आगी देहु लगाय।।

चलै अब और न कोइ उपाय। आय तहँ शारद माता जाँय।।
न जानै निश्चर रावन राय। करैं परनाम पवन पूताय।१०६०।

देंय आशिष माता हर्षाय। बिजै होवै तुम्हरी पुत्राय।।
देर अब नहीं समय गो आय। छोरि कै ब्रह्म फाँस को भाय।।
जाँय बिधि के कर देंय गहाय। मनै मन पवन तनय हर्षाय।।
कहैं अम्ब शारद भईं सहाय। धूप की लकड़ी जलदी भाय।।
लै आवै मेघनाद हर्षाय। शोच तन अक्षय कुमार को छाय।१०७०।

क्रोध करि पूँछ में देय लगाय। उठैं हनुमान हृदय हर्षाय।।
सुमिरि कै राम नाम सुखदाय। चहुँ दिशि घूमैं उछरैं भाय।।
हँसै रावण समाज सुख पाय। धरैं फिर बिकट रूप दुख दाय।।
काल को काल देखि डरि जाय। करैं तहँ शब्द ज़ोर से भाय।।
निशाचर सुनि कै सब थर्राय। चढ़ैं फिर कूदि लंक शिखराय।१०८०।

घुमावैं लूम को खूब बढ़ाय। पुरी के चारों तरफ़ से भाय।।
अगिनि की ज्वाल बढ़ै दुखदाय। भगैं सब हाय हाय चिल्लाय।।
न सूझे अपन परावो भाय। जान अपनी अपनी लै भाय।।
भगैं औ गिरैं उठैं घबराय। कहैं यह दूत नहीं है भाय।।
काल सब का पहुँचा है आय। हंसी रावन ने कीन्हीं भाय।१०९०।

उसी का फल सब को मिलि जाय। बड़ा पण्डित रावण कहलाय।।
गई सब विद्या कहाँ हेराय। बचन यह रावण सुनि लेय भाय।।
कहै मेघन से देव बुझाय। क्रोध करि मेघ जुटैं तब आय।।
होय नहिं शान्त और अधिकाय। चलै बस नहीं किसी का भाय।।
देव सब अपने मनहिं मनाय। दिवस दुइ घण्टा का तब भाय।११००।

लंक पर खेल कीन कपि धाय। प्रेरणा हरि की तेजो भाय।।
लीन बजरंग को मन में ध्याय। वही उबरे जानो सब भाय।।
और तो जरि स्वाहा ह्वै जाय। निकसि वै गये उदधि तट भाय।
रहे हनुमानै हिय सब ध्याय। दौरि रावण घननाद गे आय।।
सोय रहे कुम्भकर्ण जहँ भाय। पकरि कर एक एक दोउ भाय।१११०।

घसीटि कै बाहेर लै गये धाय। बिभीषण को गृह जरयौ न भाय।।
अनल हरि की भक्तौं हरिकाय। लाल सब भवन ऐस ह्वै जाँय।।

देखतै बनै कहै को भाय। मणी चिटकैं बहु शब्द सुनाय।।
दगै गोला जस खुशी में भाय। पिघिल सोना चाँदी बहि जाय।।
पुरी के डगर डगर में भाय। एक गज़ ऊँचा भरा है भाय।११२०।

निरखि कै नैन नहीं ठहराय। घरी ढाई में पुरी को भाय।।
जरायो घूमि घूमि गोहराय। आय कोइ पुरी को लेय बचाय।।
होय योधा तेहि कहौं सुनाय। पुरी लंका कर जोरि के आय।।
कहै अब कृपा करो मुददाय। आप सम कौन दास जग भाय।।
राम में रमें शम्भु रूपाय। आँच हम से अब सही न जाय।११३०।

शरनि हौं बार बार शिर नाय। सुनैं यह बैन लंक के भाय।।
दया उर में अति जावै आय। उदधि तट कूदि के पहुँचैं जाय।।
बुझावा चाहैं पूँछ को भाय। करै बिन्ती समुद्र शिर नाय।।
हाथ जोरै सुनिये सुखदाय। जाय जल खौलि सबै दुख पाय।।
जीव सब मरैं जलहु गन्धाय। कृपा करि रहौ किनारे भाय।११४०।

बुझावैं हम लहरिन हर्षाय। बहुत जलदी हम देंय बुझाय।।
आप की कृपा से मानो भाय। खड़े हों दक्षिण मुख सुखदाय।।
पूँछ उत्तर मुख रही सुहाय। उदधि सुमिरै अँजनि सुत भाय।।
लूम पर लहरैं दे सुखदाय। मिनट पन्द्रह में देय बुझाय।।
भक्त का बल समुद्र उर आय। दीनता से समुद्र फिर आय।११५०।

परै चरनन में तन पुलकाय। उठाय के कपि उर लेंय लगाय।।
कहैं सब आगे कि बात सुनाय। आइहैं कटक संग रघुराय।।
परै डेरा तुम तट पर भाय। करौ नित दर्शन प्रेम लगाय।।
और क्या चाहत हौ तुम भाय। बांधिहैं सतु पार तक भाय।।
तुम्हारे ऊपर नल नीलाय। श्राप मुनि की उनको है भाय।११६०।

छुवो जो पत्थर जल उतिराय। जाव हम तुम से कहेन सुनाय।।
हमारे ठाकुर खेलि बहाय। रोज़ तुम जल में देत डुबाय।।
देर पूजन में होवै भाय। भोग में बारह तक बज जाय।।
उपदरव हमका यह न सुहाय। श्राप वह यहाँ पर होय सहाय।।
देखिहौ आपौ हिय हर्षाय। सन्त होवैं नाखुश जो भाय।११७०।
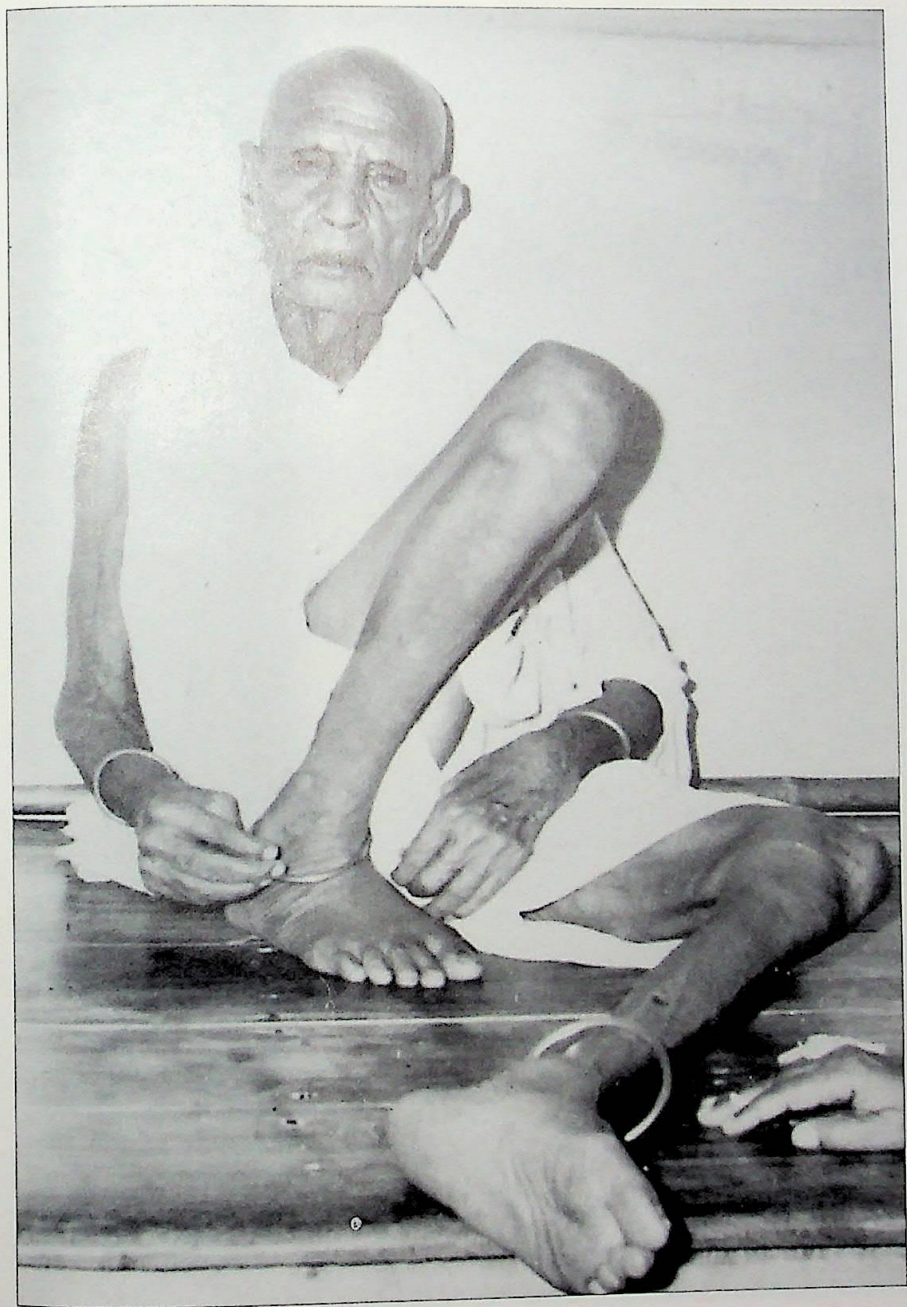
परमपूज्य श्री परमहंस राम मंगल दास जी
गोकुल भवन आश्रम में तखत पर।

श्री गुरुदेव आश्रम में।

श्री परमहंस राम मंगल दास जी
प्रसन्न मुद्रा में।

श्री गुरुदेव बैठे हुये।

तहूँ कछु देते हैं गुन भाय। मारि रावण परिवार को भाय।।
बिभीषण अभय करैं हरि आय। बिभीषण करैं राज लंकाय।।
प्रजा को होवै सुख अति भाय। छुटैं बन्धन उनके अब भाय।।
जिन्हें है रावन रहा सताय। सुनै यह बैन उदधि सुखदाय।।
हर्ष हिरदय में नहीं समाय। करै परनाम फेरि बहु भाय।११८०।

भेंट बहु रतनन की लै भाय। दूत तुम जिनके अति बल भाय।।
भला स्वामी की को कहि पाय। कृपा करि भेंट लीजिये भाय।।
भक्त भगवंत न अन्तर आय। कहैं हनुमान सुनो मम भाय।।
हमारा धर्म नहीं यह आय। भाव स्वामी औ सेवक भाय।।
निबाहै जब तक जगत रहाय। नहीं तो धब्बा तन लगि जाय।११९०।

मुक्ति औ भक्ति मिलै नहि भाय। काम यह स्वामी का है भाय।।
आइहैं तब दीजै हर्षाय। देंय समुझाय पवन सुत भाय।।
उदधि तब जल के भीतर जाय। चलैं हनुमान मातु ढिग जाँय।।
परैं चरनन में अति हर्षाय। मातु सिर पर कर देंय फिराय।।
कहैं तुम अजर अमर सुखदाय। कहैं फिर पवन तनय हुलसाय।१२००।

देहु कछु चीन्ह मोहिं अब माय। जाय कर प्रभुहि दिखावैं माय।।
देखि कर धीरज हरि को आय। देंय शिर से चूड़ामणि माय।।
बनी झाँकी शिव उमा कि भाय। लेंय तेहि पवन तनय हर्षाय।।
जाय कर प्रभु को देंय गहाय। निरखि कै हरि उर लेंय लगाय।।
कहैं तब चूड़ामणि हँसि भाय। चलौ जलदी हरि देर न लाय।१२१०।

मातु का बदन सूखिगा भाय। राति औ दिवस रहै चिन्ताय।।
आपु के बिना उन्हैं दुख भाय। खान औ पान न बचन सोहाय।।
गईं जब से हरि तब से भाय। नहीं भोजन जल तन नहवाय।।
दन्त धावन तक कीन न भाय। आपु पर रहीं अपन चित लाय।।
कान्ति दिन पर दिन बढ़तै जाय। आप का नाम बड़ा सुखदाय।१२२०।

गये अंजनि सुत तहाँ पै धाय । बैठि अशोक बृक्ष चुपकाय।।
देखि कै माता का दुख भाय। नैन से नीर रहे झरि लाय।।
घड़ी दुइ बाद होश कछु आय। दीन मुंदरी तँह पर ढनगाय।।

गई आगे मुंदरी सुखदाय। निरखि कै माता लीन उठाय।।
मनै मन कहैं जानकी माय। मुद्रीका प्राण पती की आय।१२३०।

रची माया से ऐसि न जाय। दिब्य मुंदरी यह है सुखदाय।।
कहैं मुदरी से सिया सुनाय। कहौ तुम को यहँ पर को लाय।।
कहैं मुंदरी तब बैन सुनाय। होय परतीति मगन हों माय।।
जाँय तब उतरि पवन सुत धाय। परैं चरनन में उठा न जाय।।
परे कछु देर रहैं सुख पाय। मातु के चरनन नैन लगाय।१२४०।

उठैं कर जोरि के बैठैं भाय। कहैं सब हाल आपका गाय।।
होय औरौ धीरज मन आय। कि जैसे रंक को धन मिलि जाय।।
मनै मन फूलो नहीं समाय। कह्यो माता हम से मुद दाय।।
सुनो चूड़ामणि तुम हर्षाय। कह्यो कछु हाल हमारो जाय।।
बिना पूँछे प्रभु के हर्षाय। कहेसि मुंदरी जब कहेन सुनाय।१२५०।

संदेसिया कच्चा ऐस कहाय। कहै तुरतै जस पहुँचै जाय।।
काम दूसर कोइ और न भाय। संदेसिया पक्का तौन कहाय।।
बिना पूँछे सब देय बताय। बचन चूड़ामणि के सुनि भाय।।
हँसे श्री राम लखन मरुताय। कहैं फिरि पवन तनय सब गाय।।
लंक जेहि बिधि जारयौ फल खाय। खुशी ह्वै राम लखन सुखदाय।१२६०।

लेंय मारुत सुत को उर लाय। कहैं लछिमन सुनिये मम भाय।।
कार्य्य तुम किहेव बड़ा सुखदाय। उऋण हम तुमसे हैं नहिं भाय।।
और क्या कहैं सुनो चितलाय। लै आये माता की सुधि धाय।।
बली तुम सम जग को है भाय। प्रभु चूड़ामणि को हर्षाय।।
धरयौ फेंटा में सुख से भाय। कहैं रघुनाथ भक्त सुखदाय।१२७०।

सुनो लछिमन भाई हर्षाय। बचन कपि ऋक्षन देव सुनाय।।
तयारी करैं लंक पर भाय। कहैं लछिमन सुनिये सब भाय।।
चलौ रावनपुर जीतन धाय। सुनत ही निर्भय कपि ऋक्षाय।।
खड़ें हों आकर कहा न जाय। एक ते एक बीर हैं भाय।।
नाम परताप बड़ा सुखदाय। कूदते ऊपर को सब भाय।१२८०।

उस समय की लीला को गाय। करैं गर्जना मेघ सम भाय।।
मार ही मार क शब्द सुनाय। आवते नीचे को जब भाय।।

धरनि पग एक हाथ धंसि जाय। आय कर पृथ्वी जी मुददाय।।
कहैं श्री राम से बचन सुनाय। कृपानिधि इनहिं देउ समुझाय।।
सहायक मेरे सब घबड़ाँय। लगत सब के तन धक्का जाय।१२९०।

काँपि जाते तन मन घबराय। हमारे तन सब बोझा आय।।
आप की किरपा ते थमि जाय। नहीं तो हमैं न ताकति भाय।।
कहौं कर जोरि के सत्य सुनाय। जगत हित लीला श्री रघुराय।।
करत हो कौन कभी कहि पाय। बनाये आपै के सब भाय।।
समाये हो सब में सुखदाय। जानकी जगत की मातु कहाय।१३००।

पिता प्रभु आप सबै गुन गाय। अगोचर गोचर हौ सुखदाय।।
भक्त हित नाना रूप बनाय। आप की दया से सुर मुनि भाय।
मान पायो जग में यश छाय। मातु प्रगटीं मिथिला पुर आय।।
सिंहासन मेरे शिर सुखदाय। पूर बारह महिना रघुराय।।
कीन सेवकाई जो बनि आय। मुनिन के रुधिर से घट भरवाय।१३१०।

दीन रावन तहँ पर गड़वाय। आप के नाम की महिमा जाय।
मातु के देखि के दुख उर आय। भईं परवेश उसी में माय।
बनीं सरगुन मूरति सुखदाय। चलायो रानी राजा आय।।
हलै परजा के कारन धाय। पूर्व से पश्चिम मुख हल आय।।
लग्यौ हल का घट लोहा भाय। फूटि घट प्रगटीं ताते माय।१३२०।

रूप की शोभा को कहि पाय। सामने नजर नहीं ठहराय।।
खड़े कर जोरे रानी राय। देव तहँ पहुँचै तुरतै धाय।।
आरती करैं पुष्प बरषाय। करैं अस्तुति तन मन हर्षाय।।
तेज तब खींचि लेंय उर माय। होय तब दरशन अति सुखदाय।।
करैं दंडवत सबै गुन गाय। कहैं धन्य जनक सुनयना भाय।१३३०।

कीन तप ताको फल यह आय। जगत हित मातु लीन प्रगटाय।।
बड़े परतापी दोउ सुखदाय। बिष्णु तब लियो सिंहासन धाय।।
मेरे शिर पर था रहा सोहाय। चले लै जनक भवन समुदाय।।
देव सब संग चलै हर्षाय। सुनयना जनक मनै मन भाय।।
खुशी अति मुख से बोलि न जाय। भई अति भीड़ जनक गृह आय।१३४०।

नगर में हाल गयो यह छाय। कह्यौ बिधि हरि हर मन हर्षाय।।
जानकी नाम मातु को भाय। खड़े तहँ सुरपति मन हर्षाय।।
चंवर औ छत्र लिये पंखाय। मातु सब सुरन से कह्यौ सुनाय।।
जाव गृह गृह अब तुम सब धाय। प्रगट श्री अवध में भे मुददाय।।
एक महीना बीते पर हम आय। काम तुम सब का हो मन भाय।१३५०।

रहौ निर्भय प्रभु को गुन गाय। सुनैं यह बैन मातु के भाय।।
सुरन के हर्ष न हृदय समाय। चले तन मन से शीश नवाय।।
जोरि कर सूरति हिय पधराय। कियो माता तब रोदन भाय।।
भुलायो माया करि पितु माय। खेलावैं चुपकावैं पितु माय।।
घरी भर रोवैं नहीं चुपाय। आप ही आप शाँत हों माय।१३६०।

नगर नर नारी गृह गृह जाँय। नार को प्रगट्यौ जानकी माय।।
जगत मर्य्यादा के हित भाय। अयोध्या देवी पहुँची जाय।।
रूप धनुकुनि का लीन बनाय। छीनि कै नार को गईं हर्षाय।।
जनक दियो मणि पट भूषण लाय। जाय दै दीन जनक पुर भाय।।
रहै जो धनुकुनि जनक प्रजाय। कहै धनुकुनि माता सुखदाय।१३७०।

कहाँ ते आईं तुम बतलाय। न कोई चीन्ह न परिचय माय।।
आप पट मणि भूषण दियो आय। कहैं श्री अवध पुरी सुखदाय।।
जनक गृह प्रगटीं जगत की माय। नार हम छीनेन उनको आय।।
रूप हम तुमरो लीन बनाय। न जान्यो वहँ पर रानी राय।।
मिला जो नेग दीन सब आय। जन्म भर सब जन मंगल गाय।१३८०।

खाव पहिनौ खरचौ हर्षाय। न होवै घटती बढ़तै जाय।।
मानिये धनुकुनि मम बचनाय। तेल उबटन हम नित प्रति आय।।
लगाउब तीनि बर्ष हर्षाय। रूप तुमरो हम धरि कै आय।।
जाय के करब मातु सेवकाय। निछावर मिली हमैं जो आय।।
देब सब तुम को मन हर्षाय। बर्ष जब चौथी लागी आय।१३९०।

जानिहैं तब बिदेह सुखदाय। परैं चरनन में तब लपटाय।।
कहैं तब हम सुन लीजै राय। कुँवर भे दशरथ के गृह आय।।
राम शत्रुहन भरथ लखनाय। नार हम उनका छीनेन राय।।

जानकी जगत मातु सुखदाय। दिब्य संग दिब्य की शोभा आय।।
सुनो राजा तन मन हर्षाय। भई बाणी मोहिं नभ ते राय।१४००।

कौन तैसै हम मन चितलाय। कुँवारी कन्याँ सँग बहु भाय।।
खेलिहैं तब देख्यो सुख पाय। देखि धनुकुनि तब हिय हर्षाय।।
नैन फल पैहो पाप नशाय। मास बैसाख शुक्ल पक्षाय।।
रहा दिन गुरुवार सुखदाय। समय दोपहर जगत की माय।।
भई परगट नौमी तिथि आय। सुने यह बचन मही के भाय।१४१०।

कहैं रघुबर भक्तन सुखदाय। सुनो कपि ऋक्ष गणन सब भाय।।
शान्त ह्वै जाव सुनो चितलाय। आवरण पर जिनके सुख पाय।।
रहें हम तुम सब ही हर्षाय। सहायक इनके गे घबराय।।
इन्हैं भी दुख व्याप्यौ कछु जाय। कूदना ऊपर का यह भाय।।
न होवै चलो लंक पर धाय। बन्द उछरव तब होवै भाय।१४२०।

जाँय पृथ्वी आवरण समाय। चलैं लै सैना दोनो भाय।।
हाथ धनुबाण लिये हर्षाय। उड़ै तहँ धूरि पगन की भाय।।
अंधेरिया ह्वै गई नहीं देखाय। नाम की सिद्धि रूप बनाय।।
चलै संग मार्ग न भूलै भाय। गर्द गुब्बार कहा नहि जाय।।
सूर्य्य के तेज क पता न भाय। पहुँचि सब उदधि के तट पर जाँय।१४३०।

पवन से कहैं राम सुखदाय। बेग तुम आपन खींचो भाय।।
करै स्नान मेरा कटकाय। खींचि लें पवन बेग हर्षाय।।
करैं अस्नान ऋक्ष कपि धाय। लगावैं डुब्बी पैरैं धाय।।
उदधि लहरी नहि लेवै भाय। डफैया खेलैं कपि ऋक्षाय।।
जीव हों दुखी बारि के भाय। लगै नख जिनके तन पर भाय।१४४०।

मनहुँ बरछी कोइ दीन चलाय। उदधि तब आवै प्रभु ढिग धाय।।
रूप ब्राह्मण का बृद्ध बनाय। परै चरनन में कहै सुनाय।।
प्राण के प्राण आपु सुखदाय। जीव बहु व्याकुल हैं दुख पाय।।
फटकते इधर उधर मूँह बाय। कृपा करि लीजै सबै बोलाय।।
प्राण उन सबके तो बचि जाँय। रोज़ हम लहरिन दें नहवाय।१४५०।

न पेलैं भीतर हे सुखदाय। तरंगैं बन्द किहेन रघुराय।।
रहै सो कारन देंय बताय। बिचारेन कटक थका है भाय।।

शान्ति से लेहैं सबै नहाय। सुनैं यह बचन उदधि के भाय।।
कहैं लछिमन ते श्री सुखदाय। कहौ सब से तुम हाँक सुनाय।।
निकसि आवैं जलदी सब भाय। सुनत ही निकसि के आवैं धाय।१४६०।

बैठि जाँय सब तन मन हर्षाय। करैं हरि सुमिरन चित्त लगाय।।
खेल देखैं नाना बिधि भाय। जाँय अस्नान करन दोउ भाय।।
चलैं संग उदधि रूप बृद्धाय। चरन परसैं जस जल रघुराय।।
सबै जीवन के दुख हरि जाँय। घाव कोइ तन में नहिं रहि जाय।।
बढ़े बल दूना हरि किरपाय। करैं अस्नान दीन सुखदाय।१४७०।

लखन तब मलैं अंग हर्षाय। नहाय के निकसैं दोनो भाय।।
खड़े होवैं तन मन हर्षाय। वस्त्र बदलैं तब श्री रघुराय।।
लखन बदलैं अपनौ तब भाय। राम के बसन धोय लें धाय।।
फेरि अपनौ धोवैं तब जाय। दिब्य वै बलकल बसन सोहाय।।
दीन नन्दन बन अति सुखदाय। फटैं नहि मैल होंय चमकाय।१४८०।

जलौ नहि बेधै है वैसाय। जक्त की मर्य्यादा हित आय।।
धोवते बिधि निषेद को भाय। चलैं श्री राम लखन तब भाय।।
आय सेना में पहुँचैं आय। उदधि तब पीछे फिरि चलि जाय।।
थार में रतन भरे हर्षाय। दोऊ कर साधे खड़ा है भाय।।
दहिन पग ऊपर लेय उठाय। कहै हरि से सुनिये सुखदाय।१४९०।

भेंट यह लीजै दीन की भाय सुफ़ल मम तन मन नैन हैं भाय।।
पवन सुत कह्यौ रहै गुनगाय। सुनैं यह बैन जगत सुखदाय।।
दया के सागर हैं रघुराय। कहैं लछिमन से सुनिये भाय।।
लेहु लै भेंट दीन दुख जाय। लेंय लै लखन कहैं समुझाय।।
सुनो तुम उदधि बचन चित लाय। ज़ोर से शब्द न होवै भाय।१५००।

रहै जब तक यहँ पर कटकाय। भजन में बिघन कपिन ऋक्षाय।।
होय तो हम से सहा न जाय। एक ही बाण ते देंव सुखाय।।
न मानौं बचन फेरि मैं भाय। कहै तब उदधि दीन बचनाय।।
दिह्यौ अज्ञा सो करब उपाय। शीश धरि लीन बचन हर्षाय।।
आप के हम अधीन हैं भाय। जिआओ मारो तुम सुखदाय।१५१०।

देंह औ प्राण तुम्हारो आय। लखन यह बैन सुनैं हर्षाय।।
उदधि को उर में लेंय लगाय। कहैं तुम जाव आवरण भाय।।
करैं हम सुमिरन हरि उर लाय। होय निश्चिन्त कटक दोउ भाय।।
आय तब चण्डी देवी जाँय। मिठाई भाँति भाँति सुखदाय।।
कन्द फल मूल व मेवा लाय। संग में बीर योगिनी भाय।१५२०।

धरे सब शिरन पै मन हर्षाय। खड़े होवैं दोनों सुखदाय।।
करैं परनाम चरन शिर नाय। देंय आशीर्वाद तब माय।।
विजय होवै तुम्हरी रघुराय। थार सब प्रभु ढिग धरि दें आय।।
कहैं दोउ भाई मन हर्षाय। मातु बड़ि किरपा कीन्हेउ आय।।
बिना माता के कौन सहाय। करैं घर बन बिदेश में आय।१५३०।

नहीं निशि वासर भूलैं माय। कहैं चण्डी तन मन हर्षाय।।
रोज़ सब वस्तु देव पठवाय। लड़ाई जब तक हो रघुराय।।
हमारे तरफ़ से भोजन आय। चलत में छाती लेंय लगाय।।
राम औ लखन को चण्डी माय। देंय सब कटक को आशिषाय।।
जीतिहौ सब रावण दुखदाय। प्रेम से पावैं सब हर्षाय।१५४०।

स्वाद अति ही बिचित्र सुखदाय। आय सामुद्र कहैं रघुराय।।
संदेशा सुनिये चित्त लगाय। कह्यौ है राघव मच्छ सुनाय।।
सुनाओ मेरी बिन्ती जाय। राति औ दिवस रहौं गुन गाय।।
दर्श के खातिर मन ललचाय। ध्यान में दर्शन होत हैं भाय।।
आप अब साक्षात गये आय। कृपा करि हुकुम देंय सुखदाय।१५५०।

आप जल ऊपर दर्शन पाय। होय तब मन नेत्रन सुफ़लाय।।
निरखि छबि श्याम सुहावन भाय। सेतु मेरे तन का ह्वै जाय।।
उतरि जाँय कटक सहित सुखदाय। कृपा निधि के परताप से भाय।।
परा मैं रहौं जलै पर आय। नहीं ताकत है मेरी भाय।।
नाम प्रभुहीं के बल कछु भाय। प्राण तन मन सब हरि का आय।१५६०।

और दूसर को है सुखदाय। सुनै प्रभु बचन मच्छ के भाय।।
कहैं धनि धन्य भक्त मच्छाय। दर्श हम उनको देवैं जाय।।
करैं इच्छा पूरी हर्षाय। आइहैं इसी देह से भाय।।

कह्यौ जब अर्द्ध रात्रि ह्वै जाय। अगर जो वै ऊपर चलि आय।।
सबै जीवन को दुःख हो भाय। रास्ता सब जीवन रुकि जाय।१५७०।

इधर ते उधर जाँय किमि भाय। जाय के उदधि देंय समुझाय।।
सुखी तन मन से हो दुख जाय। कहैं लछिमन सुनिये सुखदाय।।
सेतु एक या में देव बंधवाय। बड़ा परतापी रावण भाय।।
न बांध्यौ सेतु कौन कठिनाय। कहैं प्रभु सुनिये लछिमन भाय।।
बिधाता की इच्छा नहि आय। समय पर काम होय सब आय।१५८०।

ठीक संघटन सबै भिड़ि जाय। जानते हौ सब लछिमन भाय।।
बात लरिकन कस करत बनाय। कहै लछिमन सुनिये सुखदाय।।
आप की माया देत भुलाय। लोक बिधि के हर के शेषाय।।
इन्द्रपुर चारौं बैकुण्ठाय। रही सब जग में धूम मचाय।।
नहीं पहुँचै साकेत को भाय। करै अभिमान नेक जो भाय।१५९०।

गिराय के छाती बैठे धाय। आपके चरणन चित्त लगि जाय।।
बचै सोई प्राणी सुखदाय। न ज्ञानी ध्यानी कोई भाय।।
आप चाहैं तस देंय बनाय। कहैं रघुनाथ सुनो मम भाय।।
प्रेम की बात तुम्हैं समुझाय। प्रेम जा के तन मन ह्वै जाय।।
निरखि कै लीला कहि नहि पाय। हमारा रूप प्रेम है भाय।१६००।

रहै सब जगह सुनो चित लाय। जगत के कार्य्य में प्रेम लगाय।।
न पावै हम को कोई भाय। प्रेम यह दुनियावी है भाय।।
फंसावै अधिक अधिक अरुझाय। प्रेम सांचा जो करत है भाय।।
उसी को हर दम हम दर्शायँ। प्रेम से ठौरे हम प्रगटाँय।।
प्रेम में प्रेम मिलै जब भाय। अखण्डित धुनी नाम मम पाय।१६१०।

जाय वह अमर पुरी हर्षाय। गुरु के बचन हृदय में लाय।।
करै कामना न कोई भाय। उसी के संग खेलैं हम जाय।।
खाँय जल पीवैं तन लपटाय। लेव तुम नल नीलै बोलवाय।।
जानते हैं वे सेतु उपाय। कार्य्य यह कौन कठिन है भाय।।
बड़ी आसानी से बंधि जाय। बुलावैं लछिमन दोनो भाय।१६२०।

आय के चरन परैं हर्षाय। उठैं औ कहैं सुनो सुखदाय।।
हमै क्या आज्ञा कहौ सुनाय। करैं हम दोउ तन मन हर्षाय।।

न लावैं देर नेकहू भाय। कहैं लछिमन सुनिये दोनों भायं।।
सेतु तुम उदधि में देहु बनाय। पार सब चलौ कटक सुखदाय।।
जगत में कीरति तुमरी छाय। कहैं दोउ भाई शीश नवाय।१६३०।

आप की किरपा सब बनि जाय। कहौ सब कपि ऋक्षन से भाय।।
गिरिन को लावैं झट पट धाय। बाँधने में नहि देरी भाय।।
देखिहो स्वामी मन हर्षाय। श्राप की आशिष ह्वै गई आय।।
कृपा निधि की इच्छा यह भाय। कहैं तब लछिमन कटक ते भाय।।
लै आओ पर्वत जहँ तहँ धाय। बांधिहैं सेतु को नल नीलाय।१६४०।

उतरि सब चल्यौ पार सुख पाय। सुनत ही धावैं कपि ऋक्षाय।।
छुवैं पर्वत को हरि कहि भाय। उठावैं जस पर्वत को धाय।।
उठै वह रूस फूल सम भाय। लै आवैं गहैं नील नल भाय।।
धरैं जल पर धरतै उतराँय। इधर औ उधर हठै कछु भाय।।
शान्त हो उदधि ठीक ह्वै जाय। बध्यौ पुल सवा पहर में भाय।१६५०।

नाम परताप कहा नहिं जाय। आँय तँह शम्भु संग गिरिजाय।।
परैं प्रभु लखन चरन पर धाय। कटक सब बार बार शिर नाय।।
परै चरनन में तन उमगाय। शम्भु गिरिजा दें आशिष भाय।।
कार्य सब सिद्ध होय रघुराय। कहैं प्रभु सुनिये जग पितु माय।।
लालसा एक मेरे उर आय। आप की मूर्ति यहाँ पधराय।१६६०।

नाम रामेश्वर धरिहैं भाय। नाम हमार तो राम कहाय।।
हमारे ईश्वर तुम सुखदाय। इसी से रामेश्वर मैं भाय।।
धरौं यह नाम बड़ा मुददाय। हमारे पूर्वज भयो जो भाय।।
पूजते थे तुम को हर्षाय। आप तो भोलानाथ कहाय।।
दया के सागर हौ सुखदाय। नहीं तनकौ परदा है भाय।१६७०।

बसे हौ मम हिरदय सुखदाय। कहैं शिव बार बार हर्षाय।।
किह्यौ तुमरे मन में जो आय। करत हौ भूतल पर लीलाय।।
कहैं कछु ताते हमहूँ भाय। नहीं तो कौन तुम्हैं लखि पाय।।
देव मुनि ध्यान समाधि लगाय। धरत हौ भक्तन हित तन आय।।
निरखि कै शोभा हृदय समाय। आपके सबै अंश कहवाय।१६८०।

बड़ाई आपै देत हौ भाय। राव को रंक करौ छिन भाय।।
रंक को राव न देर लगाय। नाम परताप तुम्हारो भाय।।
रहे सुर मुनि तन मन हर्षाय। बड़ेन का काम यही है भाय।।
आप छोटे बने और बड़ाय। लिह्यौ हरि रावन को बुलवाय।।
और सीता माता सुखदाय। बड़ा मम भक्त है रावन राय।१६९०।

करावै स्थापन सुखदाय। वेद की कृत्य जौन कछु आय।।
जानता सब रावण ह भाय। आइहै खुशी से रावण धाय।।
प्रेम उर में अति नहीं समाय। आइहैं संग जानकी माय।।
प्रतिष्ठा बाद फेरि फिरि जाँय। बिजय करि चलो अवध हर्षाय।।
संग लै चलो जानकी माय। बात इतनी कहि हर गिरजाय।१७००।

होंय अन्तर वँह ते तब भाय। कहैं प्रभु सुनिये लछिमन भाय।।
लै आओ रावण संग सीताय। बुलाये और किसी के भाय।।
न आवै मानो मन हर्षाय। भक्त शिव गिरिजा का है भाय।।
फेरि ब्राह्मण शरीर को पाय। दीन बनिकै तुम जाओ भाय।।
किहेव परनाम दोऊ कर लाय। धनुष औ बान को काम न भाय।१७१०।

खालि ही हाथ जाओ तुम धाय। सुनैं यह बचन लखन हर्षाय।।
चलैं शिर चरनन धरि सुख पाय। पवन सुत लक्षिमन के ढिग जाय।।
कहैं तन मन ते अति हर्षाय। प्रथम मिलि लिहेव बिभीषण जाय।।
संग में जावैंगे वे भाय। भक्त हैं शान्त शील सुखदाय।।
प्रभू का भजन करैं चितलाय। शुकुल स्फ़टिक क गृह हैं भाय।१७२०।

देखिकै नैन जाँय चौंधाय। खुदे अक्षर रंग भरा है भाय।।
कीन यह लीला विश्वकर्माय। राम के नाम में चहुँ दिश भाय।।
भरा है लाल रंग सुखदाय। वहाँ बहु तुलसी के बृक्षाय।।
मनोहर हरे हरे सुखदाय। मुहारा तीनि बने हैं भाय।।
पूर्व पश्चिम उत्तर सुखदाय। वही गृह उनका जान्यौ भाय।१७३०।

और गृह रंग रंग परैं दिखाय। पुरी ढिग लछिमन पहुँचैं जाँय।।
लिखा तँह नाके नाके भाय। जहाँ जो जाना चाहै भाय।।
वहाँ को चला जाय पढ़ि पाय। गई रावण गृह सन्तर भाय।।

मध्य लंका में भवन सोहाय। गड़ा ऊपर झण्डा फहराय।।
लाल रंग रेशम शोभा छाय। कसीदा सोने तार क भाय।१७४०।

बना सुन्दर ता में चमकाय। लिखा दिग्बिजयी रावण भाय।।
नागपुर सुर पुर नर पुर जाय। भवन के दक्षिण दिशि पर भाय।।
बिभीषण का गृह परत दिखाय। पढ़ैं औ चलैं लखन सुखदाय।।
बिभीषण के गृह पहूचैं जांय। बिभीषण बैठ तख्त पर भाय।।
रहे मन राम नाम को ध्याय। देखि लछिमन को हिय हर्षाय।१७५०।

मिलैं चट उर में उर को लाय। कहैं सब हाल लखन समुझाय।।
बिभीषण सुनैं ध्यान दे भाय। बिभीषण कहैं सुनो सुखदाय।।
कार्य प्रभु किरपा सब बनि जाय। करो जल पान कृपा करि भाय।।
दूध फल मेवा लीजै पाय। वस्तु सब आपकी कृपा भराय।।
नहीं कछु कमती सुनिये भाय। कहैं लछिमन कछु भूख न भाय।१७६०।

न मानै लै धरि देवै आय। अगर कछु भेद मानिहौ भाय।।
न पैहैं हम दुख तन अधिकाय। बैन लछिमन सुनि प्रेम के भाय।।
लेंय कछु फल मेवा को पाय। आरती करैं कपूर को लाय।।
बिभीषण तन मन ते हर्षाय। छटा गइ हिरदय माहिं समाय।।
भक्त दोनों प्रभु के सुखदाय। चलैं रावण के गृह को भाय।१७७०।

बिभीषण लखन मनै हर्षाय। कहैं लछिमन तब बचन सुनाय।।
बिभीषण सुनो बताओ भाय। फूँकिगे लंका हनुमत आय।।
कहूँ कछु चिन्ह न परत दिखाय। बिभीषण कहैं सुनो सुखदाय।।
दीन विशकर्मा फेरि बनाय। पहुँचिगे रावण भवन में जाय।।
लिखा तँह शिव शिव भवन सुहाय। हरे स्फ़टिक के भवन पै भाय।१७८०।

सोवरन पत्र जड़े सुखदाय। रुपहरे अक्षर क्या बनवाय।।
भजन हित रावण कीन उपाय। बैठ तहँ भजन में रावण राय।।
दैखतै ठाढ़ भयो हर्षाय। दोऊ कर जोरि के लछिमन भाय।।
कीन परनाम शीश निहुराय। दशानन आशिष दीन्हों भाय।।
कामना सब पूरन ह्वै जाय। फेरि उर में उर लीन लगाय।१७९०।

नये सिंहासन पर बैठाय। बिभीषण करि प्रणाम को भायं।।
बैठिगे लखन निकट हर्षाय। कहै रावण सुनिये सुखदाय।।

दर्श भे बहुत दिनन पर आय। जनकपुर धनुष यज्ञ में जाय।।
कीन दर्शन हम दोनों भाय। आज कँह कृपा करी मुददाय।।
राम जी कुशल से हैं सुखदाय। लखन सब हाल कहैं हर्षाय।१८००।

प्रतिष्ठा हेतु बुलावन आय। शम्भु गिरिजा कहिगे हर्षाय।।
काम यह रावण दे करवाय। जानकी मातु को लै कर भाय।।
संग चलिये मेरे हर्षाय। होय गठि बन्धन संग रघुराय।।
नहीं तो कार्य्य सरै नहिं भाय। फेरि संग में लै आओ भाय।।
युद्ध करि जीति कै प्रभु लै जाँय। सुनै ये बैन दशानन राय।१८१०।

हर्ष हिरदय में नहीं समाय। कहै कछु पावो लछिमन भाय।।
चलैं अबही नहिं देर लगाय। कहैं लछिमन हम आये पाय।।
बिभीषण से तुम पूछो भाय। न मानै फल औ मेवा लाय।।
देय शिव मूर्ति को भोग लगाय। प्रगट शिव गिरिजा होवैं आय।।
कहै को शोभा भवन कि भाय। शम्भु कर थार को लेंय उठाय।१८२०।

करैं अर्पन श्री राम को भाय। आय प्रगटैं सुन्दर सुखदाय।।
जानकी संग में रहीं सोहाय। पाय प्रभु लेवैं प्रेम से भाय।।
फेरि सीता माता हर्षाय। शम्भु तब सब को दें हर्षाय।
आपु गिरिजा पावैं हर्षाय। देखि यह चरित दशानन भाय।।
कहैं धनि धनि लछिमन सुखदाय। आपकी किरपा से मोहिं भाय।१८३०।

आज यह प्राप्त भयो सुख आय। कहैं लछिमन सुनिये चित लाय।।
शम्भु की दाया है यह भाय। बिना शिव की सेवा कोइ भाय।।
प्रभु को नहीं सकै अपनाय। आप की सच्ची भक्ती आय।।
दरस करवायो हम को भाय। भाव तुम्हरा जस शिव में भाय।।
वैस जग में को करिये आय। चढ़ायो कोटि दफ़े शिर भाय।१८४०।

आपकी सरबरि को करि पाय। शम्भु औ प्रभु की लीला भाय।।
तौन जानै जेहिं देंय जनाय। नहीं तो अति दुस्तर है भाय।।
जीव छिन ही में जाय भुलाय। दशानन चरन परै हर्षाय।।
राम सीता शिव उमा के भाय। देंय आशिष चारों सुखदाय।।
जौन इच्छा सोई फल पाय। बिभीषण लखन दोऊ हर्षाय।१८५०।

परैं चारों देवन पग धाय। मिलै आशिष तन मन हर्षाय।।
होंय अन्तर चारों सुखदाय। लखन के पगन को रावण राय।।
छुवन चाह्यौ पर छुवन न पाय। कहैं लछिमन सुनिये मम भाय।।
आप ब्राह्मण हम ठाकुर आँय। जगत की मर्य्यादा यह आय।।
मेटि हम नहीं सकत हैं भाय। राम शिव सीता गिरिजा भाय।१८६०।

पूज्य सब जग के हैं सुखदाय। हमारा दास भाव है भाय।।
हमैं यह अनुचित परत दिखाय। टहलुआ स्वामी बनै जो भाय।।
नरकहू गये ठौर नहिं पाय। आप तो वेद शास्त्र को भाय।।
पढ़े हौ तुमको को समुझाय। तयारी करो चलन की भाय।।
प्रतिष्ठा होवै शिव पधराय। सुनै रावण तन मन हर्षाय।१८७०।

प्रतिष्ठा की ले वस्तु मंगाय। चलै रथ को लै लखन बिठाय।।
बिभीषण जाँय भवन हर्षाय। बाटिका अशोक रथ ठहराय।।
उतरि कै लखन संग हर्षाय। चलै आगे रावण तब भाय।।
लखन पीछे पीछे सुखदाय। मातु के ढिग जब पहुँचैं जाय।।
परैं दोऊ जन चरनन धाय। देंय आशिष कहैं सिय सुनाय।१८८०।

कहाँ आये रावण लखनाय। देंय लछिमन सब हाल बताय।।
हर्ष से चलैं जानकी माय। बैठ जाँय रथ में सीता आय।।
गोद में लछिमन रहे सुहाय। उड़ावै रथ रावण हर्षाय।।
जाय के प्रभु ढिग पहुँचैं जाय। कूदि के रथ पर ते तब भाय।।
चरन में परै हिया हर्षाय। उठाय के प्रभु उर लेंय लगाय।१८९०।

फेरि कर शिर पर पास बिठाय। लखन औ माता उतरिं के आय।।
चरन पर परैं बोलि नहिं जाय। उठैं औ बैठैं मन हर्षाय।।
कहैं तब राम लखन ते भाय। बहुत जलदी आयो सुखदाय।।
कौन बिधि गयो देव बतलाय। देर कछु नहीं लगी सुखदाय।।
कहैं लछिमन आपै किरपाय। देव मोहिं पवन लै गयो धाय। १९००।

न मान्यौ पीठि पै लीन चढ़ाय। उतारयौ लंक निकट पै जाय।।
वहाँ की शोभा कही न जाय। वहाँ पर लिखा देखि हम भाय।।
बिभीषण के गृह पहुँचेन जाय। बिभीषण देखि हिया हर्षाय।।

प्रेम से मिलै नैन झरि लाय। कीन जलपान वहाँ सुखदाय।।
चले संग रावण के गृह भाय। गयन जब रावण भवन को भाय।१९१०।

वहाँ की शोभा अति सुखदाय। सोबरन पत्र जड़े सुखदाय।।
हरे स्फ़टिक के भवन पै भाय। लिखा चाँदी के सम शुकुलाय।।
शम्भु का नाम बिचित्र सुहाय। भीतरौ बाहर छत में भाय।।
देखतै बनै कहन नहिं आय। गयन याही बिधि ते हम भाय।।
दीन साँची प्रभु सब बतलाय। कहैं श्री राम सिया सुखदाय।१९२०।

करौ अस्नान उदधि हर्षाय। चलैं सीता लछिमनहिं लिवाय।।
संग हनुमानहुँ चलि दें भाय। करैं अस्नान मातु सुख पाय।।
फेरि लछिमन हनुमान नहाँय। आय के उदधि चरण परि जाय।।
भेष ब्राह्मण ग्यारह बर्षाय। एक जोड़ी कंगन सुखदाय।।
सोबरण के मणि जड़ित सोहाय। चमक तिनमें ऐसी है भाय।१९३०।

नयन देखत जावैं चौंध्याय। दोऊ चरनन पर धरि के भाय।।
खड़ा कर जोरे शीश नवाय। कहैं माता जग की सुखदाय।।
दीन की भेंट लेहु यह माय। आज धन्य भाग्य हमारो आय।।
चरण परसैं हमहूँ सुख पाय। आवरण के सब जीवन माय।।
भयो अति सुक्ख कहा नहिं जाय। किलोलैं सब मिलि रंहे मचाय।१९४०।

एक ते एक लिपटि हर्षाय। सुनैं यह बैन जानकी माय।।
कहैं लछिमन ते लेहु उठाय। उठावैं लखन दोऊ कँगनाय।।
देंय हनुमान को फेरि गहाय। उदधि ते कहैं मातु सुखदाय।।
करौ आवरण में आनन्द जाय। घटै नहिं बढ़ै आवरण भाय।।
सदा अनइच्छित तुम सुख पाय। कहैं समुद्र सुनो मम माय।१९५०।

बचन एक और मेरे मन आय। बंधायो सेतु श्री सुखदाय।।
चरण परिगे हैं प्रभु के आय। युद्ध तक रहै सेतु यह भाय।।
फेरि या को दीजै तुड़वाय। नहीं तो दुष्ट लोग यहँ आय।।
धरैंगे चरण सहा नहिं जाय। टूटि जाई तो हम हर्षाय।।
करब नित पूजन प्रेम से माय। कहैं माता तब बचन सुनाय।१९६०।

तुम्हारी इच्छा दें पुरवाय। चलैं जब जीति अवध सुखदाय।।
पवन सुत तोड़ि दें यहि आय। पवन सुत सुनैं कहैं हर्षाय।।

कौन यह कार्य्य बड़ा है माय। एक ही पग दाहिन धरि माय।।
तूरि हम बीच में देंय गिराय। रहै तब ही तक पुल सुखदाय।।
फेरि रहि सकै नहीं यह जाय। लड़ाई हो समाप्त जहँ माय।१९७०।

श्राप का योग निकल तहँ जाय। फेरि नल नील की नहीं उपाय।।
धरैं पाथर जो जल उतिराय। प्रभू सब हमैं दीन बतलाय।।
दास से स्वामी कहूँ छिपाय। होय सच्चा सेवक सुखदाय।।
भीतरौ बाहेर सब लखि पाय। नहीं कोइ अन्तर हमसे माय।।
लोक मर्य्यादा हित प्रभु आय। जौन कछु मन में प्रभु के आय।१९८०।

एकता आतम की ह्वै जाय। तार एक तार होय सुखदाय।।
कहैं पीछे से बचन सुनाय। आप माता औ पितु रघुराय।।
आप ते सब कोइ उपज्यौ माय। आपका नाम मकार कहाय।।
रकार के संग में शोभा छाय। राम अस नाम बन्यौ सुखदाय।।
जपैं जाको हरि शिव शेषाय। रकार के अन्तरगत भी माय।१९९०।

मकार के अन्तरगत रा आय। एकता छूटि सकै नहि माय।।
रकार मकार नहीं बिलगाय। मंत्र का नाम पुरुष है माय।।
मंत्र की शक्ती मातु कहाय। रकार को बीज कह्यौ शिव गाय।।
बृक्ष अन्तरगत वा के माय। राम अस नाम बृक्ष भा माय।।
बीज ता में फिर प्रगटे आय। रकार के अन्तरगत तुम माय।२०००।

जपै मुक्ती भक्ती सो पाय। जपै जो दुइ अक्षर चित लाय।।
रहै जग में दर्शन हों माय। नाम निर्गुण एक अक्षर आय।।
नाम सर्गुण दुइ अक्षर माय। जपैं जोगी जन रा को माय।।
और सब जपैं मकार मिलाय। एक ते सत्य लोक देव माय।।
औ दुइते बैकुण्ठै तक जाय। अकथ यह लीला को कहि पाय।२०१०।

जहाँ तक बतलायो सो गाय। सुनै यह बचन उदधि सुखदाय।।
हर्ष करि चरण परै फिर धाय। बिहंसि कर माता उर में लाय।।
दीन कर शिर पर दहिन फिराय। चह्यो लछिमन हनुमान के धाय।।
छुवैं हम चरन छुवन नहिं पाय। लखन ने रोक दीन समुझाय।।
बड़ा अनुचित होई यह भाय। समुझि कै हाथ जोड़ शिर नाय।२०२०।

गयो आवरण में तुरत समाय। चलैं सीता माता सुखदाय।।
लखन पीछे हनुमान सोहाँय। आयकै कटक मध्य हर्षाय।।
बैठि जाँय शान्ति रूप सुखदाय। जाय रावण स्नान को भाय।।
लौटि आवे बैठे हर्षाय। लखन ते कहैं राम सुखदाय।।
मंगावो कन्द मूल फल भाय। मिठाई मेवा बहु बिधि आय।२०३०।

रोज चण्डी माता पठवाय। चुकै नहिं कटक के पाये भाय।
शाम को दें समुद्र ढिलवाय। खाँय जल जीव खुशी से भाय।।
रहे हैं जल में अति सुख पाय। धरी सुग्रीव के पास में भाय।।
बाँटते अंगद हैं हर्षाय। हुकुम दें जाम्वन्त सुखदाय।।
पवन सुत देवैं हाँक सुनाय। आय सब कटक लेय हर्षाय।२०४०।

पाय के पूरण हों सब भाय। देव सीता रावण को भाय।।
आपु पावो तन मन हर्षाय। लेंय दुइ लछिमन थार मंगाय।।
लै आवैं अंगद तहँ हर्षाय। एक में कन्द मूल फल भाय।।
एक में मेवा और मिठाय। कहैं श्री राम भक्त सुखदाय।।
पाइये रावन मन हर्षाय। कहै रावन वैसे नहि पाय।२०५०।

आपु पहिले कछु लीजै पाय। फेरि सीता माता लें पाय।।
मिलै परसादी तब सुखदाय। लखन की किरपा ते रघुराय।।
मिला आनन्द कहा नहिं जाय। राम फल कन्द मूल कछु पाय।।
मिठाई मेवा कर परसाय। सिया तब कन्द मूल फल पाँय।।
छुवैं मिष्ठान्न व मेवा भाय। लखन को देंय मातु हर्षाय।२०६०।

पवन सुत को दें जगत की माय। कटक में बंटै सबै हर्षाय।।
करैं सब जय जय कपि ऋक्षाय। राम सीता का नाम सुनाय।।
रहा सब लोकन शब्द सुनाय। हर्ष रावन के तन मन आय।।
प्रेम से पावै खूब अघाय। शाम को सन्ध्या बन्दन भाय।।
करैं सब कटक सहित रघुराय। बजैं जब ग्यारह श्री रघुराय।२०७०।

कहैं हनुमान से बचन सुनाय। कटक में दीजै हाँक सुनाय।।
करैं सब शयन ऋक्ष कपि भाय। देंय हनुमान हाँक तहँ भाय।।
शयन कीजे सब जन सुखदाय। राम सीता को मन में ध्याय।।

शान्ति से सोय जाँय सुख पाय। पवन सुत पास में बैठें जाय।।
राम के चरण पकरि हर्षाय। चापते लछिमन हैं सुखदाय।२०८०।

लगे बजरंग चापने भाय। कहैं हनुमान ते लछिमन भाय।।
दहिन सब अंग हमारो आय। कहैं हनुमान लखन सुखदाय।।
बाम यह अंग बड़ा वीराय। दहिन तो अंग बड़ा कहवाय।।
सिर्फ भोजन जल आदर भाय। युद्ध में बाम अंग सुखदाय।।
रहै आगे पीछे नहिं जाय। कहैं प्रभु मन्द मन्द मुसुकाय।२०९०।

दोऊ जन समता के हौ भाय। सुनै रावण औ बैठे आय।।
चरण प्रभु के पकड़ै हर्षाय। कहैं हनुमान लखन सुखदाय।।
आप तो रोज़ करत सेवकाय। प्रार्थना हमरी मानौ भाय।।
जाँय हमहूँ कछु तन फल पाय। सुनैं हनुमान लखन सुखदाय।।
दीन अति बचन दशानन राय। दोऊ जन प्रभु चरनन परि भाय।२१००।

हर्ष करि उठैं प्रेम उर छाय। लखन तो पास में पौढ़े भाय़।।
ध्यान में निद्रा जाय हेराय। पवन सुत राम नाम सुखदाय।।
सुमिरि के बैठैं लूम बढ़ाय। किनारै कटक के मानो भाय।।
किहे मुख लंका की तरफ़ाय। कोट अस बनै लूम को भाय।।
न कोई भीतर बाहेर जाय। ध्यान में मस्त रहैं सुखपाय।२११०।

रहैं सन्मुख प्रभु सीता माय। चरण दावै रावण हर्षाय।।
कहै प्रभु काहे देर लगाय। दिवस एक कल्प समान बिताय।।
नहीं कछु हमको यहाँ सोहाय। कृपा करि पठवो श्री सुखदाय।।
विनय यह मानो मन हर्षाय। कहैं प्रभु सुनो बचन चित लाय।।
समय पर सबै काम हो आय। समय के बिना करैं जो भाय।२१२०।

तुम्हारी कीरति को जग गाय। धरौ धीरज मन में हर्षाय।।
देर अब कछू नहीं है भाय। सुनै रावन प्रभु बचन को भाय।।
होय अति सुखी बोलि नहिं पाय। कहैं प्रभु करौ शयन अब जाय।।
बजे बारह मानो बचनाय। बजैं जहँ दुइ सब कटक नहाय।।
इष्ट अपने को सुमिरै आय। सुनै यह बचन राम के भाय।२१३०।

करै तब शयन दशानन जाय। बजैं जँह दुइ तहँ शब्द सुनाय।।
हाँक हनुमान कि जानौ भाय। उठैं सब शौच क्रिया को जाँय।।

फेरि सामुद्र के तट पर आय। हाथ पग धोवैं मिट्टी लाय।।
करैं परभाती कुल्ला भाय। फेरि अस्नान करैं हर्षाय।।
जाँय सब निज निज आसन धाय। उठैं तब राम लखन सीताय।२१४०।

संग रावण हनुमान सोहाँय। करैं नित की किरिया जो आंय।।
फेरि अस्नान मनै हर्षाय। आय के बैठैं आसन भाय।।
इष्ट अपने में सब चित लाय। प्रगट शिव गिरिजा होवैं जाय।।
राम ही लखैं और नहिं भाय। करैं परनाम श्री रघुराय।।
कहाँ किरपा कीन्हीं सुखदाय। कहैं हर सुनिये सब के राय।२१५०।

मूर्ति मैदान में मम पधराय। प्रगट हों लव कुश तब पुत्राय।।
बनावैं मन्दिर मन हर्षाय। श्याम रंग लव तुम सम सुखदाय।।
मातु के रंग के कुश हो भाय। होंय अति शूर बीर दोउ भाय।।
सकै को जीति जगत यश छाय। कहैं शिव उमा बचन हर्षाय।।
होंय अन्तर कैलाश को जाँय। होय जब प्रातकाल सुखदाय।२१६०।

करैं अस्नान सबै हर्षाय। दशानन कहै सुनो रघुराय।।
प्रतिष्ठा होय न देर लगाय। जौन वस्तू लागत जँह भाय।।
तौन हम लाये हैं सुखदाय। आप गठि बन्धन करि हर्षाय।।
मातु संग बैठो मन चित लाय। सुनैं यह बचन जगत सुखदाय।।
कहैं रावन से बचन सुनाय। करो गठि बन्धन तुम हर्षाय।।२१७०।

कृत्य तुम सम को जानत राय। जाँय जब अवध पुरी हम भाय।।
केश सरयू तट उतरैं जाय। तपस्वी भेष में नाऊ आय।।
हमैं गठि बन्धन नहीं कराय। आप सब जानत हौ बिधि भाय।।
तुम्हैं फिर कौन सकै समुझाय। बचन सुनि रावन शीश नवाय।।
करै गठि बन्धन मन हर्षाय। बैठि जाँय पूरब मुख रघुराय।२१८०।

दहिनि दिशि सीता रहीं सोहाय। दशानन पश्चिम मुख करि भाय।।
बैठि जाय तन मन प्रेम लगाय। रेणुका गंगा जी का भाय।।
दूध गोघृत काले तिल लाय। मिलाय के एक में मूर्ति बनाय।।
सहित अर्घा सुन्दर सुखदाय। वस्त्र एक शुकुल ओढ़ाय के भाय।।
पढ़ै फिरि वेद मंत्र हर्षाय। देय गंगा जल छींटा लाय।२१९०।

कहै प्रभु खोलौ मन हर्षाय। देंय प्रभु खोलि प्रेम से भाय।।
सहित अर्घा शिव मूर्ति सोहाय। श्याम रंग चमकीली सुखदाय।।
सहित अर्घा पत्थर ह्वै जाय। मूर्ति यकइस अंगुल सुखदाय।।
नाम रामेश्वर राम सुनाय। करावै बिधिवत कृत्य को भाय।।
तीन दिन में धुनि वेद सुनाय। धूम तहँ जय जय कार कि भाय।२२००।

फूल तहँ बरसैं सुर हर्षाय। करैं पैकरमा श्री रघुराय।।
सहित सीता के मन हर्षाय। फेरि दंडवत करैं शिरनाय।।
बैठि जाँय कर जोरे सुखदाय। लखन रावन सब कटकहु भाय।।
करै पैकरमा मन हर्षाय। दंडवत करि सब बैठें भाय।।
प्रेम से तन मन अति पुलकाय। कहैं श्री राम दशानन राय।२२१०।

आप पण्डित पूरन सुखदाय। जौन माँगौ सो देवैं भाय।।
हमारे ईश को तुम पधराय। कहै रावन सुनिये सुखदाय।।
आपु की किरपा रहै सदाय। पुत्र धन ग्रह परिवार रजाय।।
सबै मिथ्या प्रभु तुम बिन आय। जाल यह महा कठिन रघुराय।।
आप जेहि चाहैं सो बचि जाय। यही दीजै माँगे सुखदाय।२२२०।

मेरा परिवार तरै हर्षाय। मेरा परिवार तरै हर्षाय।।
मरै जो समर भूमि में आय। जाँय बैकुण्ठ मनै हर्षाय।।
हमैं औ कुम्भकर्ण को भाय। कृपा निधि सुधि न दियो बिसराय।।
याद द्वापर की राख्यौ भाय। जन्मिहैं हम दोनों तहँ आय।।
रहस लीला में परिकै भाय। बिसरि न जायो श्री सुखदाय।२२३०।

सुनैं यह बैन राम रघुराय। प्रेम के भरे हृदय हर्षाय।।
कहैं तब एवमस्तु रघुराय। दीन तुम को माँग्यौ राय।।
बंटै परसाद तहाँ फिर भाय। कौन कहि सकै खात बनि आय।।
पाय सब जल पीवैं हर्षाय। शान्त चित्त सबै कटक सुखपाय।।
कहै रावन तब बचन सुनाय। जाँय प्रभु गृह को अब हम भाय।२२४०।

काम अब रह्यौ नहीं कोइ भाय। शम्भु प्रतिमा पधरी सुखदाय।।
कहैं प्रभु महिमा हर की गाय। करै तन मन से जो सेवकाय।।
दरश पावै शिव उमा के भाय। शम्भु फिर मम ढिग देंय पठाय।।
चढ़ावै गंगोत्री जल लाय। मुक्ति भक्ती ता को मिलि जाय।।
प्रेम निश्चय जा को ह्वै जाय। उसी का काम सरै सब भाय।२२५०।

द्रोह जो शिव से करिहै भाय। नर्क वह एक कल्प भुगताय।।
शम्भु में हम में भेद न भाय। आत्मा एक देह दुई आय।।
भेद करने से नर्क को जाय। अभेद को मुक्ति भक्ति हो भाय।।
सुनै रावन तन मन हर्षाय। चरण पर परै नैन जल छाय।।
उठावैं प्रभु उर लेवैं लाय। बरनि को सकै शेष नहिं गाय।२२६०।

कहैं प्रभु सुनो दशानन राय। गाँठि अब छोरौ हर्ष से आय।
जौन माँगेव सो पायो राय। देर अब काहे रहेव लगाय।।
सुनैं यह बैन दशानन राय। छोरि गठि बन्धन दे हर्षाय।।
कहैं प्रभु सुनिये लछिमन भाय। जाव रावण संग सिय लै भाय।।
देर अब नहीं करो सुखदाय। पठय कर लौटो मन हर्षाय।२२७०।

जानकी प्रभु चरनन परि जाँय। चलैं लछिमन संग मन हर्षाय।।
बैठि जावैं रथ पर तब भाय। परै रावन प्रभु चरनन धाय।।
उठै औ रथ पर बैठे जाय। उड़ावै रथ को फिरि हर्षाय।।
पहुँचि अशोक बाटिका आय। उतरि माता बैठैं सुखदाय।।
उतरि लछिमनहुँ परैं हर्षाय। बैठि जाँय माता ढिग सुखपाय।२२८०।

दशानन सिया चरन शिर नाय। लखन को उर में लेंय लगाय।
चलैं लंका में पहुँचैं जाय। युगुल छबि नैनन गई समाय।।
लखन माता से कहैं सुनाय। जाव हम प्रभु ढिग सुनिये माय।।
परैं चरनन में मन हर्षाय। मातु लें लखन को उर में लाय।।
चलैं जस सौ पग लछिमन भाय। देव तहँ पवन पहुँचि जाँय आय।२२९०।

चढ़ावैं काँधे पर हर्षाय। उतारैं उदधि निकट में आय।।
करैं अस्नान लखन हर्षाय। फेरि प्रभु के ढिग पहुँचैं आय।।
चरन परि बैठैं मन हर्षाय। राम के बांये दिशि सुख पाय।।
देंय प्रभु कन्द मूल फल भाय। पाय लेवैं अति प्रेम लगाय।।
कटक से पूछि सलाह को भाय। कहैं प्रभु दूत लंक कोइ जाय।२३००।

कहै वह रावन से समुझाय। नीति की बातें मन चित लाय।।
न मानै तब यह होय उपाय। लड़ाई ठनै युद्ध हो भाय।।
कहैं तब जाम्वन्त हर्षाय। पठै दीजै अंगद वीराय।।

प्रथम हनुमान गये सुखदाय। काम अस कीन्हो कहा न जाय।।
फेरि लछिमन जी गे हर्षाय। लै आये रावन सीता भाय।२३१०।

प्रतिष्ठा शिव की ह्वै गई आय। भयो आनन्द जगत सुखदाय।।
बालि का तनय बड़ा बलदाय। काम करि आवै देर न लाय।।
कहैं अंगद से श्री रघुराय। जाव गढ़ लंक मनै हर्षाय।।
परैं चरनन में अंगद धाय। चलैं मन सुमिरि राम सीताय।।
जाय माता ढिग पहुँचैं जाय। परैं चरनन में तन उमगाय।२३२०।

सिया कर शिर पर देंय फिराय। उठैं तब उर में लेंय लगाय।।
कहैं जेहि हेतु लंक पुर जाँय। सुनैं माता तन मन हर्षाय।।
चलैं शिर नाय लंक में जाय। बिभीषण के गृह पहुँचैं आय।।
मिलैं दोउ प्रेम से अति हर्षाय। कहैं सब हाल उन्हैं समुझाय।।
बिभीषण कहैं सुनो मम भाय। न मानै रावण यह बचनाय।२३३०।

बड़ा अभिमानी रावण राय। दया को लंक से दीन भगाय।।
कहैं अंगद हम जाय के भाय। चूर मद करिहौं प्रभु किरपाय।।
चलैं अंगद रावण गृह धाय। जाय कर पहुँचि जाय हर्षाय।।
बैठि तहँ बड़े बड़े योधाय। देखि के बोलि सकैं नहिं भाय।।
लगा दरबार कसा कस भाय। बीच में अंगद उड़ि के जाय।२३४०।

दशानन के समुहे पर जाय। खड़े भे नैन में नैन मिलाय।।
कहै रावण तुम कहाँ ते आय। बीच दरबार खड़े न डेराय।।
बिना मम हुकुम न कोई आय। बड़े ताजुब की बात है भाय।।
रोकि नहिं सका तुम्हें कोइ भाय। पहरुआ सोय गये का भाय।।
खाल उन सब की लेंव खिंचाय। अग्नि में जियते देंव फुँकाय।२३५०।

कहैं अंगद सुनिये बचनाय। नीति को त्यागि के को फल पाय।।
करै राजा अनीति जब भाय। प्रजा के हवा लगै बौराय।।
जाय आँखिन में माड़ा छाय। प्रजा राजा एकै सम भाय।।
दूत हम रामचन्द्र के भाय। संदेशा कहने के हित आय।।
कहै रावन कहिये का लाय। संदेशा हम से कहौ सुनाय।२३६०।

कहैं अंगद तन मन हर्षाय। नीति की बातैं अति सुखदाय।।
सुनै औ हंसै कहै क्या भाय। जाति बानर की हमैं सिखाय।।

न मानै एकौ बचन को भाय। जाँय अंगद तब अति रिसिआय।।
क्रोध ते बदन में लाली छाय। नेत्र अति अरुण कहा नहिं जाय।।
कहैं रावन ते बचन सुनाय। न मानै काल गयो नियराय।२३७०।

राम से कौन लड़ै रण जाय। नाम परताप देखावैं राय।।
काल के काल अकाल कहाय। सर्व व्यापक सुर मुनि गुन गाय।।
चरण दाहिन मैं रोपौं भाय। हटावै जो कोइ योधा आय।।
राम फिरि जाँय अवध को राय। हारि मैं जाऊँ जानकी माय।।
भिड़ैं तहँ शूर वीर बहु आय। टरै पग नहीं चलैं खिसिआय।२३८०।

चलै तब मेघनाद उठि धाय। उठावै नेक न जुम्मस खाय।।
उठै रावन तब अति रिसिआय। गिरैं सब मुकुट धरनि पर आय।।
उठाय के अंगद देंय चलाय। होत परकाश बाँण सम जाँय।।
देखि कै कटक ऋक्ष कपि भाय। कहैं क्या आवत है यह धाय।।
अग्नि सम बरत बहुत लहराय। बड़ी अद्‌भुत यह लीला भाय।२३९०।

पवन सुत कहैं बचन हर्षाय। दशानन के क्रीटि हैं भाय।।
बालि सुत पग रोप्यौ है भाय। उठाय न सकै कोई योधाय।।
उठा रावन तब क्रोध में भाय। मुकुटि सब गिरे धरनि पर जाय।।
दशौं अंगद ने लीन उठाय। फेंकि दीन्हें कसि ज़ोर से भाय।।
पवन ने हाथ में लीन्हों धाय। पास प्रभु के आवत हैं भाय।२४००।

आय जब पास गये नियराय। पवन सुत दोउ हाथन लियो धाय।।
धरयो श्री राम ब्रह्म ढिग जाय। उजेरिया छाय मणिन की भाय।।
कहैं अंगद रावण से राय। भयो अति अशकुन तुम्हरो आय।।
राज अब गई हाथ से भाय। दशौं शिर सूने ह्वै गये राय।।
भयो यह अनुभव हम को राय। विभीषण राज्य करैं हर्षाय।२४१०।

गहे मम चरण न उबरौ भाय। परौ प्रभु के चरनन तुम आय।
माफ़ सब खता करैं सुखदाय। दीन की सदा सुनत रघुराय।।
बचन अंगद के सुनि कै भाय। बैठि जाय रावण शिर निहुराय।।
उठैं बहु निश्चर रिसि कर भाय। लपटि अंगद के तन में जाँय।।
बदन अंगद का नहीं देखाय। चहुँ दिशि ते बहु लपटैं आय।२४२०।

उड़ैं सब को लै अंगद भाय। जाँय एक योजन ऊपर आय।।
झिटकि दें सब तन कसि के भाय। गिरैं सब फटा फट मरि जाँय।।
उड़ैं अंगद माता ढिग जाँय। परैं चरनन में अति हर्षाय।।
कहैं सब आपन हाल सुनाय। खुशी होवैं सुनि कै सिय माय।।
पिता जा को जैसा बलदाय। वैस ही पुत्र होत है आय।२४३०।

काज तुम्हीं से यह बनि आय। और से नहीं बनत पुत्राय।।
चरन परि अंगद कहैं सुनाय। जाव अब प्रभु ढिग माता धाय।।
चलैं करि जोरि उड़ैं फिरि भाय। पहुँचि जाँय सागर तट हर्षाय।।
करैं अस्नान चलैं सब धाय। जाय के कटक में पहुँचैं आय।।
करैं परनाम धरनि गिरि भाय। राम के चरन कमल पर आय।२४४०।

बैठि फिरि कहैं हाल सब गाय। सुनैं सब कटक बीर रिसिआँय।।
कहैं रघुनाथ लखन सुखदाय। सेन सब सागर उतरै भाय।।
युद्ध की ठना ठनी हो भाय। देरि मत करौ कहौं समुझाय।।
लखन हनुमान से कहैं सुनाय। हाँक एक कटक में देहु लगाय।।
पवन सुत देवैं हाँक सुनाय। चलौ वीरौं उतरौ पुल धाय।२४५०।

होंय तय्यार सबै हर्षाय। राम सीता की जय करि भाय।।
पवन सुत राम लखन को धाय। लेंय दोउ काँधेन पर बैठाय।।
चलैं आगे हनुमत सुखदाय। राम सिय नाम लेत हर्षाय।।
सैन सब पीछे हरि गुन गाय। चलैं आनन्द वरनि नहिं जाय।।
पार में पहुँचि जाँय सब धाय। सवा घंटे में मानो भाय।२४६०।

स्वच्छ मैदान मनोहर भाय। बैठि तहँ जाँय पवन पूताय।।
उतरि काँधेन पर से दोउ भाय। कहैं बैठो सब जन हर्षाय।।
कहैं औ बैठें प्रभु लखनाय। बैठि सब कटक जाय सुख पाय।।
शीत औ उष्ण न परत बुझाय। नाम परताप रह्यौ तहँ छाय।।
दुःख औ सुक्ख की समता आय। एक ही तत्व ऋक्ष कपि भाय।२४७०।

मंदोदरि रावन के ढिग जाय। बैठि शत खण्डा पर शिर नाय।।
दोऊ कर जोरि दीनता लाय। कहैं पिय सुनिये मम बचनाय।।
कहै रावन कहिये सुखदाय। जौन इच्छा होवै हर्षाय।।

वही हम करैं न देर लगाय। शोच काहे को तुम मन लाय।।
राज्य धन पुत्र पौत्र बहु आय। कौन कमती तुम को बतलाय।२४८०।

प्रिया मम प्राणन सम सुखदाय। बताओ देर रहीं क्यो लाय।।
कहै मन्दोदरि मन हर्षाय। प्रभु से बैर न कीजै राय।।
चराचर सब के मालिक आँय। सर्व व्यापक सब को उपजाय।।
बिष्णु शिव ब्रह्मा जिनको ध्याय। रहे हैं सुर मुनि सब गुन गाय।।
कृपा प्रभु की से सब बल पाय। देत हैं श्राप औ आशिष राय।२४९०।

एक हनुमान लंक में आय। नाम परताप को दीन देखाय।।
फूँकि सब लंका दीन्हेव राय। चल्यौ नहिं आप को कोइ उपाय।।
आप औ मेघनाद योधाय। बीरता बेचि लिहेव का राय।।
मनै जो पवन तनय को ध्याय। बचे सो हैं सब जानत राय।।
पुरी लंका जब विनय सुनाय। कूदि तब पवन तनय गे राय।२५००।

मारि आधे निश्चरन को धाय। फूँकि कै खाक कीन कपि आय।।
जरी गर्भिणी बहुत दुख पाय। कहाँ तक कहौं कहा नहिं जाय।।
जियति में आप के यह दुख आय। पुरी में परयौ बिचारौ राय।।
आप तो पण्डित ह्वै सुखदाय। नीति को लंक से दिहेव भगाय।।
एक निशि सब चपरे में राय। पड़े भूखे प्यासे अकुलाय।२५१०।

कीन विश्वकर्मा फिर किरपाय। पुरी सब वैसै दीन बनाय।।
आय फिरि अंगद पाँव अड़ाय। दीन सब वीरन गर्व लचाय।।
उठाय न सक्यौ कोई पग राय। रहे तहँ बैठे बहु योधाय।।
सुनो जिनके अस दूत हैं राय। भला मालिक से को लड़ि पाय।।
बचन मेरे मानो हर्षाय। नहीं अब हीं कछु बिगरयौ राय।२५२०।

सिया को दीजै प्रभुहिं गहाय। परौ चरनन में सब बनि जाय।।
उधारन अधमन के रघुराय। दीन की सदा सुनत सुखदाय।।
चलौ जानकी मातु लै राय। चलैं पीछे हमहूँ हर्षाय।।
दर्श करि मातु पिता के राय। होय तन सुफ़ल कार्य्य बनि जाय।।
विनय हम करिहैं हरि से राय। आप की खता माफ़ ह्वै जाय।२५३०।

आप संग खड़े रहेव शिरनाय। बीसहूँ कर जोरे मम राय।।
चढ़ावो रथ पर सीता माय। चलौ लै देर न कीजै राय।।

रथै सामुद्र के तट ठहराय। चलब फिर पैदर वहँ से राय।।
देखतै कृपा करैं रघुराय। अर्ज यह आप से मेरी राय।।
पकरि कर कहैं पिया सुखदाय। देर अब काहे रहे लगाय।२५४०।

राज धन पुत्र संग नहिं जाय। समै फिर ऐसा मिला न राय।।
सृष्टि का खेल बड़ा दुखदाय। फँसे सो इसी में चक्कर खाय।।
चित्त प्रभु चरनन देय लगाय। उसी का आवागमन नशाय।।
ज़िन्दगी थोड़े दिन की राय। बोय बिष अमृत फल को खाय।।
बचन सुनि मन्दोदरि के राय। क्रोध ऊपर से लीन बनाय।२५५०।

नैन बीसौं की पलक चढ़ाय। झिटिक कर दिहेव डाटि कै राय।।
परी गिरि धरनि डरी अति भाय। भई मुरछा दुइ घरी कि भाय।।
चेति जब भयो बैठि उठि भाय। कह्यो रावन तब बचन सुनाय।।
जाति अबला तू हमैं सिखाय। कहाँ से नीति को पढ़ि कै आय।।
सामने से हटि जा दुखदाय। हमारे समुहे कभी न आय।२५६०।

जैस बतखाव कीन तुइ आय। आज तक हमैं न कोई सिखाय।।
आज तक तू रानी मैं राय। दिखाय मुख नहिं आज से आय।।
पुरुष की नारि होय दुखदाय। त्यागि देवै पर बधै न भाय।।
कहत जो शूर बीर कोइ आय। जीभ मुख ते लेतेंऊ खिचवाय।।
फेरि चौहद्दा पर गड़वाय। निशाना तीरन शिर लगवाय।२५७०।

प्राण यम पुर को फेरि पठाय। देखतेंऊ बैठि हिया हर्षाय।।
बचन रावन के सुनि दुखदाय। मंदोदरि उठि गै शीश नवाय।।
भवन में पहुँचि गई जब जाय। बन्द करि पट भीतर बिलखाय।।
बदन मन व्याकुल रहा न जाय। कण्ठ में खुस्की घेरयौ आय।।
प्रगट भईं सीता माता जाय। शीश पर कर फेरयौ हर्षाय।२५८०।

फेरतै कर दुख गयो हेराय। परी चरनन में तन पुलकाय।
उठाय के माता उर में लाय। दीन सब ठीक भविष्य बताय।।
देव कन्याँ जो पाँच कहाँय। बड़ी सब में तुम ही कहवाय।।
समय अब आय गयो सुखदाय। चलो मम पुर बैठो हर्षाय।।
बड़ा परदा जो यँह पर आय। ठीक हम तुम को दीन बताय।२५९०।

नाम जय विजय पुरातन आय। विष्णु के द्वारपाल दोउ भाय।।
श्राप सनकादिक दीन्हेव आय। पास गे बिष्णु के दोनो भाय।।
बिष्णु ने दीन भविष्य बताय। शम्भु का भजन कीन्ह यहँ आय।।
शम्भु ने परदा दीन हटाय। दशानन सब जानत बचनाय।।
दशानन कुम्भकर्ण दोउ भाय। फेरि प्रगटैं द्वापर में जाय।२६००।

नाम शिशुपाल दन्त बक्राय। होय वँह पर दोउन को जाय।।
लेंय अवतार प्रभू तहँ जाय। नाम श्रीकृष्ण जगत यश छाय।।
मरैंगे हरि हाथन दोउ भाय। जाँय बैकुण्ठ मगन गुन गाय।।
बनावत की रिसि तुम्हें देखाय। सुनो मन्दोदरि दिहेव हटाय।।
संभारो निज स्वरूप हर्षाय। दीनता उर में रहै सदाय।२६१०।

हुवा संसार में जो कोइ आय। लागि कछु जाति जीव अकुलाय।।
फेरि पर वश यह जीव कहाय। गयो घर भूलि कौन बिधि जाय।।
गुरु हरि किरपा जब मिलि जाय। बतावैं भेद हिया हर्षाय।।
रूप हरि का हर दम सुखदाय। रहै सन्मुख देखत बनि आय।।
नाम धुनि रोम रोम खुलि जाय। रहै निर्भय निर्बैर सदाय।२६२०।

तत्व यह ज्ञान यथारथ आय। नाम में सूरति लेव लगाय।।
एक रस रहौ सदा सुख पाय। शोच को लेश न तन में लाय।।
कीन उपदेश मातु हर्षाय। मन्दोदरि गई परम निधि पाय।।
दिब्य अनुपम सीता रघुराय। सामने सुक्ख न हदय समाय।।
रोम प्रति रोम राम धुनि भाय। निकरती ररंकार सुखदाय।२६३०।

मंदोदरि तन मन ते हर्षाय। करै बिन्ती धनि धनि सिय माय।।
आप की लीला अगम है माय। शेष शारद नहिं सकत बताय।।
आप को आप जानतीं माय। करौ क्या लीला यश जग छाय।।
दीन औ अधमन पर सुखदाय। और को किरपा करिहै आय।।
आपको फिकिर बड़ी है माय। जौन जेहि लायक जीव कहाय।२६४०।

देव जल भोजन वैसै माय। कर्म अनुकूल खात सुख पाय।।
करौ पल में परलय को माय। देव पल में सब फेरि बनाय।।
शरनि में अपनी लिहेव लगाय। भई किरतार्थ आज मैं माय।।

फूटिगा भरम का भाँड़ा माय। अखण्डानन्द आप किरपाय।।
प्रेम का सागर उमरयौ आय। मंदोदरि के मुख बोलि न जाय।२६५०।

गिरीं चरनन में मातु के धाय। मातु ने लीन्हेव तुरत उठाय।।
लगायो हिरदय में फिर माय। बैठि गईं माता मन हर्षाय।।
पकरि करि बैठारयौ तब माय। मन्दोदरि खड़ी नैन झरि लाय।।
भईं अन्तर माता सुखदाय। मन्दोदरि चली पिया ढिग धाय।।
नहीं शंका तनकौ तन आय। फ़ौज लै चलै लड़ै जिमि राय।२६६०।

नीति से चरन गह्यौ दोउ जाय। जैन मरजाद सनातन आय।।
खड़ी कर जोरि शीश निहुराय। करै बिनती दीनता सुनाय।।
आप स्वामी मेरे सुखदाय। खता मम माफ़ होय दुख जाय।।
कहेन जो अनुचित हम बचनाय। भयो आवेश हमैं कछु आय।।
तरंग में उसकी आप को राय। कहेन अनुचित सो देव भुलाय।२६७०।

आठ अवगुन अबलन उर लाय। पतिब्रत में पूरन जे राय।।
वेद औ शास्त्र आप कण्ठाय। आप को कौन सकै बतलाय।।
खता जो तीन बार ह्वै जाय। माफ़ सुर मुनि करते हर्षाय।।
आप की चेरी मैं सुखदाय। आप मम प्राण के प्राण हो राय।।
सदा आधीन आप के राय। जौन चाहै सो देव सजाय।२६८०।

सुनै यह बैन दशानन राय। लेय मन्दोदरि को उर लाय।।
करै फिर भोजन रावण राय। पदारथ भाँति भाँति सुखदाय।।
मन्दोदरि धरै सामने लाय। थार सोवरण का अति चमकाय।।
जड़े नग बाहेर शोभा छाय। उठै परकाश नैन चौंधाय।।
पियाला सोने के बहु लाय। थार में चहुँ दिशि दीन लगाय।२६९०।

जड़ी हीरन की कनी देखाय। श्वेत परकाश निकलती भाय।।
धरी झारी दस हेम कि भाय। पियै जल तिनमे रावण राय।।
समीप में रानी बैठी आय। चुकै जो वस्तु देय हर्षाय।।
पाय के कीन आचमनि राय। मन्दोदरि बीड़ा बीस लै आय।।
धरयौ थाली में समुहे आय। दशानन लीन उठाय के पाय।२७००।

कहै रानी सुनिये सुखदाय। बजे ग्यारह निशि के अब आय।।
जाव तुम उतरि भवन हर्षाय। करौ आराम वहीं सुखदाय।।

यहाँ हम रहैं बहुत सुखपाय। अकेले सुनो प्रिया चित लाय।।
युद्ध करि जीतैं हम रघुराय। प्रेम तब तुम से हो हर्षाय।।
कहै औ चलै दशानन राय। शैन के भौन में पहुँचै जाय।२७१०।

करै तँह शैन शान्त चित लाय। राम छबि नैनन गई समाय।।
मन्दोदरि चलै मनै हर्षाय। करै आराम भवन में जाय।।
निरखि छबि रही न निद्रा आय। भयो तब प्रात काल सुखदाय।।
दशानन नित्य क्रिया करि आय। शम्भु पूजन करि प्रेम लगाय।।
भोग मेवा फल दूध लगाय। पाय परसाद चल्यौ हर्षाय।२७२०।

गयो दरबार में बैठ्यौ जाय। बैठ तहँ बहुत बीर हैं आय।।
बीरता पवन तनय की भाय। ख्याल करि मन ही मन अकुलाय।।
उदासी चेहरन ऊपर छाय। श्री हत भई कहौं का भाय।।
कहै रावन बीरौं सुखदाय। शोच तुम्हरे मन में क्या भाय।।
राति भर जागे हो क्या भाय। रुखाई मूँह पर परत देखाय।२७३०।

न बोलैं कोई तहँ कछु भाय। लीन शिर नीचे को लटकाय।।
बिभीषण उसी समय गे आय। जाय के निकट चरण शिर नाय।।
कहै रावन बैठो सुखदाय। बिभीषण बैठ पास में जाय।।
कहै रावन सुनिये मम भाय। आज सब सभा सुस्त देखलाय।।
न बोलैं कोई मम समुहाय। बिभीषण कहैं सुनौ सुखदाय।२७४०।

शंक इन सबके गई समाय। सुनावौं आप को सुनिये भाय।।
फूँकिगे लंका जिन दूताय। लड़ै तिनसे को समुहे भाय।।
चली कछु किसी कि नहीं उपाय। एक यह सोच सबन जिय छाय।।
दूसरे अंगद आये भाय। सभी बिच पग को दीन अड़ाय।।
उठे तब बड़े बड़े बीराय। हट्यौ पग नहीं गये खिसिआय।२७५०।

समायो डर इनके उर भाय। हारि हिम्मत सब गये हैं राय।।
आपके डर के मारे आय। सभा में बैठे हैं चुपकाय।।
आप ते भागि कहाँ ये जाँय। ठौर इनको कहुँ नहीं है भाय।।
अगर कहुँ भागि के जावैं राय। ढुंढ़ाय के जान से देव मराय।।
मनै मन सब दुखिया पछिताँय। समुझिगे काल गयो नियराय।२७६०।

गयो बल तन से आधा भाय। न मानो पूँछि लेव समुझाय।।
दीन हम सत्य सत्य बतलाय। भला अस जग में को है भाय।।
लड़ै जो सन्मुख प्रभु से भाय। लंक में हमैं न कोई देखाय।।
प्रलय पालन उत्पति जो राय। खेल हरि के बाँये कर आय।।
बिष्णु शिव ब्रह्मा औ शेषाय। जपैं निशि बासर हरि को भाय।२७७०।

नाम परताप से प्रभु के राय। आप को दीन शम्भु बर आय।।
लड़ौ जो प्रभु से बनै न भाय। शरनि में चलौ कार्य्य बनि जाय।।
शरनि जो कोई प्रभु कि जाय। न त्यागैं दीन बन्धु रघुराय।।
मातु को रथ पर लेहु चढ़ाय। चलैं हम आप के संग में भाय।।
करैं दर्शन फिर विनय सुनाय। सुनत ही हरि लेवैं अपनाय।२७८०।

राज्य फिर करौ अचल सुख पाय। प्रभु की शरनि क फल मिलि जाय।।
मनै मन गुनि रावन अकुलाय। कहै यह जानत कछु नहिं भाय।।
चरण तब रावन दहिन उठाय। चलायो उर पै धीरे जाय।।
गिरे धक्का लगतै लघु भाय। उतानै परे बोलि नहिं जाय।।
कहै रावन वीरों सुखदाय। चारि जन मिलि यहि लेव उठाय।२७९०।

हाथ पग एक एक गहि भाय। भवन के द्वार पै धरिये भाय।।
होश जब होवै दिहेव सुनाय। जाय लंका से जहँ मन भाय।।
बिभीषण सुनै न बोलैं भाय। बिचारैं केहि बिधि बाहेर जाँय।।
उठैं तो मारै रावन राय। क्रोध वश कौन सकै समुझाय।।
होय हरि की जस इच्छा भाय। वैस ही करैं कौन गुनि पाय।२८००।

बिभीषण मनै रहै समुझाय। आइगे चारि तहाँ योधाय।।
पकरि कै पग फिर लीन उठाय। तुरत लै गे गृह के दर धाय।।
तख्त पर दीन तहाँ पौढ़ाय। पहुँचिगे सभा में सब फिर जाय।।
बजे ग्यारह रावन उठि जाय। गये सब अपने गृह सुभटाय।।
बिभीषण उठि कै गृह में जाय। कहै माता से हाल सुनाय।२८१०।

कहैं माता तुमरो बड़ भाय। पिता के तुल्य शास्त्र बतलाय।।
शोच मत कीजै तन दुख पाय। भजन में मन नहिं लागै आय।।
भक्त हरि के कहवाय के हाय। परिक्षा तनिक में गयो डेराय।।

हमै अब मालुम ह्वै गो आय। भक्त तुम कच्चे मम पुत्राय।।
मान अपमान को डर जहँ आय। ग्रन्थि नहिं सुरझी अरुझत जाय।२८२०।

जाव हरि के ढिग दुःख नशाय। देर काहे तुम रहेव लगाय।।
ध्यान सुर मुनि करते चित लाय। देत हरि दर्शन तब कहुँ जाय।।
आयगे साक्षात सुखदाय। उधारन अधमन को हर्षाय।।
भाग्य हम सब की खुलिगै आय। नैन भरि देखैं सिय रघुराय।।
मातु के बचन सुनैं सुखदाय। बिभीषण चलैं चरण शिर नाय।२८३०।

पहुँचिगे अशोक बाटिका जाय। मातु के चरण परैं शिर नाय।।
कहैं सब आपन चरित सुनाय। दृगन दोउ आँसू टपकत जाँय।।
मातु ने कह्यौ सुनौ भक्ताय। करैं इच्छा पूरन रघुराय।।
राज्य तुमको देहैं सुखदाय। शरनि जहँ गयो तिलक ह्वै जाय।।
बिभीषण चरनन में परि जाँय। चलैं तन मन ते अति हर्षाय।२८४०।

पहुँचि जाँय उदधि पास में आय। करैं अस्नान हर्ष हिय छाय।।
जाँय जब कटक निकट नियराय। लखैं हनुमान निकट चलि जाँय।।
मिलैं दोउ प्रेम प्रीति ते धाय। कहैं हनुमान कहाँ तुम आय।।
कीन किरपा अतिशय सुखदाय। हाल सब आपन देव बताय।।
देंय सब चरित ठीक बतलाय। सुनैं हनुमान शान्त चित लाय।२८५०।

कहैं हनुमान सुनो मम भाय। आप की पुण्य उदय भइ आय।।
लखन ते कहैं पवन सुत जाय। बिभीषण आये प्रभु शरनाय।।
बैठ हैं थोड़ी दूर पै आय। हुकुम होवै तो लावैं जाय।।
सभा के मध्य में रावण राय। लात उर मारयौ गिर गे भाय।।
चारि निश्चरन ते कह्यौ सुनाय। धरौ या को गृह के दर जाय।२८६०।

चेत जब या के तन ह्वै जाय। क़ह्यौ मम पुरी से हट ये जाय।।
सामने कभी ने मेरे आय। नहीं तो जान से देंव मराय।।
सुनैं यह बचन लखन मन लाय। कह्यौ जाय प्रभु से बचनाय।।
सुनत ही हरि नैनन जल आय। कहैं लछिमन ते लाओ जाय।।
चलैं श्री लखन पवन सुत धाय। पहुँचिगे निकट कहौं क़ा भाय।२८७०।

लखन को लपटि बिभीषण धाय। मिले उर में उर प्रेम से लाय।।
लखन हंसि कहैं बिभीषण भाय। बुलायो आपको प्रभु सुखदाय।।

भयो सब सुर मुनि आय सहाय। रहैगी कीरति तब जग छाय।।
बिभीषण चलैं संग हर्षाय। नाम हरि का सुमिरत चित लाय।।
लखन आगे पीछे मरुताय। बिभीषण मध्य में चलते भाय।२८८०।

निकट हरि के जब पहुँचैं जाय। खड़े प्रभु भे नैनन जल छाय।।
बिभीषण साष्टाँग परि जाँय। उठाय के प्रभु उर लेंय लगाय।।
पकरि कर बैठारैं सुखदाय। बिभीषण छबि में जाँय लुभाय।।
पूछते प्रभु सब हैं कुशलाय। प्रेम वश बोलि न पावैं भाय।।
दहिन कर शिर फेरैं सुखदाय। मिटै आवेश होश ह्वै जाय।२८९०।

बिभीषण चरित कहैं सब गाय। जौन कछु कीन्ह्यौ रावण राय।।
कह्यौ हरि निर्भय ह्वै अब भाय। राज्य लंका कि करिहौ जाय।।
रहौ मम संग यहाँ सुख पाय। बधौं सब सेना रावण राय।।
दहिन कर हरि ने दीन उठाय। खड़े हो कहैं सुनो सब आय।।
बिभीषण के शिर तिलक लगाय। बनावैं लंक पुरी को राय।२९००।

लखन ते कहैं राम हर्षाय। मंगावो सब समान सुखदाय।।
पवन सुत जाँय अवध पुर धाय। श्री गुरु वशिष्ठ पास में भाय।।
लखन ने कह्यौ बीर सुखदाय। आप समरथ हरि किरपा भाय।।
जाइहौ आप न देर लगाय। आप की सरबरि को करि पाय।।
लै आवैं सिंहासन छत्राय। सबै सामान तिलक की भाय।२९१०।

परैं हरि के चरनन में धाय। उठैं औ उड़ैं बीर मरुताय।।
पहुँचि जाँय गुरु वशिष्ठ गृह आय। परैं चरनन में हिय हर्षाय।।
हाल सब देंय प्रेम से गाय। मगन मन होंय मुनी सुखदाय।।
ढिंढोरा अवध में देहिं पिटाय। खबरि गृह गृह में पहुँचै जाय।।
जाँय रनिवास में मुनि सुखदाय। संग हनुमान को लै हर्षाय।२९२०।

परीं कौशिल्या चरनन धाय। दीन मुनि आशिष हिय हर्षाय।।
पवन सुत राम भक्त सुखदाय। परैं माता के चरनन आय।।
बैठि गुरु के ढिग शान्ति से जाँय। कहैं मुनि प्रभु के पायक आँय।।
देंय सब चरित मुनीश बताय। जाय अति हर्ष मातु उर छाय।।
खबरि यह सब रानिन मिलि जाय। बढ़ै अति हर्ष न हृदय समाय।२९३०।

सुमित्रा कैकेयी तँह आय। गुरु के चरनन में परि जाँय।।
पाय आशिष बैठैं हर्षाय। पवन सुत चरन छुवैं उठि जाय।।
देंय मुनि सब चरित्र बतलाय। सुमित्रा कैकेयी हर्षाय।।
आय पुर वासी भवन में जाँय। हाल सुनि सब तन मन हर्षाय।।
चलैं मुनि अपने गृह को जाँय। संग में पवन तनय सुखदाय।२९४०।

मिठाई फल औ दूध को लाय। लगावैं भोग ध्यान करि भाय।।
प्रगट हों राम जानकी माय। प्रेम से लेवैं चट कछु पाय।।
जलै पी अन्तर हों सुखदाय। निरखि हनुमान लेंय यह भाय।।
देंय परसाद मुनीश्वर आय। पाय जल पियैं बीर मरुताय।।
देंय मुनि सब समान को लाय। कहैं यह बचन हिये हर्षाय।२९५०।

जाव अब नन्दि ग्राम ह्वै धाय। भरत शत्रुहन जहाँ दोउ भाय।।
भरत प्रभु के रंग रूप सोहाय। शत्रुहन लखन रंग सुखदाय।।
प्रभु की चरण पादुका लाय। भरत तप करते तन मन लाय।।
शत्रुहन करैं भरत सेवकाय। देखतै बनै कहौं का भाय।।
सम्हारैं राज काज सुखदाय। प्रजा कोइ दुःख न तनकौ पाय।२९६०।

चारि भाई संग प्रगटे आय। राम जी सब से बड़े कहाय।।
भरत जी हरि से छोटे आय। लखन से छोटे शत्रुहन भाय।।
देंय या को सब हाल बताय। प्रगट कौशिल्या से रघुराय।।
भरत कैकेयी ते सुखदाय। लखन शत्रुहन सुमित्रा जाय।।
चलैं हनुमान चरन शिर नाय। पहुँचि जाँय नन्दिग्राम में जाय।२९७०।

धरैं सामान हिये हर्षाय। परैं शत्रुहन के चरनन धाय।।
कहैं शत्रुहन कहाँ ते आय। हाल सब देंय तुरत बतलाय।।
लपटि शत्रुहन लेंय उर लाय। दृगन ते नीर चलै सुखदाय।।
शत्रुहन जाँय भरत ढिग धाय। कहैं सब चरित मधुर स्वर गाय।।
सुनत ही भरत उठैं हर्षाय। गुफ़ा के बाहर जावैं आय।२९८०।

निरखि कै पवन तनय सुखदाय। चरन पर परैं उठा नहिं जाय।।
उठाय के भरत लेंय उर लाय। पकरि कर बैठारैं हर्षाय।।
कुशल माता सीता की भाय। कहौ श्री हरि की लखन की गाय।।

कहैं हनुमान सुनैं चित लाय। प्रेम में गद्‌गद बोलि न जाय।।
कहैं हनुमान सुनो सुखदाय। होय हमको अज्ञा चलि जाँय।२९९०।

कहैं श्री भरथ शत्रुहन भाय। भोग कछु दीजै इन्हैं पवाय।।
कहैं हनुमान चरन शिर नाय। श्री गुरु गृह ते आयन पाय।।
हमैं कछु इच्छा नहिं सुखदाय। दरश करि आपु की अति सुख पाय।।
चरन दोउ स्वामिन के परि धाय। लेंय सामान को तुरत उठाय।।
उड़ैं लै कटक में पहुँचैं जाय। धरैं सब वस्तु प्रभु ढिग आय।३०००।

परैं चरनन में तन उमगाय। उठाय के प्रभु उर लेंय लगाय।।
लखन हँसि लपटि मिलैं हर्षाय। कहैं सब हाल अवध का गाय।।
सुनैं सब कटक संग सुखदाय। लखन तन मन ते अति हर्षाय।।
देंय सिंहासन तहँ पधराय। छत्र तेहि ऊपर देंय लगाय।।
जड़े नग सुघर उजेरिया छाय। देंय सामान सबै धरि भाय।३०१०।

देखि कै सब के हिय हर्षाय। बिभिषण ते प्रभु कहैं सुनाय।।
करो अस्नान उदधि में जाय। जाँय अस्नान करैं हर्षाय।।
लौटि कर आवैं प्रभु ढिग धाय। कहैं प्रभु सुनो बिभीषण राय।।
बैठिये सिंहासन पर आय। बिभीषण कहैं सुनो सुखदाय।।
आपके सन्मुख अनुचित आय। कहैं प्रभु मन्द मन्द मुसक्याय।३०२०।

लखन हनुमान ते सैन से भाय। जानि यह लखन पवन सुत जाँय।
पकरि कर दोउ जन लेवैं धाय। बिठावैं सिंहासन पर लाय।।
बिभीषण मन ही मन सकुचाँय। बोलि नहिं सकैं करैं का भाय।
लखन हनुमान कृत्य करवाय। कहैं धुनि वेद मधुर स्वर गाय।।
प्रभु दाहिन पग अपन उठाय। करैं औंठा से शिर तिलकाय।३०३०।

धुनी तहँ जय जय कार कि भाय। करैं कपि ऋक्ष हिय हर्षाय।।
उतरि सिंहासन ते हर्षाय। बिभीषण प्रभु चरनन परि जाँय।।
उठाय के उर में लेंय लगाय। मिलैं फिर सब से मन हर्षाय।।
बटै परसाद सबै कोइ पाय। बचै सो उदधि में देंय छोड़ाय।।
सुमन बरसावैं सुर मुनि जाय। कहैं धुनि धन्य बिभीषण राय।३०४०।

कहैं रघुनाथ लखन सुखदाय। बिभीषण के गृह हनुमत जाँय।।
बिभीषण की माता हरषाँय। कहैं सब उनसे हाल सुनाय।।

छत्र सिंहासन लेते जाँय। बिभीषण के गृह देंय धराय।।
सुनैं हनुमान चलैं हर्षाय। छत्र सिंहासन लेंय उठाय।।
उड़ैं लै पहुँचि लँक में जाँय। बिभीषण के गृह देंय धराय।३०५०।

कहैं दरबानिन ते हर्षाय। सिंहासन छत्र देव भितराय।।
बिभीषण की माता से जाय। संदेशा सब कह दें हर्षाय।।
राज प्रभु दीन्ह उन्हें हर्षाय। करैं आनन्द राम गुण गाय।।
सुनत ही दरबानी दोउ धाय। सिंहासन छत्र को लेंय उठाय।।
पहुँचि जाँय भवन मध्य हर्षाय। कहैं सब हाल मातु से गाय।३०६०।

देंय सिंहासन छत्र धराय। बिभीषण की माता हुलसाय।।
आय हनुमान को शीश नवाय। बैठि जाँय दोउ कर जोरि के भाय।।
कहैं हनुमान बचन सुखदाय। बिभीषण अभय भये अब माय।।
देर अब नहीं दशानन राय। लंक तजि बिष्णु पुरी को जाँय।।
नीति से राज्य बिभीषण आय। करैं सब प्रजा सुखी ह्वै जाय।३०७०।

बिभीषण मातु कहैं हर्षाय। प्रभु सम को समरथ सुखदाय।।
अंश प्रभु का यह जीव कहाय। परयौ माया में चक्कर खाय।।
बासना नाना बिधि की आय। प्रगट होवै औ फेरि बिलाय।।
नाचता मन तिन बीच सदाय। इसी में आयू जात सेराय।।
पाँच ठग तन में बसिगे आय। लेंय ठगि धन सब द्वैत लगाय।३०८०।

द्वैत जादू यह अति दुःखदाय। दीनता मंत्र बिना नहिं जाय।।
दीनता की सेना सुखदाय। शान्ति औ शील सत्यता आय।।
छिमा सरधा दाया हर्षाय। धर्म संतोष प्रेम लपटाय।।
नाम अधिकारी तब कहवाय। धुनी तब खुलै नाम की आंय।।
रूप सिया राम जगत सुखदाय। रहैं सन्मुख तब मन हर्षाय।।३०९०।

गृहस्थाश्रम अति सुखदाय। होय हरि किरपा तब बनि जाय।।
ब्रह्मचारी सन्यासी आय। वैष्णव बानप्रस्थ कहाय।।
इसी से प्रगटे सब हैं आय। रहैं हरि सुमिरि निशंक सदाय।।
त्याग सब मन ते तब ह्वै जाय। ज्ञान वैराग सहायक आय।।
होय अनुराग तबै सुख पाय। रहै आसक्त न किसी में भाय।३१००।

कि जैसे नीरज बारि सहाय। करै तन से तो कार्य्य सदाय।।
सुनैं धुनि छबि देखै पितु माय। तरैं औ तारैं और को आय।।
भक्त सियराम को सो मुददाय। एक रस रहै नहीं बिलगाय।।
आप हौ राम भक्त सुखदाय। आप को आप लिहेव अपनाय।।
लख्यौ मैं जस तव रूप को आय। आत्मा मिल्यो देर नहिं लाय।३११०।

कहैं हनुमान हिये हर्षाय। मातु यह तत्व ज्ञान कहवाय।।
बिभीषण मातु कहैं हर्षाय। श्री नारद मुनि दीन बताय।।
कहैं हनुमान धन्य हौ माय। भयो तन सुफ़ल दरश तव पाय।।
होय अज्ञा अब कटक को जाँय। काज हरि का कछु देखैं माय।।
बिभीषण मातु कहैं हर्षाय। दूध फल मेवा लीजै पाय।३१२०।

कहैं हनुमान न कछु इच्छाय। समय तीसर अस्नान को आय।।
उठैं कर जोरि के शीश नवाय। बिभीषण मातु भवन को जाँय।।
उड़ैं हनुमान बेग से भाय। आय सीता माता ढिग जाँय।।
परैं चरनन में अति सुख पाय। मातु हर्षैं उर लेवैं लाय।।
हाल सब बतलावैं हर्षाय। सुनैं माता तन मन हुलसाय।३१३०।

चरन परि उड़ैं उदधि तट आय। करैं अस्नान हिये हर्षाय।।
आय प्रभु के चरनन परि जाँय। प्रभु हंसि उर में लेंय लगाय।।
कहैं सब चरित पवन सुत गाय। बिभीषण मातु बड़ी भक्ताय।।
गयन हम धैर्य्य देन प्रभु धाय। धैर्य्य की रूप मातु सुखदाय।।
कहैं प्रभु सुनो बीर चित लाय। मातु जैसी पुत्रौ वैसाय।३१४०।

नारि सुत गृह धन त्यागि के आय। मातु के बचन मानि सुखदाय।।
बिभीषण सुनैं चरन परि जाँय। कहैं प्रभु आप की किरपा आय।।
आपके चरित मोहिं बतलाय। बाल पन मांहि नित्य मम माय।।
उसी का फल अब प्रगट्यौ आय। अधम को आप लीन अपनाय।।
भई फिर शाम सुनो चित लाय। करैं सब सन्ध्यौपासन भाय।३१५०।

करैं फिर भजन नाम मन लाय। इष्ट अपने अपने को भाय।।
बिभीषण प्रभु के निकट में आय। बैठि जाँय चरण पकड़ि हर्षाय।।
लगैं सेवा करने मन लाय। प्रीति रीति बढ़ी अधिकाय।।

कहन कछु चहैं बोलि नहिं आय। जानि प्रभु जाँय मनै की भाय।।
कहैं हरि मन्द मन्द मुसुकाय। बिभीषण कहौ जौन मन भाय।३१६०।

करौ इच्छा सो पूरन राय। होय नहिं नेक देर सुखदाय।।
बिभीषण कहैं सुनो सुखदाय। भजन की बिधि मोहिं देहु बताय।।
रहौं जब तक जग में हर्षाय। निरन्तर नाम में चित्त लगाय।।
रूप सीता माता सुखदाय। आपके बाम भाग दिखलायं।।
रहै हरदम मम सन्मुख आय। यही मैं चाहत हूँ सुखदाय।३१७०।

कहैं प्रभु सुनो बिभीषण राय। देंय हनुमान तुम्हैं बतलाय।।
मातु सब तुमरी जानत राय। दीन नारद मुनि उन्हें सुझाय।।
नाम है सुखी सुखी हैं राय। जैस है नाम गुणै वैसाय।।
जाव हनुमान के पास में राय। भजन में बैठे परत दिखाय।।
जाय के बैठि रह्यौ चुपकाय। उठैं तब मम ढिग चलिहैं धाय।३१८०।

सामने झट ह्वै जायो राय। खड़े ह्वै है हनुमत हर्षाय।।
दीन ह्वै कह्यौ कार्य्य सरि जाय। बैन हरि के सुनि मन हर्षाय।।
बिभीषण चले चरण परि धाय। बैठि जहँ पवन तनय सुखदाय।।
ख्याल में तत्पर धुनि के भाय। राम सिय झाँकी सन्मुख छाय।।
नहीं सुधि तनकौ कहँ को आय। बिभीषण पहुँचि गये हर्षाय।३१९०।

बैठिगे शान्त चित्त तहँ राय। उठे हनुमान बजे दश आय।।
चलैं हनुमान प्रभू ढिग धाय। सामने लखैं बिभीषण राय।।
निरखि के शान्त खड़े ह्वै जाँय। कहैं तब पवन तनय हर्षाय।।
कहाँ किरपा करि आये राय। बिभीषण कहैं आप शरणाय।।
प्रभू ने पठ्यो हम को भाय। नाम के जप की बिधि बतलाय।३२००।

करो इच्छा पूरण सुखदाय। जानिगे पवन तनय तब भाय।।
प्रभू की लीला मंगल दाय। पकरि कर बैठि गये हर्षाय।।
दीन फिर नाम की जप बतलाय। नाम धुनि खुली देर नहिं लाय।।
बदन के सब रोवन ते भाय। उठै धुनि ररंकार सुखदाय।।
राम सिय झाँकी सन्मुख आय। भई सो बरणौं को छबि भाय।३२१०।

बिभीषण मस्त नाम रंग छाय। भूलिगे प्रेम में कहँ ते आय।।
पकरि कर पवन तनय हर्षाय। लै गये प्रभु के ढिग भाय।।

निरखि के कहैं भक्त सुखदाय। पवन सुत काह भयो बतलाय।।
बिभीषण तव कर पकरि के आय। यहाँ से गये रहे हर्षाय।।
कहैं हनुमान आप किरपाय। जैस चाहो तस देव बनाय।३२२०।

बिभीषण पवन तनय संग आय। चरन पर परैं मनै हर्षाय।।
बिभीषण के शिर कर रघुराय। फेरि देवैं उर लेंय लगाय।।
बिभीषण बिनय करैं हर्षाय। जयति जय जय भक्तन सुखदाय।।
धन्य धनि धन्य देव मुनि राय। रहे सब नाम आप को गाय।।
तिमिर हट गई उजेरिया छाय। कहौं का मुख से अपनि बड़ाय।३२३०।

भागि के भरम शरम दोउ भाय। नाम धुनि खुली चित्त हर्षाय।।
रूप हरि आप औ सीता माय। भयो सन्मुख में तुरतै आय।।
कहौं मैं सत्य बचन सुखदाय। स्वपन में कभी न परयौ लखाय।।
कहैं प्रभु सुनो बिभीषण राय। पवन सुत की तुम पर किरपाय।।
जैस इच्छा उनके मन आय। वैस ही वा को देंय बनाय।३२४०।

सहारे भक्तन के हम राय। रहैं हर दम सुनिये चित लाय।।
पधारैं जैसे प्रतिमा लाय। लगावैं भोग तबै वह पाय।।
वैस ही हाल हमारो राय। प्रेम की फाँस फँस्यो मैं भाय।।
पवन सुत कीन्ह लीन मोहिं राय। प्रेम की प्रीति बड़ी सुखदाय।।
कहैं लछिमन तब बचन सुनाय। पवनसुत का ऋण कौन चुकाय।३२५०।

हमारी समरथ है नहि भाय। जैस इन कीन्ह हमहूँ करि पाँय।।
खाय फल रावण बाग में जाय। निशाचर मारे बृक्ष ढहाय।।
पकरि कर अक्षय कुमार को धाय। उठाय के पटक्यौ महि पर भाय।।
धरयौ दाहिन पग उर पर धाय। प्राण हरि पुर को दीन पठाय।।
बीरता लंक पुरी में जाय। दिखायो अपनी हाँक सुनाय।३२६०।

निशाचर आधे लंक के भाय। मारि कै अग्नि में दीन जलाय।।
मातु सुधि लाये देर न लाय। अंजनी पुत्र धन्य हैं भाय।।
कहैं हनुमान चरण शिर नाय। आप की किरपा ते बल आय।।
भला हम में क्या ताकत आय। करैं कोइ कार्य ठीक ह्वै जाय।।
आप उर प्रेरक हौ सुखदाय। नचावौ जस तस नाचैं भाय।३२७०।

आप सर्वस्व त्यागि संग आय। करत हौ राति दिवस सेवकाय।।
धन्य माता हैं आप की माय। धन्य पतनी की कीरति गाय।।
लखन तब कहैं पवन सुत भाय। बहुत तारीफ किहे का पाय।।
प्रभु के समुहे करत ढिठाय। प्रभु उर प्रेरक हमैं बताय।।
कहैं हनुमान सुनो सुखदाय। देव मुनि वेद शास्त्र सब गाय।३२८०।

भक्त भगवन्त न अन्तर आय। बात हम या में कौन बनाय।।
कहैं प्रभु सुनो लखन चित लाय। भक्त तुम दोनो अति सुखदाय।।
बिभीषण के दरबारी जाँय। घरै अपने जब बदलैं भाय।।
करैं भोजन तन मन हर्षाय। देंय अपनी अबलन बतलाय।।
कहैं कहुँ कह्यौ न यह बचनाय। सुनै रावन तो देय मराय।३२९०।

बात जो अपनै में रहि जाय। तौन तो आपै जानै भाय।।
परै जहँ और के कान में जाय। चलै फिरि घटै न बढ़तै जाय।।
दोऊ अबला रावण गृह जाँय। मन्दोदरि से सब देंय बताय।।
मन्दोदरि सुनै औ मन हर्षाय। देय दोउ अबलन पट धन लाय।।
खुशी ह्वै अपने गृह दोउ जाय। धरैं धन पट बैठैं हर्षाय।३३००।

मन्दोदरि रावन के ढिग जाय। पहुँचि धौरहरा पर सुखदाय।।
चरित रावन को देय सुनाय। सुनै रावन तन मन हर्षाय।।
उतरि शिव मन्दिर में चलि जाय। लेय तहँ मेघनाद बोलवाय।।
कहै सब हाल पुत्र से गाय। हँसै तब मेघनाद योधाय।।
कहै पितु सुनिये मम बचनाय। दोऊ लड़िकन कीन्ह्यौ खेलवाय।३३१०।

संग में बानर औ ऋच्छाय। नहीं कोइ बुद्धिमान कटकाय।।
बिभीषण भागि मिल्यौ तहँ जाय। स्वाँग सब मिलि करि लीन बनाय।।
भला ऐसा कहुँ सुने हौ राय। पुत्र नहि भयो पिता कहवाय।।
कहै रावन सुनिये सुखदाय। तयारी करो समर की जाय।।
सुनै औ चलै तुरत उठि धाय। सजावै दल डंका बजवाय।३३२०।

चलै रथ पर बैठै हर्षाय। गरद असमान की ओर को जाय।।
कुड़ुक धुम डंका बजतै जाय। शब्द सुनि कहैं बिभीषण राय।।
प्रभू घननाद पहुँचिगा आय। बड़ा है शूरबीर दुखदाय।।

और मायावी अति चतुराय। जहाँ जस मौका देखै जाय।।
वहाँ वैसै वह रचत उपाय। सुनो प्रभु सत्य दीन बतलाय।३३३०।

कहैं प्रभु सुनो लखन सुखदाय। संग सेना लै देखो जाय।।
लखन सुनि चरनन में परि जाँय। उठैं औ चलैं कटक लै धाय।।
संग में बड़े बड़े योधाय। पवन सुत जाम्वन्त नीलाय।।
नलौ अंगद सुग्रीव सुहाय। मयन्दौ द्विविद गवाक्षौ भाय।
नाम सब के कँह तलक गिनाय। बिभीषण चले संग में भाय।३३४०।

फासिला थोड़ा जब रहि जाय। रुकैं दोउ सेना तँह पर भाय।।
क्रोध करि मेघनाद गोहराय। कहै अब संभरो सब हम आय।।
मारि बानर औ ऋच्छन धाय। मसलिहौं हाथन गर्द मिलाय।।
सुनैं कपि ऋच्छ क्रोध उर आय। कूदि के कटक में पहुँचैं जाय।।
पकरि निश्चरन को लेंय उठाय। एक पर एक को पटकैं धाय।३३५०।

भूमि पर किसी को देंय गिराय। फेरि उर नखते फ़ारैं भाय।।
चटकने किसी के मारें धाय। किसी पर मुष्टिक देंय चलाय।।
क्रोध लखि मेघनाद के आय। चलावै बाण बड़े दुखदाय।।
बहुत कपि ऋच्छन देय गिराय। परैं मूर्च्छा में बोलि न जाय।।
ऋच्छ कपि निरखि हाल यह भाय। पहुँचि फिर अपनी सेन में जाँय।३३६०।

लखन घननाद की होय लड़ाय। देखतै बनै दोऊ सुभटाय।।
बाण से बाण कटैं गिरि जाँय। पास तक पहुँचि सकैं नहिं भाय।।
निशाचर ऋच्छ कपिन ते धाय। लपटि कै लड़ैं क्रोध तन छाय।।
मुखन ते नोचैं माँस को धाय। गिरैं औ भिरैं न मानैं भाय।।
क्रोध अति लखन के तन में आय। चलावैं बाण कटक बिल्लाय।३३७०।

भागि अपनी सेना में जाँय। फटकते परे देखि घबराय।।
मनै मन मेघनाद वीराय। कहै मम समता के लखनाय।।
बिभीषण को निरखै तहँ भाय। लखन के पीछे परैं दिखाय।।
क्रोध अति बाढ़ै रहा न जाय। साँग रथ पर से लेय उठाय।।
मनै मन कहै हतौ यहि धाय। तिलक यहि प्रथम कीन रघुराय।३३८०।

बनावैं चहैं लंक को राय। मरै यह तो छुट्टी मिलि जाय।।
बचन बिरथा रघुबर के जाँय। भागि सब जावैं लड़ैं न भाय।।

लखन के निकट बिभीषण आय। देंय सब हाल तुरत बतलाय।।
सांगि यह महा कठिन है भाय। लागतै प्राण संग लै जाय।।
जानिगे लच्छिमन हरि किरपाय। बिभीषण को यह मारै आय।३३९०।

शक्ति यह खाली सकै न जाय। बचन दै तिलक कीन प्रभु आय।।
बचन प्रभु का को सकै मिटाय। करैं अब जो हमरे मन भाय।।
लखन तब कहैं बिभीषण राय। होय वैसै जस हरि इच्छाय।।
प्रेरना जैस करैं सुखदाय। वैस ही तन मन में बसि जाय।।
बिभीषण लखन निकट लखि पाय। चलै घननाद क्रोध करि धाय।३४००।

आय दुइसै पग पर रुकि जाय। शक्ति दहिने कर लीन्हे भाय।।
पकरि दुइ करन ते मंत्र सुनाय। चलावै मेघनाद वीराय।।
बिभीषण को पीछे कर धाय। लखन सन्मुख में होवैं जाय।।
लगै उर शक्ति पार ह्वै जाय। जाय कर शक्ति लोक ठहराय।।
उतानै लखन गिरैं महि आय। रुधिर बहु गिरै धरनि पर भाय।३४१०।

ऋच्छ कपि चारौं ओर ते आय। खड़े होवैं निरखैं अकुलाय।।
बिभीषण दौरि प्रभू ढिग जाँय। कहैं सब हाल चलैं हरि धाय।।
आय तहँ देखैं लछिमन भाय। पड़े हैं स्वाँस न नेकौ आय।।
दोऊ कर कमलन शीश उठाय। धरैं जंघा पर प्रभु दुख पाय।।
करैं तहँ रुदन कहा नहि जाय। रुधिर नैनन जल सब बहि जाय।३४२०।

कहैं प्रभु उठिये मम सुखदाय। हमै तुम बिन कछु नहीं सुहाय।।
जानकी हरे का शोक न भाय। शोक अति तुमरो उर दहकाय।।
जानि जो पाइति हम यह भाय। बिछुड़ि यहँ हमते जैहौ आय।।
पिता के बचन न मानित भाय। होत चहै हमै नरक दुखदाय।।
बचन हमरे पर आय के भाय। घाव उर शक्ती को लीन वेधाय।३४३०।

बाँह दाहिन मम टूटी भाय। अवध को जाव कवन मूँह लाय।।
सुनैं सब कहैं हमैं का भाय। सिया के हित प्रिय बन्धु गंवाय।।
यहाँ का हाल जानि सब भाय। जाय घननाद लंक हर्षाय।।
दशानन ते सब हाल सुनाय। कहैं पितु करौ राज्य हर्षाय।।
अवध का हाल सुनो अब भाय। उदासी नगर भरे में छाय।३४४०।

भरत शत्रुहन के उर धड़काय। वशिष्ठ औ सुमन्त गये घबड़ाय।।
मातु तीनो बैठीं अकुलाय। कहैं का भयो जानि नहिं जाय।।
पशू पक्षिन तन सुस्ती छाय। सकैं नहि बोलि बैठि समुझाँय।।
भरथ जी कहैं शत्रुहन भाय। जाव श्री गुरु ढिग पूछौ जाय।।
चलैं शत्रुहन चरण शिर नाय। पहुँचि जाँय गुरु वशिष्ठ गृह आय।३४५०।

करैं दंडवत चरन में धाय। उठाय के गुरु उर लेंय लगाय।।
शत्रुहन हाल देंय बतलाय। सुनैं गुरु कछू न बोलैं भाय।।
चलैं शत्रुहन को लै संग धाय। आय कौशिल्या भवन में जाँय।।
परैं कौशिल्या चरनन धाय। देंय आशिष बैठें घबड़ाय।।
शत्रुहन माता चरनन धाय। परैं औ बैठें गोद में जाय।३४६०।

सुमित्रा कैकेयी तहँ आय। परैं चरनन में गुरु के धाय।।
सुमन्तौ आय जाँय तहँ धाय। गुरु के चरनन में परि जाँय।।
पाय आशिष बैठें मुरझाय। गुरु से कहैं सबै बचनाय।।
काह गुरु भयो दुःख उर छाय। बिचारौ करि किरपा सुखदाय।।
आप बिन कौन सकै बतलाय। बड़ी घबड़ाहत सबन उर छाय।३४७०।

राम सच्चिदानन्द मुद दाय। सुमिरि गुरु करैं ध्यान को भाय।।
ध्यान जब टूटै कहैं सुनाय। लखन के शक्ति लगी उर आय।।
बचन मम मानो सब हर्षाय। राम सब देहैं दुःख हटाय।।
धरयौ नर तन जग में हरि आय। करत लीला भक्तन सुखदाय।।
मारि को सकै लखन को भाय। शेष को अंश बड़े वीराय।३४८०।

भ्रात दोउ रावण वंश नशाँय। आइहैं सिया सहित कटकाय।।
दिवस अब थोड़े रहिगे आय। धरो धीरज व्याकुलता जाय।।
शम्भु का रूप पवन सुत आय। संजीवन लैहैं तुरतै जाय।।
नासिका के दोउ स्वरन सुँघाय। धरैं कछु मलिकैं उर पर जाय।।
परै मुख में उठि बैठें भाय। राम हंसि के उर लेंय लगाय।३४९०।

आज ही पवन तनय सुखदाय। सजीवन लै लौटैं कटकाय।।
भरत को देहैं भेद बताय। शत्रुहन ऐहैं फिर यँह धाय।।
कहैंगे हाल यही सब आय। जौन हम सबै दीन बतलाय।।

समाये सब उर गुरु बचनाय। बोध ह्वै गयो शान्ति गै आय।।
मातु तीनों को शीश नवाय। शत्रुहन जाँय भरत ढिग भाय।३५००।

हाल सब कहैं शान्त ह्वै भाय। सुनैं श्री भरत धीर्य्य उर आय।।
जाँय श्री वशिष्ठ गृह को धाय। कहैं अरुन्धती से हाल सुनाय।।
अवध में शान्ति भई कछु भाय। कटक का हाल सुनो चित लाय।।
प्रभु के शोक को देखि के भाय। भये ब्याकुल कपि औ ऋच्छाय।।
बिभीषण कहैं प्रभु कोइ जाय। वैद्य लंका में एक रहाय।३५१०।

नाम श्री सुखेन वा को आय। आइहैं जहाँ कार्य्य बनि जाय।।
कहैं तब जाम्वन्त उठि भाय। प्रभू हनुमान को देव पठाय।।
कहैं प्रभु पवन तनय सुखदाय। बिपति यह पड़ी कठिन है भाय।।
लंक को जाव बेग से धाय। वैद्य को लावो देंय देखाय।।
पवनसुत चरन परैं हर्षाय। जोरि कर चलन चहैं जस भाय।३५२०।

बिभीषण भेद देंय बतलाय। भवन है हरे रंग सुखदाय।।
मोहारा चारिउ दिशन ते भाय। सुखेन का नाम लिखा समुहाय।।
रंग काले अक्षर भरवाय। पताका भवन के मध्य सुहाय।।
शुकुल रंग अक्षर श्याम हैं भाय। भवन के चौतरफ़ा सुखदाय।।
बृक्ष दस बट के रहे सोहाय। सुनैं औ उठैं पवन सुत भाय।३५३०।

उड़ैं फिर लंक में पहुँचैं जाय। घूमि सब लंक को लेवैं धाय।।
लखैं गृह पृथ्वी पर फिरि आय। परै कोइ बाहेर नहीं दिखाय।।
सुमिरि श्री राम नाम सुखदाय। सुखेन के भवन को लेंय उठाय।।
उड़ैं लै कटक में पहुँचैं जाय। धरैं तहँ भवन को धीरे भाय।।
परैं हरि के चरनन हर्षाय। राम उर में चट लेंय लगाय।३५४०।

सुखेन के भवन बिभीषण जाँय। लखैं तहँ सोय रहे सुख पाय।।
मातु पितु भगिनी दुहिता भाय। नारि सुत सोये अति निद्राय।।
बिभीषण दोउ कर पकरयौ जाय। चौंकि उठि बैठे आलस छाय।।
हाल सब देंय बिभीषण गाय। धोय मुख हाथ चलें संग धाय।।
निकसि गृह से जब बाहेर आय। पड़े आश्चर्य में बोलि न जाय।३५५०।

बिभीषण कहैं कौन दुख भाय। शोच जो आप के उर में आय।।
लखन को देखि लेव चलि भाय। भवन फिर लंक में देंय धराय।।

चलैं फिर निकट में पहुँचैं जाय। परैं प्रभु के चरनन हर्षाय।।
राम शिर पर कर देंय फिराय। उठैं औ बैठैं मन हर्षाय।।
दहिन कर पकड़ि के देखैं भाय। बन्द नाड़ी किमि करैं उपाय।३५६०।

स्वाँस नासिका कि परखैं भाय। पता नहिं लगै जाँय मुरझाय।।
प्रभु से कहैं सुखेन सुनाय। प्राण का पता लगत नहिं भाय।।
क़ान्ति मुख की वैसै चमकाय। बड़े ताजुब की बात देखाय।।
दवा दूसरि लगिहै नहि भाय। सजीवनि लता मिलै दुख जाय।।
नहीं तो भोर होत सुखदाय। लखन नहिं जियैं दीन बतलाय।३५७०।

कहैं हरि कहाँ लता वह भाय। बताओ मिलै तो लेंय मंगाय।।
कहैं तब वैद्य सुखेन सुनाय। उत्तराखण्ड दूर गिरि भाय।।
नाम दौनागिरि तासु कहाय। जड़ी नाना बिधि की तहँ भाय।।
सजीवनि में परकाश देखाय। और सब में परकाश न भाय।।
कहैं प्रभु चारि बजे हैं भाय। जहाँ तक बनिहै करब उपाय।३५८०।

कहैं तहँ जाम्वन्त सुखदाय। पवन सुत सब समरथ हैं भाय।।
लाइहैं भोर न होने पाय। पवन सम पवन तनय चलि जाँय।।
सुनैं हनुमान बचन यह भाय। फूल तन अष्ट गुणा ह्वै जाय।।
कहैं हरि से चरनन शिर नाय। आप की कृपा से हम चलि जाँय।।
कौन अस कार्य्य जगत में आय। जौन नहिं होय आप किरपाय।३५९०।

कहन की देर प्रभु सुखदाय। करन में देर न सकौं लगाय।।
कहैं प्रभु जाव बीर सुखदाय। सजीवनि लता लै आओ धाय।।
चलै बजरंग चरन शिर नाय। पवन के तनय पवन सम धाय।।
जाय गिरि ऊपर पहुँचैं जाय। घूमि कर लखैं लता को भाय।।
नहीं परकाश कहूँ दिखलाय। कई रंग लता वहाँ पर भाय।३६००।

निरखतै तन मन अति हर्षाय। मनै मन कहैं पवन सुत भाय।।
चलैं लै गिरि के सहित उठाय। चीन्ह तँह वैद्य लेंय हर्षाय।।
फेरि गिरि धरैं यहाँ पर लाय। सुमिरि कै राम सिया सुखदाय।।
गदा को खोंसि जांघिया भाय। पकरि कै पर्वत लेंय उठाय।।
बाम कर पर धरि लें सुखदाय। गदा दहिने कर साधैं भाय।३६१०।

उड़ैं लै चलैं बेग से धाय। आय फिरि अवध के ऊपर जाँय।।
शब्द फिरि हा हा कार सुनाय। भरत सुनि गुफा के बाहेर आय।।
लखैं कोइ राक्षस सम दिखलाय। बाण थोथा एक देंय चलाय।।
गिरैं हनुमान तहाँ पर आय। राम को नाम सुमिरि सुखदाय।।
पवन पर्वत को पकड़ैं धाय। गिरै नहि ऊपर ही रुकि जाय।३६२०।

भरत पहुँचैं तुरतै तहँ धाय। लखैं हनुमान शोक उर छाय।।
उठाय के छाती लेंय लगाय। कहैं अब जाओ बेग से धाय।।
बाण पर तुम्हैं देंव पठवाय। सहित गिरि देर न लागै भाय।।
कहैं हनुमान सुनो सुखदाय। आप सब समरथ हरि सम भाय।।
बाण एक थोथा दिहेव चलाय। गिरेन हम धरनि में तुरतै आय।३६३०।

बाण पर देहौ आप पठाय। वेग हम में वैसा नहिं भाय।।
जाव हम शर समान चलि धाय। आप की कृपा न देर लगाय।।
देव अब अज्ञा मोहिं सुखदाय। जाँय हरि के ढिग गिरि लै धाय।।
भरत जी उर में लेंय लगाय। शत्रुहन मिलैं लपटि हर्षाय।।
चरण दोनो भाइन सुखदाय। परैं उठि चलैं पवन सुत धाय।३६४०।

पवन से लै कर गिरि को भाय। बाण सम चलैं बीर सुखदाय।।
यहाँ श्री भरत शत्रुहन भाय। पठावैं गुरु के पास में जाय।।
चरण में परैं कहैं सब गाय। गुरु संग राज सदन में जाय।।
आय रानी चरनन परि जाँय। पाय आशिष बैठैं हर्षाय।।
शत्रुहन चरन छुवैं हर्षाय। देंय आशिष माता सुखदाय।३६५०।

हाल सब गुरु देंय बतलाय। सुनैं सब शान्त चित्त से माय।।
पुरी भर में देवैं जनवाय। सबन के उर में धीरज आय।।
शत्रुहन गुरु मातन शिर नाय। भरत के पास में पहुँचैं जाय।।
चरन में परि उठि कहैं सुनाय। श्री गुरु सब को दीन जनाय।।
बिकलता सब की मिटि गई भाय। पवन सुत की सब करतव आय।३६६०।

श्री गुरु अपने भवन को जाँय। बैठि जाँय शान्त चित्त हर्षाय।।
पवन सुत पहुँचि जाँय कटकाय। धरैं पर्वत को तहँ पर भाय।।
आय प्रभु के चरनन परि जाँय। प्रभु हंसि उर में लेंय लगाय।।

कहैं हनुमान सुनो सुखदाय। लता नहि चीन्हेन गिरि लै आय।।
अवध के ऊपर निकसेन आय। शब्द सुनि भरत लख्यो तहँ धाय।३६७०।

बाण एक थोथा दीन चलाय। गिरेन तुरतै तहँ हम महि जाय।।
पवन ने पर्वत रोक्यो धाय। न आयो नीचे वह सुखदाय।।
आप का नाम मेरे मुख आय। भरत सुनि तुरतै पहुँचैं धाय।।
निरखि मोहिं उर में लीन लगाय। मिट्यौ सब दुःख हर्ष तन छाय।।
कह्यौ हम बाण पै देव पठाय। देर नहिं लागै सुनिये भाय।३६८०।

कहेन हम कृपा करो सुखदाय। जाँय हम अब हीं गिरि लै धाय।।
बड़े बलवान तेजसी भाय। भरत यश कौन सकै मुख गाय।।
संदेशा अवध में दीन पठाय। शत्रुहन गये गुरु ढिग धाय।।
कहैं प्रभु सुनो वीर सुखदाय। भरत मम प्राण के प्राण हैं भाय।।
कहैं हरि श्री सुखेन सुखदाय। चीन्हिये लता आप गिरि जाय।३६९०।

लता को खोजि सुखेन लै आँय। पहुँचि लछिमन के ढिग को जाँय।।
नासिका के सन्मुख मलि भाय। धरैं अरु कछु छाती पर लाय।।
फेरि मलि मुख में छोड़ैं भाय। लखन उठि बैठैं देर न लाय।।
शब्द तहँ जय जयकार सुनाय। सुखेन औ पवन तनय यश गाय।।
लखन ते कहैं राम सुखदाय। गोद में लिहे बैठि कटकाय।३७००।

घाव उर में जो लागेव भाय। दवा से तुरत पूरिगो आय।।
दर्द कछु भीतर तो नहिं भाय। देव मोहिं अब हीं सब बतलाय।।
वैद्य यह बड़े सुखेन हैं भाय। आय के तुमको दीन जिलाय।।
कहैं लछिमन सुनिये सुखदाय। हमारे उर कछु नहिं पिराय।।
मातु के पास गयन हम भाय। बाटिका अशोक में सुख पाय।३७१०।

मातु मोहिं गोद में लीन बिठाय। सोय हम गयन वहीं सुखदाय।।
नींद से जागेन जस हम भाय। कहेन माता से बचन सुनाय।।
जाव अब हम प्रभु के ढिग भाय। भई कछु देर नींद गइ आय।।
कह्यो माता जाओ हर्षाय। चरन पर परि यँह पहुँचेन आय।।
यही हम जानित दीन बताय। आपसे कछु छिपा नहिं भाय।३७२०।

कहैं सुग्रीव से प्रभु सुखदाय। सुखेन को भेंट देव तुम लाय।।
रत्न का भरा थार जो भाय। दीन मोहिं भेंट उदधि जो लाय।।

सुनैं सुग्रीव लै आवैं धाय। धरैं प्रभु के आगे हर्षाय।।
सुखेन को तब प्रभु देंय गहाय। हर्ष से लें सुखेन सुखदाय।।
कहैं हरि तुम से उत्रृण न भाय। जिलायो मम भाई सुखदाय।३७३०।

देंय आशिष हम तुमको भाय। रहौ ब्रह्मा के दिन भर जांय।।
बिभीषण औ तुम संघै भाय। आइहौ मेरे पुर हर्षाय।।
चरन में परि सुखेन तहँ जाँय। उठैं तब हरि उर लेंय लगाय।।
कहैं हरि भवन में बैठो जाय। भवन को लंक में देंय धराय।।
चलैं तब सुखेन भवन को धाय। पहुँच के बैठैं सुख से जाय।३७४०।

शरासन बाण लेंय रघुराय। चढ़ावैं धनुष हिये हर्षाय।।
बाण एक भवन को देंय चलाय। भवन लै चलै बाण सन्नाय।।
सुखेन के भवन को धरि दे जाय। जहाँ से पवन तनय लै आय।।
लौटि कर बाण प्रभु ढिग जाय। फेरि तरकस में बैठै भाय।।
प्रभु फिर गिरि के ऊपर जाँय। देंय आशिष तन मन हर्षाय।३७५०।

रहौ तुम हरे भरे सुखदाय। होय नहिं नाशा तुम्हारी भाय।।
देव गन्धर्व अपसरा आय। बास तुम पर करिहैं सुख पाय।।
तुम्हैं अब पठै देंय सुखदाय। जहाँ से आये तहाँ को भाय।।
सुनैं यह बचन राम के भाय। आवरण ते गिरि प्रगतै आय।।
रूप ब्राह्मण का बृद्ध बनाय। परे चरनन में मन हर्षाय।३७६०।

उठै हरि उर में लेंय लगाय। प्रेम गिरि के उर नहीं समाय।।
कहै जय धन्य धन्य सुखदाय। जाय आवरण में फेरि समाय।।
प्रभु गिरि पर से उतर के भाय। चढ़ावैं धनुष दीन सुखदाय।।
बाण एक मारैं गिरि उठि जाय। पहुँचि जहँ से आयो तँह भाय।।
बाण फिरि आय पास में जाय। फेरि तरकस में बैठै भाय।३७७०।

बाण एक लेंय राम रघुराय। हाल सब वाको देंय बताय।।
जाव श्री अवध गुरु ढिग जाय। परयौ चरनन पहिले हर्षाय।।
फेरि परिकरमा कीन्हेउ धाय। परयौ फिरि चरनन में हर्षाय।।
संदेशा उठि कै श्रवण सुनाय। लौटि के आयो जलदी धाय़।।
सुनाय के प्रभु शर देंय चलाय। चलै गुरु के ढिग पहुँचै जाय।३७८०।

परै चरनन में पहिले भाय। पांच फिरि फेरी लेय लगाय।।
परै चरनन में फिरि हर्षाय। उठै औ कहै संदेशा गाय।।
श्रवण बाँये ढिग शब्द सुनाय। सुनैं गुरु तन मन अति हर्षाय।।
लखन जी गये गुरु सुखदाय। संदेशा यही कहन हम आये।।
परै फिरि चरनन में हर्षाय। चलै प्रभु पास में पहुँचै आयं।३७९०।

चरन में परि उठि कहै सुनाय। संदेशा कहि आयन सुखदाय।।
प्रभु कर लै उर लेंय लगाय। धरैं तरकस में मन हर्षाय।।
गुरु श्री राज भवन में जाँय। कहैं सब हाल प्रेम से गाय।।
संदेशा पुरी में देंय फिराय। खुशी सब में मुद मंगल छाय।।
बधाई गृह गृह बाजै भाय। गान धुनि से आकाश गुँजाय।३८००।

सुमित्रा कौशिल्या सुखदाय। केकयी संग में रहीं सुहाय।।
आय सातौं सै रानी जाँय। लुटावैं पट धन मणि भुषणाय।।
संदेशा भरत के पास में जाय। खुशी होवैं सुनि दोनो भाय।।
गुरु को सब रानी हर्षाय। देंय पट मणि भूषण धन लाय।।
चलैं गुरु भवन को मन हर्षाय। संग में धीमर सब लै जाँय।३८१०।

पहुँचि जब भवन में श्री गुरु जाँय। लेंय सामान सबै धरवाय।।
लौटि धीमर अपने गृह जाँय। मगन तन मन ते को कहि पाय।।
खबरि यह रावण को लगि जाय। लखन जी गये युद्ध हो भाय।।
पहुँचि तब कुम्भकरण ढिग जाय। जागने की बिरिआ गइ आय।।
भये पूरे छा महिना भाय। बैठि उठि तन में आलस छाय।३८२०।

बीचि में जागि सकै किमि भाय। सकै बरदान को कौन मिटाय।।
लखै ठाढ़ो रावण तहँ भाय। करै परनाम दोऊ कर लाय।।
कहै रावण सब चरित सुनाय। आदि से अन्त तलक सब गाय।।
लड़ाई राम से ठनि गइ भाय। उठौ अब चलौ लड़ौ सुखदाय।।
भखौ महिषा मेढ़ा चट भाय। पिओ मद तन में बल अधिकाय।३८३०।

कहै तब कुम्भकर्ण हर्षाय। सुनो भाई मेरे सुखदाय।।
कह्यौ जो हम से बचन सुनाय। तौन हम स्वप्न में देखा भाय।।
आपसे ज्ञानी को है भाय। रच्यौ सब के हित ठीक उपाय।।

मरै जो हरि के सन्मुख जाय। चलै बैकुण्ठ हिये हर्षाय।।
ऋच्छ बानर का रूप बनाय। राम संग सुर बहु आये भाय।३८४०।

लड़ैं हम उनके संग में भाय। श्राप सनकादिक की सुखदाय।।
नाम जय आप का सुनिये भाय। विजय अस नाम हमार कहाय।।
रहैं बैकुण्ठ के फाटक भाय। बिष्णु के द्वारपाल कहवाय।।
देव मुनि हरि दर्शन को जाँय। दूर ते कर जोरैं तब भाय।।
चरण स्पर्श करन हित भाय। लालसा रहै न चलै उपाय।३८५०।

आज धन्य भाग्य हमारो आय। करैं स्पर्श सुरन हर्षाय।।
योग अस सतयुग परयौ न भाय। भयन जब हिरण कश्यप जाय।।
लड़ाई हरि के संग भइ आय। मारि बैकुण्ठ को दीन पठाय।।
आप हिरणाक्ष भयो बड़ भाय। योग आपौ फिर ऐस न पाय।।
लड़ाई हरि ही से भई भाय। मारि बैकुण्ठ दियो सुखदाय।३८६०।

रूप बाराह आप हित भाय। बनायो हरि जग में यश छाय।।
हमारे हित नर सिंह कहाय। कीन क्या लीला हरि सुखदाय।।
योग तीसर द्वापर में भाय। होव शिशुपाल नाम हम जाय।।
आप का नाम दन्त बक्राय। होय जग नर औ नारी गाय।।
प्रकट हरि होइहैं तहँ पर जाय। नाम श्री कृष्ण तहाँ कहवाय।३८७०।

मारिहैं कर कमलन ते भाय। चलैं बैकुण्ठ फेरि हर्षाय।।
श्राप मिटि तीनौं जन्म की जाय। होंय फिर द्वारपाल दोउ भाय।।
खेल बाज़ीगर कैसा भाय। नचावैं जैसे बानर लाय।।
राम से कौन लड़ै मम भाय। अंश सब उनके जीव कहाय।।
शेष शिव ब्रह्मा हरि सुखदाय। रहे निशि बासर जिनको ध्याय।३८८०।

लड़ै चक्री से घट किमि भाय। देंय जहँ धक्का चट ह्वै जाय।।
सनातन की मर्य्याद है भाय। कार्य्य सब होत निमित्त लगाय।।
महिष मेढ़ा मदिरा को भाय। खाँय नहिं पियैं सुनो चित लाय।।
प्याज लहसुन मसूर गजराय। माँस मदिरा जो कोई खाय।।
असर यकइस दिन तक तन भाय। रहत है धर्म शास्त्र बतलाय।३८९०।

मरै जो बीच में नर्कै जाय। भेद हम ठीक दीन बतलाय।।
आप सब जानत हौ मम भाय। आप को कौन सकै समुझाय।।

मँगावो गंगा जल कछु भाय। पियैं औ चलैं लड़न हित भाय।।
सुनै यह बैन दशानन राय। भवन को चलै हिये हर्षाय।।
सहस योधन ते कहै सुनाय। संग मेरे चलिये सब धाय।३९००।

सुनैं सब चलैं संग हर्षाय। पहुँचि श्री गंगा भवन को जाँय।।
कहै रावण तब बचन सुनाय। उठावो दुइ दुइ घट सब भाय।।
लै चलो कुम्भकर्ण ढिग धाय। पियैंगे गंगा जल लघु भाय।।
चलैं सहसौ योधा लै धाय। धरैं घट कुम्भकर्ण ढिग जाय।।
लखै औ तन मन ते हर्षाय। सोवरन कलशन जल सुखदाय।३९१०।

कलश दुइ दोनों करन उठाय। नाय लेवै मुख में जल भाय।।
इसी बिधि सब कलशन जल भाय। पाय कर खड़ा होय हर्षाय।।
कलश सब योधा लेंय उठाय। धरैं रावन के भवन में जाय।।
श्री गंगा जल कलशन भाय। एक सौ मन एक कलश में आय।।
वजन में कलश जानिये भाय। एक ही एक चालिस मन आय।३९२०।

कोस दुइ ऊँचा लम्बा भाय। मील भर चौड़ा उदर दिखाय।।
इसी का आधा रावण राय। ऊँच लम्बा चौड़ा था भाय।।
दशानन का आधा पुत्राय। नाम घननाद जासु का भाय।।
शम्भु औ देबी को बर भाय। घटै औ बढ़ै औ जाय बिलाय।।
राक्षस वंश को बर यह भाय। होय परगट फिर तरुण दिखाय।३९३०।

राक्षसी एक एक सहस्त्र प्रगटाय। चरित अब कुम्भकर्ण को भाय।।
कहैं कछु सुनिये तन मन लाय। कहै वीरन से हाँक सुनाय।।
तयारी करो लड़न की भाय। सुनत ही शूरबीर सब धाय।।
पास में आवैं मन हर्षाय। गर्जना करैं जोर से भाय।।
चलै नारायण को मन ध्याय। गर्द अस्मान में जावै छाय।३९४०।

सूर्य्य छिपि गये अँधेरिया आय। जहाँ मुर्चा बन्दी है भाय।।
आय रुकि जाँय पताक देखाय। बिभीषण कहैं श्री सुखदाय।।
आय गयो कुम्भकर्ण वीराय। बड़ा बलवान कहा नहि जाय।।
देखिहौ या के बल को भाय। कहैं रघुनाथ लखन सुखदाय।।
जाय के समर करौ हर्षाय। लखन धरि शिर चरनन पर धाय।३९५०।

चलैं लै रिच्छ कपिन हर्षाय। गर्द से कोइ न परै देखाय।।
शब्द सुनि परै तहाँ पर भाय। लखन जल बाण को देंय चलाय।।
होय जल बृष्टि कटक में जाय। गर्द गुब्बार का पता न भाय।।
परै सब सैना साफ़ देखाय। कहैं तब कुम्भकर्ण हर्षाय।।
लखन हौ धन्य धन्य सुखदाय। मास षट सोयन हम सुख पाय।३९६०।

जागि कै युद्ध करन हित आय। समय नहि मिल्यौ नहान को भाय।।
कृपा करि आप दिहेव नहवाय। गई सब सुस्ती तन की भाय।।
युद्ध करिहौं जो कछु बनि आय। सुनैं यह बैन ऋच्छ कपि भाय।।
दौरि कर चपटैं तन में जाय। सामने पहुँचि जाँय जे धाय।।
समेटि के मुख में छोड़ैं भाय। नाक औ कान औ मुख से भाय।३९७०।

निकसि के भागैं कपि ऋच्छाय। शीश पर खेल करैं बहु भाय।।
कूदि फिर कटक में पहुँचैं जाय। भालु कपि उदर के भीतर भाय।।
नासिका मुख कानन ह्वै जाँय। लगावैं दौरि हिये हर्षाय।।
निकसि फिर भागैं हँसि कै भाय। हँसै औ कहै सुनो सब भाय।।
लड़ै आयो की खेलन आय। लपटि कै काह करत हौ भाय।३९८०।

मैल क्या तन में रह्यौ छोड़ाय। नहीं बल तुम सब के कछु भाय।।
चहैं हम नहीं ऐसि सेवकाय। लै आवैं पत्थर के टुकड़ाय।।
लाखहू मन के एक एक भाय। ऋच्छ कपि संगै पहुँचैं जाय।।
शीश पर पटकैं हटै न भाय। गिरैं पत्थर जब नीचे आय।।
परैं जेहि पर सोई पिसि जाय। कहैं तब कुम्भकर्ण हंसि भाय।३९९०।

मसखरी हमका यह न सोहाय। मदार के बोड़िन कुञ्जर भाय।।
मारि कै कोई सकत भगाय। लड़न हम आये समर में भाय।।
यहाँ सब करत तमाशा आय। शूर कोइ परत नहीं देखलाय।।
भला कछु देर तलक समुहाय। सुनैं तब अंगद अति रिसिआँय।।
क्रोध करि पहुँचैं समुहे जाय। भिड़ैं कछु देर बालि सुत भाय।४०००।

फेरि गिर परैं मूर्च्छि महि जाय। चलैं फिरि कटक मध्य में जाय।।
भिरैं तहँ द्विविद नील नल आय। होंय ब्याकुल महि पर गिरि जाँय।।
रहै नहि सुधि बुधि मुर्च्छा आय। गवाक्षौ दधिबल गव रिसिआय।।

लड़ैं औ आखिर में गिरि जाँय। भिरैं सुग्रीव मयन्दौ धाय।।
लड़ैं कछु देर गिरैं महि आय। चलैं तब जाम्वन्त हंसि धाय।४०१०।

कहैं रे दुष्ट सम्हरु मैं आय। लखै औ कहै सुनो बृद्धाय।।
हंसी हम नहि करवै है भाय। बृद्ध से जीतै हारै भाय।।
होति है हानि शास्त्र बतलाय। आप चतुरानन अंश कहाय।।
सृष्टि के करता पितु सुखदाय। आप से लड़िकै बैर बढ़ाय।।
बंश की उत्पति जाय नशाय। कृपा अब कीजै हम पर भाय।४०२०।।

लड़ैं हम आप से कैसे धाय। सुनैं हनुमान पहुँचि तहँ जाँय।।
होय फिर युद्ध बेग से भाय। मारु मुष्टिकन तमाचन भाय।।
होय तहँ शब्द दूरि तक जाय। कहैं तब कुम्भकर्ण हर्षाय।।
शम्भु का रूप आपु सुखदाय। इसी से दया जाति कछु आय।।
नहीं तो देखतेव मम बल आय। शम्भु है विष्णु के प्रिय अति भाय।४०३०।

करत नित बिष्णु से हर चरचाय। याद बैकुण्ठ कि आवत भाय।।
क्रोध आवत औ जात हेराय। सत्य मैं आप से कह्यौं सुनाय।।
आप संग युद्ध न हमै सुहाय। कहैं हनुमान विजय सुखदाय।।
बिष्णु के द्वार पाल तुम भाय। याद हमहूँ को सब है भाय।।
क्रोध ऊपर से करौ बनाय। बिष्णु हर के निशि बासर ध्याय।४०४०।

रहै हैं एकतार मन लाय। एकता ऐसी कहा न जाय।।
शेष नारद नहिं सकैं बताय। जगत हित खेल होत यह भाय।।
तरैं नर नारी कीरति गाय। आप हम में हम आप में भाय।।
आप ही आप करत खेलवाय। आप ही खेलैं बहु बनि भाय।।
आप ही आप रहै बतलाय। एक ही हरि दूसर को भाय।४०५०।

जानते सब हौ रहै बकाय। कहैं तब कुम्भकर्ण हर्षाय।।
होय अब पकड़ एक फिरि भाय। भिरैं दोउ बीर परस्पर आय।।
लड़ैं कछु देर गिरैं नहिं भाय। पकड़ि हनुमान को उर में लाय।।
छोड़ि कर गिरै उतानै भाय। प्रेम आवेश मिटै जब भाय।।
खड़ा होवै तब हिय हर्षाय। कहैं तब लछिमन हाँक सुनाय।४०६०।

संभरु रे दुष्ट काल गो आय। चलावैं बाण मंत्र पढ़ि भाय।।
एक ते शत सहस्त्र ह्वै जाँय। बेधि सब तन में जावैं धाय।।

रुधिर से तर शरीर ह्वै जाय। कहै तब कुम्भकर्ण हर्षाय।।
मरौं नहिं आपके मारे भाय। आप हौ धरणी धर अंशाय।।
लड़न का हाल न जानौ भाय। जाय अब धरणी थाम्हौ जाय।४०७०।

नाम धुनि रूप में चित्त लगाय। राम की सेवा के बल भाय।।
बाण कछु मम तन मारयौ आय। नींद अरु नारि क त्यागेव भाय।।
किहेव चौदह बर्षै सेवकाय। भेष तापस का लिहेव बनाय।।
वीर्य्य रक्षा खूब कीन्हेव भाय। इसी से मारयौ शर तन भाय।।
नहीं तो नेक न लागत आय। हमारौ अंग वज्र सम भाय।४०८०।

बाण तौ बेधि सकैं नहिं आय। बेधिहैं हरि निज बाणन भाय।।
देखिहौ आप सत्य हम गाय। करौ जो आप कि चलै उपाय।।
प्रभु के सन्मुख अब हम जाँय। लखन हंसि कहैं कुम्भकर्णाय।।
धन्य तव मातु पिता जन्माय। मारि सब तन हम बेधेन भाय।।
तुम्हें कछु दुख न परत बुझाय। शूर रणधीर बड़े तुम भाय।४०९०।

दीन बिधि ने तुम को बर आय। बर्ष में दुइ दिन जागौ भाय।।
दिवस निशि सोवौ पग फैलाय। अगर कहुँ दुइ दिन सोवतेउ भाय।।
और सब निशि दिन जागतेव आय। पेट भर भोजन मिलत न भाय।।
कहाँ तक रावण करत उपाय। दीन मति बिधि ने तब उलटाय।।
शारदा जिह्वा पर बैठाय। लखन के सुनि सब बैन बड़ाय।४१००।

चलै श्री राम ब्रह्म ढिग धाय। लखैं रघुनाथ उठैं हर्षाय।।
चढ़ावैं धनुष बान कर लाय। पहुँचि सन्मुख चरनन गिरि जाय।।
चलैं दोउ दृगन ते आँसू आय। फेरि कर शिर पर दें सुखदाय।।
खड़ा होवै कर जोरि के भाय। कहै प्रभु धन्य दीन सुखदाय।।
देत अधमन के पाप नशाय। भक्त वत्सल हरि आप कहाय।४११०।

हेतु मेरे जग प्रगट्यौ आय। उबारयौ सतयुग में प्रभु जाय।।
समय अब फेरि रह्यौ नगचाय। कृपा निधि द्वापर में दोउ भाय।।
जाँय हम ख्याल न दिहेव भुलाय। भेजिये जलदी अब सुखदाय।।
सामने खड़ा हूँ शिर निहुराय। लड़ौं मैं कासे हे सुखदाय।।
देव सब ऋच्छ कपी बनि आय। आप का नाम सुमिरि सुखदाय।४१२०।

धरैं बहु रूप कौन कहि पाय। रूप दूसर धरि देखन आय।।
रहै सब आसमान में छाय। सिंहासन हमै परत देखलाय।।
बहुत हैं कौन उन्हें गिनि पाय। आप मालिक सब के सुखदाय।।
देर अब करौ न देव पठाय। कहैं प्रभु कुम्भकर्ण वीराय।।
क्रोध करि युद्ध करौ कछु धाय। भालू बानरन को मारौ जाय।४१३०।

क्रोध तब हमरे तन में आय। नहीं तो मारैं हम किमि धाय।।
साँच हम तुमसे कहैं सुनाय। बिना कोइ कारन कारज भाय।।
होत नहिं वेद शास्त्र कहैं गाय। ऋच्छ कपि मरैं न एकौ भाय।।
लौटि सब अवध मेरे संग जाँय। वंश तव जो संग लड़िहै आय।।
छोड़ि तनु बिष्णु पुरी को जाय। सुनै हरि के अमृत बचनाय।४१४०।

लड़ै तब भालु कपिन ते धाय। दोउ कर कसिकै देय घुमाय।।
गिरैं बहु तर ऊपर महि आय। क्रोध तन में प्रभु के तब आय।।
चलावैं बाण शीश कटि जाय। गिरै शिर महि में मानो भाय।।
धमाका उठै तोप सम आय। हंसै शिर कहै राम सुखदाय।।
सिंहासन नभ ते आवत धाय। फेरि हरि मारैं शर एक भाय।४१५०।

दहिन भुज कटि कै महि गिरि जाय। तीसरे बाण से बाम भुजाय।।
काटि हरि देवैं धरणि गिराय। बाण चौथा हरि देंय चलाय।।
नाभि से धड़ कटि महि गिरि जाय। बाण पंचवां प्रभु मारैं भाय।।
गिरैं पग जुदे जुदे दोउ भाय। उसी क्षण दिब्य रूप ते भाय।।
बैठि जावै बिमान हर्षाय। कहै पारषदन से सुनिये भाय।४१६०।

राम ढिग चलौ यान लै धाय। चलैं पारषद प्रभु ढिग जाँय।।
धरैं उतरै तहँ पर हर्षाय। करै पैकरमा पाँचौ धाय।।
गिरै चरनन में हिय हर्षाय। उठाय के हरि उर लेंय लगाय।।
न जानैं भालु कपी लखनाय। बैठि के सिंहासन में भाय।।
करै फिरि राम नाम धुनि गाय। उड़ैं पारषद जाँय लै धायं।४१७०।

देव मुनि जै जै करैं सुनाय। फूल बरसावैं नभ ते भाय।।
दुन्दभी बाजा अपन बजाय। सिंहासन श्री बैकुण्ठ में जाय।।
धरैं पारषद हिय हर्षाय। उतरि फिर रमा बिष्णु ढिग जाय।।

परै चरनन में अति सुख पाय। मातु पितु कर शिर देंय फिराय।।
कहैं बैठो आसन पर जाय। संग ही देंय तुम्हैं दरजाय।४१८०।

आय बड़ भ्रात तुम्हारो जाय। रही अब द्वापर की श्रापाय।।
प्रभू किरपा वह भी मिटि जाय। सुनै यह बैन चलै हर्षाय।।
जाय सिंहासन बैठै जाय। दशानन सुनै हिये हर्षाय।।
बुलावै मेघनाद पुत्राय। कहै लघु भ्रात कुम्भकर्णाय।।
मारि हरि दीन सुनो सुखदाय। जाव अब लड़ौ समर में धाय।४१९०।

देखावो छल बल सब को जाय। चलै संग सेना लै बहु धाय।।
पहुँचि फिरि समर भूमि में जाय। लखन लखि कहैं प्रभु सुखदाय।।
आयगो मेघनाद योधाय। कृपा से आप कि मारौं जाय।।
बचै नहि अबकी कहूँ लुकाय। राम हसि कहैं लखन सुखदाय।।
मारिहौ अब नहिं बचि कै जाय। लखन प्रभु चरनन परि उठि धाय।४२००।

चलैं लै कटक भालु कपि भाय। जाँय सन्मुख में होय लड़ाय।।
सरासर बाण चलैं दुखदाय। राक्षस बाण सिखे बहु भाय।।
चलावैं खूब ज़ोर करि धाय। राक्षस मारैं बहु लखनाय।।
लखै घननाद क्रोध तन छाय। मारि बाणन ते कपि ऋच्छाय।।
देय महि ऊपर तहाँ गिराय। नील नल अंगद द्विविदौ भाय।४२१०।

गिरैं दधिबल मयन्द मुर्च्छाय। गिरैं सुग्रीव गवाक्षौ भाय।।
गिरैं गव और बिभीषण राय। होश कछु पवन तनय को भाय।।
कटक सब तितिर बितिर ह्वै जाय। चलै तब जाम्वन्त समुहाय।।
कहै अब मोर तोर युद्धाय। कहै घननाद जानि बृद्धाय।।
छोड़ि हम दीन न मारेन भाय। कहै तब जाम्वन्त रिसिआय।४२२०।

कीन तुइ कौन बीरता आय। भालु कपि बिना अस्त्र के आय।।
शस्त्र से मारे कौन बड़ाय। बहादुरी तब जानित हम भाय।।
लड़त तुइ बिना अस्त्र के आय। अस्त्र जा के कर होवै भाय।।
लड़ै वह उससे समता आय। अस्त्र गिरि परै टूटि जो ज़ाय।।
न मारै उसे धर्म युद्धाय। मारिहैं लखन तोहिं अब भाय।४२३०।

काल तेरे शिर पर मड़राय। सुनै घननाद बचन यह भाय।।
क्रोध तन में अति जावै आय। धनुष औ बान डारि महि धाय।।

कहै आओ देखैं बल भाय। पकरि के फेकौं ऊपर जाय।।
प्राण लौटत में तन से जाँय। मारिहौं या बिधि ते तोहिं भाय।।
रहे जो धर्म शास्त्र बतलाय। पहुँचि सन्मुख कर करन भिराय।४२४०।

करै अति ज़ोर न चलै उपाय। घसोटा जाम्वन्त दैं भाय।।
गिरावैं पट महि ऊपर आय। होय मुर्च्छा कछु होश न भाय।।
बालुका मुख में कछु भरि जाय। भालु कपि होश में आवैं भाय।।
लखैं यह कीन युद्ध बृद्धाय। उठै तो फेरि लड़ै यह धाय।।
बिकल करिहै छल बल ते भाय। अभी मुर्च्छा में पड़ा देखाय।४२५०।

पीटि लीजै खुब आह बुताय। शक्ति श्री लखन के मारेसि धाय।।
वही यह दुष्ट पड़ा महि भाय। लेव सब मिलि बदला वह भाय।।
दाह सब के तन की बुझि जाय। कहैं तब जाम्वन्त सब भाय।।
शान्त ह्वै सुनो बचन दुख जाय। मरै नहिं हम तुम से यह भाय।।
लखन के हाथन मरिहै आय। नहीं कछु होश इसे है भाय।४२६०।

मारना अनुचित हमैं बुझाय। सोवते बालक का मुख भाय।।
चूमिये का जानै को आय। सूर का धर्म नहीं यह आय।।
मूड़ सोवत में काटै जाय। करै विश्वास घात जो भाय।।
मिलै फल देर न लागै आय। जौन जस करै तैस फल पाय।।
मानिये सब यह मम बचनाय। इसे हम लंक को देंय पठाय।४२७०।

होश जब ह्वै है तब फिरि आय। लड़यौ फिरि जा के मन जस आय।।
अभी तो पड़ा होश नहिं भाय। सुमिरि सिय राम नाम बृद्धाय।।
दहिन पग पकड़ैं झुकि कै भाय। घुमावैं सात बार तेहि भाय।।
फेंकि दें लंक द्वार पर जाय। लगै ठोकर फाटक गिरि जाय।।
शब्द पुर भर में जावै छाय। चेत कछु देर में होवै आय।४२८०।

लखै लंका केहि बिधि हम आय। उठै निज भवन में पहुँचै जाय।।
यज्ञ की सब समान भरवाय। जाय देबी मठ के समुहाय।।
निशाचर चारों तरफ़ से भाय। खड़े होवैं कर लै शस्त्राय।।
करै तब हवन धूम से भाय। शब्द स्वाहा का परै सुनाय।।
धुवाँ असमान में छायो जाय। उठैं लपटैं सुगन्ध की भाय।४२९०।

महक बहु दूरि तलक बहि जाय। बिभीषण कहैं प्रभू सुखदाय।।
यज्ञ घननाद करत लंकाय। पूर जो होवै मरै न भाय।।
मातु काली को बर हो जाय। करो जलदी अब प्रभू उपाय।।
यज्ञ विध्वंश होय दुख जाय। कहैं प्रभु पवन तनय सुखदाय।।
जाव कछु वीर संग लै धाय। यज्ञ विध्वंश करावो जाय।४३००।

कार्य्य यह होय विलम्ब न लाय। चलैं चरनन धरि शिर मरुताय।।
संग नल नील सुभट मरुताय। अंगदौ गव गवाक्ष संग जाय।।
चलैं सुग्रीव दधिबल धाय। मयन्दौ जाम्वन्त संग जाय।।
पहुंचि श्री लंक पुरी हर्षाय। सरोवर एक बना तहँ भाय।।
भरा निर्मल जल मीन देखाय। राक्षस चहुँ दिशि घेरे भाय।४३१०।

खड़े हैं अस्त्र लिहे दुखदाय। हवन का कुण्ड बड़ा गहिराय।।
सामने मंदिर के हैं भाय। टाल तन्दुल यव तिलन क भाय।।
धूप जयफर औ लौंग मिलाय। शुद्ध मल्यागिरि गूगुर भाय।।
नारियल और कपूर मिलाय। सुगन्धैं कई भाँति की भाय।।
सबै मेवा ता में ढिलवाय। सोवरन कलशन घी भरवाय।४३२०।

धरायो शोभा कही न जाय। पताका बन्दन लागे भाय।।
पवन से फहर फहर फहराय। बना मंदिर लाले पथराय।।
मोहारा यकइस ता में भाय। झरोखा दस चहुँ ओर देखाय।।
हवा खुब भीतर आवै जाय। सोबरन के दरवाजा भाय।।
केंवारा चाँदी के चमकाय। कोस ढाई के गिर्द में भाय।४३३०।

गोल चहुँ दिशि ते भवन सोहाय। लिखा श्री काली नाम देखाय।।
भवन के भीतर बाहेर भाय। बना पैकरमा चहुँ तरफ़ाय।।
चहुँ दिशि दर गोले सुखदाय। उँचाई लखत शीश चकराय।।
भवन अति सुन्दर मानौ भाय। भवन के दर जो यकइस भाय।।
बराबर इनके हैं सुखदाय। पुरी भर के सब नित प्रति आय।४३४०।

करत हैं दर्शन प्रेम लगाय। साल भर में दुइ दिन हर्षाय।।
दर्श हित कुम्भकर्ण तहँ जाय। मूर्ति काले पाषाण कि भाय।।
हाथ चौदह ऊँची सुखदाय। बैठि पच्छिम मुख मठ में भाय।।

लगाय वीरासन तहँ माय। भुजा हैं सौ ता में सुखदाय।।
बने खप्पर पचास भुज भाय। पचास में असि को दीन बनाय।४३५०।

धन्य विशकर्मा की लीलाय। जड़ा मस्तक में हीरा भाय।।
लखत ही नैन जाँय चौंधाय। बने सब वस्त्र मूर्ति में भाय।।
तैल मृग मद युत लागै आय। भाल में तैल सिंदूर मिलाय।।
लगै नित देखत ही बनि आय। जीह मुख लाली बाहेर भाय।।
लटकती देखि के होश उड़ाय। जलैं बहु दिया राति दिन भाय।४३६०।

गऊ घृत और कपूर मिलाय। मणी ताखेन में धरी देखाय।।
राति में दुति अति जावै छाय। भोग नाना बिधि के तहँ लाय।।
लगावैं पुर वासी नित आय। रचा मय दानव लंक बनाय।।
नहीं कमती कोइ चीज़ कि भाय। भरी सब रिद्धि सिद्धि सुखदाय।।
खाय जा के जो मन में आय। नाग पुर इन्द्र पुरी शरमाय।४३७०।

बनी ऐसी सुन्दर सुखदाय। आरती अपनी अपनी लाय।।
करैं पुरवासी नित हर्षाय। बैठि तहँ मेघनाद हर्षाय।।
करावै यज्ञ प्रेम से भाय। लख्यौ यह भालु कपिन तहँ जाय।।
लीन सब मातु को शीश नवाय। सरोवर में पहुँचैं सब धाय।।
भरयौ मुख में जल जो कछु आय। जाय तहँ ऊपर ते मूँह बाय।४३८०।

दीन जल छोड़ि हवन में भाय। निशाचर ऊपर ताकैं भाय।।
लखै संग मेघनाद रिसिआय। कहै इन सब को मारो धाय।।
यज्ञ यह भ्रष्ट कीन यहँ आय। तयारी करो युद्ध हित भाय।।
चलो इन सब को देंय नशाय। वाद्य सब युद्ध के देंय बजाय।।
सेन सुनतै तयार ह्वै जाय। चलैं सब क्रोधातुर ह्वै धाय।४३९०।

जहाँ पर मुर्चा बन्दी आय। करै घननाद गरजना भाय।।
शब्द द्वै योजन तक मँड़राय। राम तब कहैं लषण सुखदाय।।
जाव लै कटक लड़न हित भाय। मारिहौ अब की तुम लघु भाय।।
आयगा समय कहाँ भगि जाय। सुनैं यह बैन लखन वीराय।।
परैं चरनन में प्रभु के धाय। राम शिर पर कर देंय फिराय।४४००।

लखन उठि धनुष बाण लै धाय। चलै कपि ऋक्ष कपी सेनाय।।
एक से एक महा सुभटाय। लड़ाई ठनै तहाँ पर भाय।।

दोऊ दिशि हा हा कार सुनाय। ऋक्ष कपि पकड़ि राक्षसन भाय।।
मही पर पटकैं देंय बहाय। मृतक जेहि निशिचर के लगि जाय।।
गिरै सेना में होश न भाय। लखै घननाद अती रिसिआय।४४१०।

उठावै अग्नि बाण दुखदाय। कहै सेना सब देऊँ जलाय।।
लषन का करैं हमारो भाय। चलावै बाण अगिनि लगि जाय।।
अनी सब तितिर बितिर ह्वै जाय। लखन जल बाण को देंय चलाय।।
शाँति सब पावक तहँ ह्वै जाय। चलैं बजरंग क्रोध करि धाय।।
खड़ा घननाद जहाँ दुखदाय। पकड़ि ले किटकिटाय के भाय।४४२०।

कहै अब तुम को कौन छुड़ाय। बड़े तुम वीर कहावत भाय।।
बीरता अब ही देंउ नशाय। उड़ै लै आसमान को जाय।।
करै द्वै घंटा खूब लड़ाय। तमाचा मुष्टिक बहु पेचाय।।
करै नाना बिधि माया भाय। पवन सुत दाहिन चरण उठाय।।
देंय उर में तब चक्कर खाय। आय नीचे फिरि ऊपर जाय।४४३०।

कहै धनि धन्य पवन पूताय। लड़ै फिरि अस्त्र लै कर दुखदाय।।
पवन सुत के नहि नेक बिसाय। अंग सब वज्र का सुर मुनि गाय।।
समुझि मन भागि मही पर जाय। पकड़ि अंगद से होवै भाय।।
बहुत कुछ दाँव करै दुखदाय। पकड़ि कर अंगद पीठी लाय।।
मही पर पटकैं चटि उड़ जाय। उछरि सुग्रीव गगन में जाय।४४४०।

करैं तँह मारि तमाचन भाय। लड़ै दुइ घड़ी वहाँ रिसिआय।।
चलै बस नहीं भूमि पर आय। मयंदौ द्विविद पकड़ि लें धाय।।
गिरावैं तस अन्तर ह्वै जाय। करै माया बहु रूप बनाय।।
कपी औ ऋक्षन ते भिड़ जाय। मारि व्याकुल करि दे दुखदाय।।
ऋक्ष कपि मूर्च्छि गिरैं महिं भाय। नील नल के सन्मुख जस आय।४४५०।

पकड़ि लें दोनों कर तहँ धाय। चहैं अब मारैं खूब अघाय।।
निबुकि के दूर परै दिखराय। न जानैं माया का तन आय।।
क्रोधि करि किटकिटाय रहि जाँय। चलै तब ऋक्षराज समुहाय।।
अनेक ते एक होय शरमाय। कहैं तब जाम्वन्त गोहराय।।
खड़ा रह भागि कहाँ को जाय। कहै कर जोरि सुनो बृद्धाय।४४६०।

लड़ैं हम आप से का मूँह लाय। पकड़ि पग फेंक्यो अति बलदाय।।
गयो सब हमरो होश उड़ाय। लड़ेन हम बड़े बड़े शूराय।।
न हारेन कहीं विजय करि आय। कीन मद चूर आप बृद्धाय।।
थाह तव बल की कही न जाय। पिता की आज्ञा ते हम आय।।
नहीं तो छिपि कहीं बैठित जाय। मरैं प्रभु सन्मुख रण में भाय।४४७०।

पाप सब नाश होंय दुख जाय। हाँक दै चलै लषण पर धाय।।
दोऊ कर भाला लीन्हे भाय। चलावै बड़े बेग से आय।।
काटि चट बाण ते दें लषनाय। उठावै बरछी फेंकै भाय।।
लषण तेहि शर दे देंय पराय। गदा औ साँग बहुत अस्त्राय।।
चलावै चलै न एक उपाय। समुझि जाय मन में बचैं न भाय।४४८०।

समय अब हमरा गा नियराय। कहैं तब लषण सुनो दुखदाय।।
वार हमरा अब रोकौ भाय। चलावैं लषण बाण रिसिआय।।
काटि कृपाण से देय गिराय। फिरै फिरकी सम ठौरै भाय।।
देखत बने कौन कहि पाय। दोऊ कर साधे असि चमकाय।।
बाण की सान न नेरे जाय। लषण के बाण एक से भाय।४४९०।

होंय दस दस से सहस्त्र देखाँय। सहस से दस सहस्त्र ह्वै जाँय।।
फेरि सौ सहस चलैं सन्नाय। न बेधैं मेघनाद तन भाय।।
दुरावै अति ते अति रिसिआय। कहै हे बीर सुनो लषनाय।।
न बेधैं बाण अंग मम भाय। सिखेन हम तात से बहु बिद्याय।।
जौन अब समर में होत सहाय। फेरि उड़ि के अकाश को जाय।४५००।

वहाँ से गरजत भूमि को आय। सेन बहु गिरै मही कपि जाय।।
उदधि का जल बाहर बहि जाय। कच्छ औ मच्छ मरैं बहु भाय।।
एक ते एक जाँय टकराय। गिरैं बहु बिटप भूमि पर आय।।
मरैं पक्षी मुख पर फैलाय। पंख कितनेन के कटि के भाय।।
फटकते कितने चोंच को बाय। लषण तब सिया मातु को ध्याय।४५१०।

चलावैं शर सन्नाते जाँय। नाभि में लगैं पार ह्वै जाँय।।
गिरै महि मुर्च्छित ह्वै के भाय। चेत कछु होय भजे रघुराय।।
कहै प्रभु पठवौ बैकुण्ठाय। सिंहासन दिब्य आय तहँ जाय।।

त्यागि तन रूप चतुर्भुज पाय। बैठि सिंहासन अति हर्षाय।।
कहै जै जै श्री रघुपति राय। पारषद चलैं यान लै धाय।४५२०।

देव नभ बाजा रहै बजाय। पहुँचि बैकुण्ठ बिष्णु ढिग जाय।।
रमा हरि आशिष दें हर्षाय। जाव अब सुख भोगो वीराय।।
चलै तब क्षीर समुद्र ते धाय। पहुँचि जाय जहाँ भक्त बहु भाय।।
यान तहँ पड़ा सुभग सुखदाय। बैठि कहि राम राम सुखदाय।।
खबरि यह रावण के ढिग जाय। जूझिगा मेघनाद पुत्राय।४५३०।

सुनत ही उठै गिरै बिलखाय। चेत नहिं रहै देर तक भाय।।
मँदोदरि रानी तहँ पर आय। देय मुख गंगा जल को लाय।।
करै पंखा मुख पर मन लाय। होश में आवै रावण राय।।
कहै रानी तब बैन सुनाय। कहा नहि मान्यौ सो फल पाय।।
युद्ध की करो तयारी जाय। देर अब काहे रह्यौ लगाय।४५४०।

प्रभु के हाथन तन बिनशाय। चलो हरिपुर बैठो हर्षाय।।
सुनै यह बैनि नारि के राय। उठै शिव सुमिरि चलै बलदाय।।
पहुँचि दरवाजे पर जब जाय। हुकुम तब कटक में देय कराय।।
सजै बहु सेन दौरि तहँ आय। दशानन जहाँ खड़ो देखराय।।
सवारी रथ की पर तब भाय। बैठि कै चलै संग सेनाय।४५५०।

पहुँचि कै समर भूमि में भाय। कहै अब लड़ौ संग शेषाय।।
सुनत ही चलैं लषण हर्षाय। राम के चरनन शीश नवाय।।
संग बहु बानर ऋक्ष सहाय। लखै तब दशमुख हंसै ठठाय़।
मूल फल पाती पेट भराय। भिड़ैं मम सन्मुख कैसे आय।।
सुनत बजरंग उछरि कै जाँय। होय तब पकड़ि ज़ोर से भाय।४५६०।

तमाचा मुष्टिक मारैं राय। पवन सुत के नहिं कछु बिसाय।।
कहैं हनुमन्त सँभरि अब राय। हनौं मुष्टिक तब छाती भाय।।
कहैं औ मुष्टिक देंय चलाय। लगै तब छाती पर मुरछाय।।
गिरै धरती पर चेत न भाय। निशाचर बहुत तरे दब जाँय।।
मरैं चट पहुँचैं हरि पुर जाय। होश में आवै रावण राय।४५७०।

बैठि चट रथ पर देय उड़ाय। पहुँचि रथ लंक पुरी में जाय।।
उतरि बैठे तन मन शरमाय। कहै मम अहंकार दुखदाय।।

छानि बल लियो न चलत उपाय। मनै मन बार बार पछिताय।।
चलै फिरि रथ को देय घुमाय। कटक में पहुँचि कहै रिसिलाय।।
लड़ाई करौ लषण ते भाय। बैन सुनि कहैं लषण हे राय।४५८०।

संभरिये बाण हमारो आय। खैंचि धनु मारैं शर रिसियाय।।
चलें भन्नाय सर्प सम धाय। दशानन बाण ते बाण को भाय।।
काटि महि ऊपर देय गिराय। लषण छा घंटा बाण चलाय।।
काटि दश मुख सब देय हटाये। लषण ते कहैं दशानन राय।।
न लागै बार तुम्हारो भाय। लड़ैं हम प्रभु के संग में भाय।४५९०।

बेधिहैं शर मेरे तन आय। बाण बहु कटक में देय चलाय।।
गिरैं कपि रिक्ष बिकल मुख बाय। बिभीषण कहैं प्रभू सुखदाय।।
आप बिन को अब करै सहाय। तुरत ही धनुष बाण ले धाय।।
युद्ध में पहुँचि जाँय रघुराय। निरखि रावण शर देय चलाय।।
काटि दुइ खण्ड करैं रघुराय। बाण तब कोटिन रावण राय।४६००।

चलावैं काटैं श्री सुखदाय। खींचि धनुबाण श्रवण ढिग लाय।।
चलावैं प्रभु पहुँचैं सर्राय। मंत्र परभाव बड़ा है भाय।।
एक ते एक लाख ह्वै जाँय। बेधि सब तन में जावैं भाय।।
रुधिर की धार चलाय हहराय। देखि तन दशा दशानन राय।।
खेंचि शर भूमि में देय गिराय। बाण प्रभु दूसर देंय चलाय।४६१०।

काटि सब शिर भुज देवै जाय। फेरि शिर भुज तुरतै हरियाय।।
कहै रावण तब नमः शिवाय। प्रगट ह्वै शम्भु राम ढिग जाँय।।
कहैं वाको बरदान सुनाय। शीश यह कोटि बार रघुराय।।
चढ़ाइस हम पर है बलिदाय। दीन आशिष तब हम हर्षाय।।
एक से कोटि क फल मिलि जाय। कटैं या बिधि ते जब सुखदाय।४६२०।

मरै तब रावण आशिष जाय। होंय हर अन्तर भेद बताय।।
प्रभू जानैं कोइ जान न पाय। बाण रघुनाथ के अति बिकंटाय।।
काल के काल को देंय नशाय। लागतै शिर भुज चट कटि जाँय।।
देरि नहिं लागै फिर उगि जाँय। भुजा शिर आसमान मंडराँय।।
निरखतै बनै गिनै को भाय। देव मुनि तन मन से रहे ध्याय।४६३०।

हतौ अब बेगि श्री सुखदाय। पूर आशिष शिव को भै भाय।।
कटैं भुज शिर फिर नहिं दिखलाय। मारि कै बाण श्री रघुराय।।
बेधि धड़ टांगैं दीन्हों भाय। गिरै फिर उठै रुँड बलदाय।।
मरै नहिं दोउ दल देखैं भाय। सुरति सीता माता में भाय।।
लगी यह जान्यौ श्री रघुराय। बाण नाभी पर छाँड्यौ भाय।४६४०।

लागतै ध्यान गयो बिसराय। गिरत ही धरनि छूटि तन भाय।।
रूप तब मिल्यौ दिब्य सुखदाय। राम सिय राम राम कहि भाय।।
सिंहासन पर बैठ्यौ मुसक्याय। उठा सिंहासन तब सुखदाय।।
देव नभ ते लखि लखि हर्षाय। फूल प्रभु के ऊपर बरसाय।।
बजावैं बाद्य रहै गुण गाय। कटे सब के बंधन रघुराय।४६५०।

करैं अब निर्भय जप पूजाय। पहुँचिगा दशमुख हरिपुर जाय।।
यान ते उतरि परयौ हर्षाय। गयो पितु मातु के ढिग तब धाय।।
निरखि हरि उठि उर में लियो लाय। परसि पितु मातु के चरनन भाय।।
बैठिगा चट आशिष को पाय। दूध तब एक कटोरा भाय।।
पिलायो पीठी पर कर लाय। कह्यौ अब द्वार पाल हो जाय।४६६०।

दोऊ भ्राता मिलि कछु कालाय। रही बाकी एकै शापाय।।
वह मिटि जैहै समय पै आय। उठ्यौ तब दशमुख अति हर्षाय।।
गयो जहँ कुम्भकरण बैठाय। निरखतै उठि लपट्यौ हर्षाय।।
मनो मणि फर्ण कै मिलिगै भाय। पकरि कर से कर दोउ सुखदाय।।
चले फाटक पर पहुँचैं जाय। भये दोऊ द्वार पाल सुखदाय।४६७०।

कहैं जै जै जै त्रिभुवन राय। रहै दुइ द्वारपाल जो भाय।।
गये बैकुण्ठ में बैठे जाय। सिया बर पावक बाण उठाय।।
चलावैं सब निशिचर जरि जाँय। मिलै तन दिब्य सबै सुखदाय।।
चढ़ैं यानन पर अति सुख पाय। पहुँचि जाँय बैकुण्ठे हर्षाय।।
उतरि बैठैं सब हरि गुण गाय। कहैं प्रभु सुनो बिभीषण राय।४६८०।

चलो सीता ढिग लषण लिवाय। चलैं प्रभु लषण बिभीषण राय।।
पहुँचि जाँय बन अशोक में आय। परै सिय चरण राम के भाय।।
देंय आशिष प्रभु तन पुलकाय। बिभीषण लषण सिया के जाय।।

परैं चरनन तन मन हर्षाय। सिया कर सिर पर देंय फिराय।।
कहैं प्रभु चरनन प्रीति दृढ़ाय। यान बहु हरि पुर से मंगवाय।४६९०।

कहैं प्रभु बैठैं कपि ऋक्षाय। बैठि जाँय ऋक्ष कपी हर्षाय।।
बिभीषण लषण संग में भाय। राम सिया एक यान में आय।।
बैठि जाँय शोभा कही न जाय। उठैं तब यान चलैं सर्राय।।
पहुँचि जाँय अवधपुरी में आय। लखैं पुरवासी यह सुख भाय।।
बजै घर घर में अनन्द बधाय। उतरि यानन ते कपि ऋक्षाय।४७००।

परैं गुरु वशिष्ठ के पग धाय। राम सिया लषण बिभीषण राय।।
परैं श्री गुरु के चरनन जाय। उठाय के गुरु उर लेंय लगाय।।
कहैं आनन्द करौ अब जाय। राम सिया लषण चलैं हर्षाय।।
परैं माता के चरनन आय। देंय आशिष माता मन भाय।।
फरौ फूलौ सब जन सुख पाय। सुनैं तब भरत शत्रुहन भाय।।
पहुँचि जाँय नन्दि ग्राम ते आय। चरन पर राम सिया के धाय।
देंय आशिष बैठैं हर्षाय। कहैं यश कृष्ण दास यह गाय।।
पढ़ैं औ सुनै गुनै बनि जाय।४७१५।

"श्री राम जी के 'राज्य तिलक' की कथा वर्णन"

कजरीः- सोहैं रतन सिंहासन ऊपर प्रभु के संग किशोरी जी।
नख सिख दिब्य सिंगार अनूपम प्रेम कि बोरी जी।
झाँकी देख के सुर मुनि मोहे परी ठगोरी जी।
बिधि ने मानहु छबि त्रिभुवन की लीन बटोरी जी।
बाँटि दीन है राम सिया को कर बर जोरी जी।५।

राज्य तिलक के समय मुदित पुर के नर गोरी जी।
सातौं सै रानी दशरथ की भईं चकोरी जी।
रहीं झरोखन झाँकि छकैं छबि तृण को तोरी जी।
श्री वशिष्ठ जी कीन्ह तिलक फिर द्विजन हंकोरी जी।
मातु कौशिल्या और सुमित्रा कैकेयी इक ठौरी जी।१०।

बार बार आरती उतारैं मानहु भोरी जी।
गद्गद कण्ठ बोलि नहिं पावैं प्रेम फंसोरी जी।

देहिं अशीष मनै मन माता चित छबि जोरी जी।
करैं निछावर मणि पट भूषण भरि भरि झोरी जी।
याचक सब तन मन से हर्षित इच्छा तोरी जी।१५।

सुर मुनि जै जै करैं सुमन फेंकैं दोउ ओरी ज़ी।
गावैं सुर गन्धर्व अपसरा तानैं तोरी जी।
नाना बिधि के साज बजैं तँह घन घुमण्ड चहुँ ओरी जी।
चारौं वेद शेष शिव शारद गणपति जोरी जी।
स्तुति करैं प्रेम तन मन से सब कर जोरी जी।२०।

बिनती करि सुर नर मुनि माँग्यौ बिदा बिदौरी जी।
कृष्ण दास कहैं युगुल रूप पर सूरति मोरी जी।२२।

(२)

सावन शुक्ल पक्ष तृतिया को झूला झूल्यो सीता राम।
इच्छा भई किशोरी जी के झूलैं संग मेरे अभिराम।
अन्तर्यामी जानि गये प्रभु घट घट व्यापक राम।
गरुड़ से कह्यो लै आओ मणि गिरि जो है पड़ा अकाम।
लायो गरुड़ मणिन का पर्वत उत्तर खण्ड मुकाम।५।

मानुष पक्षी पशुन कि गति नहिं जहाँ रह्यो विश्राम।
श्री अवध में लाइ पधारयौ धन्य धन्य यह धाम।
तब से नाम पड़ा मणि पर्वत बचन मानिये आम।
बृक्ष कदम्ब हिंडोला गिरि पर प्रकट्यौ शुभग सकाम।
कोटिन भानु समान उजेरिया छाई निशिबासर तेहि ठाम।१०।

सब के मातु पिता तहँ राजैं कहत जिन्हें गुण ग्राम।
ढारैं स्वयं आप ही जारी प्रभु इच्छा बसु याम।
सखा सखिन का काम नहीं कछु केवल श्री सिया बाम।
मर्यादा पुरुषोत्तम मंगल मूरति हैं श्री राम।
झाँकी की छबि अद्भुद सोहै अगणित लज्जित काम।१५।

सुर मुनि चढ़े बिमानन निरखैं बर्षैं सुमन तमाम।
पुरवासिन रानिन दशरथ को सुर मुनि करैं प्रणाम।

भाग्य सराहैं बलि बलि जावैं हम सब बड़े निकाम।

इन सबको नित दर्शन देते करुणानिधि घनश्याम।
प्रेम भाव के भूखे स्वामी भजन करै निष्काम।२०।

नाना चरित मनोहर देखै सकै कौन तेहि थाम।
कृष्ण दास कहैं हर दम दर्शन जपै निरन्तर नाम।२२।

इति

जय श्री सीता राम

१२-६-५८
12 जून 1958
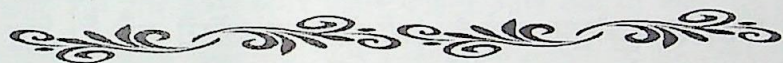
२८२ ।। श्री बाबा चाली दास जी, मेहतर ।।

(कनवाखेरा, सीतापुर)

का

जीवन चरित्र

जीवनी:

श्री 108 श्री चालीदास जी मेहतर, मुकाम कनवा-खेरा, पोस्ट व जिला सीतापुर, सरायन नदी के पार जंगल में, सड़क के पूरब समाधी है (एक कोस से ज़्यादा दक्षिण तरफ़ है)। इनको शरीर त्याग किये 48 वर्ष 9 माह हुए। इनके दर्शन को हम सीतापुर से बुधवार कार्तिक बदी 3-4 संबत 2029 (1972 ईस्वी) को सुबह साढ़े नौ बजे मोटर से गये थे। पुल टूट गया है, इसलिए मोटर सड़क पर छोड़ दी और हम लोग नाव पर गये और वापस आये। जाते समय एक ऊँची जगह पर उनके गुरु की समाधि पड़ती है, वहीं उनके एक चेलें की भी है। वहाँ भी दो साधू मेहतर रहते हैं। वहाँ दो जगह कोठरी बनी हैं। फिर नदी पर ऊँचे पर एक सोनार का फार्म है। फार्म में एक बूढ़ा मुराऊ रहता है। राम कोट के ज़मींदारों से लिया है। उसी के बीच बाबा चालीदासं की समाधी बनी है। एक कोठरी पक्की बनी है, किबाड़ लगे हैं। उसमें जाकर फेरी लगाया, कुछ देर खड़े रहे, फिर उनके चेले की समाधी पर फेरी लगाया। चाली जी के चेले का नाम मन्नी राम था।

वहाँ पर चार आदमी रहते हैं। एक आदमी आया एक कुरसी लाया। उस पर बैठे। संग में उमाशंकर अवध बिहारी, बृज बिहारी, बृज बिहारी का लड़का अरुन जो मोटर चलाता था संग में थे। सब लोग कुछ समय वहाँ रहे फिंर नदी पर आये। नाव से उतर कर बाबा के गुरु की समाधी पर फेरी लगाकर और कुछ देर रुक कर 11 बजे लोहार बाग घर पर आ गये। पहले चाली का शरीर छूटा, उसके बाद उनके चेले का छूटा, फिर गुरु का छूटा, फिर चाली के गुरु भाई का छूटा। बाबा चाली दास जंगल में नदी के किनारे पर रहते थे। जब बहुत बाढ़ आई तो सबके कहने से ऊँचे पर चले गये। शरीर छूटे के बाद जब समाधि बन गई तब फिर बाढ़ आई। पाँच हाथ ऊँचे दीवार तक पानी चढ़ गया। कोठरी में भर गया, काफी ऊँचाई तक पानी पहुँच गया था। कई लोग पुराने हैं वे पूछने पर बताते थे।

चाली बाबा एक छोटी डलिया में बताशे धरे बाँटा करते थे। वह चुकते नहीं थे। यह बात सब जानते थे और कुछ नहीं जानते थे। चाली ने 18 की उम्र से 28 की उम्र तक फ़ौज में नौकरी की। झाड़ू-बुहारु का काम था। सब खुश रहते थे। उनको वैराग्य हो गया। अपने आप भोजन एक बार बनाते थे। दोनों समय थोड़ा थोड़ा खाते थे। 50रु० माहवार वेतन मिलता था। थोड़े में बसर करते बाकी गरीबों को बाँट देते थे। काशी में राजा हरिश्चन्द्र के समय कलुवा भंगी था। उनके परिवार के थे। छोटे पर के सदाचारी थे। चारों धाम घूमे फिर सीतापुर आये। महमूदशाह मेहतर, कनवाखेरा नदी के किनारे झोपड़ी में स्त्री पुरुष रहते थे। एक झोंपड़ी में गाय रहती थी। उनसे कहा, “बाबा हमें भी कुछ बताओ”। वे बोले, “हम तो राम राम करते हैं”। बस चाली जुट गये।

चाली दास जी नौकरी छोड़कर जंगल के करीब रहने लगे। वहाँ बैठ गये और राम राम करने लगे। पहिले दाहिनी आँख उठी तो कहा “हम राम राम नहीं छोड़ैंगे, आँख चाहे फूट जाय”। आँख थोड़े दिन में फूट गई। फिर बाँई आँख उठी तो चाली दास ने कहा "यह भी फूट जाय हम राम राम नहीं छोड़ेंगे"। वह भी फूट गई। फिर थोड़े दिन में चाली दास जी की दोनों हिय की आँखें खुल गईं। तब चाली ने डिप्टी कमिश्नर से कहा “एक शालिक राम जी की मूर्ति मंगा दो”। तब साहब ने किसी पंडित से कह कर मंगा दिया था। चाली दास उसका पूजन करते थे। तब डिप्टी कमिश्नर ने सड़क बनवा दी। रहने की जगह बन गई। बाजे टाँग दिये गये। भगवान के चित्र लगा दिये गये।

इतवार को हिन्दू, मुसलमान, अंग्रेज जाने लगे। चालीदास पहले सीता राम कहते थे जो वहाँ आता था। एक बार थोड़ा खाते थे। चौदह साल राम राम किया। एक दिन पंडित से कहा “आज शरीर छोड़ेंगे हमें गीता सुना दो”। चाली बाहर बैठ गये। अर्जुन गीता सुनकर शरीर छोड़ दिया। चाली दास की समाधि बनी है। उनकी दशा विचित्र हो गई थी जो वर्णन में नहीं आ सकती। जो कुछ थोड़ा हमें हाल में बताया गया है वह हमने लिखा है। हमें उनकी बातों में ऐसी मस्ती आ गई कि आँसू चलने लगे। फिर वहाँ से आकर थोड़ा लिखा। बहुत बिस्तार से बताया था। हमारा हाल भी कुछ बताया। नाभा जी के समय का कुछ हाल बताया था। उन्होंने कहा "तुम्हारा काम हो गया, तुम पाप पुण्य से अलग हो गये। मान बड़ाई नरक की निशानी है। समय भी करीब आ गया है। जहाँ मान बड़ाई है वहाँ आकर लोग समय बरबाद करते हैं। भजन-ध्यान

सुमिरन की यंह बड़ी बाधा है। समय स्वाँस अनमोल पाकर खाली न छोड़ना चाहिए। समय आकर फिर नहीं मिलता"। जहाँ उनकी समाधि है उस से कुछ दूर नज़र अली शाह की समाधि है। बसन्त को मेला लगता है। वहाँ भी एक हठयोगी छः हजार वर्ष के रहते हैं। हम सब बातें लिख नहीं सकते। थोड़ा लिखा है। कासिमपुर गाँव नदी पार है। वहाँ समाधि है और एक बाग है। हम 18 की उमर में वहाँ दो बार गये हैं।

।। श्री चालीदास जी ।।

दोहाः- राम नाम सुमिरन करै पावै मुक्ति औ भक्ति।
चाली कह पासे सुलभ और कोई नहिं जुक्ति।।
नैन श्रवन जियतै खुलैं राम सिया दरशाय।
चाली कह सुर मुनि मिलैं सिर कर धरि लिपटाय।।
षट चक्कर चलने लगैं चाली कह भन्नाय।
कमल सातहू जाँय खिलि स्वरन से महक उड़ाय।।
नागिनि जगि शुभ लोक सब तुम को देय घुमाय।
चाली कह देखत बनै मुख से बोलि न जाय।।
अमृत घट में पान हो अनहद की हो तान।
चाली कह सुनि मस्त हो रहै न तन का भान।५।

ज्ञान - ध्यान - विज्ञान सब राम नाम के बीच।
चाली कह सुमिरन करौ छूटै भव की कीच।।
चौदह बरसै नाम जप तन मन प्रेम से कीन।
चाली कह तब कृपा निधि पास आपने लीन।।
मेहतरि से बेहतरि भयो धन्य जानकी नाथ।
चाली कह सुमिरन करो तब करि देंय सनाथ।।
माया चोरन को लिहे जाय बैठि गई दूरि।
चाली कह सुमिरन करो बने हो कायर कूर।।
शान्ति दीनता लेव गहि आप को देय मिटाय।
चाली कह मन होय बसि द्वैत भाव भगि जाय।१०।

प्रेम भाव विश्वास अरु सत्य आय लिपटाय।
चाली कह सो धन्य है नर तन का फल पाय।।

आंख फूटि दोनों गईं राम नाम नहिं छूट।
चाली कह हिय की खुलीं कौन सकै अब लूट।।
हर हनुमति रक्षा करैं गदा त्रिशूल है हाथ।
चाली कह सुमिरत रहत सिया सहित रघुनाथ।।
पर स्वारथ परमार्थ बिन नर तन बिरथा जान।
चाली कह तन त्यागि के नर्क को कीन पयान।१४।

(१)

पदः- जल भोजन हल्का जब होवै। तन मन नाम से अपना नोवै।।
आलस नींद भागि जब जावै। तब आनन्द निज दिल में आवै।।
जो कछु देखै सुनै न भाषै। तब अनुभव की फरती साखैं।।
चाली कहैं पहिल यह साधन। तब वह बचि जावै सब बाधन।४।

दोहाः- जब आज्ञा सिय राम की कहने की ह्वै जाय।
चाली कह तब ही कहै तब साधक बचि जाय।१५।

बार्तिकः- फिर कहने लगे नाम की महिमा बहुत अपार है, अकथ है, अलेख है, अगम है। शेष शारदा नहीं जान सकते। "राम जी" नाम का प्रभाव नहीं कह सकते तब और देबी देवता क्या कहैं। जो जितना देखा सुना है उतना कहा है। उसी तरह हम भी थोड़ा कहते हैं। सुनोः-

नाम से जो जो जाना सो लिखाते हैं। नाम से हिय की आँखें खुलीं, रूप की प्राप्ति, धुनि की, लय की, शून्य की, चारौं ध्यान की, चारौं अजपा की, पिपीलिका मार्ग की, मीन मार्ग की, विहंग मार्ग की, सुषमना की, अनहद बाजा की, अमृत पान की, कुण्डलिनी की, सब लोकन की, छइउ चक्कर की, सातौं कमलन की, दोनों स्वरन से तरह तरह की महकन की, देवतन के घर खान पान की, सब लोकों से तारों की, सारी सृष्टि अपने शरीर में देखी, सारी सृष्टि में अपने शरीर को देखा, अन्तर्ध्यान होना, काया प्रवेश होना, शरीर के चौदह भाग अलग अलग करना, फिर एक में मिल जाना, सब रूप धारन करना, फिर अपने रूप में आ जाना।

तमाम हिन्दू सन्त और भाई नाम से अजर अमर हैं, मुसलमान और उनकी पत्नी अजर अमर हैं। जो जानते हैं वे मानेंगे कहाँ तक लिखवावैं।

दोहाः- चाली कह चलना पड़ी होय हिसाब शुमार।
चित्रगुप्त सब लिखत हैं जो मन उठत विचार।।

नर तन की सब इन्द्रियाँ होवैं वहाँ गवाह।
शुभ कर्मन बैकुण्ठ दें अशुभ से नर्क अथाह।।
धर्म राज बैठे वहाँ चित्रगुप्त के पास।
चाली कह उनको सबै गुन औगुन का भास।।
सच्चा प्रभु दरबार है सच्चा है इन्साफ़।
चाली कह सुमिरन करै सब ह्वै जावै माफ़।१९।

(२)

पदः- सियाराम मोहिं गले लगा लो पास खड़े मुस्क्याते हो।।
नाम तुम्हार जपै तन मन से वाके हाथ बिकाते हो।।
हर दम वापर सूरति राखत मुक्ति भक्ति के दाते हो।।
चाली अधम खड़ा कर जोड़े काहे देर लगाते हो।४।

चाली की यह विनय सुनकर महाराज और महारानी जी ने चाली का एक एक हाथ पकड़कर बच्चों की तरह दुलराया और कहा "हम तुम्हारे सामने हर समय रहेंगे और हर जगह तुम हमारे साथ रहोगे।" फिर चाली के सामने छटा छबि सिंगार की अद्‌भुत झाँकी हो गई।

दोहाः- ना जीने की खुशी है भक्तों न मरने का डर है।
राम नाम जप के परताप से काम हमारा सर है।२०।
निर्भय औ निर्बैर हमेशा हर हनुमान का बर है।
चाली कहैं चलौं साकेतै जो हमार निज घर है।२१।

(३)

पदः- नाम कि धुनि जो ररंकार है कर्म रेख पर मेख मार है।
सब दिशि सुनिये एक तार है चाली कह सब सुख का सार है।।

(४)

पदः- धन्य वे नर नारि हैं जे प्रेम से सुमिरन किया।।
नाम धुनि परकाश लय औ सामने रघुबर सिया।।
देव मुनि जै जै करैं बरसै सुमन हरषै हिया।।
चाली कहैं तन छोड़ि कै साकेत में बासा लिया।४।

दोहाः- कन कन में सिया राम हैं, कन कन में प्रिय श्याम।
कन कन में कमला बिष्णु हैं चाली करें प्रनाम।२२।
सबै पदारथ पास हैं बनि जावै जो घूर।

राम नाम सुमिरन करै यही सजीवनि मूर।२३।

सन्मुख सीताराम हों सुनै नाम का तूर।

चाली कह सो भक्त है प्रेम में चकना चूर।२४।

बार्तिकः- चाली की पहली अवस्था में यह मन में विचार उठा कि क्या मुसलमान जो भजन करते हैं भगवान के यहाँ अलग अलग बैठारे जाते हैं या एक ही जगह। तो आकाश बाणी हुई और यह शेर सुनाई दी:

शेरः- फ़लक पर शोर यह बरपा रसूलिल्लाह आवेंगे।

मेरे चाली तेरे मन के सखुन को हल करावेंगे।।

फिर मोहम्मद साहेब आये, चाली को हृदय से लगाया और कहा "वहाँ जाति की ज़रूरत नहीं है। जो परमेश्वर का भजन करता है वह उनकी परम्परा में हो जाता है। भगवान उसे अपने हाथ से दिब्य बस्त्र पहनाकर, सिर पर मुकुट लगाकर सिंहासन पर बैठाते हैं। सब एक ही जगह राखे जाते हैं। जो जैसा भजन किया है उस रीति से उनकी सजावत, सिंहासन मिलते हैं। वहाँ भी नम्बर लगे हैं, इतना फरक है।" चाली की शंका दूर हो गई, चरनन पर पड़ गए। रसूल ने उठा कर उनके पेट व माथे की खाक अपने कपड़े से साफ़ किया, फिर सर पर हाथ फेरा और अन्तर्ध्यान हो गये। भगवान के अनेक नाम हैं। जो जिस नाम से उनको भजता है उसी नाम से वे मिलते हैं।

दोहाः- यह सृष्टि का खेल रचा ऐसा, कोई आता कोई जाता है।

चाली कहैं हर दम ख्याल रहै, सिया राम जगत पितु माता हैं।।

(५)

पदः- हिन्दू मुसलमाँ सैकड़ों साकेत बासी हो गये।

चाली कहैं हम ध्यान करिकै पहुँचि देखा हो गये।

सुर मुनि की बानी सब सही हरि नाम बीजक बो गये।

तन मन लगा सुमिरन किया तब सब निवासी हो गये।४।

(६)

पदः- जियतै में सब प्राप्त भया सो जीवन मुक्त कहाता है।

चाली कहैं तब वह भक्त भया हरि रूप रंग बनि जाता है।

परमानन्द उसे कहते वह दोनों दिसि विख्याता है।

सुर मुनि उसकी कीरति गावैं वह मुक्ति भक्ति का दाता है।४।

बार्तिकः- सातों समाधियों में से चार से गती होती है। लय समाधि, शून्य समाधि, प्रेम समाधि, सहज समाधि। पाँचवीं जड़ समाधि से आयु बढ़ती है अजर अमर हो जाता है पर भगवान की प्राप्ति नहीं होती है। तमाम सिद्धियाँ भी प्राप्त हो जाती हैं। भय समाधि व चोट समाधि में शरीर छूटने पर प्रेत योनि या नर्क होता है। यह ऋषियों के वाक्य हैं।

(७)

पदः- चौबिस घंटा भीतरहि जनम मरन सब होय।
चाली कह सुमिरन बिना पहुँचि सकत नहिं कोय।।

बार्तिकः- जप, पाठ, पूजन, कीर्तन, कथा, सेवाधर्म सब सुमिरन के अन्दर हैं। जिसमें मन लग जाय उसी से पार हो जाय।

(८)

पदः- लखै नैनन से सिया सरकार सुनै श्रवनन से र रंकार।
सुर मुनि सब बोलैं जै जै कार चाली कह जियते भयो पार।।

(९)

पदः- राम नाम की महिमा भक्तौं मामूली कोई जान सकै।
चाली कहैं जुटै तन मन से नेम टेम को ठानि सकै।
शाँति दीन बनि धीरज धरि के शब्द में सूरति सानि सकै।
राम सिया की झाँकी सन्मुख सुर मुनि को पहिचान सकै।४।

चौपाईः- देखै नैन सुनै दोऊ काना। रसना से नहिं जात बखाना।।
जिनके भरा हृदय अज्ञाना। ते करते अपने मन माना।।
सबसे नीच बना सो जाना। वा के खुलिगे आँखी काना।।
चाली कहैं भयो मस्ताना। तन तजि निजपुर कीन पयाना।४।

(१०)

पदः- परस्वारथ परमारथ दोउ दल बिना प्रेम के होत नहीं।
चाली कहैं सत्य यह बानी सुर मुनि सब ने यही कही।
पहले नेम टेम से सुमिरौ प्रेम आय कर लिपटैगा।
चाली कहैं देव मुनि भाखा काल मृत्यु नहिं झपटैगा।
माया मृत्यु काल औ जम गण भक्त को देखि क डरते।
चाली कहैं भक्त जो सच्चे कष्ट परै नहिं टरते।६।

(११)

पदः- बिना परिश्रम नर तन बिरथा भजन कहाँ से होवै।
चाली कहैं अन्त तन तजि कै कल्पन नर्क में रोवै।
चौरासी का चक्कर छूटै राम नाम जपि लीजै।
चाली कहैं सुलभ यह मारग मन काबू करि लीजै।४।

(१२)

पदः- नाम जपने का मज़ा पाये हैं हम।
दुःख सुख सम मान कै आये हैं हम।
जिनकी रसना पर हर समय रट है रामै नाम की,
उनके चरणों को पकड़ि आये हैं हम।
चाली कहैं तन छोड़ि कै साकेत पुर आये हैं हम।४।

(१३)

पदः- हर जगह सब भक्त हैं और हर जगह भगवान हैं।
चाली कहैं भगवान ही ने दीन हमको ज्ञान है।
दीनता औ शान्ति बिन खुलते न आँखी कान हैं।
कर्म शुभ कीन्हे बिना हटता नहीं अज्ञान है।
पढ़ते सुनते लिखते हैं धरते नहीं कोई ध्यान हैं।
सुर मुनि की बानी मानकर जुट जाय तब कल्यान है।६।

(१४)

पदः- जपि राम नाम मन मारि गये जियतै बिधि लेख को टारि गये।
जम काल मृत्यु सब हारि गये चाली कहैं तरिगे तारि गये।
जे आलस नींद से हारि गये तिनको जमदूत पछारि गये।
गहि नरक कुण्ड में डारि गये चाली कहैं बिगड़ बिगाड़ गये।४।

बार्तिकः- साधू हो या गिरही, जिसके मन में द्वैत घुसा है उसकी गती नहीं होती है। उसमें दया धर्म नहीं है। प्रेत योनि या नर्क होता है। पापी की संगति करने वाले को पापी का आधा पाप उसे मिलता है। जब शरीर छूटता है तब उसे जमदूत नर्क ले जाते हैं। नाना प्रकार के कष्ट देते हैं तब कौन सहायता करै। वहाँ तो बुद्धि भ्रष्ट है, सूझता नहीं है। मन मति से कुमति की संगति हो जाती है। यह नर तन पर उपकार और भजन के लिए मिला है। ब्राह्मण का शरीर सब से उत्तम माना गया है। ऋषी-मुनी कह गये हैं "जो पापी से भाषन करता है उसके ऊपर पाप का असर आ जाता है। वह जब अच्छे दस मनुष्यों से भाषन

कर ले तो उसका पाप नाश हो। जिसके सामने पापी निकले और वह जानता हो कि यह पापी है तो तीन बार राम-राम-राम या श्याम-श्याम-श्याम या नारायण-नारायण-नारायण कह दे तो पाप उस पर असर न करैगा। यही उपाय इसकी है। जो नहीं जानता उसे कुछ पाप न व्यापैगा।

जो बड़ा पापी है उसको जै बार देखोगे तै गऊ मारने की तुम पर हत्या लगेगी, यदि तुम जानते हो। जो नहीं जानता उसे कुछ न व्यापैगा। ऋषी-मुनी कह गये हैं "जहाँ पर बहुत लोग बैठे हैं उस पर दरी या कोई कपड़ा बिछा है उस पर अपना वस्त्र बिछा कर बैठो। पापी धर्मात्मा सब बैठे हैं, सब का असर तुम पर आता है। अपना वस्त्र बिछाने से तुम पर पापी का असर न आवैगा।

ऋषी मुनियों के वाक्य पर चलने से ही तुम्हारा कल्याण होगा। जिनके दया-धर्म नहीं है वे घोर पापी हैं। दूसरों को मारते काटते उन्हें अच्छा लगता है। वही मरने पर जमदूत बनाये जाते हैं। यह उपदेश हमें शंकर भगवान और हनुमान जी ने दिया था। जब तक शरीर है तब तक दया-धर्म परउपकार करता रहे। ब्यास जी ने यही बताया और सिद्ध सन्तों का भी यही मत है। कलियुग महाराज अपने परिवार नीच कौम को खूब भक्त बना रहे हैं। ऊँची कौम को नीचा दिखा रहे हैं। देखो! ऐसे ही अपने परिवार की तरक्की सब को करना चाहिए।

खान, पान और प्राण का लोभ लगा है। इससे नीचे गिर जाते हैं। कर्म की गती कर्म करने से ही मिटती है। कौन कर्म? निष्कपट होकर भगवान में लग जाय तब मिट जाय। जितने भक्त हुए हैं वे करनी करके हुए हैं। मनुष्य का अन्मोल तन बृथा में न जाय। कमर कसकर पर उपकार में लग जाय। तुम जहाँ से आये हो वहाँ कैसे पहुँचोगे बिना शुभ काम किये। पढ़ते हो, सुनते हो और लिखते हो, दूसरों को समझाते हो। वहाँ तिल तिल का हिसाब लिखा जाता है। फिर अपने मन का करते हो। जो तुम्हारे ऊपर मालिक है उससे नहीं डरते हो। मौत को भूले हो।

चाली ने विज्ञान दशा वालों पर कहा है। उनका बाल भाव हो जाता है। उनको गंदा पानी शुद्ध पानी ऐसा मालूम होता है। सब का जूठा शुद्ध भोजन के समान है। जो कुछ खिला दो खा लेंगे। उनको हानि नहीं करेगा। तुम्हारी हानि होगी। जो देखा देखी ऐसा करते हैं उनकी गती नहीं होती। रोगी होकर मर जाते

हैं। बहुत सिद्ध सन्त हैं जो आचार विचार नहीं छोड़े। कोई आश्रम में पक्षी, कुत्ता, बन्दर, साधू, गिरही मरता है तो उस दिन सब को फलाहार दिया जाता है। उनसे कोई पूछता है तो कहते हैं, "अगर हम ऐसा न करें तो यह सब ऐसे ही झूठे सिद्ध बनेंगे। अन्त में नर्क होगा। इससे ऐसा करते हैं। आप तरते औरों को तारते हैं। उनकी भी ऊँची गती है जो एक जीव को रास्ते पर लाता है। वह परम पद पाता है। उतने ही भजन से विज्ञान दशा हो जाती है, उतने ही भजन से लाखों का हिसाब बता देते हैं। ऐसी उनमें भगवान शक्ति दे देते हैं। इसमें दिमाग़ लगाना मूर्खता है। भगवान की लीला भगवान जानें। वे सर्व शक्तिमान हैं। राम-कृष्ण-बिष्णु के सहस्र नाम हैं। जिस नाम से प्रेम हो उसी से मुक्ति-भक्ति, ज्ञान-विज्ञान प्राप्त हो जाता है। सिर्फ तन मन प्रेम से लग जाय।"

।। श्री चालीदास जी का कीर्तन ।।

कीर्तनः- तन समय स्वाँस अनमोल मिला सिया राम भजो सिया राम भजो।
चाली कहैं गुरु से नाम मिला सिया राम भजो सिया राम भजो।
सबसे आसान यह मार्ग मिला सिया राम भजो सिया राम भजो।
तन छोड़ि सो राम का धाम मिला सिया राम भजो सिया राम भजो।४।

(१५)

पदः- बचन जो गुरु का है माना वही सिया राम का प्यारा।
कहैं चाली सुनौ भक्तौं जियति ही तर गया तारा।
देव मुनि सब उसे चहते द्वैत का मूँह किया कारा।
दया उसके भरी उर में लोभ को करि दिया छारा।४।

(१६)

शेरः- जानै वही मानै वही सुख जिसके आँखी कान है।
चाली कहैं सुमिरन बिना हटता नहीं अज्ञान है।।

(१७)

पदः- महाबीर बजरंग पवन सुत राम दूत हनुमान।
अंजनी पुत्र केशरी नन्दन विद्या बुद्धि निधान।
राम सिया सन्मुख में राजत सुनत नाम की तान।
चाली पर अस दाया कीनी मुक्ति भक्ति दियो दान।४।।

पदः- सिया राम की सेवा के हित शंकर रूप धरयो हनुमान।
एक रूप ते जग को देखत मुक्ति भक्ति दें दान।

बीज मंत्र की धुनी सुनत औ अजर अमर गुन खान।
राम सिया सन्मुख में राजत जिनका रचा जहान।
ऐसा दानी देव न दूसर सुर मुनि कीन बखान।
चाली कहैं मिलै जेहि यह पद आवागमन नसान।६।

दोहाः- गुरु से जाको भाव नहिं ताको जानो दुष्ट।
चाली कह शुभ काम में कैसे होवै पुष्ट।।
अहंकार और कपट संग माया चोरन गुष्ट।
चाली कह जियतै नरक मति वा की है कुष्ट।।
संगति जब अच्छी नहीं बुद्धि गई ह्वै भ्रष्ट।
चाली कह वे हर समय बने रहत हैं नष्ट।।

बुरे काम हित खरचते दया धरम में रुष्ट।
चाली कह नैनन लखा ऐसे मन के चुष्ट।।
मातु पिता को नर्क भा मिली ऐसि औलादि।
चाली कह धिक्कार है दोनों कुल बरबादि।।
इनकी संगति जो करै सीधै नर्कै जाय।
चाली कह तलफ़ै गिरै बार बार गश खाय।।

दोहाः- राम कृष्ण औ बिष्णु के सहस नाम परमान।
चाली कह जपि जानि लो सब से हो कल्यान।।
भेद खेद को छोड़िये या से होगा नर्क।
चाली कह सुर मुनि बचन या मे नेक न फर्क।।

शेरः- दीनता औ शान्ति बिन भगवान से तुम दूर हो।
चाली कहैं थू थू तुम्हैं दोनों तरफ़ से कूर हो।।

दोहाः- दुष्ट कि संगति जो करै सो दुष्टै ह्वै जाय।
चाली कह सुर मुनि बचन चौरासी चकराय।।
परस्वारथ परमार्थ बिन भव से होत न पार।
वेद शास्त्र सुर मुनि बचन चाली कहत संभार।।

(१८)

पदः- राम श्याम नारायण भजिए सीता राधा कमला।
चाली कहैं शान्त मन होवै चोर करैं नहिं हमला।

राम कृष्ण औ बिष्णु को भजिये रमा राधिका सीता।
चाली कहैं चेतिये भक्तौं जीवन जात है बीता।४।

राघौ केशव गोविन्द भजिए सीता कमला राधा।
चाली कहैं देव मुनि बानी काटै कोटिन बाधा।
माधौ रघुपति जदुपति भजिए लछिमी राधे रामा।
चाली कहैं मिलै तब निज घर सुफ़ल भयो नर चामा।८।

दोहाः- दया धर्म हिरदय धरै दीन बने गहि शाँति।
चाली कह तेहि भक्त की छूटि जाय सब भ्राँति।३।

कीर्तनः- रसना रटि ले राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम।
चाली कहते सहश्रनाम सहश्रनाम सहश्रनाम।।

(१९)

पदः- क्रोध को जिसने है जीता वही सच्चा बहादुर है।
कहैं चाली सुनौ भक्तौं वही मेरा बिरादर है।
जियति ही सब किया करतल दोऊ दिसि उसका आदर है।
देव मुनि वेद की बानी न मानै तौन कादर है।४।

शेरः- निरादर उसका दोनों दिसि जो आलस नींद में रहेता।
कहैं चाली तजै तन जब तो जा कर नर्क में ढहेता।
सत्य का मार्ग जो गहेता वही सच्चा भगत जानो।
कहैं चाली उसे जियतै मुक्ति औ भक्ति भा ज्ञानो।४।

दोहाः- साँचा झूँठ को झूँठ मानता झूँठा झूँठ को साँच।
चाली कहैं अन्त में जम गण आय के लेते टाँच।।

छन्दः- शुभ कारज करि लेव जियत में कर्म की भूमी बनी यही।
चाली कहैं पदारथ चारिउ इसी रीति से मिलत सही।।

२८३ ।। श्री ठाकुर सुजान सिंह जी ।।
शंकर जी के भक्त
(गाँव सातौं धर्मपुर, जिला फतेहपुर)

पदः- भजिये शिवा शंभु सुखदाई।
सतगुरु से जप भेद जानि कर तन मन प्रेम ल़गाई।

हर दम झाँखी सन्मुख राजै शोभा वरनि न जाई।
मेटैं कठिन कुअँक भाल के सुर मुनि सही बताई।
अजर अमर हैं मुक्ति भक्ति दें कहँ लगि करौं बड़ाई।
कहैं सुजान सिंह कैलास में तन तजि बैठौ आई।६।

बार्तिकः- कैलास का दिन और चौथे बैकुण्ठ का दिन हमारे सब के भोग के बराबर है। जब यहाँ चार हजार वर्ष बीतते हैं तब कैलास का एक दिन भक्तों के भोग का माना जाता है। कृष्ण भगवान के लोक से हब्य अनार के दाने एक एक तोला के होते हैं वह दो दोनों में आते हैं। अनार 10 सेर का होता है। ज़मीन सोने की है। जहाँ गिरा फूटा। दाने सब छिटक गये। वै गरुड़ जी तमाम रूप धारण करके जहाँ जहाँ भगवान का हुक्म है बाँट आते हैं। बैकुण्ठ में दिब्य बसन भूसन फरते हैं बृक्षों में। आप हि आप गिरते हैं। वै गरुड़ जी बाँटते हैं। कैलास में अन्दर दिब्य भवन बने हैं। बीच में अक्षय बट है। उसके नीचे शिवा शिव रहते हैं। और सब भवनन में रहते हैं। अन्दर ठंढक नहीं है न गर्मी है। वहाँ मल मूत्र नहीं होता। सब वायू होकर रोम रोम से निकल जाता है। दोना जिनमें हब्य अनार आते हैं खाने के बाद जहाँ ज़मीन में धरौ तहाँ अन्तर हो जाते हैं। रोज़ बदली भूसन बसन की होती है। वह भी सब अन्तर हो जाते हैं। बड़ा बिस्तार है। थोड़ा लिखा है।

२८४ ।। श्री नारद जी के शिष्य - श्री सालिक राम जी गोवा यानी अहीर।।

(काशीपुरी के बासी)

दोहाः- ॐ नमो भगवते बासुदेवाय।
द्वादश अक्षर मंत्र यह जाय जपौ हरखाय।।
यही मंत्र ध्रू ने जपा अचल गये पद पाय।
नारद कह मेरा बचन मानि जपौ मन लाय।।
अमित शक्ति इस मंत्र में शेष न सकत बताय।
एक सहस मुख में लगी दुइ सहश्र रसनाय।।
दस माला की जाप में चारि घड़ी लगि जाय।
दस दिन की जप में तेरे घट के पट खुलि जाँय।।
जप जब पूरा ह्वै गयो बानी नभ ते आय।
अजर अमर तुम को किया निर्मल तुम पुत्राय।५।

पदः- दस झाँकी मम सन्मुख छाई।
सियाराम प्रिय श्याम रमा हरि शिव गिरिजा सुख दाई।
हनुमति गणपति संग बिराजैं कर जोड़े मुस्क्याई।
छबि सिंगार छटा की शोभा शेष न सकत बताई।।
सुर शक्ती सब दर्शन देते उर में बिहँसि लगाई।५।
अमृत घट से टपकै पावों अनहद सुनो बधाई।।
नागिन जगी चक्र षट चलते सातौं कमल फुलाई।
एक सहस अरतालिस किसिम की महक स्वरन ते आई।
सब लोकन में जाय की शक्ती सत्य कहौं मैं पाई।
हर शै से धुनि राम नाम की रं रं रं भन्नाई।१०।
क्षुधा तृषा औ शीत ऊश्न नहिं व्यापै नेकौ आई।।
धनुष बान मुरली कर सोहत शंख चक्र गदा पदुम स्वहाई।
कर त्रिशूल डमरु है बाजत शब्द शब्द गिनि पाई।।
बक्र तुंड के भुज हैं सोरह सब में अस्त्र चमकाई।
दहिनी बगल में गदा दबाये हनुमति परत देखाई।
सालिकराम कहैं नर नारी भजन करौ बनि जाई।१६।

दोहाः- मनु सतरूपा ने जप्यो यही मंत्र मन लाय।
तब दसरथ जी के यहाँ जन्मे चारिउ भाय।।
नैमिष क्षेत्र कहत उसे जग में है सरनाम।
चक्र तीर्थ औ गोमती बार बार परनाम।।
अवधपुरी पावन पुरी छइउ पुरीन की जान।
सालिक राम कहैं सही नारद कीन बखान।३।

२८५ ।। श्री अंधे शाह जी ।।

चौपाईः- दुष्टन की महिमा दुखदाई। बहु बिधि वेद पुरानन गाई।।
सतगुरु से लै नाम को ध्याई। दीन बनै सो बचि कै जाई।।
अपने को जो देव मिटाई। वा के पास द्वैत नहिं आई।।
सत्य प्रेम दाया सुखदाई। अंधे कहैं जियति तरि जाई।४।

दोहाः- इस बिधि को जो जान ले वही भक्त है सूर।
अंधे कह हनुमान हर करैं सर्व दुख दूर।।

२८६ ।। श्री राधा लोहारिन जी ।।

तिथि: 10.2.74

वार्तिकः- राधा लोहारिन काशी बासी शंकर जी को नेम से सिर्फ नहाकर जल चढ़ाती थी। एक दिन शंकर जी प्रगट हो गये। कहा "माँग क्या चाहती है।" तो उसने कहा "कृष्ण भगवान की भक्ती" । तो कहा "रैदास जी रामानन्द जी के शिष्य कृष्ण भक्त हैं। धर्मराज के अंश हैं। उनसे दीक्षा लो। तुझे सब प्राप्त हो जायगा।" तब मैं रैदास जी के पास गई, दण्डवति किया और शंकर जी का हाल बताया। रैदास जी ने दीक्षा दी। जप शुरु कर दिया। शंकर जी को जल नेम से चढ़ाती रही। दो माह बाद हमारे पट खुल गये। नाम की प्राप्ति, रूप की प्राप्ति, परकाश की, लय की, शून्य समाधि की, सब देवता-सिद्ध-संत दर्शन देने लगे। हर शै से महामंत्र ररंकार की धुनि होने लगी, शुभ लोकों से तार आने लगे, देवताओं के गृह दिब्य भोजन को जाने लगी, कुण्डलिनी जग गई, छइउ चक्कर चलने लगे, सातौं कमल खिल गये, भाँति भाँति की सुगंध दोनों स्वरन से आने लगी, अनहद बाजा बजने लगे, घट में अमृत का पान होने लगा। फिर शंकर जी प्रगट होकर हृदय से लगा लिया और पारवती जी ने दिब्य भोजन दिया और शंकर जी पारबती जी ने एक एक हाथ पकड़ कर अजर अमर कर दिया। बहुत विस्तार है थोड़ा लिखा है।

२८७ ।। श्री पं० गणेश प्रसाद जी ।।

(फर्रूखाबाद)

(इसका उल्लेख "श्री भक्त भगवन्त चरितावली एवं चरितामृत"
की कथा "श्याम अंडे से प्रगटा बालक" में है।)

लावनीः- क्या श्याम गौर गुल बदन मदन का जोड़ा।
जिन शिव शंकर का कठिन सरासन तोड़ा।
क्या बांकी झाँकी अदा अवध नन्दन की।
लोचन विशाल मुख चन्द खौरि चन्दन की।
गले सोहत हीरा लाल माल मुक्तन की।
छबि जिन्हैं दियो करतार मोहनी मन की।६।

प्रभु हों सवार बाजार नचावत घोड़ा।
जिन शिव शंकर का कठिन सरासन तोड़ा।

"गुरु गादी"

गोकुल भवन आश्रम में श्री परमहंस राम मंगल दास जी का विशाल चित्र।
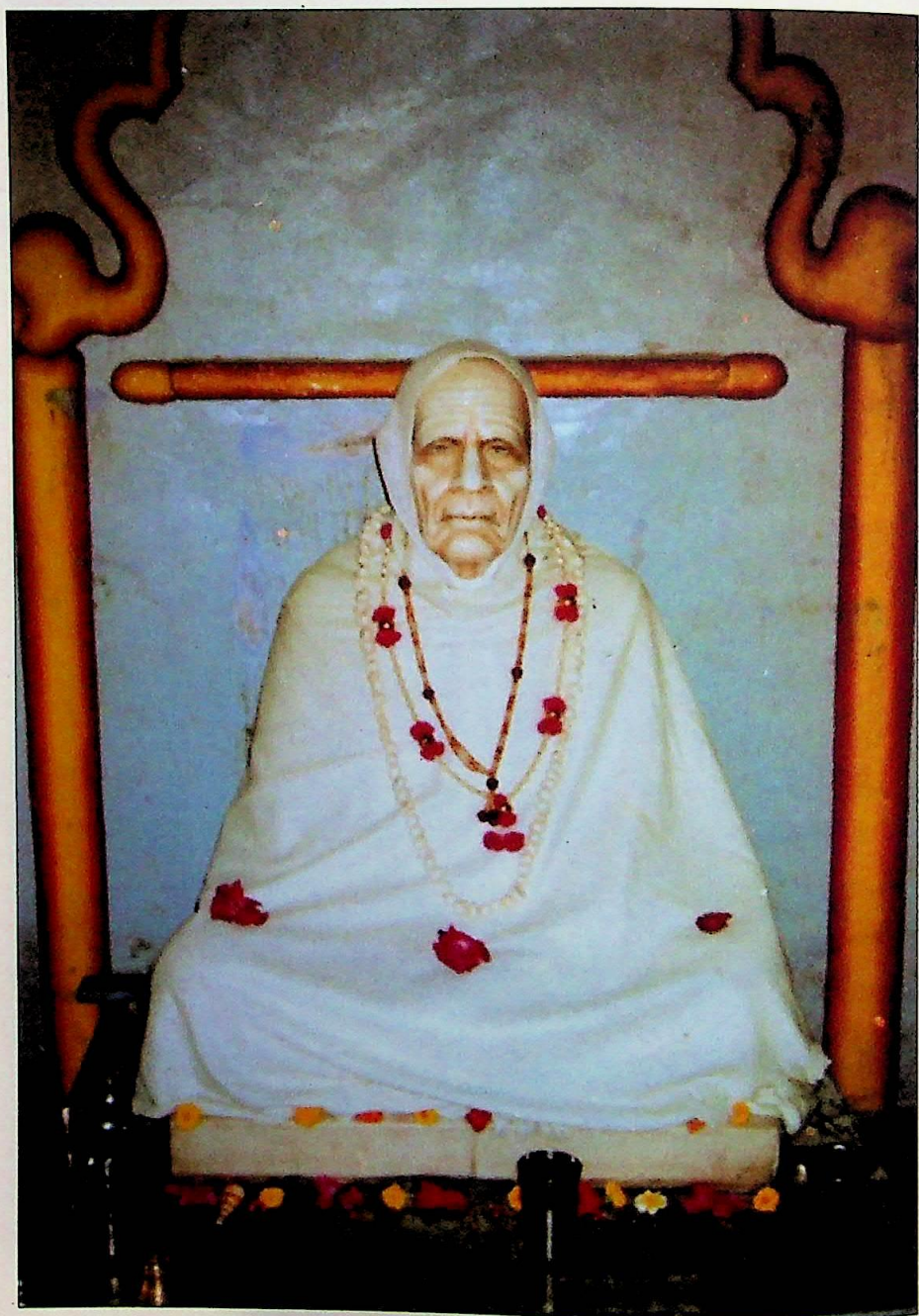
"गुरु गादी"
गोकुल भवन आश्रम में गुरुदेव श्री परमहंस
राम मंगल दास जी की मूर्ति।
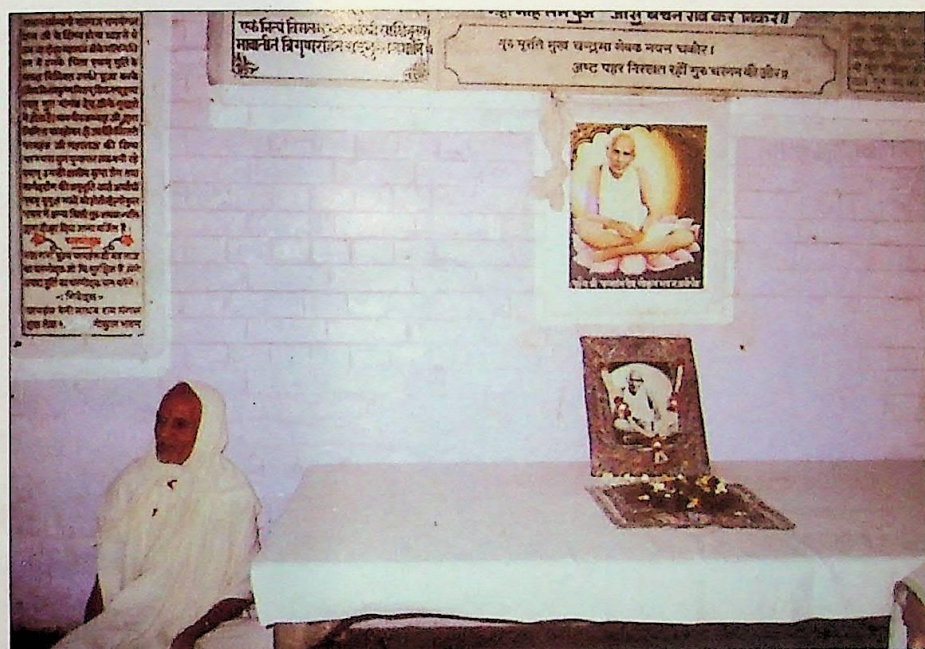
गोकुल भवन आश्रम में गुरुदेव श्री परमहंस राम मंगल दास जी के तखत पर सुशोभित उनका चित्र। तखत के बगल में बैठे हैं गुरुदेव के शिष्य श्री राम सेवक दास जी जो गोकुल भवन आश्रम का श्री गुरुदेव के उपदेशानुसार संचालन कर रहे हैं।
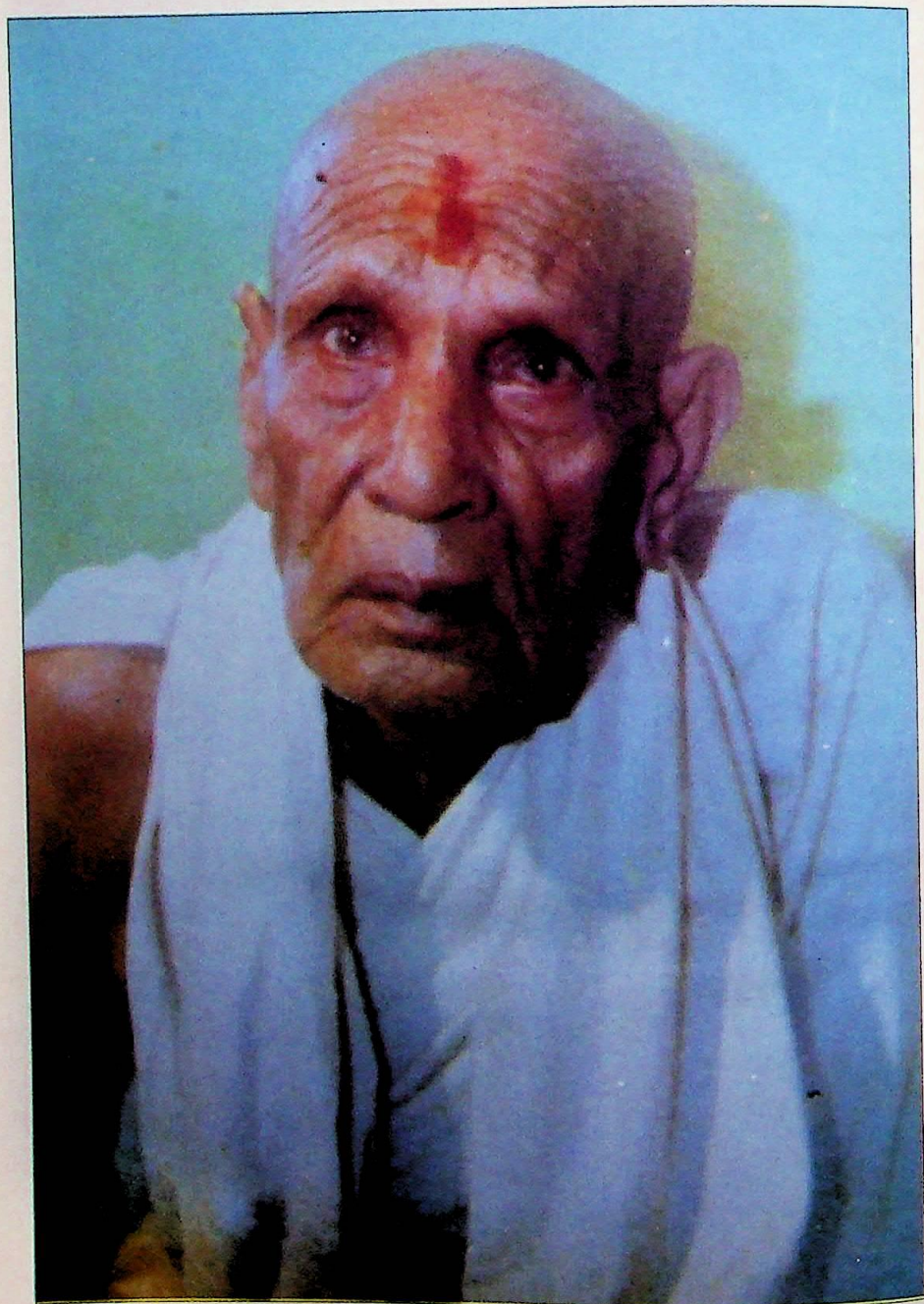
श्री गुरुदेव सदा सबके साथ हैं।

गुलकों में चारौं तरफ़ गये पर वाने।
नृप रचा जनकपुर यज्ञ मचे घमसाने।
रावण बाणासुर लगे सभा में आने।
जिन उठा लिया कैलास बड़े बलवाने।१२।

तहँ दसकंधर ने धनुष देखि मुख मोड़ा।
जिन शिव शंकर का कठिन सरासन तोड़ा।१४।

२८८ ।। श्री जिद्दी शाह जी ।।

(अपढ़, मुकाम बिसवां सीतापुर;
श्री चौपान शाह जी के मुरीद)

पदः- गूँजि रही है राम नाम धुनि र रंकार पहिचानो।
ध्यान ज्ञान मुक्ती औ भक्ती इसी से मिलती जानो।
षट् झाँकी सन्मुख रहैं हरदम मन्द मन्द मुस्क्यानों।
सुर-मुनि मिलैं सुनौ घट अनहद अमृत का हो पानो।
नागिन जगै चक्र षट् बेधैं सातौं कमल फुलानो।
जिद्दी कहैं अन्त हो निजपुर छूटै जग चकरानो।६।

बार्तिकः- पहले बिसवां कमान शहर कहा जाता था। यहां धनुष बनते थे और चौपान शहीद की मजार पर शाम को रख देते थे। जो धनुष वै चढ़ा देते थे उसे जो आदमी धरता था कोई नहीं जीतता था। बिसवां में पहलवान बड़े बड़े हो गये। विश्वनाथ का मंदिर है। मुर्ती मुसलमानों की राज्य भई तब नीचे चली गई। कई हाथ गहराई में है। करीब पक्का ताल है। उसे कोई पानी से भर नहीं पाता है। जो पहलवान वहां जाकर दंडवति करता है उससे कहीं का पहलवान हो हार जाता था। चौपान शहीद को पांच सौ बर्ष हो गये शरीर छोड़े। जहां मजार है वहां बहुत कबरैं और इमली के पेड़ हैं।

पांच हजार बर्ष से कुछ ऊपर हो गया बिसवां के इधर किनारे पर चन्द्रभागा नदी थी जिसे अब चौका नदी कहते हैं। करीब एक साधू की झोपड़ी थी। एक चेला था। कहा "महाराज जी! नदी जोर से काट रही है, झोपड़ी कट जायगी।" बाबा ने कहा "फिर हट कर बन जायगी।" तो चेला ने कहा "महाराज! इसे बचा दो तो ठीक रहे।" बाबा ने कहा। "हमारा लौका का कमंडल भर ले, और जा, जहाँ तू छोड़ैगा वहीं चली जायंगी।" चेला ने कमंडल

भर लिया और सात कोस पर जल छोड़ आया। तब चन्द्रभागा सूख गईं। नीचे नीचे पानी वहाँ चला गया, बहनें लगीं। उसका आसार हमारे गांव से एक मील है, वहां मिट्‌टी काली और बालू है। कुवां लोध को देते थे, तो साखू के लकड़ी का पुल आगे बनता था। एक हजार बर्ष पर सड़ता था। वह खोदने पर निकलने लगा, सड़ गया था। यह बात ठाकुर दुर्गासिंह ने हम से बताया था। डिकोलिया के। कमान शहर नाम और धनुष बनते थे। विश्वनाथ मंदिर पहलवानौं का हाल। हम शंकर जी के मंदिर में गये थे। उस गड़हा में पतला बांस 10 हाथ का छोड़ा, पता न चला, उसका पूजन होता है और पास ही उनके नाम से कोई बड़े धनी ने मंदिर बनवा दिया है। चौपान शहीद का मंदिर छोटा बना है।

२८९ ।। श्री ठाकुर झामसिंह जी ।।

(कछबाहन की बीहट के समीप, सीतापुर, कांग्रेसी)

पदः- राम नाम जप तब फरियाता, निज को समझै घूर।
हरदम धुनी एक रस होती, प्रेम में चकना चूर।
सुर मुनि मिलैं शीश कर फैरैं, बोलैं सच्चे सूर।
झामसिंह कहैं जो नहिं सुमिरैं, ते हैं कायर कूर।४।

बार्तिकः- ठाकुर झामसिंह कछबाहन की बीहट के समीप जिला सीतापुर, कांग्रेसी थे। सीतापुर से शायद ४ (चार) कोस होगा।

२९० ।। श्री साईं बाबा जी ।।

(परताबगढ़)

पदः- पहले फांका नाका छेका। दुसरे दूरि करै सब फेरा।।
तिसरे फाका तिरगुन नासै। चौथे चरन कमल पर डेरा।।
पंचवें पांच भूत को मारै। छठवें छलबल छूट बखेड़ा।।
सतवें अलख पुरुष को भेंटै। वही गुरू और सब चेला।।
सत्य साईं की चरन बंदगी।।

२९१।। श्री मौताज शाह जी ।।

(अपढ़, संतोषी, सिरसा गढ़)

पदः- ग़रीबी बहुत दुख दे हाय,
अन्न वस्त्र बिन काम सधत नहिं, भूख से तन चकराय।

नातेदार मित्र पुरजन के, दूरि ते देख पराय।
ऐसे ग्रह खराब कोइ आय, चलत न कोई उपाय।
सुमिरन पाठ में मन नहिं लागत, रहि रहि जिय अकुलाय।
कहैं मौताज शाह बिन भोगे फुरसत मिलत न भाय।५।

दोहाः- सब पापन ते बड़ा है, यह दरिद्र दुख दाय।
मौताज शाह कहैं भोगिकै, हम यह दीन भगाय।
राम कृपा निधि आय कै, शिर पर कर धरि दीन।
चरनन पर जब हम परे, तुरतै गोदी लीन।
अन्त समय तन छोड़ि कै, प्रभु ढिग बासा लीन।
मौताज शाह की बिनय यह, सुनिये परम प्रवीन।६।

२९२ ।। श्री टीका शाह जी ।।

थियेटरः- आओजी आओ कृष्ण लाज के बचाने वाले।१।
स्वामी हो गिरधर प्यारे दुस्सासन चीर उतारे कोई न बरजन हारे,
बैठे सब राजदुलारे, लखि कै अनीति सारे हांसी करने वाले।२।

तुम्हारे भक्तौं का हमने ना अपिमान देखा, सान औ गुमान अभिमान हू को खंडन देखा, चेरी मैं हूँ अब तेरी, लज्जा तू रख ले मेरी, काहे को करते देरी, केहरी ने गइया घेरी, हे जदुनंदन कंस निकंदन रावण गंजन, देवकी नंदन, टीका के मन भाने वाले।३।

सखी से सखी कह रही हैः-

पदः- बाजी कहूँ बैरनि बिष भरी सौति बाँसुरी
अधर मधुर धुनि नेक स्वरन सों।।
वाकी गांस फांस जिय हूक कूक कूक तड़फाय सखीरी।।
बाजी कहूँ बैरिनि बिष भरी सौति बांसुरी
अधर मधुर धुनि नेक स्वरन सों।।

२९३ ।। श्री जिद्दी शाह जी ।।

पदः- राम नाम की पकड़ौ जिद्दि। जिद्दी कहैं जाय ह्वै सिद्धि।।
बातन ते ह्वै है नहिं बृद्धि। जैसो उड़त आकाश में गिद्धि।।

अमल करै पावै सो जान। वाके खुलि जांय आंखी कान।।
मुरशिद के जो चरनन चूमै। निर्भय ह्वै वह खलक में घूमै।।
सच्चा पीर फ़क़ीर वही है। कितनौं मारौ कहत सही है।५।

ऐसा मुरशिद दिल दरियाई। जाको मिलै वही बनि जाई।
जिद्दी कहैं अपढ़ हौं भाई। जो जाना सो दीन लिखाई।७।

बार्तिकः- गीध अकाश में उड़ते हैं अपने खाने की खोज में। उनकी निगाह सौ कोस तक जाती है। जहां कहीं मुर्दा पशु, उसे डांगर ढोर कहते हैं, पड़ा होता है, ऊपर से वहां पहुंच जाता है, और खाने लगता है।

ऐसे ही झूठे भक्त बातें सिखकर जनता को सुनाते हैं और अपना उस रीति को जानते नहीं हैं। मान बड़ाई में मस्त रहते हैं। खाने-पीने-कपड़े-पैसे को आनंद मानते हैं। अपनी मौत और भगवान को भूले हैं। अन्त में सब पकड़ जाते हैं। कर्म अनुसार दुःख सुख भोगते हैं।

२९४ ।। श्री कुकरम शाह जी ।।

(अपढ़, सिंध, हैदराबाद)।

पदः- राम नाम में लागौ लागौ।
यह नर देह सुरन को दुर्लभ, तन मन प्रेम में पागौ पागौ।
सतगुरु से सब भेद जानि कै, जियतै में अब जागौ जागौ।
कुकरम शाह कहैं भक्तन हित, तन तजि निजपुर भागौ भागौ।४।

चौपाईः- जिनके दया धरम है मन में। उसकी गणना है सुर गण में।
जिनके दया धरम नहिं मन में। उनकी गणना है जम गण में।।

२९५ ।। श्री मुनव्वर शाह जी ।।

बार्तिकः- तृषना-लालच-सूम-कंजूस-लोभी-मूंजी एक नाम से ६ हो गये। यह मर कर प्रेत योनि भोगता है फिर नर्क भेजे जाते हैं। यह दया धर्म से अलग हैं। लोभ, काम, क्रोध, मद, मोह से बड़ा है। यह मनुष्य को ८४ योनि से निकलने नहीं देता। हर समय उसका मन धन में लगा रहता है। उसका पढ़ना सुनना उपदेश करना गलत ज्ञान है।

२९६ ।। श्री ख्याल शाह जी ।।

(अपढ़)

पदः- जिसका सियाराम पै ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।
जिसका प्रिय श्याम पै ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।
कमला बिष्णु पै जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।
उमा शम्भु पै जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।४।

बजरंग पै जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।
गणपति पर जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।
दुर्गा पर जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।
काली पर जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।८।

भैरौं पर जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।
षट्मुख पर जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।
सारद पर जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।
सरसुती पर जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।१२।

सुरमुनि पर जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।
सब सक्तिन पर जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।
चन्द्र सूर्य पर जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।
सब श्रृष्टी पर जिसका ख्याल रहै, वह भक्तौ माला माल रहै।१६।

दोहाः- षट्रूपन का अंश सब, अमल करै ले जान।
ख्याल साह कहैं नैन श्रुति, खुलि जावैं हो ज्ञान।।

२९७।। श्री खुशखुर्रम शाह जी बग़दादी ।।

(अपढ़, खलक़ का तवाफ़ करने वाले, हकीम लुकमान के मुरीद)

चौपाई :- सब से नीच बनै जो कोई। चारि पदारथ पावै सोई।।
शान्ति दीनता गोद खिलावै। छोटे बालक सम दुलरावै।।
चारि पदारथ हैं तन माहीं। मन संग लै कोइ खोजत नाहीं।।
इधर उधर भटकत जग माहीं। बिन मुरशिद के मिलत न राहीं।।
प्रेम भाव औ करि बिश्वासा। छोड़ि देव जब जग की आशा।५।

नाम कि जाप करौ मन मारौ। भूख पियास को पकड़ि पछाड़ौ।।
जाड़ घाम तब नहीं सतावैं। माया चोर मौन ह्वै जावैं।।

जपति जपति तब पट खुलि जावैं। संमुख षट् झांकी छबि छावैं।।
जियतै मुक्ति भक्ति औ ज्ञाना। पाय गयो भक्तौ करि ध्याना।।
निर्भय औ निर्बैर गयो बनि। बारह बरस क ह्वै गा यह तन।१०।

अजर अमर तब यह कहलावै। प्रभु कृपा से कोइ कोइ पावै।।
नाम कि धुनि हरदम भन्नावै। शूरति शब्द में जाय समावै।।
सुर शक्ती ऋषि मुनि सब दरशैं। बिहंसि बिहंसि सिर पर कर परसैं।।
फिर विज्ञान दशा ह्वै जावै। खेल करैं जोई मन भावै।।
बड़े सुकृति से यह पद पाई। शारद शेष न सकत बताई।१५।

श्री नानक जी ने कहा है:-

चौपाई:- संत कि महिमा वेद न जानैं। जेता सुनैं तेता बखियानैं।।

श्री गोस्वामी जी ने कहा है :

चौपाई:- विधि हरि हर कवि कोविद बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी।
फिर कुछ हमारी बातें कहा और अन्तर हो गये।

२९८ ।। श्री परदेशी शाह जी ।।

(अपढ़)

चौपाई:- दया धर्म में जे मन लाते। ते बैकुंठ भवन बिच जाते।
तन मन से परस्वारथ करते। तिनके पट जियतै में खुलते।२।

दोहा:- बहुती साखा भजन की, जो जासें सधि जाय।
उसी से वाकी गती हों, सुर मुनि वेदन गाय।
परदेसी की बिनय यह, मानि लेव सुख होय।
जियतै में सब प्राप्त हो, दुःख को डारौ धोय।
मुसलमान की जाति मैं, परदेसी है नाम।
राम राम सुमिरन किया, इसी से सरिगा काम।३।

२९९ ।। श्री तनमन शाह जी।।

(अपढ़, अजर अमर; मुकाम बदायूँ)

पद:- मुक्ति भक्ति औ ज्ञान ध्यान सब दया धर्म से मिलते।
नाम कि धुनि परकास समाधी रूप सामने खिलते।
सतगुरु करौ जुटौ तन मन से कर्म कि रेखा छिलते।
सुर शक्ती सब दर्शन देवैं मानै तुमको दिल से।४।

पांचौ चोर औ माया माता तब फिर तुमको ढिलते।
नर नारी सब जीव जगत के तब तुम को फिरि हिलते।
तन मन शाह कि बानी भक्तौ समझौ चक्षु के तिलते।
भव सागर तब पार जाव ह्वै छूटौ जग किलकिलते।८।

दोहाः- बारह बर्ष का तन भया अजर अमर सुखदाय।
भूख प्यास ब्यापै नहीं जाड़ घाम बिलगाय।।
निद्रा देवी चुप भईं कभी न आवैं पास।
षट् झांकी संग में रहैं हम हैं उनके पास।।
सतगुरु के परताप से हमें भया संतोष।
सुरति शब्द में लगि गई मिला नाम का कोस।।
प्रेम भाव एकतार हो अटल होय बिश्वास।
नैन श्रवन जियतै खुलैं दोनों दिशि ते पास।।
सब नीचन में नीच हम सब दीनन में दीन।
तन मन शाह कहैं सुनौ शान्ति की पदवी लीन।५।

बार्तिकः- गुड़ की मई बहुत खार और खराब होती है। बिना निकाले गुड़ में स्वाद नहीं आता। मन का मैल द्वैत है। जब मन के संग रहेगा तब शुभ काम नहीं करने देगा।

दोहाः- गुड़ की मई निकालिये तब गुड़ होवै साफ़।
मन का मैल निकालिये तब मन होवै साफ़।
सब का भला जौन कोइ चाहत सोई भला कहावै।
अन्त छाड़ि तन चढ़ि विमान पर निज घर बैठक पावै।४।

३०० ।। श्री महमूद शाह जी ।।
(अपढ़, सिकन्दराबाद)

शेरः- भजन में लौ लगी जिसकी वही तो भजन कर सकता।
नहीं तो पढ़ि व सुनि लिखिकै कहत बेकार ही बकता।
बिना खाये मिठाई के स्वाद मीठा नहीं लगता।
ऐस ही अमल बिन कीन्हें रूप सन्मुख नहीं खिलता।४।

ज्ञान यह तो है मत्थे का इसी से मार्ग नहिं मिलता।
दीनता शान्ति से सुमिरै वही निज वतन में पिलता।

अपढ़ अहमद को मुर्शिद ने सिखलाया वही मन में मेरे भाया।
वही हम तुमको आकर के यहां गा करके बतलाया।८।

३०१ ।। श्री मुलायम शाह जी ।।

शेरः- मुलायम शाह की बिनती सुनौ भक्तौं मुलायम है।
नीच बनि जाय जो साधक दीनता शान्ति कायम है।।

३०२ ।। श्री चटपट शाह जी।।

(अपढ़, रामकोट, सीतापुर)

पदः- आरी आरी सुर मुनि बैठे बीच में राजैं षट् झांकी।
छबि सिंगार छटा की शोभा हरदम सन्मुख है टांकी।
देखत बनै कहै को मुख से शारद शेष गये थाकी।
जिन जाना ते जियतै तरिगे धनि धनि उनके पितु माँ की।
सतगुरु जिनको भेद बतायो प्रेम भाव में गे पाकी।
चटपट कहैं भजौ निशिवासर नहीं तो मृत्यु आय फाँकी।६।

दोहाः- सूरति शब्द में औंगि कै जिन जियतै लियो जान।
चटपट कह तन छोड़ि कै पहुँचे सुख की खानि।।

चौपाईः-सबसे बड़ा औ सब से छोट। वही भजन कीहैं हम ओट।
चटपट कहैं लीन पी घोटि। षट् रूपन तब लीन अंगोटि।
शिर पर कर धरि कै दिया पोटि। तब चरनन पर हम गये लोटि।३।

३०३ ।। श्री रघुबरदास पासी जी ।।

(अपढ़)

दोहाः- रघुबर पासी सच कहैं षट् झाँकी सब ठौर।
मन काबू कीन्हे बिना दौरि रहे सब दौर।।

पदः- लखौ षट् रूप की शोभा। जाकी माया जगत लोभा।।
सुरति जो शब्द में चोभा। टूट तब द्वैत के टोभा।।
खुले तब श्रवण औ नैना। साफ दिल का भया ऐना।।
भई तब दृष्टि सुखदाई। रूप सन्मुख रहे छाई।८।
त्यागि तन चढ़ि सिंहासन पर। पहुँचिगे अपने आसन पर।।
मिला साकेत स्थाई। अचल पदवी जो कहलाई।।

बिना हरि के भजे भाई। कौन वहँ पर सकै जाई।।
दास रघुबर कहैं गाई। जौन जाना सो लिखवाई।१६।

३०४।। श्री महंगू धोबी जी ।।

(अपढ़)

दोहाः- मन जब तक साधू नहीं तन साधू बेकार।
मन जब साधू ह्वै गयो दोनों दिशि जैकार।।
मन को नाम के रंग रंगै तब होवै भवपार।
केवल कपड़े के रंगे मिलत नहीं सुखसार।।
मन मानी जो कोइ करै वाको काम है फीक।
सुर मुनि जो कहि लिखि गये उनकी वाक्य है ठीक।।
कामी क्रोधी तरत हैं लोभी नर्क को जांय।
उनका मन हरदम मगन लोभ में रहा समाय।।
महँगू धोबी जाति का पढ़ा नहीं कछु जान।।
रामनाम सतगुरु दियो मुक्ति भक्ति भा ज्ञान।५।।

३०५ ।। श्री सही शाह जी ।।

(अपढ़, आसनसोल)

बार्तिकः- जब आरती हो या प्रार्थना तब दण्डवत करना मना है। उसकी दण्डवति कटि जाती है, उसका भाव ग़लत माना जाता है। यह लिखाया गया है। लोग मानते नहीं हैं, कोरे के कोरे रह जाते हैं।

पदः- जब इधर फिकिर तब उधर नहीं। जब उधर जिकिर तब इधर नहीं।।
बातें गढ़ना फलत नहीं। मन काबू बिन तरत नहीं।।

दोहाः- सही शाह कह भजन करु निशि बासर एकतार।
षट् झाँकी सन्मुख रहे हरदम हो दीदार।।
मुर्शिद में जब भाव हो गोश चश्म खुलि जांय।
सही शाह कहैं द्वैत तब मन से खुद बिलगाय।२।

३०६ ।। श्री कसनी साह जी ।।

(अपढ़)

चौपाईः- अहंकार की पिये शराब। लोभ क खाते सदा कबाब।।
जम पकड़ैं तब हो बेताब। तब किमि देवैं उन्हैं जवाब।।

नर्क में जायके उनको छोड़ैं। राम नाम ते जे मुख मोड़ैं।।
हाय हाय हरदम चिल्लावैं। फटकि फटकि के मुख को बावैं।।

दोहाः- कामी क्रोधी तरि गये लोभी नर्क को जाँय।
बार बार जनमैं मरैं चौरासी चकरांय।।
बहुत बड़ा बिस्तार है कहं लगि को लिखि पाय।
यासे श्री रामै भजै अन्त में निजपुर जाय।।

चौपाईः- मान बड़ाई सुनि खुश होवैं। सो चलि अन्त नर्क में रोवैं।
निंदा सुनि के क्रोध जो करहीं। सो भी जाय नर्क में परहीं।।
अस्तुति निंदा सम करि मानै। सो बसि पावै ठीक ठेकानै।।
कसनी साह अपढ़ की बानी। सोधि लेहु मैं हौं अज्ञानी।।

३०७ ।। श्री अन्धे शाह जी ।।

(२७,२८ दिसम्बर, रात दो बजे लिखवाया)

पदः- राम नाम अवलम्ब मिला जेहि खुलिगे आँखी कान।
नाम की धुनि परकाश दसा लै सून्य समाधी जान।
नागिनि जगी चक्र षट् बेधे सातौं कमल फुलान।
उड़ै तरंग मस्त भा तन मन रोम रोम पुलकान।४।

सुर मुनि मिलैं सुनै घट अनहद अमृत का करै पान।
राम सिया सन्मुख में राजैं मन्द मन्द मुसक्यान।
छबि श्रृंगार छटा को बरनै सारद शेष चुपान।
अन्धे कहैं अन्त साकेतै जावै बैठि विमान।८।

दोहाः- वाक्य ज्ञान को छोड़ि कै नीच बनै जो कोय।
सांति दीनता जाय मिलि छूटि जाय तब दोय।।
हर हनुमान ने दीन्ह मोहिं राम नाम का दान।
अंधे कह सुमिरन किया जियतै भा कल्यान।२।

३०८ ।। श्री मृत्युञ्जय स्तोत्र।।

ॐ अस्य श्री सदाशिवस्तोत्र मन्त्रस्य मार्कंडेय ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री साम्ब सदाशिवो देवता गौरी शक्तिः मम सर्वारिष्ट निवृत्ति पूर्वक शरीरारोग्य सिद्ध्यर्थे मृत्युञ्ज्यप्रीत्यर्थे च पाठे विनियोगः।।

ॐ रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम्।
नमामि शिरसा देवं किन्नो मृत्युः करिष्यति।।
नीलकण्ठं विरूपाक्षं निर्मलं निर्भयं प्रभुम्।
नमामि शिरसा देवं किन्नो मृत्युः करिष्यति।।
कालकण्ठं कालमूर्तिं कालज्ञं कालनाशनम्।
नमामि शिरसा देवं किन्नो मृत्युः करिष्यति।।
वामदेवं महादेवं शंकरं शूलपाणिनम्।
नमामि शिरसा देवं किन्नो मृत्युः करिष्यति।।
देव देवं जगन्नाथं देवेशं वृषभध्वजम्।
नमामि शिरसा देवं किन्नो मृत्युः करिष्यति।५।

गंगाधरं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम्।
नमामि शिरसा देवं किन्नो मृत्युः करिष्यति।।
भस्म धूलित सर्वाङ्गं नागाभरण भूषितम्।
नमामि शिरसा देवं किन्नो मृत्युः करिष्यति।।
आनन्दं परमानन्दं कैवल्य पद दायकम्।
नमामि शिरसा देवं किन्नो मृत्युः करिष्यति।।
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टि स्थित्यंत कारणम्।
नमामि शिरसा देवं किन्नो मृत्युः करिष्यति।।
प्रलय स्थिति कर्तारमादि कर्तारमीश्वरम्।
नमामि शिरसा देवं किन्नो मृत्युः करिष्यति।१०।

मार्कण्डेय कृतंस्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
तस्य मृत्युभयं नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यमेतदि होच्यते।
प्रथमं तु महादेवं द्वितीयं तु महेश्वरम।।
तृतीयं शंकरं देवं चतुर्थं वृषभध्वजम्।

पंचमं शूलपाणिञ्च षष्ठं कामाग्निनाशनम्।।
सप्तमं देवदेवेशं श्रीकण्ठं च तथाष्टमम्।
नवममीश्वरं चैव दशमं पार्वतीश्वरम्।।
रुद्रं एकादशं चैव द्वादशं शिवमेव च।
एतद् द्वादश नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।१५।

ब्रह्मघ्नश्च कृतघ्नश्च भ्रूणहा गुरुतल्पगः।
सुरापानं कृतघ्नश्च आततायी च मुच्यते।।
बालस्य घातकश्चैव स्तौति च वृषभ ध्वजम्।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो शिवलोकं च गच्छति।१७।

इति श्री मार्कण्डेयकृतं मृत्युञ्ज्यस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

३०९ ।। ज़िन्दा श्री प्रेमा माई जी।।

। प्रभु की शोभा ।

पदः- दीनन के आधार हमारे प्रभु, दीनन के आधार।
परम उपासक युगल प्रभू के, राम-नाम आधार।।
हमारे प्रभु दीनन के आधार॰
रोम-रोम सों ध्वनि निकसत है, शब्द करत झनकार।।
हमारे प्रभु दीनन के आधार॰
देव ऋषी दरशन को आवत, और करत जय-जयकार।।
हमारे प्रभु दीनन के आधार॰
दीन-बंधु अति मृदुल स्वभाऊ, करुणा के आगार।।
हमारे प्रभु दीनन के आधार॰
चरण-युगल नव कमल कली से, वचन अमिय मृदुधार।।
हमारे प्रभु दीनन के आधार॰
दिव्य स्वरूप अनूपम छबि लखि, होत 'प्रेम' बलिहार।।
हमारे प्रभु दीनन के आधार॰

(२)

पदः- हम दीन गरीबों के भगवान तुम्हीं हो, गुरुदेव दयामय।।
अशरण-शरण औ करुणानिधान तुम्हीं हो, गुरुदेव दयामय।।

बिगड़ी मेरी सुधारो, भगवन मुझे उबारो,
सबसे कृपालु सबमें महान तुम्हीं हो, गुरुदेव दयामय।।
भव-सिंधु में पड़ी हूँ, भँवरों में मैं फँसी हूँ,
मुझ डूबती दुखिया के जलयान तुम्हीं हो, गुरुदेव दयामय।।
हिरदय में मेरे आओ, दरशन मुझे दिखाओ,
भक्तों के लिये भगवन सुखखान तुम्हीं हो, गुरुदेव दयामय।।
अधमों के लिये प्रभुवर, निर्वान तुम्हीं हो, गुरुदेव दयामय।६।

(नोटः- श्रीमती प्रेमा माई जी जब जीवित थीं तब उनका यह पद श्री परमहंस राम मंगल दास जी ने इस दिव्य ग्रन्थ-४ में सम्मिलित कर लिया था।)
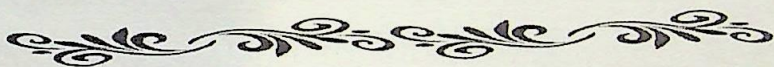
श्री गुरू महाराज की आरती

आरती गुरू महाराज की कीजे।
कोटिन कोटि पुण्य सुख लीजै।।
गावत सीता जी राधा जी।
जिनका जस लक्ष्मी जी उमा जी।।
मातु सरस्वति आसिस दीन्हीं।
परमहंस अस लेखनि की जै।१।

गावत नर नारी बालक गन।
राम कृष्ण बसते जिनके मन।।
सहस संत निज भाव लिखाये।
उन अदभुत कर कमलन की जै।२।

गावत प्रभु की लीला को नित।
भगत हिये हुलसे भक्तामृत।
अनहद नाद सुनत भीतर लौं।
तबहूँ **मंगल** कारक की जै।३।

मैं मूरख गुरू अंतरयामी।
दास सदा वह मेरे स्वामी।
त्राहिमाम शरणागत कीजै।
मोहि सदा चरनन मा लीजै।४।

परम पूज्य गुरुदेव
परमहंस राम मंगल दास जी महाराज के
अकिंचन शिष्य सुधाकर अदीब द्वारा विरचित

श्री हरि चरित्र भक्तन चरित्र श्री हरि चरित्र भक्तन चरित्र श्री हरि चरित्र भक्तन चरित्र श्री हरि चरित्र भक्तन चरित्र
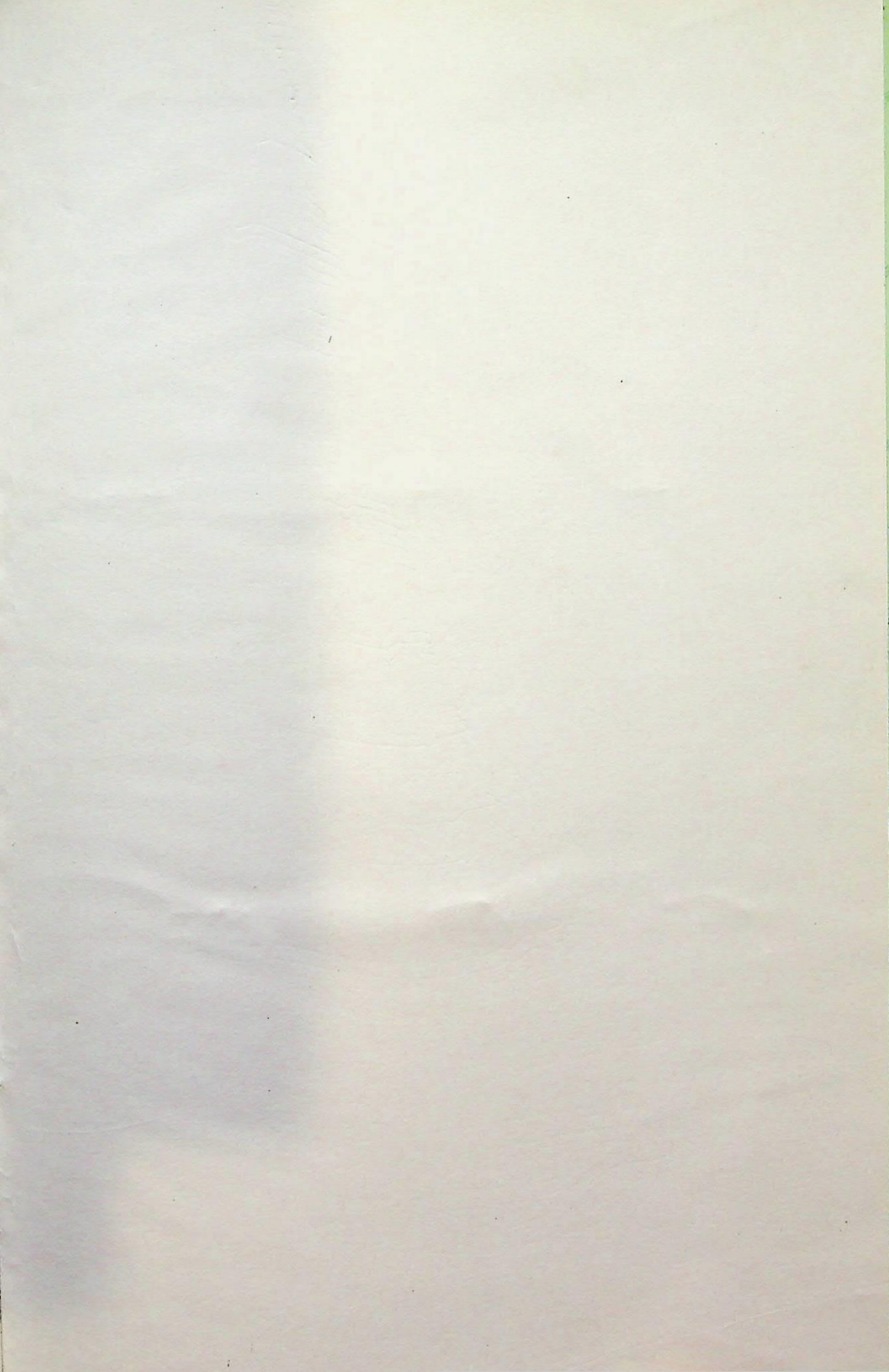
श्री परमहंस राममंगल दास जी सभी धर्मों को मानते थे। उनके भक्त हर धर्म व जाति के थे। कोई भेद भाव नहीं था। हिन्दुओं को देवी-देवताओं के मंत्र, मुसलमानों को कलमा व नमाज पढ़ने, सिख्खों को उनकी गुरु-परम्परा के अनुसार उपदेश व ईसाइयों को उनके धर्म के अनुरूप मार्ग बताते थे। वे कहते थे कि भगवान भाव व प्रेम के भूखे हैं, आडम्बर के नहीं।

उनका मुख्य उपदेश था : ''सादा भोजन, सादा कपड़ा, अपनी सच्ची कमाई का अन्न तथा अपने को सबसे नीचा मान लेना। कोई बेखता बेकसूर गाली दे, धक्का दे उसके हाथ जोड़ देना।'' वे कहते थे ''मान अपमान फूंक दो तब भगवान की गोद में जाकर बैठ जाओगे। जो भगवान को सब कुछ सौंप देता है, भगवान उससे बड़े खुश रहते हैं। जिसको भगवान का सच्चा भरोसा है उसे तकलीफ कैसे हो सकती है।''

''सेवा धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं है। बिना बुलाये जाकर सेवा कर आओ, जितनी शक्ति हो, बस भजन हो गया। बुलाकर जाने से सब कट जाता है।''

संत शिरोमणि

अनन्त श्री परमहंस राम मंगल दास जी

(12.2.1893 - 31.12.1984)

श्री परमहंस राम मंगल दास जी ने सन् 1933 ई० से सब देवी-देवताओं तथा हर धर्म के सिद्ध सन्तों द्वारा ध्यान में तथा प्रत्यक्ष प्रकट होकर लिखवाये आध्यात्मिक पदों को चार दिव्य-ग्रन्थों में संग्रहीत किया। लगभग 50 वर्षों से ये दिव्य ग्रन्थ उनके गोकुल भवन आश्रम में परम पूज्य रूप से सुरक्षित रखे हुये हैं। इनके कुछ अंश ही छपे परन्तु सम्पूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन भगवत्कृपा से अब हो रहा है।

दिव्य ग्रन्थ-1 जिसका नामकरण दिव्य रूप से श्री गुरु वशिष्ठ जी ने किया "श्री राम-कृष्ण लीला भक्तामृत चरितावली" उसके प्रथम भाग का प्रकाशन श्री वशिष्ठ जी की आज्ञा व कृपा से सन् 1999 में हुआ। इसी ग्रन्थ का द्वितीय भाग सन् 2001 में प्रकाशित किया गया। भगवत्कृपा से दिव्य ग्रन्थ-2 "श्री भक्त भगवन्त चरितामृत सुखविलास" तथा दिव्य ग्रन्थ-3 "श्री संत भगवन्त कीरति" का प्रकाशन सन् 2002 में हुआ। इसी श्रंखला का दिव्य ग्रन्थ-4 "श्री हरि चरित्र भक्तन चरित्र (दिव्य रामायण सहित)" सर्व जगत कल्याण के लिये अब प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री वशिष्ठ जी ने सन् 1933 में प्रकट होकर पूज्य श्री परमहंस राम मंगल दास जी को लिखवाया था कि इन सारे दिव्य ग्रन्थों की रचना जगत-जननी श्री सीता जी व श्री राधा जी की कृपा से हो रही है। उसके बाद ही श्री राधा जी ने प्रकट होकर लिखवाया कि जब संत श्री कृष्णदास पयहारी जी हरि चरित्र लिखवायेंगे तब इन दिव्य ग्रन्थों का समापन होगा। यही दिव्य ग्रन्थ-4 वो ग्रन्थ है जिसके अन्त में संत श्री पयहारी जी ने सन् 1958 में प्रकट होकर दिव्य रामायण लिखवाई है। यह दिव्य रामायण अलौकिक है। इसमें रामायण संबंधी अभूतपूर्व आध्यात्मिक तथ्यों का वर्णन है जो अन्यत्र कहीं उपलब्ध नहीं हैं। ये दिव्य प्रसंग व तथ्य भक्ति तथा प्रेम से सराबोर हैं और असीम आनन्द प्रदान करने वाले हैं।

इन समस्त दिव्य ग्रन्थों की मुख्य बात यह है कि इनमें किसी विशेष गुरु या साधना पद्धति का अनुसरण करने के लिये नहीं कहा गया है। ये दिव्य ग्रन्थ हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि सभी धर्मों के पालन करने वालों के लिये हैं। अपनी अपनी परम्पराओं पर चलते हुये कैसे भगवान की प्राप्ति हो सकती है इसका वर्णन दिव्य सिद्ध संतों ने किया है। हर धर्म, जाति व पेशे (व्यवसाय) के संत पुरुष व संत स्त्रियों ने लिखवाया है कि जीवन में कैसा आचार विचार होना चाहिये तथा उन्होंने किस प्रकार के कार्य किये जिनसे उनका कल्याण हुआ तथा उन्हें भगवान का धाम प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत दिव्य ग्रन्थ-4 में श्री परमहंस राम मंगल दास जी को दर्शन देकर जिन्होंने दिव्य आध्यात्मिक पद लिखवाये हैं, संक्षिप्त रूप में वे इस प्रकार हैं :-

- श्री अंधे शाह जी *(श्री कबीर दास जी के समकालीन)* जिनके गुरु स्वयं भगवान शंकर जी व हनुमान जी थे।
- श्री कबीर दास जी, श्री तुलसी दास जी
- श्री मलिक मुहम्मद जायसी, श्री चाली दास जी
- श्री कृष्णदास पयहारी जी

इन दिव्य ग्रन्थों में सब धर्मों का सार, उनकी एकता, विश्व-बंधुत्व, सबमें प्रेम व्यवहार, सद्भाव, दीनता व सेवा भाव का उपदेश दिया गया है। श्री गुरुदेव परमहंस राम मंगल दास जी के अनुसार, "इन ग्रन्थों को जो पढ़ेगा, प्रेरणा पायेगा, उन बातों पर चलेगा और तदनुसार अपनी दिनचर्या बनायेगा, तो उसका जीवन सार्थक होगा, उसका कल्याण होगा।"